

श्रीमान हनुमान जी का जीवन चरित्र

ठाकुर सुखराम दास चौहान

लाहोर १९०१

हिन्दी रूपांतरण
सञ्जय मोहन मित्तल

विचार

अतीत की धूल में खोये हुए इस रत्न पर मेरी नजर अनायास ही पड़ी। विषय विवादित परन्तु बेहद दिलचस्प जान पड़ा। इसकी प्रति इंटरनेट पर मिल गई परन्तु समस्या ये आई की उर्दू लिपी से मैं बिल्कुल अनभिज्ञ था। इसको पढ़ने की ललक ऐसी जागी की आनन फानन दो सप्ताह मे उर्दू पढ़नी सीखी और इस रूपांतरण मे जुट गया। अपनी पत्नी श्रीमती अल्पना जी और चँद उदार हृदय मुसलमान हितैषियों का मैं हृदय से आभारी हूँ। इन्होने इस प्रयास मे मेरी बहुत सहायता की है। और आज मकर संक्राती के दिन मैं इसको उन सब तक पहुँचाने मे सफल हो रहा हूँ जो उर्दू नहीं जानते। आशा है कि सब अपने पूर्वाग्रहों को छोड खुले दिमाग से इस को पढ लाभ उठाएँगे।

सञ्जय मोहन मित्तल
१४ जनवरी २०१९

श्रीमान

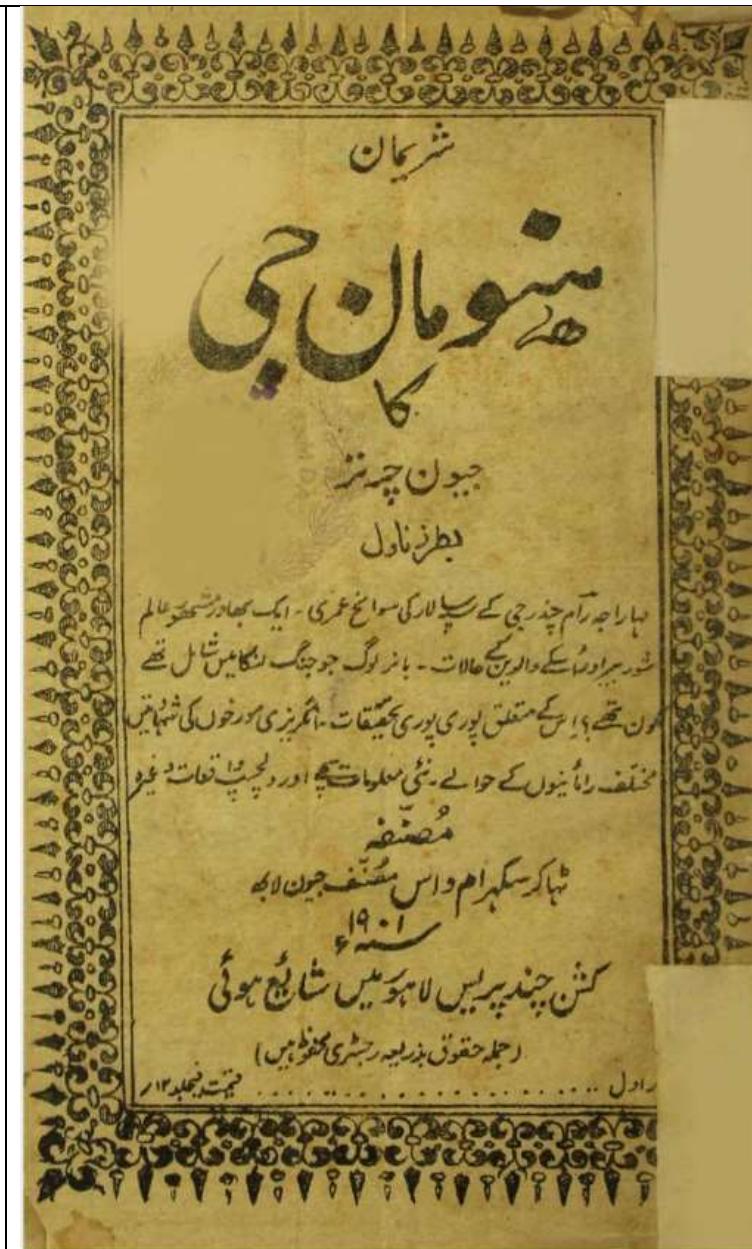
हनुमान जी

का
जीवन चरित्र
बतर्जे नावल

महाराजा रामचन्द्र जी के सिपहसालार की स्वनय उम्री। एक बहादुर मशहूर आलिम (ज्ञानी), शूरवीर और उसके वालदैन (माता पिता) के हालात। वानर लोग जो जंग लंका में शामिल थे, कौन थे? इसके मुतालिक (सम्बन्धित) पूरी पूरी तहकीकात। अंगरेजी मौरिखों की शहादतों। मुख्तलिफ़ (अलग अलग) रामायणों के हवालों। नई मालुमात सच्चे और दिलचस्प वाकियात वगैरहा।

मुसन्फा
ठाकुर सुखराम दास मुसन्निफ जीवन लाभ
सन १९०१
किशन चन्द्र प्रेस लाहोर में शाय हुई

जमला हकूक बजरिया रजिस्टरी महफूज हैं
रादल ... कीमतद फसलबद १२ र



जनाब ठाकुर अक्षर चन्द साहिब मुसनिफ (लेखक)

रामायण बतर्जे नावल की राय

हमने जीवन चरित्र हनुमान का अच्छी तरह **मुतालिया** () किया। वो तमाम खूबियाँ जो एक अखलाकी (नैतिक) नावल में होनी चाहिये सब इसमें मौजूद हैं। मुसनिफ की मेहनत जो इस किताब के सच्चे हालात की तफतीश (जाँच पड़ताल) में खर्च हुई कविले कद्र है। इबारत (गद्य) सादा है मगर सच्चे और दिलचस्प मजमून (विषय वस्तु) गे हर नायाब की तरह ऐसे झलक रहे हैं जिस तरह अबर (बादल) के तुकड़ों से आफताब (सूरज)। **जहां ताब** () की तेज और रोशन किरणों। किताब का ज्यादातर दिलचस्प हिस्सा वो हिस्सा है जिसमें अञ्जना देवी की मुसीबत का बयान है। जिस मस्तकिल (दृढ़ता) मिजाजी और आली (सर्वोच्च) हौसलगी से इसने अपनी सख्ती के दिन काटे, एक हैरत नाक नजारा पेश करते हैं। बाकी ऐसी पतिव्रता स्थियों का फख (गौरव) अगर किसी मुल्क को हासिल है तो सिर्फ हिन्दुस्तान को। इसके अलावा वानर लफज की पूरी पूरी तशरीह (व्याख्या) करके एक ऐसी आलमगीर (महत्वपूर्ण) गलती को रफह किया है जिसकी तरफ आज तक किसी मुसनिफ की तबज्जा ही नहीं हुई थी। ये किताब बहैसियत अपने कीमती मजमूनों के एक आले दर्जे की किताब है। लिहाजा हम सिफारिश करते हैं कि अहले हिंद के हर एक घर में इसकी एक एक जिल्द जरूर मौजूद रहनी चाहिये।

ठाकुर इच्छर चन्द शाहपुरिया

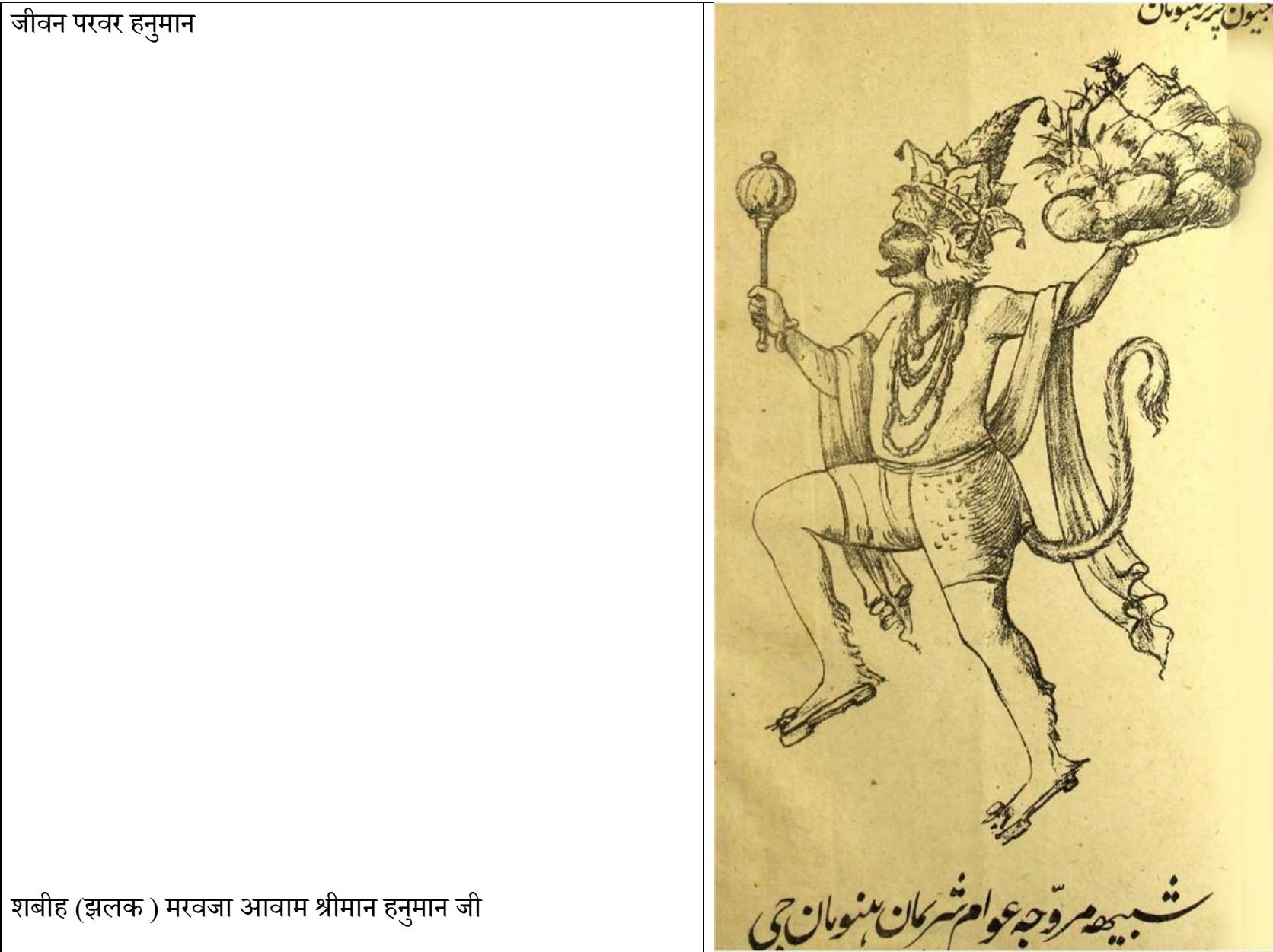
خاکھارا حضرة صاحب مصنف

رامائين بطرنادل کي رئے

بھرپور جملہ نویں چوتھے نویں کا اچھی طرح مطالعہ کیا۔ وہ تمام خوبیاں جو اکابر خلق نے
نادل میں بینی چاہیں سب سیس موجود ہیں۔ مصنف کی محنت جو اکتا تھے سچے
حالات کی تعمیش میں خیل ہوئی قابل تقدیر ہے۔ عبارت سادہ ہے مگر سچے اور بُرے
مصنفوں گوہر نیاب کی طرح ایسے جھلکتے ہیں جس طرح ابر کے ڈرول سے آفتاب
جہانتاب کی نیزہ اور دشمن کریں۔ کتاب کا زیادہ تر دلچسپ حصہ دہ حصہ ہے۔
جیسیں انجمناویوی کی میصبت کا بیان ہے۔ جس تسلسل مراجی اور عالی حوصلگی
سے اس نے آپنی سختی کے دن کاٹے ایک جیرت ناک نظارہ پیش کرتے ہیں۔ واقعی
الیسی پتی برناستروں کا فخر اگر کی ملک کے حاصل ہے تو صرف مہدوستان کی وجہ
علاوہ بازلفظ کی پوری پوری تشریح کر کے ایک الیسی عالمگیر علمی کو رفع کیا ہے
جسکی طرف آجکے کمی مصنف کی توجہ ہی نہیں ہوئی تھی۔ یہ کتاب بجیشت اپنے
قیمتی مصنفوں کے ایکاں علی درج کی کتے ہے۔ لہذا ہم سفارش کرتے ہیں
کہ اہل مہند کے ہر ایک گھر میں ایک ایک جلد ضرور موجود رہنی چاہئے۔

طھاکر اچھپ سر شاہپور یہ

जीवन परवर हनुमान



शबीह (झलक) मरवजा आवाम श्रीमान हनुमान जी

شبیه مردوجہ عوام شرمنان ہنومان جی

तस्वीर मतद

शबीह (झलक) असली श्रीमान हनुमान जी



دیباچا (भूमिका)

रामायण जैसे ग्रन्थ को पढ़ कर कौन सा आदमी होगा जिसकी तबियत खुश ना होती हो और महाराजा रामचन्द्र जी की स्तुति किये बगैर चुप रह सके। वैदिक धर्म के सच्चे उत्साही यही महाराजा हुये हैं जिन्होने तमाम दुनिया की नैमतों को छोड़ा और पिता की आज्ञा को सुन चौदह बरस का वनवास इखिल्यार किया और बाप का कौल पूरा करके दुनिया में शोहरत हान्सिल की। लेकिन जब इस बहादुर महाराजा के सिपहसालार के हालात पढ़ते हैं तो एक हैरत अंगेज नजारा दिखाई देता है। कहाँ ऐसा बहादुर ज्ञानवान महाराजा रामचन्द्र और कहाँ उनका सिपहसालार हनुमान जो बन्दर की जात से मौसूफ () किया गया है।

प्यारे सज्जनो! क्या ये ताज्जुब देने वाला नजारा नहीं है? क्या हनुमान जी के काम जो उन्होने अपनी जिन्दगी में किये जाहिर करते हैं कि वो पशु थे? हर्गिज नहीं! उनसे तो साफ मालूम होता है कि वो एक शूरवीर विद्वान और दाना आदमी थे। न कि बन्दर। तो फिर ये कलंक उनको क्यों लगाया जाता है? क्या उनके वालदैन के हालात जाहिर करते हैं कि वो बन्दर थे? नहीं! मुतलक (हर्गिज) नहीं! आओ पहले इनके जन्म का हाल, जिन्दगी के वाक्यात और महाराजा रामचन्द्र जी की राय से दरयापत करें कि इनसे क्या साबित होता है।

अब्बल (पहला)। अगरचे वाल्मीकि और तुलसी रामायण कई एक बातों में मुत्तिक (सहमत) नहीं। लेकिन दोनों में हनुमान जी के बाप का नाम पवन और माँ का नाम अञ्जना बयान किया है। अञ्जना का **अप्सरा** होकर केसरी वानर की स्त्री होना

*देखो तुलसी का कृत रामायण सफा २५० किष्किन्धा काण्ड

دیباچہ

لماں جیسے گزندھ کو چکر کوٹ آدمی ہرگہ جس کی بیعت خوش نہ جلتی ہو اور مہاراجہ پرچم میں جھی کی اُستنی کے بغیر حرب رکے۔ وید و دھرم کے سچے قلب ہی ہی مہاراجہ ہے میں جھوٹ میں تھام ہیں کی لفڑوں کو چھوڑ دیتا کی اگی کو ان چودہ برس کا بن ہاں اختیار کیا اور باپ کا قول پورا کر کے دیسا میں شہرت حاصل کی۔ لیکن جب اس ہمارا جہاں کے سپہ سالار کے حالات پڑتے ہیں تو ایک جیرت الگز نظردارہ دکھائی دیتا ہے۔ کہاں ایسا بہادر گیان داں مہاراجہ رامچندر اور کہاں ان کا سپہ سالار مہنومن جو بند کی ذات سے موصوف کیا گی ہے۔

پیارے سجنو! کیا یہ تعجب ہے۔ والاظرہ نہیں ہے؟ کیا مہنومن جی کے مامضہ انجوں نے اپنی زندگی میں کے ظاہر کرتے ہیں کہ وہ پتوتھے؟ ہرگز نہیں! ان سے توصاف معدوم ہوتا ہے کہ وہ ایک شوہ سیر و دوان اور داناً آدمی تھے۔ ذکر بندہ۔ تو پھر سخن کان کو کیوں لکھا یا جانا ہے؟ کیا ان کے والین کے حالات ظاہر کرتے ہیں کہ وہ بند تھے؟ نہیں! مطلق نہیں! اُو پہنچانے کے جنم کا حال۔ زندگی کے واقعات اور مہاراجہ رامچندر جی کی رائے دریافت کریں کہاں سے کی ثابت ہوتا ہے۔

اول۔ اگر چہ بالیک اور تیسی را میں کئی ایک بتوں میں تشقق نہیں۔ لیکن دوسری بھنومن جی کے باب کا نام پلوام اور اس کا نام اجھنا بیان کیا ہے۔ اجھنا کا پچھرا بکر کی سری بانکی اس توہنہ اور کتوتی کرت را میں صفحہ ۴۵۰۔ کسکنڈا کا

मतर्जुमा ज्वाला प्रसाद मिश्र छाप बम्बई
साबित करता है कि केसरी मनुष्य था। क्योंकि ये कुदरती बात यह है कि जिस नस्ल से कोई होता है उसी को पसन्द करता है ना कि गैर को। लफज अप्सरा से जाहिर होता है कि वो एक आली दर्जे की हसीन औरत थी तो किस तरह यकीन हो सकता है कि उसने हैवान को अपना खाविंद बनाया हो। इसी जगह कश्यप ऋषि ने साफ तौर पर **वाज्या** () कर दिया है कि अञ्जना और केसरी इन्सान थे। क्योंकि उसमे लिखा है कि केसरी इस वन का राजा था और जब उसने हाथी को मार कर जमीन पर गिरा दिया तो कश्यप ऋषि ने उसको ब्राह्मण पालक कहा है, और यह लफज सिर्फ इन्सान पर ही आयद होता है न कि हैवान पर क्योंकि उसको तो अपनी ही सहायता करनी मुश्किल है। आदमी का पालन किस तरह कर सकता है। आगे चलकर मुसनिफ ने बिल्कुल आईना कर दिया है। वो कहता है कि हनुमान के जन्म लेने से दोनों स्त्री पुरुष सुख मान कर उनको **बहार** करने लगे। ये लफज स्त्री पुरुष का हमारे रहे सहे शक्क को भी इस तरह साफ कर देता है। जैसे सहागा सोने को।

दोएम (दूसरा)। वाल्मीकि रामायण मे लिखा है (देखो वाल्मीकि रामायण किञ्चिन्द्या काण्ड सफा ७५ सुर्ग ६२ मुतरज्जम पर श्री दयाल) कि जब अञ्जना ऋषि की बहुआ से बन्दरी हो गई तो साथ ही ऋषि ने उसको अप्सरा रूपी स्वरूप धारण करने का वर भी दे दिया था। इससे वाजिया होता है कि अञ्जना ने एक घड़ी भी बन्दरी का स्वरूप न रहने दिया होगा और उसी वर की ताकत से फौरन स्त्री बन गई होगी क्योंकि कोई इन्सान खुशी से हैवान का जिस्म पसन्द नहीं कर सकता। आगे चलकर लिखा है कि अञ्जना हार शृंगार कर सुन्दर वस्त्र पहने पर्वत की चोटी पर बैठी थी और यहाँ उसका पवन देवता से मिलाप हुआ अब और गौर का मुकाम है कि हैवान को भी हार शृंगार या वस्त्रों का शौक होता है या नहीं? अब जवाब होगा हर्मिज नहीं! भला एक बन्दर की स्त्री याने बन्दरी को सुर्मा कंधी दातुन वगैरहा सोलह शृंगार की क्या तमीज हो सकती है।

सोइम (तीसरा)। अगर कहा जावे कि हनुमान जी बमु जब हर वो रामायण पवन देवता के वीर्य

سترجمہ جو لاپڑا و مصروف چاپ پیشی اتنا بت کرنا ہے کہ کیمسری نہیں تھا بلکہ قدرتی بات ہے کہ جس نہیں ہے کوئی ہوتا ہے اسی کو پسند کرتا ہے نہ غیر کو۔ فقط پچھراست ظاہر ہوتا ہے کہ وہ ایک اعلیٰ درج کی حیثیت تھی۔ وہ کس طرح یقین ہو سکتا ہے کہ اس نے جیوان کو پسند فاونڈ نہیا ہوا ہے۔ اسی جگہ کشپ رکھنے سے صاف طور پر واضح کروالا ہے کہ ابھی اول کیمسری اُن ان تھے۔ کیونکہ اس میں بحکایت کے کیمسری اس بن کا راجحتا۔ وجہ اُس نے اسی کو مار کر زین پر گردوارا تو کشپ رکھنے سے اس کو بہترین پلاٹک کہا۔ اور یہ لفظ حرفِ اللہان پر ہی عاید ہو سکتا ہے نہ کہ جیوان پر کیونکہ اس کو قابضی ہی سماں تک کرنی ممکن ہے۔ آدمی کی بیان کس طرح کر سکتا ہے؟ اگر پلاٹھنٹ نے بالکل آئینہ کر دیا ہے۔ وہ کہتا ہے۔ کہ ہو مان کے جنم لینے سے دلوں اسٹری پر مشکل مان کر پیدا کرنے لگے۔ یہ لفڑا اسٹری پر مشکل کا ہائے ہے شکوک کو بھی اس طرح صاف کر دیتا ہے۔ جیسے سہا کر دے گو۔

دویم۔ بالکل را میں میں بھاہے (دیکھو) ایں بالکل کہنے کا مضمون ہے، سرگ ۲۷
سترجمہ پرنسپری دیاں اک جب اجنبی ارشی کی برد ناتے بندی ہو گئی۔ قوسانتری رشی
نے اس کو اچھیار پلی سر دبھارن کرنے کا دریجی دستے دیا تھا۔ اس سے دار خ
ہوتے ہے کہ اجنبی اسے ایک گھری بھی بندی کا سر دبھانے دیا ہے۔ اصرائیل کی
حالت سے فوراً اسٹری بن گئی ہو گئی۔ کیونکہ کوئی انسان خوشی سے حیوان کا جسم پہ
بنیں کر سکتا۔ آئے جل کر کھلے ہے کہ اجنبی ارشنگاڑ کر سندبر پر پہنچ پہت کی جو
بیرونی تھی۔ اور یہاں اُس کو بون دیوتا سے ملا پ ہوا۔ اب غور کہ مقام ہے کہ حیوں اذن کوئی
ارشنگاڑ یا بستروں کا شوق ہوتا ہے یا نہیں؟ جواب ہو گا ہرگز نہیں! بعد ایک بند کی
اسٹری یعنی بند ری کو سر مر۔ کنکعی اور موت ان غیرہ سول استنگاڑ کی کیا تینز ہو سکتی ہے۔
سوم۔ اگر کہا جادے کہ منہو مان جی بھو جب ہر وہ بیان لپون دیتکو دیج

से उत्पन्न हुए हैं केसरी के वीर्य से नहीं तो हम बड़ी खुशी से मान लेंगे क्योंकि वामुचे () पुराणों के पवन को देवता माना गया है तो किस तरह हो सकता है इन के वीर्य से हैवान पैदा हो? इस तरह शिव पुराण में हनुमान जी की पैदाइश शिव जी के वीर्य के करार दी गई है जिसको मानकर उनका पशु होना कभी भी सदा नहीं हो सकता।

चहारम (चौथा)। जब सुग्रीव और रामचन्द्र जी की मित्रता हुई उस वक्त हनुमान ने आग जलाई जिसके गिर्द फेरा कर रामचन्द्र जी और सुग्रीव ने **ओहदा पैमान** () किया (देखो वाल्मीकि रामायण किष्किन्धा काण्ड ४ सुर्ग) अब गौर तलब ये बात है कि आया बन्दर आग जला सकता है या नहीं? जो अब जरूर ये होगा कि बन्दर आग नहीं जला सकता। पस इससे साबित होता है कि हनुमान मनुष्य था न कि बन्दर। पंचमा महाराजा रामचन्द्र जी ने साफ तौर पर बतलाया है कि हनुमान जी **ऋग्वेद** यजुर्वेद और सामवेद का जानने वाला था। और व्याकरण भी उमदा जानता था। (देखो उर्दू वाल्मीकि रामायण सफा ५ किष्किन्धा काण्ड **मुतरज्मा पर्वतदयाल**) ये भी बयान किया है कि हनुमान जी रावण और बाली से ज्यादा बलवान और **वर्ण गोवैस** **गराज** और विष्णु से ज्यादा बहादुर थे। जो अलामात पण्डित और बुद्धिमान की शास्त्रों में दर्ज की है, रामचन्द्र जी ने सब हनुमान जी में बयान की हैं। बड़े अफसोस की बात है, कि महाराजा रामचन्द्र जी के कौल पर इतबार न करके हनुमान जी को बन्दर करार दिया जावे। तमाम बातों को छोड़कर सिर्फ इसी एक बात को लिया जावे तो आप मान लेंगे कि हैवान में और सब बाते हो सके तो हो सके लेकिन वेद शास्त्रों का पढ़ना बिल्कुल नामुकिन है। और कोई भी इस बात को तसलीम न करेगा कि हैवान भी इस विद्या को हासिल कर सकता है। इसलिए यहाँ साफ मालूम होता है हनुमान जी मनुष्य थे न कि बन्दर। चूँकि हमारे बहादुर जरनैल हनुमान जी का ताल्लुक सुग्रीव से भी है और उनको भी **सतत** बन्दर करार दिया गया है। लिहाजा मुनासिब मालूम हुआ कि इनके

سے ادپن ہو لو میں۔ کیسری کے دیج سے نہیں تو ہم شری خوشی ت، ان لیکے
کوئی نکھر ہو جب پورا لوگوں کے پوون کو دیوتا ناگا لگایا ہے تو کس طرح ہو سکتا ہے کہ ان کے
دیج سے جیوان بیدا ہمچو؟ اسی طرح شوپران میں ہنومان جھی کی بیدالش شوچی کے
دیج سے قرار دی گئی ہے۔ جس کو مان کر ان کا پیغام ہوتا کبھی بھی سدہ نہیں ہو سکتا
چھارہم۔ جب سُکر لو اور راجچن درجی کی مترا ہوئی اس دفت ہنومان
تھے اُن جلائی جس کے گرد پھر کر راجچن درجی اور سُکر لو نے عبده پیمان کی دلچشم
باہی نیون کی کندہ اکٹھنہ سرگ۔ اب خور طلب یہ بات ہے کہ آئینہ راکھ لاسکت
ہے یا نہیں جو اب ضرور یہ پہاڑ بنداگ نہیں جلا سکتا۔ اس سے ثابت ہو گئے
کہ ہنومان منش تھا۔ زکہ بندہ۔
چھم۔ جبار اور راجچن درجی نے صاف طور پر بتایا ہے کہ ہنومان جی رکھ دید
یکھر وید۔ درخت امام دید کا جانشناختا۔ اور دیکرن بھی علم جانشناختا دیکھو اس و بالسلکی
لامین صفحہ کشیدا کا مہست محیر پر دیوال یعنی بیان کیا ہے کہ ہنومان جی رون
اور بالی سے زیادہ بلوان اور ملن کو سیر گراج اور دشمن سے زیادہ بہاد فتحے جو علات
پشت اور پڑھی دلان کی شناسروں میں دیج ہیں۔ راجچن درجی نے سب ہنومان
جی یعنی بیان کی ہیں۔ بڑے انوں کی بات ہے کہ جبار اور راجچن درجی کے
قبل پڑھتے رک کے ہنومان جی کو بندہ قرار دیا جاوے۔ تمام بلوں کو جھوٹ کر سرف
ہمی ایک بات کو لیا جاوے سے تو اپ ان لیں گئے کہ جیوان میں اور سب بیان ہو سکیں تو یہیں
یکم ہر شاستر کا پڑھنا بالکل ناممکن ہے۔ اور کوئی بھی اس بات کو تسلیم نہ کر سکتا کہ جیوان
میں وہ یہ کو ماصل کر سکتا ہے۔ اس لئے بہاں صاف حکوم ہوتے ہے کہ ہنومان
جی منش تھے زکہ بندہ۔ پوچھ جا سے پہلے جی تل ہنومان جی کا تعلق سُکر لو سے
بھی ہے۔ اصل کا بھی یہ مصدقہ قرار دیا گیا ہے امہ امنا سب حکوم جواہر ان کے

ہالات کی بھی تفاصیل کی جاوے کیں کہ وہ بھی ہی وہان سے یا انسان؟ اور اس ساتھ دوسرے کے لئے رائین سے بڑھ کر اور کوئی معتبر کتاب نہیں ہو سکتی۔ اگر بعد وہ بان جی کی پیدا کی طرح بالی اور سکرلو کی بیان کا حال بھی نہ لاؤ کھالی دیتے ہے جو قانون قدرت کے برخلاف ہے۔ اور حلم نہیں کو صرف نہیں کہ تریکیں میں تریکیں میں انکرایسا بیان کیا ہے خیر کچھ بھی کیوں نہ ہو سکیں دلوں دیوتا کے سیچ سے پیدا ہو سے ہیں دیکھو رام، بالیکی اپنے اکاذ مصغرو ۲۹۰ اس بنتے کوئی وجہ نہیں کہ ان کو بندرا نا جاوے اور اس بات کی تقویت کے لئے ذیل کے فوٹوں کو غور سے ملاحظہ کیجیے۔

۱) جب راون بالی سے پیدا کرنے آیا تو اس وقت بالی سندھی کر رہتا تھا۔ دیکھو بالیکی رائین از کاٹ مصغرو ۲۵۰) کیا ایک جیوان کو سندھیا بغیر کے ادا کرنے کا جان ہو سکتا ہے؟ کہ جو نہیں۔

(دेखو وालمीکی رामायण किञ्चन्धा काण्ड سफ ۲۴ سुर्ग ۱۷)

۲) جب رामचन्द्र جی نے بालی کو تیار مارا تو اس نے اپنے مارے جانے کی وجہ دیکھا۔ جس پر اس نے جواب دیا تھا کہ اس کی استری کو گہری کیا ہے۔ جو دھرم شاستر کے برخلاف ہے۔ اس نے تھارے مارنے کا کوئی گنہ نہیں دیکھو بالیکی رائین از کاٹ مصغرو ۲۵۰) ناظرین جو کوئی نہیں، ان میں عورت ناوند کوئی دا بستہ نہ ہے۔ جو دھرم شاستر کا فذ ان لوں کے مقرر کیا گیا ہے نہ کہ جیوانوں کے ہے۔ جب یہ بات ہے تو ہمارا جریحہ جسے دیکھو بالی کو کہی بھی قتل نہ کرتے۔ اگر راجمند رجی نے جیوان سمجھ کر سلوک کیا تو اس دنیا کے تمام جیوان قتل کے سزاوار ہیں جیوان ہیں یا الٰہ کی دعیوں کو گہری کر دیتے ہیں۔

۳) جب بालی رामचन्द्र جی کے ہاتھ سے مارا گیا اُنگاد نے شاہنہ مर्यादا سے مृतک سंस्कار کرایا۔ دیکھو بالیکی رائین از کاٹ مصغرو ۲۵۰) ناظرین کیا آپ اب بھی بالی اور سکرلو کو بندرا سمجھتے ہیں؟ گلی ہی خیال ہے تو اجل کسی بندرا یا جیوان کی کراں دعیوں

5
होते दिखाओ। उसका होना तो नामुमकिन है। किसी हैवान को अपने **अवाहक** की लाश को दबाते या जलाते भी दिखा देना काफी होगा। मगर नहीं! इन बेचारों को इतनी तमीज कहाँ? जहाँ कोई मरा वहाँ पड़ा सड़ता रहा। कहाँ का जलाना और कहाँ का दबाना। और क्रिया कर्म वगैरा का तो नाम भी न लीजिए।

4 जब रामचन्द्र जी ने लंका पर चढ़ाई की तो अब्बल अंगद को जो बाली का बेटा था इलची के तौर पर रावण के पास रवाना किया ताकि उसको समझा कर सुलह करा दे और जंग तक नौबत न पहुँचे। अब सोचना चाहिये कि कहाँ एक हैवान **न तक से मफदूर** और कहाँ एक **सफार** का नाजुक ओहदा? अकल चक्कर खा जाती है कि किस तरह अंगद को हैवान करार दें। मौजूदा जमाने में जब इस काम के लिए एक लायक से लायक तजुर्बाकार इन्सान की जुस्तजू की जाती है। रामचन्द्र जी ने एक हैवान को रवाना किया हो।

5 जब रामचन्द्र जी लंका को फतह करके अयोध्या में आए तो दरबार आम किया इस वक्त मुल्क मुल्क के राजे और बड़े बड़े पण्डित मञ्जला हनुमान विभीषण जामवन्द और अंगद वगैरा इसमें शामिल थे और धर्म चर्चा होता रहा (देखो वाल्मीकि रामायण उत्तर काण्ड सफा ३९ सुर्ग ४०) नाजरीन इसका फैसला आपके जिम्मे हैं अगर आपने कभी अपनी मजलिसों और धर्म चर्चा के जलसों में हैवानों को शामिल किया है तो ये भी हुआ होगा। वरना ये कब मुमकिन हो सकता है कि महाराजा रामचन्द्र जी का दरबार और हैवान **मुसाहिब!** अकल कभी **बावर** नहीं कर सकती और न ऐसा होगा।

6 जब रामचन्द्र जी को राज तिलक हो गया तो तमाम वानरों को अपने घरों को रवाना किया। और हर एक को दर्जा ब दर्जा **हिलक** अदा किया। उम्दा उम्दा कपड़े जेवर और जेवहरात इनायत किए। सीताजी ने अपने गले की माला उतारकर हनुमान को दी (देखो लंका काण्ड सफा १४६ सुर्ग १३९) माना कि वो बन्दर थे मगर उन्हे जेवर और कपड़ों से क्या काम? जरो जेवहरात की क्या कद्र? अगर है तो आजकल भी लाखों बन्दर हैं। किसी एक को कपड़ा या जेवर

ہوتے वक्हादे। ऐसा کامونामूल्क है। कोई हैवान को अपने رाह्त की लाश को दूर करने वाले नहीं हैं। जब रामचन्द्र जी ने लंका पर चढ़ायी थी तो वाम्पी नामी जहां कोई वर्षाली नहीं थी। वहां का जलाना एक कहां है। और कोई अर्थ विविध तो नामी नहीं। (५) जब रामचन्द्र जी ने लंका पर चढ़ायी थी तो वाम्पी नामी से مسح दराव की जाने वाली अपनी जलाली है। जब रामचन्द्र जी ने लंका पर चढ़ायी थी तो वाम्पी नामी की जलाली है। लंका पर चढ़ायी थी तो वाम्पी नामी की जलाली है। लंका पर चढ़ायी थी तो वाम्पी नामी की जलाली है।

(५) जब रामचन्द्र जी ने लंका पर चढ़ायी थी तो वाम्पी नामी की जलाली है। लंका पर चढ़ायी थी तो वाम्पी नामी की जलाली है। लंका पर चढ़ायी थी तो वाम्पी नामी की जलाली है। लंका पर चढ़ायी थी तो वाम्पी नामी की जलाली है। लंका पर चढ़ायी थी तो वाम्पी नामी की जलाली है। लंका पर चढ़ायी थी तो वाम्पी नामी की जलाली है।

पहनते और जरो जवहरात रखते दिखा दिजिए! प्यारे नाजरीन! ये हमारी समझ का कसूर है। हकीकत में वो वानर थे न कि बन्दर जो एक जंगली कौम थी और उन दिनों महाराजा रामचन्द्र जी के साथ जंग में शामिल थे। सिर्फ उनके उलटे माने किए गए हैं। इसलिए आगे चलकर आपकी दिलचस्पी के लिये इसकी **तशरीह** की जाती है।

खुलासा तमहीद

जब हम रामायण को पढ़ते हैं तो विचार करते हैं कि लायक मुसन्निफ वाल्मीकि जी ने हनुमान वगैरहा को बानर क्यों कहा? क्या इनके नजदीक ये सब पशु थे? हर्गिंज नहीं! प्यारे सज्जनों रामायण से तो साफ मालूम होता है कि वाल्मीकि जी ने उनको पशु नहीं माना। अगर ऐसा होता तो हमको ये मौका कभी न मिलता कि हम उनकी तसवीर की मुनसिद सदा करते। मालूम होता है कि मामला कुछ और ही है। संस्कृत के कोश में बानर इसको लिखा है ‘जो बन मेरे रहे और अपनी उम्र का बहुत सा हिस्सा जंगली फलों पर गुजारे’। दर हकीकत वो लोग किसी जमाने में इसी तरह जिन्दगी गुजारते थे और भील और गुंडों की तरह रहते थे (देखो पिक्चर आफ इंडिया मुसल्फा मिस्टर अरकट सफा २९१) और माबेन दरिया से केवरी और रामनाथ या हिन्दुस्तान के उन पहाड़ों पर जो नासिक से बम्बई की तरफ होते हुए सितारा के इलाके से गुजर कर निजाम कुन की तरफ चले गए हैं आबाद थे। और बानर के खिताब से मशहूर थे। चूँकि इस जमाने में ये आम लफज था वाल्मीकि जी ने उसकी तशरीह करनी मुनासिब न समझी। जब जहालत का जमाना शुरू हुआ और बवजह तिजारत या सिरोसयाहत दूसरे मुल्कों का आना जाना बन्द हो गया और न ही कोई त्वारिख हमारे हिस्से में आई, तो हमने असली हालात से नावाकिफ होकर बानर के अर्थों को बन्दर पर घटाया। और उसपर दिल खोलकर हाशिया चढ़ाया, जो मन में आया वो ही धर दबाया। उनके कामों को प्रचार करना तो दरकिनार, अपनी ही तहरीर की सुध न रही कि पहले क्या लिखा है

پہنچتے اور زد و جواہر کھٹے دلکشاویکے پیارے ناظرین یہاں ری گھر کا قصور ہے تھیت
میں وہ باز نہیں تھے تاکہ بند جو ایک جنگلی قوم تھی۔ اور ان دونوں مدارجِ الحمد رحی
کے ساتھ ہنگ کیں شامل تھے۔ صرف ان کے ساتھ سنتھے تھے ہیں۔ اس میں
انگوھیں کڑاپ کو دلپسی کے مئے اس مکمل شریع کی جاتی ہے۔

حلاصۃ تحریر

جب ہم را میں کوئی قسم ہیں تو وہاڑ کرتے ہیں اور لائیں مصنف بالمیرک جی سے ہٹوان غیر وہ
ایوں کہا ہے کیا ان کے نزدیک یہ سب پیش تھے؟ ہرگز نہیں اپنیا سے جنوں را میں سے
لوصاف حعلوم ہوتا ہے کہ بالمیرک جی سے ان کو اپنے نہیں ہاما۔ اگر ایسا ہوتا تو ہم کو یہ تو
جھبی نہ لے کر ہم ان کی تعینیت سے ہی منش سدہ کرتے اس حعلوم ہوتا ہے کہ محال کچھ
اور ہی ہے۔ سنکریک کوش میں بازار کوئی ہے جو بن تریں سبے اپنی ہٹرکا بست
حصہ جگہ پھولوں پر گزارے۔ وحقيقۃ وہ لوگ کسی زار میں اسی طرح زندگی گذارنے
تھے اور یہیں اور گونڈوں کی طرح رہتے تھے دیکھو پچھا آؤ۔ اتنا یہ منفہ مشرور کرت
صفحہ ۲۹۱ و ۲۹۲) اور ابیں دریا سے کیوں اور رام نا تھا یا ہمنہ و سستان کے ان پہاڑوں
پر جناسک سے بیسی کی طرف ہوتے ہوئے سترارہ کے علاوہ سے گذرا کر ظاہر کرنا
کی طرف چلے گئے میں آباد تھے۔ اور باخڑ کے خطاب سے شہپور تھے۔ چونکہ اس زمان
میں یہ سامان لفظ تھا بالمیرک جی نے اس کی تعریج کرنی ملنا سُبَابَ - بھی جب جیات
کا زمان شروع ہوا اور پیغمبر تھارت یا سیرو سیاحت دوسرے ملکوں کا آنما جانا پیدا ہو گیا
اوہ تھی کوئی تواریخ ہمارے حصہ میں ای تو ہم نے اصلی حالات سے ناواقف ہو کر اُن کے
درستھوں کو بند برپا کیا اور اس پر دل بھول کر جا شیخ چڑھا یا جو من میں آباد ہی دھر
دلیل اُن کے کاموں نکل کر کرنا تو درکار بخوبی تحریر کی سُسَه نہ ہی کر سچے کی الکھا بے

और अब क्या लिख रहे हैं। गर्ज इन बहादुरों के कारनुमाया को नजर अन्दाज करके हैवान का रुतबा इनायत कर दिया। लिहाजा मजकूरा बाला मजमून की इदायत के वास्ते एक मिसाल दर्ज की जाती है जिससे आप जहालत की चालाकी बाखूबी समझ जायेंगे। मसलन आजकल लाला रामदास सूरी एक मशहूर मारूफ वकील उनके असली दर्जे के वकीलों की फेहरिस्त में दर्ज है। और हर कोई जानता है कि वो खत्री हैं सूरी सिर्फ इनकी जात का खिताब है जो इनके नाम के साथ लिखा गया है। अरसा दराज के बाद जब पंजाबी भाषा का रिवाज न हो और न ही कोई त्वारिख हो जिससे मालूम हो सके की सूरी खत्रीयों की एक शाख का खिताब है तो इस फेरिस्त को देख बिना हिल्यात करने उनकी लियाकत वगैहरा के हर कोई ताजुब से कहे कि किसी जमाने में पंजाब में सूर की किस्म के हैवान भी वकालत करते थे। बाइना यही हालात हमारे वानर लफज की हो गई है। लेकिन ये सब अविद्या की महरबानी है। जहालत तू कब हमारा पीछा छोड़ेगी? अब तो रहम करा। अफसोस तेरी महरबानी से हम अपने बहादुरों को हैवान बनाकर खुश हो रहे हैं। अगर कोई सच कहे तो उल्टी सलवाते सुनाते हैं। जब हमारी खुद ये हालत है तो गैर कौमे जिस कदर तमसखर में उड़ाए मनासिब है।

प्यारे नाजनीन पेश्तर इसके कि हम हनुमानजी की स्वनय उम्री पर कलम उठाए अब्बल मुनासिब मालूम हुआ कि उनके वालदैन के हालात भी मशरूह तौर पर बयान किए जाए क्योंकि जब तक उनके वालदैन का मुफसिल हाल मालूम न हो हमारा असली मकसद जाहिर होना निहायत दुश्वार मालूम होता है। गोया इस स्वनय उम्री का ढंग एक निराला ढंग मालूम होता होगा लेकिन बगैर इसके कोई चारा भी नहीं। लिहाजा हम अपने मोइजिद नाजरीन से माफी मांगकर अपने बहादुर जरनैल हनुमान की स्वनय उम्री का सिलसिला इनके वालदैन के हालात से ही शुरू करते हैं जो कुतुबहारे की जबाने गुजराती में से एक

ادب کی کمک ہے میں خوبی مان اپنادوں کے کارخانیاں کو نظر انداز کر کے جیوان کا
رتعینہ خدایت کر دیتا۔ لہذا کوئی بلامضمون ان تائید کے داشتہ یہ کہ مثال برج کی جاتی
ہے جس سے آپ چھالت کی پالاکی بخوبی سمجھ جائیں گے۔ مثلاً جمل لارام داس سوی
ایک مشہور و معروف دلکشیں اور ان کا فام اصلی درج کے دلکشیوں کی نہرست میں
درج ہے اور سرکوئی جاتی تھے کہ اس سرکوئی میں سوری صرف ان کی ذات کی خطاب
ہے جو ان کے نام کے ساتھ گاؤں یا سبے عرصہ از کے لامجد حبیبے خانیں بھاشان کا
رواج نہ ہوا اور زیریں کوئی نہ ایک چو جس سے معلوم ہو سکے کہ سوری کھٹکے لوں کی ریک
شاخ کا خطاب ہے تو اس نہرست کو دیکھ بمالح انہ کرنے ان کی لیاقت وغیرہ کے ہر
کوئی تعجب سے کہتے کہ اسی زبان میں چاہیں سوکی قسم کے جیوان بھی دکات کرتے
تھے ابعینیہ یہ حالت ہماں باز لفظ کی وجہ کی ہے لیکن یہ سب اور یاکی وجہ والی ہے
میں اچھات تو کب ہمارا بھی چھوڑتے گی؟ اب تو رحم کرا! انوس تبری اور ڈالی سے
مہم پتے پیدا و رسول کو جیوان بنانا کو شو شو ہے میں۔ مگر کوئی برج کے تو اتنی مسلو اتنیں
مندانے میں جب ہماری خود یہ حالت ہے تو غیر قریبیں جس قدر مخفیں اڑائیں
مناس سے۔

پیارے بخوبی اپنے سر کے کہم ہنومان جی کی سوانح عمری پر علم و تھاں
دولت مناسب حلوم ہو کر ان کے والدین کے حالات بھی شرح طوب پریان کے
جایس کیوں جب تک ان کے والدین کا مفصل حلول نہ ہوا راستی مقصد
ظاہر ہونا نامیت و شوارحلوم ہوتا ہے۔ گوس سوانح عمری کو دھنگ ایک نالا
ڈھنگ حلوم ہو گا۔ لیکن بجز اس کے کوئی چاہے بھی ہنسی اپنا حرام پسے معزز نظریں
سے معافی لگ کر اپنے یہاں درجیں ہنومان کی سوانح عمری کا سند ان کے
والدین کے حالات سے ہی شروع کرتے ہیں جو مکتب اے زبان گجراتی میں سے ایک

अरसा की छानबीन के बाद हासिल हुए हैं।

हमारा इरादा था कि सीधी सादी इबारत में **खुदही** नाजरीन करे लेकिन रफ्तारे जमाना को कोई देख और **एहबात की कसर राते** को मद्देनजर रख कर नावल की तर्ज इखियार की गई है। अगरचे मजमूम की दिलचस्पी के लिहाज से इबारत **आराई** की गई है, लेकिन **ताहम** इस असली वाक्यात को नजर अन्दाज नहीं किया गया है। आखिर में हम ठाकुर बलजीत सिंह साहिब और ठाकुर अक्षरचन्द और लाला जसवंत राय साहीबान के बेहद **मशगूर** है **दास निसान** के बाद इस दिबाचा को कलमबंद करते हैं। जिनकी **तरगीब बाइस्ता लिफका हुई**

ये वो किस्सा नहीं जिसमे बनावट की हो कुछ बाते
बयाँ **पुरदर्द** है जरनैल बहादुर की कहानी का

ठाकुर सुखराम दास चौहान
लाहोर

عوصد کی چھان بین کے بعد حاصل ہوئے ہیں۔

تبار ارادہ لخا کر سعید صی سادی عبارت میں پڑی ناظرین اکیں دنیا روزانہ کو دیکھ اور احباب کی اگر تر، راستے کو مد نظر کھنڈال کی طرز اختیار کی گئی ہے۔ اگر جنون کی وچھپی کے لحاظ سے عبارت اسلامی کی گئی ہے ایکیں تاہم صی داعیت کو نظر نہیں کیا گیا۔

آخری جملہ کا بھیت سنگ صاحب اوٹھا کر اچھر چن را اور لار جو نوت راستے صاحبان کے بے حد مشکوری و امتنان تے بعد اس دیباچہ کو قلمبند کرنے میں۔ من کی ترغیب باعتدالیف کا ہوئی۔

یہ نقصہ نیسخ جس بناوٹ کی ہوں گے باقی
بیان پُرورد ہے جریل بہادر کی کہانی کا

ٹھاکر سکھرم داس چوہان

لاهور

बाबे अव्वल (पहला अध्याय)

महेन्द्रपर

हमारे नावल का सिलसिला इस जमाने के बाक्यात से शुरू होता है जिसको आज लगभग आठ लाख, बरस गुजर गए हैं और रामायण का जमाना कहलाता है। इस वक्त राजा महेन्द्र राय, एक मुख्तसर (छोटी) सी रियासत जिसका **दारुल हुलाफा** महेन्द्रपर, है हक्मरान है।

एक दिन सुबह के वक्त जबकि आफताब तुलु (उदय) हुआ जाता है और ठंडी ठंडी हवा चल रही है राजा महेन्द्रराय की राजदुलारी अञ्जना देवी सखी सहेलियों के हमराह अपने दिल्खुशा वक्त और अफजा बाग के अन्दर गिलगिशत (ठहल) कर रही है कुदरती दिलचस्पियों को निहायत शौक से देखती हुई जा रही थी कि नागाह (अचानक) उसकी निगाह उस खुशनुमा पौधे पर पड़ी खुशरंग लहलहाते हुए फूल नजर आ रहे हैं न जाने इसके दिल मे क्या ख्याल गुजरा है देर से टिकटिकी लगाकर इन फूलों की तरफ देख रहीं हैं और अब कुछ सोच कर बसन्तमाला से मुखातिब हुई हैं।

१ देखो तारिखे दुनिया हिस्सा दोयम सफा ७४ मुसनफा पण्डित लेखराम आर्य
मसाफिर

२ देखो अञ्जना सप्तवन रास बजबान गृजराती

३ ये शहर हिन्दुस्तान के इस जुनूबी हिस्से पर जो वानरद्वीप के नाम से मशहूर था (देखो नक्शा मुन्तलिका दिबाचा) माबेन दरियाई तटका मत्तबर ओकान देरी के आबाद था यहाँ के बाशिन्दे मिसल तहसील गोंट और कोल के थे (देखो पिक्चर्ज आफ इण्डियन लाइफ मसनफा मिस्टर अरकस्ट साहिब सफा १६९ व १७०)

باب اول

مہندر پور

ہماری ناول کا سلسلہ اس زمانے کے واقعات سے شروع ہوتا ہے جس کو
آج تقریباً آئندہ لاکھ برس گذئے ہیں اور رامائن کا زمانہ مسلمانوں کے اس
وقت راجہ ہمند رائے ایک تختسری ریاست پر جکا دارالخلافہ ہند پر ہے
حکم ادا کرتے ہیں۔

ایک دن صحیح کے وقت جبکہ آفتاب طلوع ہوا چاہتا ہے اور ٹھنڈی ٹھنڈی ہوا پہل رہی ہے راجہ محمد رارے کی راجو و دلاری انجنیادیوی سکھی میلیوں کے ہمراہ اپنے دل کشاد ذہت اڑا باغ کے اندر گلاشت کر رہی ہے، قدتی دل میلوں کو نمایت شوق سے دیکھتی ہوئی جا رہی تھی کہ نگاہ اُسکی نگاہ اُس خوشناپد سے بُڑتی جس میں خوش رنگِ لعلاتے ہوتے پھول انظر آرہے ہیں۔ نجافے اس کے دل میں کیا خیال گز۔ ابھے۔ کہ دیر سے ملکی کان بھولوں کی طرف بیکھری ہے اور اب کچھ سچ کسبت مالا سے خاطب ہوئی تھی

نه و گیجوره اینچ دین حصر دیم صفویه، مصنف پنجمت لکھرام آریه سافر
نه و گیجوره اینچ دین حصر دیم صفویه، مصنف پنجمت لکھرام آریه سافر

دیگر ایسا پیغمبر نہیں کہ اسی بھائی ورنہ
جسے تہذیب و تسلیم کے نام سے مشہور تھا۔ ایک جو نقش منظر
بیان ہے جس میں ایک صدر جو مدرس کے نام سے
اوکاری کر رہی تھے ایسا بادشاہ۔ بیان کے باشندے سے مت عصی گویا
مکول تھے اور کوئی پیغام بھونٹلے بن لایں۔ مصنفوں ستر ارکسٹر صاحب صفحہ ۱۰۹

अञ्जना देवी ‘सखी देखो ये कैसे पुररजा दिल लुभाने वाले फूल खिले हैं और बागे शगूफे अभी मानिन्द इस हर्सी महजबीन के जो सुर्खीमय होंठों में मुस्करा रही है सब नकाब में से नजर आ रहे हैं जिसके देखने से नजर सैर नहीं होती (मन नहीं भरता) और ईश्वर की कुदरत जाहिर होती है मगर साथ ही इनको भी देखना जो नीचे नाली में पड़े सड़े गन्दे मालूम होते हैं एक वो जमाना था कि ये भी ऐसे ही खुशरंग और दिलपसन्द थे लेकिन अब तो इनके देखने से तबीयत बेजार होती है इस तरह इन्सान की जिन्दगी भी तीन हालतों में मुन्कसिम है यानि की लड़कपन जवानी और बुढ़ापा मगर प्यारी सखी सबसे अफजल और आला हालात जवानी है जिसमें इन्सान सरमाया दीनी और दुनयावी मुहर्रिया कर सकता है इसमें कुछ शक नहीं कि जिस वक्त इन्सान आलमें जवानी में होता है नफजानी ख्वाहिश इन्तहा दर्जे की बढ़ जाती है मगर बहादुर वही है जो इनको मगलूग कर खुद गालिब आए वरना इन्सान और हैवान में क्या फर्क है इन्सान को लाजिम है कि जवानी की हालत को नगनीमत जान दोशाय अकबद और सरमाया पैरी जमा करे जहाँ तक हो सके नेकी करे दूसरों को एजा (तकलीफ) न पहुँचाए वरना याद रहे इन सड़े हुए फूलों की तरह बुढ़ापे में निकम्मा हो पछताना पड़ेगा। दुख सुख शरीर का भोग जान जो ईश्वर पर भरोसा रखता है वो ही इस दुनिया में होशो हुलम रखता है।

बसन्तमाला कुछ कहने को थी कि इन्द्रमणि बोल उठी।

इन्द्रमणि “राजदुलारी तुम तो बड़ी ज्ञानवान हो। हाँ क्यों न हो माता का घर है पिता का राज है कल का ज्ञान कहाँ जो आज है जब ससुराल में जाऊँगी तब यहाँ की कदर पाऊँगी वहाँ अपनी खुशी से चलना फिरना मुश्किल होगा बाकी सैर और ज्ञान तब याद आएगा जब ननद की बोलियाँ और सास की धमकियाँ

انجنا دیوی - سکھ! دیکھی کیسے پر فزادل بھانے والے پھول کھلے ہیں ادا
بینے شکنے ابھی مانند اُس حسین سرجین کے جو سرخی مائل ہونٹوں میں سکرا
رہی ہو بہتر تفاب میں سے نظر آ رہے ہیں جن کے دیکھنے سے نظر سیر نہیں ہوتی اور
ایشور کی قدرت ظاہر ہوتی ہے۔ مگر ساتھ ہی اُن کو بھی دیکھا جو پہنچنے والی میں
پڑے سڑے گنے سے معلوم ہوتے ہیں۔ ایک وہ زمانہ تھا کہ یہ بھی لیے ہی خوش رنگ
اور دلپست نتھے لیکن اب توان کے دیکھنے سے طبیعت بیزار ہوتی ہے۔ اسی طرح
انسان کی زندگی بھی تین حالتوں میں منقسم ہے۔ یعنی لا کپن جوانی اور سیری
مگر پیاری سکھی! بہ سے افضل اور اعلیٰ حالت جوانی ہے جس میں انسان سرمایہ
دینی و دینبوی صیا کر سکتا ہے۔ اس میں کچھ شک نہیں کہ جس وقت انسان عالم
جوانی میں ہوتا ہے فتنائی خواہیں انتاد رجہ کی بڑھ جاتی ہیں۔ مگر باور دی
ہے جو ان کو مغلوب کر خود غالب آئے ورنہ انسان اور جوان میں فرق ہی کیا ہے؟
انسان کو لازم ہے کہ جوانی کی حالت کو غنیمت جان تو شدھ عاقبت و سرمایہ یعنی
جمع کرے۔ جاننک ہو سکے نیکی کرے۔ دو سکے کو اینداز پہنچاوے۔ ورنہ یاد ہے
اُن سڑے ہوئے پھولوں کی طبع بڑا پے میں نکاہ ہو پہنچانا پڑے یا۔ دو کے سکھ سیر
کا بھوگ جان جو اپنی سر پر جوہر سے رکھتا ہے۔ وہی اس دنیا میں خوش دخور م
رہتا ہے

سنت مالا کچھ کئے کو تھی۔ کہ اندر منی بول اٹھی۔
اندر منی۔ راج دُولاری! تم تو بڑی گیان دان ہو؟ مان کیوں شہر ماتا
کا گھر ہے۔ پتا کا راج ہے۔ کل یہ گیان کیاں جو آج ہے جی سرالیں
جا تو گی۔ تب یہاں کی قدم پاؤ گی۔ وہاں اپنی خوشی سے چلن پھرنا مشکل ہو گا۔
غ کی سیرا درگین تب یاد رکھ۔ جب منکی بولیاں اور سامنی کی دھمکیاں

होश उडाएगी । ऋषी का मान ज्यादातर खाविन्द पर होता है तो देखते हैं कैसा मिले चैन से रखे या दुख दे

अञ्जना देवी “जब वो दिन आएगा देखा जाएगा किस्मत के लिखे को कौन हटाएगा नसीबों में खुशी है तो गमी नहीं ईश्वर पर यकीन है और की आस नहीं”

इस तरह की बाते कर रही थी कि राजा और प्रधान वगैरहा बाग की तरफ आते हुए दिखाई दिए अञ्जना देवी जल्दी से सहेलियों को साथ लेकर महल को चली गई राजा लड़कियों को जाते देखकर “प्रधान ये कौन है?” प्रधान “महाराजा वो आगे आगे राजदुलारी सखी सहेलियों के साथ जा रही है” राजा “ऐं! वो राजदुलारी है?” ये कहा और सर झुका फिक्र में हो गया। और थोड़े से सकूक के बाद बोला

वर प्राप्त हुई अञ्जना सुनो मित्र प्रधान

बैठ पुजारो दर भला जो राखे कुल की आन

धर्म कर्म में हो जती और बढ़ा दो आन वर घर ऐसा मिले जो कृपा हो भगवान

बाब (अध्याय) दूसरा

वर की तलाश

आफताब तो हसरत भरी आखिरी निगाहों से दुनिया को देखता मगरिब को जा रहा है और हम अपने ख्याल को लिये गोदावरी नदी के जनूब में जो एक सिलसिला पहाड़ों का रोकाहोमो के नाम से रामायण में बयान किया गया है आ रहे हैं।

अभी हम इन पहाड़ों की सैर करते और कुदरती नजारें देखते हुए जा रहे थे कि चन्द एक आलीशान बुलन्द इमारते दाएं तरफ नजर पड़ी जिनके देखने के शौक ने हमको वहाँ तक पहुँचा ही दिया। गोया एक छोटा सा कसबा है। मगर आबादी

ہر ساری اینٹیکی - پیاری ! اس्टری کامان زیادہ تر خاوندی پر ہوتا ہے۔ سود کھیں
کیسا ہے سپین سے رکھے یا تو کھدے ۔

انجنا دیوی - جب وہ دن آئے گا دیکھا جائیں گا۔ قسمت کے لکھے کو کون شاید ۔
تفصیلیں میں خوشی ہے تو غمی نہیں۔ ایشید پیغام ہے۔ اور کسی آس نہیں ۔
اس طرح کی باتیں کرہی تھیں۔ کہ راجا اور پردوھان وغیرہ بارخ کی طرف آتے ہوئے دکھائی دیتے۔ انجنا دیوی جلدی سے سیلیوں کو ساختے محل کوچلی گئی
راچ۔ راڑکیوں کو جاتے دیکھ کر پردوہان یہ کون ہیں۔
پردوہان۔ مدارج وہ آگے آگے راج دو لاری سکھی سیلیوں کے ساتھ جا ہیں۔

ساجد۔ ایں ! وہ ساج دولا رسی ہے ؟
یہ کہا۔ اور سر بھکا گلریں ہو گیا۔ اور تھوڑی سی سکوت کے بعد پردوہان

ورپر پاپت ہوئی انجنا سونتر پر دہان۔ بیٹھ جبار و رہ جلا جور اکھے گل کی آن
دھرم کرم میں ہو جتی اور بڑا دو آن۔ درگھر ایسا تبلے جو ہو کر پا، حکوان

باب دوسرا ورکی تلاش

آفتاب تو حضرت بھری آخی ٹکا ہوں سے دنیا کو دیکھتا مغرب کو چار ٹھہرے ہواد
ہم پیشے خیال کو۔ گو و اور سی ندی کے جنوب میں جو ایک سلسہ ہماروں
کا روکماون کے نام سے رہا میں میں۔ بیان کیا گیا ہے آرہے ہیں۔
ابھی ہم ان بیانوں کی سیر کرتے اور تدرستی نظارہ دیکھتے ہوئے جا رہے
تھے کہ چند ایک عالی شان بلند عمارتیں دائیں طرف نظر پڑیں جنکے دیکھنے کے
شوک نے ہمکو ہاں تک پہنچا ہی دیا۔ گویے ایک چھوٹا سا صعبہ ہے۔ مگر آدمی

के लिहाज से इन तमाम पहाड़ी चीजों से कही ज्यादा अच्छा है। गली कूंचे मसफा और मकानात सिवाए उन चन्द महलों के जो दूर से दिखाई देते हैं यक (एक) मञ्जला हैं अगर शाम की तारीकी के बाद वो चन्द आलीशान इमारते अच्छी तरह नजर नहीं आती ता हम मसनोई रोशनी जो सुख्ख और तज शीशों से नमुदार हो रही है बतला रही है कि ये जस्ते यहाँ के राजा के महल जिनके देखने से इशालाक में हम इस तरफ को आए बढ़ रहे हैं।

इस वक्त रास्ते में हुजूम (भीड़) की यह हालत कि बाजार में चलना दुश्वार हो रहा है। देहाती लोग तो कसब (पाने की होड़) से हैं कोई आटा ले रहा है कोई दाल का लख पूछ रहा है। बस ज्यूँ-त्यूँ कर के हम एक चौक में पहुँचे यहाँ जो कैफियत नजर आई वो ये कि इस जगह खड़े होने से देखने वाले की निगाह मशरिक (पूर्व) से मगरिब (पश्चिम) और शमाल (उत्तर) से जुनूब (दक्षिण) को बगैर लिहाज किसी रुकावट के साफ निकल जाती है। क्योंकि पेशतर इस किस्म का चौक हमारी नजर से नहीं गुजरा था इसलिए हम बड़े शौक से वहाँ खड़े होकर देखने लगे। इतने में हठो हठो की आवाज आई चनाचा हम भी एक तरफ को दबक गए।

दरयापत करने से मालूम हुआ कि प्रधान बुद्ध प्रकाश की सवारी आ रही है जो राजा महेन्द्र राय के महल को जा रहा है।

आहा ये तो महेन्द्रपुर है जिसके नाम से नाजरीन बखूबी वाकिफ है।

राजा महेन्द्र राय का नाम सुनकर हमारा शौक भी जोश जूनून की तरफ बढ़ा और हम उस सवारी के पीछे पीछे हो लिए। थोड़ी दूर गए होंगे कि एक बड़ा आहंगी फाटक दिखाई दिया जिसके दोनों तरफ दो सिपाही नंगी तलवारे हाथों में लिए पहरा दे रहे हैं। प्रधान को देखते ही फाटक खोला गया और उसकी सवारी अनदर दाखिल

کے لحاظ سے ان تمام پہاڑی شہروں سے کمی درج اچھا ہے۔ لگی کچھ مصروف اور مکانات سوائے ان چند محلوں کے جو دوسرے دکھائی دیتے ہیں بکھر لے ہیں اگرچہ شام کی تاریکی کے باعث وہ چند عالیشان عمارتیں اچھی طرح نظر نہیں آئیں تاہم مصنوعی روشنی جو سارے اور بزرگ شیشوں سے نمودار ہو۔ ہی ہے بتلا رہی ہے۔ کہ یہ ضرور یہاں کے راجح محل ہیں جنکے دیکھنے کے اشتیاق میں ہم اس طرف کو ڈھنے۔

اس وقت راستہ میں بھوم کی یہ حالت ہے کہ بازار میں چلتا دشوار ہو رہا ہے ویہاقی لوگ تو کشت سے ہیں کوئی آٹا لے را ہے کوئی دال کائسخ پوچھ رہا ہے غرض جوں توں کر کے ہم ایک پوک میں پہنچ یہاں جو کیفیت نظر آئی دھی ہے کہ اس جگہ کھڑے ہونے سے دیکھنے والے کی نگاہ مشرق سے مغرب اور شمال سے بہز کو بغیر لمحاظ کرے۔ کامٹ کے صاف نکلا جاؤں۔

جو نکل پیشتر اس قسم کا چوک ہماری نظر سے نہیں گذر اتحاد اس لئے ہم بڑے
سوق سے دن ان کھڑے ہو کر دیکھنے لگے اتنے میں ہٹو بچوکی آواز آئی چنانچہ
ہم بھی ایک طرف کو دیکھ لئے +

دریافت کرنے سے مسلم ہوا کہ بردناں بیڑپکاش کی سواری آرہی ہے
خوراچ ہندوراے کے محل کو جارہا ہے۔

کا ہے تو حسند رپورہے جس کے نام سے ناظرین بخوبی واقع ہیں +
 راجہ حسند رپارے کا نام سنکر ہمار اشوق بھی جوش جنون کی طرح بڑا اور ہم
 اس سواری کے پیچے پیچے ہوئے۔ تھوڑی دور گئے ہوئے کہ ایک بڑا آہنی چاند
 کھاتی دیا جسکے دونوں طرف دوسپاہی نگی تکاریں ناتھوں میں لئے پڑہ دے
 ہے میں پر دن ان کو دیکھتے ہی چھانک کھو لا گیا اور اسکی سواری اندر داخل

हुई हम भी साये की तरह सिपाहियों की नजर से अपने आप को बचाते हुए साथ ही निकल गए।

अन्दर जाने से आला दर्जे की इमारतें दिखाई दी मगर उनके देखने का इतफाक ही कुछ न हुआ और हम प्रधान के साथ दाएं तरफ के दालान मे जिसकी चारदिवारी सड़गेमरमर की तरह साफ और सुथरी बनी हुई है, और नीचे एक बेशकीमती कालीन बिछा है चले गए। इस दालान मे एक झाड लटक रहा है जिसकी मसनोई रोशनी ने कुदरती उजाले को भी शर्मिन्दा कर दिया है और सुर्ख कालीन पर एक शबर मखमल का गदेला पड़ा है जिस पर राजा महेन्द्र राय **एक** तकिये का सहारा लिए बड़ी आन बान से बैठा मंत्रियों से गुफ्तगू कर रहा है। प्रधान को देखते ही बोला

राजा “आइए प्रधान जी अभी आपको ही याद कर रहे थे”

प्रधान आदाब बजा लाकर “बन्दा भी हाजिर है”

यह कहकर चन्द तस्वीरे निकाल कर आगे रखी और उनमे से दो उठाकर राजा के हाथ मे देकर कहा

प्रधान “महाराज! अगरचे बहुत से राजकुमारों की तस्वीरें मँगाई गई हैं लेकिन उन सब में से मेरी नजर तो इन दो पर ठहरी है आईन्दा हुजूर मालिक है” बाकी तस्वीरों को जरा आगे को कर के “इनका भी मुलाहिजा किजिए”

राजा सरसरी नजर डालकर “इनको रहनो दो”

ये कहा फिर उन दोनों तस्वीरों को उठाकर देखने लगा बाद बहुत सी कीलोकाल और ऊँच नीच की पड़ताल की सोचता हुआ वहाँ से उठा और रानी बेगमोहिनी के पास ले गया

राजा “प्रियजी! आप इन दोनों मे से किसको अञ्जना देवी के लायक ख्याल

होऊ जेम भजी साने की ट्रैक स्पाइसों की नदरों से अप्ने आप को बचाते होने ساتहे ही नक्ल करें।

अन्दर जाने से अगले दिने की उत्तरियां दखाती दिन मगान के दिक्षिणी का अन्दर जाने से ही कैफ्यत नहीं हो और जेम परदान के सातहे दैनिक त्रफ़े के दालान मे जारी होनी वाली दिन भी बहुत ही अच्छी तरह उत्तरियां देखती हैं। एक चार दिवारी स्नैक मरमर की ट्रैक स्पाइसों की नदरों से अप्ने आप को बचाते ही अच्छी तरह उत्तरियां देखती हैं। एक चार दिवारी स्नैक मरमर की ट्रैक स्पाइसों की नदरों से अप्ने आप को बचाते ही अच्छी तरह उत्तरियां देखती हैं। एक चार दिवारी स्नैक मरमर की ट्रैक स्पाइसों की नदरों से अप्ने आप को बचाते ही अच्छी तरह उत्तरियां देखती हैं। एक चार दिवारी स्नैक मरमर की ट्रैक स्पाइसों की नदरों से अप्ने आप को बचाते ही अच्छी तरह उत्तरियां देखती हैं।

परदान - (आदाब बजाकर) बन्दे भजी हास्त्र हैं।

ये कर्कि जै तस्वीरों नकाल कर आगे रखिए और अन मिसे दो अंधाकरण के बातहे मिस दे कर कमा

परदान - महाराज! आर्ज बहत से राज कमारों की तस्वीरी लिए रखिए और मगान सब मिसे मिरी नजरों दो पर रखिए ती है आईन्दे हस्त्र मालिक ही राजी तस्वीरों को फ्रांसे करें। अलाभी माल लाल रखिए

राजे - (तस्वीरी नظر दाल कर) अन को रहने दो ॥

ये कमा और चरान दोन तस्वीरों को अंधाकर दिक्षिणी लगा। बुद्धत सी तिल ताल और ओंच निंज के परताल के सोचा हो और मासे अंधा और रानी बिगां मोहनी के पास ले गिए।

राजे - परियजी! आप अन दो मिसे के क्षमा को अंधनादियों के लाइन खिल

करती है ये जो पीताम्बरी धोती पहने है हरनदयाल विद्याधर के लड़के विदुपर्व की है और दसरी प्रहलाद विद्याधर के लड़के पवन की है।

रानी बेगमोहिनी पहले तो देर तक दोनों तस्वीरों को देखती रही बाद में कहने लगी बेगमोहिनी ‘स्वामीजी! मेरे नजदीक तो दोनों अच्छे हैं सिर्फ इतना फर्क जरूर है कि जिसको आप वो विदुपर्व के नाम से बताते हैं बदन का कुछ कमज़ोर जाहिर होता है मगर इसके जन्म चक्रों से मालूम होता है कि बड़ा भागवान और और विद्वान होगा और दसरे जो पवन की है मैं एक शून्यीर और विद्वान दिखाई देता है

राजा “नहीं! प्रिय जी! एक और बात है जिसको बतलाना मैं भूल गया वो ये है कि विदुपर्व के बावत मन्त्री वगैरहा का ख्याल है कि अगरचे ये बहुत ही अच्छा और खूबसूरत लड़का है मगर ज्योतिष विद्या से मालूम हुआ है कि इसकी उम्र बहुत कम है इसलिए मद्दको शक पड़ गया है वर्ना मेरी निगाह तो इसी पर थी”।

रानी ‘‘स्वामीजी! अगर ये बात है। तो इसका नाम ही न लिजिए क्योंकि जब बात में शक पड़ जावे उसका नतीजा अक्सर अच्छा नहीं होता’’

राजा “प्रियजी! क्या मैं नादान हूँ? मेरी एक ही लड़की है जब तक अपनी तसल्ली न कर लँगा नाम न लँगा”

रानी “महाराज! बेशक ये मामला बड़ा नाजुक है अब्जना देवी की आईंदा जिन्दगी का मदार इसी वक्त के सोचने पर **मुलहजिर** है। हमारी तो चन्द रोज की खुशी है और इसकी तमाम उम्र का तकाजा है”

देखो रामायण जबान गुजराती बाब तीसरा सतर १२

کرتی ہیں جو پتھری دھوتی پہنے ہے بہر نیات و بیا دھر کے لڑکے دو درب کی سے اور دوسری سر ٹھلاؤ دھار کے لڑکے یون کی ہے۔

رانی سیگ مو هنی پسلے تود پر تک دو نو تصویر دل کو دیکھتی رہی بعد میں
کئے آگئے

بیگ موبہنی۔ سوامی جی! میرے نزد دیک تود دلوں اچھے ہیں صرف اتنا فرق ضرور ہے کہ جس کو آپ دو پرپ کے نام سے بتلاتے ہیں پدن کا کچھ کمزور ظاہر ہوتا ہے مگر اس کے چھن چکروں سے معلوم ہوتا ہے کہ ٹرا بھاگوان اور دو دلوں ہوئے اور دوسری جلوپون کی ہے یہ ایک شہود ہیرا اور دو دلوں کی دلتا ہے۔

را جھنپھیں! پیری جی! ایک اور بات ہے جس کو بتانا میں بھول گیا۔ وہ یہ
ہے کہ وہ دپرپ کی بابت منزٹری وغیرہ کا خیال ہے کہ اگرچہ یہ بہت ہی چھا
اور خوبصورت لٹا کا ہے مگر جو تشویش دلیلیات متعارف ہو اپنے کہ اسکی عمر بہت کم ہے
اگر لئے مجھ کشک بڑا گیا ہے ورنہ سبھی لگاہ تو اس سب تھجھا۔

راتی۔ سوامی جی! الگریہ بات ہے۔ تو اس کا نام ہی نہ لجھئے کیونکہ جس بات
میں، شکر ٹھہرائے اُسکا نتیجہ اکثر اچھا نہیں ہوتا

راجہ۔ پستہ جی! کیا میں تاداں ہوں؟ میری ایک اسی لڑکی ہے جب تک
اپنی تسلی نہ کروں گا! نام نہ لوں گا۔

رانی۔ ماراج! بیشک یہ سوال میرٹا نماز کے انجمنا دیلوی کی آئندہ زندگی کا مداراسی وقت کے سوچنے پر بھی ہے۔ ہماری تو چند روز کی خوشی ہے اور اُسکی تمام عمر کا تقاضا ہے۔

دیکھو را ہمیں زبان گھوٹائی باب تیسرا سطح

राजा “प्रियजी! बेशक! बेशक! आपने दुरुस्त कहा। ये मामला बड़ा नाजुक है। अच्छा पवन की निसबत आपका क्या ख्याल है? मेरी राय में उसके साथ अञ्जना देवी का नाता किया जावे तो अच्छा है”

रानी “महाराज! जाहिर तो अच्छा मालूम होता है। अगर आपको इतमिनान है तो शगुन भेज दें। मगर मंत्री को फिर भी ताकीद कर दें कि पहले अन्दरूनी बेहरोनि कुल हालात दरयापत कर लेवे और बाद में शगुन देवे”

राजा “प्रियजी! ऐसा ही होगा। आप तसल्ली रखें”।

यह कहकर प्रधान जी के पास आया और कहने लगा कि सुबह एक लायक मंत्री को अञ्जना देवी की तस्वीर देकर रत्नपुर रवाना कर ताकीद कर दो कि अब्बल (पहले) सब बातों में तसल्ली कर लेवे बाद से शगुन दे आवे

बाब (अध्याय) तीसरा

पवन भी एक होनहार जवान है

बारिश होकर थमी ही थी कि एक मुसाफिर रत्नपुर के बाजार में दिखाई दिया। नाजरीन! सफर को जो सफर कहते हैं दुरुस्त है। देखो! वो घोड़े पर वो एक सफेद रेशा सफेद पोशा सवार जाडे के मारे कैसे सुकड़ा बैठा है। मालूम होता है कि दूर दराज के सफर से आया है। अगरचे बहुत से गरम कपड़े जेपबतन हैं और दुशाला ओढ़ रहा है लेकिन ताहम सर्दी महसूस कर रहा है। उफ! सर्दी भी हद दर्जे की है पौष (जनवरी) माघ (फरवरी) के दिन है जिस पर बारिश ने तो और ही गजब कर दिया हुआ है। ठण्डी हवा चलकर उसके जोबन को और भी दोबाला कर रही है। इस बूढ़े

राजे-पर ये जी! बिश्वक बिश्वक! आप ने दरस्त की। ये मामला बड़ा नाजुक है। अच्छा! उन की निवासी आप का किया ख्याल है? मेरी राय में उस के साथ अंजना देवी का नाता किया जावे तो अच्छा है-

राजी-महाराज! खासर तो अच्छा मालूम होता है। अगर आप को अल्मिना है तो शक्ति निष्ठा और ग्रन्टरी को चुप्ती ताकीद कर दिया क्योंकि एंड्रूनी बिरुली की उल्लंघन दरियाँ कर रही हैं। और उनमें शक्ति दिये-

राजे-पर ये जी! बिश्वक बिश्वक! आप तस्ली कीजिए। ये केवल प्रदेश जी के पास आया और कैफी लगा कि सच एक लाइन मंत्री को अंजना देवी की लिंग विवरित है। पुर रवाना कर ताकीद कर दो। कर दो। वह एक लाइन मंत्री की लिंग विवरित है। और उनमें शक्ति दिये।

بَابٌ تِسْرًا

پُونِ بھی ایک ہونہار جوان ہے

پارش ہو کر تھمی تھی کہ ایک سافر ترن پور کے بازار میں دکھائی دیا۔ ناظرین! اس فر کو جو سفر کرتے ہیں دست سے سوچکو! وہ گھوڑے پر ایک غیر ریشن۔ سفید پوش اسوار جاہے کے مارے کئے سکڑا بیٹھلے ہے معلوم ہوتا ہے دو دراز کے سفر سے آیا ہے۔ اگرچہ سب سے گرم کپڑے زیر ترن ہیں۔ اور دو شالاں! اور صھبے ہے لیکن نامہم روی محسوس کریں رہتا ہے۔ اوف! اسردی بھی صدر جگ کی ہے؛ بوجہ۔ مالک کے دن ہیں جس پر پارش نے تو اور ہی غصب کر دیا ہے۔ تھنڈی ہوا چل کر اس کے جوہن کو اور بھی دو بال کریں ہے۔ میں بُرھے

पर क्या मुनहसिर है जवान भी अभी बिस्तरों में लिहाफ ओढ़े दुबके पड़े हैं |
आहहा! फिर मेघ बरसेगा। मगर बूढ़े ने भी घोड़े को तेज कर दिया है। अभी दो चार
कदम ही गया होगा कि एक स्याह कुत्ते ने जो जाड़े की शिद्धत से रास्ते में ऐंठा पड़ा है
सितम ही कर दिया ज्यों ही घोड़ा उसके करीब पहुँचा जान कनदनि की हालात में
पाँव फैला सर को हरकत दी बस फिर क्या था घोड़ा डर कर भागा और बेबस हो गया
और बूढ़ा गर्दनी खाता हुआ जमीन पर आ रहा तमाम कपड़े मसनूइ मेहंदी कीचड़ से
तर हो गए अगरचे बहतरे हाथ पाँव मारकर उठने की कोशिश कर रहा है मगर
अफसोस वही दुशाला जो उसको सर्दी से बचा रहा था बदन के साथ ऐसा लिपटा है
कि उठने की इजाजत नहीं देता। ये हालात देखकर बहुत से लोग जमा हो गए।
अमीराना वजा उम्र का तकाजा और सर्दी की शिद्धत पर अफसोस कर रहे थे कि एक
शख्स ने जो नामालूम कौन है आगे बढ़कर सबको पीछे हटा जल्दी से इस बूढ़े को
उठाकर कहा

वोही शख्स “उफ! मंत्रीजी कहीं चोट तो नहीं आई?”
आहा! आहा! ये तो वही मंत्री है जो महेन्द्रपुर से अञ्जन
हुआ था। यूँही उसके कान मे ये आवाज पहुची बोला
मंत्री सर को उठाकर “आह! हरिजी बड़ी तकलीफ हई”

हरिजी ‘महाराज आपकी उम्र अब इस लायक नहीं कि सफर की तकलीफ बरदाश्त कर सको। ये तो एक खास मौका बारिश का है जो जवानों को भी थरथरा रहा है। फिर आपको इसकी बर्दाश्त किस तरह हो?’’

नाजरीन हरिजी इस मंत्री को अपने मकान ही लाया और बाद दो तीन पहर के जब वो अमन चैन से बैठा तो हरिजी ने कहा

پر کی محصر ہے جوں بھی ابھی تک لبرتوں میں لحاف اور سے دیکے چرے میں۔
آئا با پھر نغمہ بنتے لگا۔ مگر لوڑھتے نے بھی گھوڑے کو تیز کر دیا۔ ابھی
دو چار قد می گیا ہو گا کہ ایک سیاہ کٹے نے جو جائے کی شدت سے راستے
میں ایمپھاڑے لہے۔ ستم ہی کردیا پونی گھوڑا اُس کے قریب بوخا۔ جان کندی کی
حالت میں پاؤں پھیلایا سکو حرکت دی۔ بس پھر کیا تھا! اگھوڑا اور کر بھا کا اد۔ بے بس
بوجگیا اور بوڑھا گردئی کھاتا ہوا نین پر آ رہا۔ تمام کچھ مصنوعی ہبندی (کچھ)۔
ستے تر ہو گئے۔ اگرچہ تہییر سے تانگھ پاؤں مار کر منٹھنی کی کوشش کر رہا ہے مگر انہوں
وہی دو شالا جو اُس کو سردی سے بچا رہ تھا بدن کے ساتھ ایسا لیٹھا ہے کہ اوٹھنے
کی عاجزت نہیں دیتا۔

یہ حالت دیکھ کر بہت سے لوگ جمع ہو گئے۔ اُس کی امیرانہ وضع غر کا تھا اور سروی کی شدت پر افسوس کر رہے تھے کہ ایک شخص نے جنما معلوم کون ہے آگے پڑھا سب کو چھپے مٹا جلدی سے اُس پورا حصہ کو اٹھا کر کدا۔
وہی شخص اوف امنسٹری جی اکیس چوت تو نہیں آئی؟
آنا بانا بای تو وہی منسٹری ہے جو ہمندر پور سے اجتا دیلوی کی نسبت کو روشن ہوا تھا۔ یونہی اعلیٰ سکان میں یہ آداز پوچھی بولا۔

مشتری دسروکا انجا کار آه! ہری جس! بڑی تکلیف ہوئی۔
ہری جس۔ نہایت بچ! آپ کی عمر اب اس لایاں نہیں کہ سخن کی تکالیف برداشت
فرسکو۔ یہ تو ایک خاص موقع برداشت کا ہے جو جوانوں کو بھی خطر تھا رہا ہے۔ پھر کو
اس کی برداشت کس طرح ہو؟

ہریجی “مंत्री जी वो कौन सा ऐसा जरूरी काम है जिसने आपको आने पर मजबूर किया?”

मंत्री “दोस्त क्या कहुँ! वो काम जल्दी का है”

ہریजी “क्या वो ऐसी कोई बात है जो जाहिर करने के लायक नहीं है?”

मंत्री “नहीं! तुमसे वो पोशिदा क्या है। हमारे राजा की लड़की जवान हो गई है और पवन जी पर सबकी निगाह है तो उनकी बावत में कुछ दरयापत करने आया हूँ”
हरिजी खुश होकर “आहा! पवन! वो तो एक निहायत होनहार नौजवन है जो हकीकत में पवन, ही के समान है। जैसे हवा मनुष्य के प्राणों का आधार है। इस तरह **रआया** के वास्ते पवन कुमार है। गरीब लोगों का वहीं दया भन्डार है। परदेसी के लिए भोजन दाता और मददगार है। जो घोड़े की सवारी में देखो तो पूरा शहसवार है। जंग में दुश्मन का सिर और उसकी तलवार है। जैसे तारामण्डल में चाँद अपना जलवा दिखा उनको मात कर देता है वैसे ही पवन कुमार सभा में बैठा सब के दिल को हरा लेता है। महाराज मेरी ताकत कहाँ जो उसकी सिफात (अच्छाईयां बखान) कर्स़ा ईश्वर उसकी उम्र दराज करें।”

हरिजी की बातें सुनकर मंत्री का दिल बाग बाग हो गया और तमाम तकलीफ अपनी कामयाबी को देखकर भूल गया। और सुबह होते ही राजा प्रह्लाद विद्याधर के पास गया। इत्फाक से उस वक्त राजा अकेला बैठा था ज्यूँ ही उसको देखा बोला।
राजा “आओ मंत्री! बड़ी मुद्दत के बाद तुम्हारा आना हुआ। राजा महेन्द्र राय तो अच्छे हैं?”

मंत्री “महाराज सब आपकी इनायत है”

इतने में पवन कुमार आया और आदाब बजा लाकर बैठ गया

१पवन याने हवा २इन्सान की जिन्दगी की जड़ है ३याने मेहरबानी का खजाना है ४हर याने जीत लेता है

ہری جس - مंत्री जी! اوه! کौन! ایسا صورتی काम है जिस ने आप को आने पर
मजबूर किया?

मंत्री - دوست! किया कौन! ایسا صورتی काम है जो खोटा हर करने के लायक नहीं है?
ہری جس - کौन! ऐसी बात है जो खोटा हर करने के लायक नहीं है?
मंत्री - नहीं! ऐसी बात है जो खोटा हर करने के लायक नहीं है। जहार से राज की जान खो गई
है और पून जी पर सब की निकाह है। सान की बाबत में कुछ दियावत करने आये हैं।
ہری جس - (खून खोक) آह! पून! ओह! तो एक पूनहार लज्जावान है।
जैसे विषेषता में पून जी की सांस है। जैसे विषेषता के प्रातों का दावा है।
ऐ खूब रुचायाके वास्ते पून कमार है। खूब लोगों का दावा दिया जैसा है।
पर दियाके वास्ते जहजन दानाओं का है। जैसे गुरु दियाके सारी में दिखता है।
तेहसोरहते - जनांग में दिखन का सरोवरास की तरारह है। जैसे तारामण्डल में जन्म
एक जलव देखान को मात करता है वैसे ही पून कमार सभायां जैसा है।
दल को बहरती है - जैसे खूब येरी खालत की बास जौस की صفت करती है। तेहस
स की उम्र दराज करती है।

ہری جس की बातें मंत्री बहुत बड़े बांग खो गया एवं तामन्तकालिफ
पैनी का सियाली को दिखते हुए गिर दिया जैसे ये राज विश्वास के
पास गया। - तामन्तकालिफ से वैसे विषेषता के बाद एक बिलासित हुआ जैसी दिखाया गया।
राज विश्वास की बदू तुम्हारा कहाना होवा? राज विश्वास की
तो आप हैं?

मंत्री - वहाराज! ऐसी अपेक्षा उन्हीं विषेषता है।

उन्हीं में पून कमार का आदाब बोला कर दिखाया गया।

पून जैसे विषेषता यैसी है जैसी है कि एक व्यक्ति जो जैसे है वैसी ही व्यक्ति है।

राजा “मंत्री जी! चन्द रोज नुजरे है कि तुम्हारे राजा ने इसकी” पवन की तरफ इशारा करके “तस्वीर मंगाई थी इसका क्या नतीजा निकला?”

मंत्री ‘‘महाराज! मुबारिक हो मैं उसी काम के वास्ते आया हूँ’’ ये कहा और अज्जना देवी की तस्वीर पवन के हाथ मे दी

पवन ने तस्वीर को देखते ही हाथ से रख दिया और शरम से मुँह नीचे कर लिया। फिर क्या था चारों तरफ से मुबारिकबाद की धूम मच गई। और मंत्री ने एक तलाई थाल में जरो जवहरात केसर वगैरहा हृदे रिवाज उस वक्त पवन जी की नजर किया। जिसको उसने बसरोचशम मंजर किया।

इसी वक्त शादियाने बजने लगे और घर घर मंगलाचार होने लगा। तीन चार रोज तक बड़ी धूमधाम से खुशी मनाई गई। और बहुत सा दान गरीबों को दिया। और व्याह का दिन मुकर कर मंत्री को विदाई किया

बाब (अध्याय) चौथा

क्या ये हकीकत में वही है

शाम का वक्त है कमरे में शमादान जल रहा है और उसके नजदीक ही एक जर (सोने) निगार चौकी पर पवन जी एक तस्वीर हाथ में लिए बड़ी सोच में सर झुकाए बैठे हैं और रह रह कर उसको शमादान के नजदीक कर बड़े गौर से देखने लग जाते हैं बाद में नीचे रख मुतहिर हो सोच में पड़ जाते हैं और कई तरह के ख्याल पैदा हो उसके दिल मे चुटकियाँ ले हैरान कर रहे हैं और दिल ही दिल मे यों कह रहे हैं “क्या ये तस्वीर जिसको देख रहा हूँ हकीकत मे उसी की है? ऐसी खूबसूरत

راجہ - منتری بھی اپنے روزگار سے ہیں کہ تمہارے راجئے اس کی راپون
کی طرف اشارہ کر کے) تصویر منکاری فہمی آنکھ کی تیجہ نکلا ہے
منتری - ہمارا جیسا بارک ہمیں اُسی کام کے واسطے آیا ہوں ملی یہ کہا
اور اپنے دلوں کی تصویر لیوں کے ناخنیں دی)
پوں نے تصویر کو دیکھتے ہی ناخن سے رکھ دیا۔ اور شرم سے منہ
بچنے کر لیا۔

پھر کیا تھا جاروں طرف سے مبارکباد کی وحومت چکی اور منتری نے ایک
طلائی تھال میں زرد گواہرات کیسہ وغیرہ حسب رواج اس وقت کے پونجی
کی نذر کیا۔ حسر کو اُس نے لسر و خشم نظر کیا۔

اگر وقت شادیا نت بینن لئے او گھر گھر منگلا جارہ فے لکا تین چار
موہنک طبی و خنوم دعاصم س خوشی منانی گئی او بیت سادا ان غریبوں کو دیا
او دیباہ کا دون مقرر ک صنتری کو دو ارع کیا

باب چوتھا

کیا چیقت میں وی ہے

شام کو وقت ہے کمرے میں شمعدان جل رہا ہے اور اس کے نزدیک
بھی ایک زندگا چوکی پرپون جی ایک تصویر ناقص میں لئے بڑی سوچ میں سمجھا
جاتا ہے میں اور وہ رہ کر اس کو شمعدان کے نزدیک کرٹپے غور سے دیکھنے لگ
جاتے ہیں بعد میں نیچے رکھ تھیر ہو سوچ میں پڑ جاتے ہیں اور کوئی طرح کے خیال پیدا
ہواں کے دل میں چلکیاں نے حیران کر رہے ہیں اور وہ ہی دل میں یوں کہتا
ہے ہیں کہ یہ تصویر جس کو میں دیکھنا ہم حقیقت میں اُسی کی ہے ہمیں فوج بھرنا

रुक्षी तो पहले इस दीप मे कोई नजर से नहीं गुजरी” कभी सोचता मैं कैसा खुश नसीब हूँ ऐसी हसीन औरत से मेरी शादी होगी

मगर जब तस्वीर की तरफ ध्यान आता तो घण्टो इसी वहम में रहता कि पहले तो कभी इस शक्ल की औरत का जिक्र नहीं सुना और न ही देखने मे आई है जरूर किसी अप्सरा ने जन्म लिया है । या मुसव्विर (कलाकार) का ख्याल तस्वीर खींचते वक्त किसी और तरफ हो गया है। फिर कहता नहीं! नहीं! ऐसा भी होना नानुमकिन है। क्योंकि महेन्द्रपुर का मुसव्विर बड़ा होशियार है वो हर्गिज ऐसी गलती न करता और अगर करता तो फौरन दुरुस्त कर लेता ॥ गर्ज ॥ इस तरह के वहमी ख्यालात पैदा हो दिल को बेचैन कर रहे थे। आखिर जिनका नतीजा ये हुआ कि महेन्द्रपुर जाने का मुसम्म इरादा कर पलांग पर लेट गया और निहायत बेचैनी से रात बसर की और सुबह होते ही मंत्री को बुला कर कहने लगा

पवन “मंत्री जी! एक जरूरी अमरदा पेश है इसलिए मैं आज ही महेन्द्रपुर जाना चाहता हूँ। और तुम भी हमारे साथ ही चलो”

मंत्री “बहुत अच्छा आलीजहाँ!”

ये कहा और सफर का सामान दुरुस्त कर दोनो चल पड़े। दूसरे रोज शाम होते ही महेन्द्रपुर पहुँच गए। और बड़ी ऐहतियात कि साथ नगर की सैर करने लगे ताकि कोई पहचान न लेवे। और बहुत कोशिश की गई कि अज्जना देवी को देख अपने बेकरार दिल को तसल्ली दे। मगर सिवाय मायूसी के कुछ हासिल न हुआ। जब तीन रोज इसी सरगनदाजी और परेशानी मे गुजरे तो मंत्री से कहने लगे

पवन “मंत्री! अफसोस दिल के अरमान दिल मे रहे ॥ जिसकी खातिर इस कदर तकलीफ उठाई और दूर दराज का सफर इखितयार किया उसके देखने की तो कोई सूरत

अस्त्री औपेंटे एस ड्रेप में कुली नظر स्ते हमें ग़दरी ॥ कभी जूचनामी कीसानूष
फ़िब बूल कर आजी जूच उत्तर स्ते मिरी शादी होगी ॥

मगर जब तस्वीर की तरफ दृश्यान आलू खन्नूओं एसी दहम में रहा कूपेंटे तो
कभी ऐस शक्ल की उत्तर का नूकनीं स्तना और नूकी दिखने में आँखी है चूर्ण की
अधिरान जूम लिया है । या चमोर का खिल तस्वीर कूपेंटे वक्त की ओर तरफ भूल है,
पूरक हमाँ नहीं! नहीं! आइ बहुनी बूनान कहन है । कियो खर महेन्द्र लपूर का चमोर ब्रा
हृषी सियार है वह महर्ज ऐसी खल्ती नूकरा ओर ग़ार्क नाव फ़ोरा और स्ते कृष्ण अ़्रूप
के वही खिलात ॥ आइ मूदल कूबे चून कर है त्ते ॥ अ़र्जन का नियज ये बूल महेन्द्र लपूर
जाने का सचम्म लालह कर्लिन्क बैल ग़ी ओर हमार बैचनी से रात लस्के ओ
ओ बिंध बौते ही मंत्री कुलाकर कैने लगा ॥

पून मंत्री! एक ضرورी अमरपैश है सास के मैं आज ये महेन्द्र लपूर
जाना चाहता हूँ । और तम यही बहार से साक्षी ही चलो ॥

मंत्री-बैत अंधा उल्लिङ्गाह !

ये कहा और सफर का सामान दरस्त कर दूनों चूल थे ॥ दूसरे
रुझ शाम होते ही महेन्द्र लपूर बूज गक्के आर्द्धनी अंतिमात के सात्त्वन्द की
सिर करने लगे ताक कुली बैजान न लियो से और बैत कूशश क्लिकी कर अंधन दायो
को दिखा अपेंटे बैत वराल कूलियो दे ॥ लग्न सोसे मालोसी के कुछ चूल नहो ॥
जब तीन रुझासी सर्ग दाली ओर बैतानी में ग़दर से तो मंत्री से
कैने लगे ॥

पून-मंत्री! अफोस दल का एराम दल हैं राजस की फ़اط्राम नद
खलिफ ओ खाली अद दराज का सफर अंतिमार की आँख के दिखने की लोकुली चमोर

नजर नहीं आती। मैं नहीं जानता मेरे दिल को क्या हो गया से जो इस तस्वीर को देखकर दीवाना सा बन गया हूँ मुझको तो औरतो से सख्त नफरत थी मगर इस हुस्न की देवी को देखकर मेरे **नमामो सफ** खाक में मिल गए **जो बा आकबत** अन्देशो की तरह दर बदर फिरता हूँ **आह!** कोई देख लेगा तो क्या कहेगा **हाय!** शर्म हया को भी तो बालाए ताक रख दिया **मन्त्री!** तुम से तो कोई बात पोशीदा नहीं” तस्वीर दिखा कर “जरा इस को देखकर तुम ही इन्साफ करना कि पहले कभी ऐसी सुन्दरी इस वानर दीप मे देखी है”

ये कहा और उसके मुँह की तरफ देखने लगा। थोड़ी देर खामोश रहने के बाद खुद ही “मेरी बेचैनी कोई बेवजह नहीं। वो कौन है! जो इसके हुस्न की दाद न देगा? जब तक मैं इसको देख नहीं लेता तसल्ली नहीं होती।”

मंत्री ‘जो कुछ आपने फरमाया दुर्स्मृत है। अगर दुनिया में कोई चीज बेनजीर है तो यही है। वरना हमें सिफत मोसूफ होने में तो कोई शक नहीं। मगर आपका यहा ज्यादा देर ठहरना भी वाजिब नहीं। ऐसा ना हो राज फाश हो जावे। आपकी बेचैनी बर अक्षय तत्त्वीजा पैदा करे औपर वामाम अपाजां गवाक मे मिल जावे।’

पवन कुछ देर सोचकर “जो कुछ आपने कहा दुरुस्त है” आह सर्द खींचकर “अच्छा महरूम ही जाना पडेगा कल चल देंगे!”

नजरीन! शाम के वक्त पवन जब मंत्री को साथ लेकर शहर को निकला तो इतफाक से उसका गुजर उस मकान के नीचे से हुआ जो राजा के महल की दिवार बदिवार पर मशरिक की तरफ **वाकहा** था

इस आलीशान मकान की दिवारों पर कारीगरों ने गजिस्ता बहादुरों की तस्वीरें और बेल बटे इस खूबी के साथ नक्शा किए हए थे कि देखने

نظر نہیں آتی۔ میں نہیں جانتا۔ سیرے دل کو کیا ہو گیا ہے جو اس تصویر کو دیکھ لے
دیوار سبین گی ہوں۔ حکلوں غورلوں سے سخت لفت تھی۔ گراس حسن کی دیواری
کو دیکھ لے سیرے تمام وصف فاک بیس لے گئے۔ جو ناعاقبت اندازیوں
کی طرح در پر رچڑھوں آہ اکوئی دیکھ لیگا تو کیا کہیگا۔ نے اشرم حیا کو بھی
تو بالا سے طاق رکھ دیا۔ منتری! تم سے تو کوئی بات پوشتی نہیں رکھوں دھکاں
ذرا اس کو دیکھ لتمی الصاف کرنا کہ پہنچیں ایسی ستری اس بازرویہ پر میں
دکھ رہے ہو۔

یہ کہا اور اس کے منہکی طرف دیکھنے لگا رئوڑی دیر خاموش
ست کے بعد خود ہی) ”سیری بے چینی کوئی بے وجہ نہیں۔ وہ کون ہے جو سکے
خُن کی داد نہ دیجتا؟ جب تک میں اس کو دیکھنے نہیں لیت تھی نہیں ہوتی۔“
مشتری سمجھا۔ آپ نے فرمایا اور سست ہے۔ اگر دنیا میں کوئی چیز بے نظر ہے
تو یہی ہے۔ ورنہ ہر صفت موصوف ہونے میں تو کوئی شک نہیں۔ مگر آپ کا زیادہ
ویریاں مٹھنے بھی واجب نہیں۔ ایسا نہ ہو رانفشن ہو جادے۔ آپ کی بے چینی
بر عکس تجویز کرے اور تمام کارروائیں خاک میں مجاہم۔
پولان۔ سمجھ دیر سوپکر۔ جو کچھ آپ نے کہا درست ہے اور سر کھینچ پکارا جا خود
بی جاننا۔ اکھل علیہ نگے!!!

ناظرین اشام کے وقت پوچن جب منتری کو ساتھ ملے کر سیر
اوکھا لاؤالافق سے اس کا گذراں مکان کے بیچے سے ہوا جو راجہ کے محل
لئی دلوار بدلوار شرق کی طرف وا قم ہتا۔

اس عالیشان مکان کی دیواروں پر کارگروں نے گذشتہ بہادری
کی تعمیریں ایڈبیں بھٹے اس خوبی کے ساتھ منقش کئے ہوئے تھے کہ دیکھنے

वाला चाहें कितनी देर क्यों न देखे मगर सैर (तृप्त) न होता। आखिर फिर आने की आरज़ रख वहाँ से बापस जाता।

जब पवन की नजर इन तस्वीरों पर पड़ी वहीं खड़ा हो गया और बहुत देर तक देखता रहा। आखिर दरयाफ्त करने से मालूम हआ कि ये अञ्जना देवी का महल है।

आहा! इस वक्त जो खुशी पवन को नसीब हुई इस का हाल तहरीक करने से कलम आजिज है। फौरन चेहरे की रंगत बदल गई दिलमें ख्याल पैदा हुआ कि आज किसी न किसी तरह उसको जरूर देखूँगा। और इनही ख्यालों को लिए इस दिवार की तरफ देख रहा था कि चन्द लड़कियों की आवाज सुनाई दी। जब गौर से सुना तो मालूम हुआ कि कोई कह रही है कि विदुपर्व बड़ा आलिम और खूबसूरत जवान है। वो औरत बड़ी खुशकिस्मत होगी जिसको ऐसा खाविन्द मिलेगा। दूसरी बोली “ऐ सखी! उम्र का भी तो ख्याल है क्या पवन वैसा नहीं?” तीसरी जो खुश तबह थी बड़ी नजाकत से बोली “अमृत का एक धूंट अच्छा है बनिस्पत जहर के समुन्द्र के” आह! इस आखिर के फिकरे ने तो गजब ही कर दिया। ज्योंहि पवन के कानों से ये आवाज पहुँची तमाम बदन मे सन्नाटा पड़ गया। फौरन वो खुशी के ख्यालात गैजो गजब मे तबदील हो गए। उनही आँखो से जो खुशी खुशी किसी की जुस्तजू में इधर उधर फिर रही थी गुस्से के मारे शोले निकलने लगे और बदन थर थर कांपने लगा। तलवार म्यान से निकाल मंत्री से बोला

पवन “मंत्री! कछ सुना राजदलारी ने क्या कहा?”

मंत्री 'महाराज! हाँ! किसी ने कहा है कि अमृत का एक घूंट ही अच्छा है बनिस्पत
जहर के समन्द्र के मगर मैं नहीं कह सकता कि किसने कहा

و الاصح ہے کتنی دیر کیوں نہ دیکھنے غریب نہ ہوتا۔ اخراج پھر اسے کی آرز و رکود نہ کرنے والے ملے جاتے۔

جب پیوں کی لفڑان تعمیر دل پر پڑی دہن کھڑا ہو گیا اور سمت دیر
تک دیکھتا رہا۔ آخوند بافت کرنے سے معلوم ہوا کہ یہ انجمنا دیوی کا محل ہے
آئا! اس وقت جو خوشی اپن کو نصیب ہوئی اس کا حال تحریر کرنے
سے قلم عاجز ہے۔ فوراً اپر سے کی رنگت بدل گئی۔ دلہن خیال پیدا ہو کر اج
کسی نہ کسی طرح اس کو حضور دیکھنے لگا۔ اور انھیں خیالوں کو لئے اس دیوار کی
طرف دیکھ رہا تھا کہ چند لاٹکیوں کی آواز سُننا می دی جب غور سے
سُننا تو معلوم ہوا کہ کوئی کہر ہی ہے کہ دو درپر بڑا عالم اور خوبصورت جوان
سے۔ وہ عنودت بڑی خوش تھت ہو کی جس کو ایسا خاوند ملیگا۔ دوسرا
بولی ”ای سکھی! عمر کی بھی تو خیال ہے کیا پیوں ویا نہیں؟“ تیسرا جو خوش
طبع بھتی بڑی زراکت سے بولی امرت کا ایک گھونٹ اچھا ہے، لہشت
زسر کے سمندر کے“

اہ! اس تحریر کے فقرے نے تو عضب ہی کر دیا بونی لوں کے کانوں
میں یہ کام لذ پنجی تمام بدن میں سندھ پر گیا فوراً وہ خوشی کے خیالات غیض
و عضب میں تبدیل ہو گئے۔ انھیں آنکھوں سے جو خوشی خوشی کسی کی
بچتوں میں اور حرام دھر کہر ہی قصیں۔ بعفہ کے مارے شعلہ بکلنگے اور بدن
تھہ تھہ کرنے نہیں لگا۔ تلمواہ تمام سے تھکاں منتری سے پولا۔

پلوں منتری اکچھے نہ راج دولا۔ سی نے کیا کہا؟
منتری۔ جہا راج بناں اسکی نے کہا ہے کہ امرت کا ایک گھوٹ ہی اچھا
ہے پہنچت زہر کے سمندر کے ”مگر میں نہیں کہہ سکتا کہ کس نے کہا۔

और कौन थी? ”

पवन “क्या तुम तमीज नहीं कर सकते कि जो पहले मुख्तलिफ किस्म की आवाजें सुनाई दी हैं वह ऐसी सलिस न थी जैसा कि आखिर मे एक बड़ी दिलचस्पी और नजाकत के साथ फिकरा कहा गया है। दूसरी को क्या वास्ता जो इस किस्म की गुफतगू करे। इससे तो साफ मालूम होता है कि ये राजदुलारी ही थी जिसने अपने हुस्न कि गरूर मे आकर मुझको जहर के समन्द्र से मिसात दी है” तलवार को दिखा कर “इसी से इसका खात्मा किए बगैर कभी नहीं छोड़ूँगा। वो क्या याद करेगी कि इस तरह मैंने एक बहादर की पसगीबत की और उसका अजर न मिला!”

मंत्री हाथ पकड़कर “आह! ऐसा गजब न करो। शान्ति और धीरज से काम लो। जल्दी का नतिजा खराब होता है मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि आपने क्योंकर यकीन कर लिया कि वो अज्ञना देवी ही की आवाज थी या किसी और की। क्योंकि आप उसकी आवाज की शिनाख्त ही नहीं कर सकते नाहक एक बेगुनाह के खून से अपने हाथ न रंगो!”

पवन कांपता हुआ “मंत्री! तुम क्या ख्याल करते हो कि मैं नादान हूँ नहीं! मैंने अपनी तसल्ली बाखूबी कर ली है कि ये अज्जना ही थी। भला ख्याल तो करो जब अभी से उसके ये ख्याल हैं तो आइन्दा कब बेहतरी की उम्मीद कर सकते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि वो एक आती दरजे की हसीन है लेकिन इतना भी गरूर क्या कि दूसरे को हिकारत की नजर से देखें!”

मंत्री कुछ देर सोचकर “अब्बल तो यकीनन कह ही नहीं सकते कि ये किसकी आवाज थी। और अगर बा अजरज ये मान भी लिया जावे जैसा कि आपका ख्याल है तो भी इसकी जिन्दगी का खातमा करना आप जैसे धर्मात्मा को जेबा नहीं और इन्सानियत से भी

اور کون بخی؟ پول۔ کی تم تیرنس کر سکتے کہ جو پہنچ مختلف قسم کی آوازیں سنائی دیں وہ ایسی سلیس نہ تعین جیسا کہ آخر میں ایک شہری و تجسسی اور زناکت کے ساتھ فضو کہا گیا ہے۔ دوسرا کو کیا دل طرح اس قسم کی گفتگو کرے۔ اس سے تو صاف معلوم ہوتا ہے کہ یہ راج دولاری ہی بخی جس نے اپنے حن کے غزوہ میں آگر بکوہر کے سمندر سے مقابل دی ہے (دلوار کو دکھا کر) اسی سے اس کا خالہ کے بغیر کبھی نہیں چھوڑ دیا گا وہ کیا یاد کر گی کہ اس طرح میں نے یہک بہادر کی پس غیبت کی اور اس کا اجرہ ملا ہے۔

مشتری (اندھ پکڑ کر) آہ! ایسا عفیب نہ کرو۔ شانتی اور دھیمیح سے کام و مبدلی کا نتیجہ خراب ہوتا ہے۔ میری سمجھ میں کچھ نہیں آتا کہ آپ نے کیونکر قبین کر لیا کہ وہ اجنبی دلوی ہی کی آواز بخی یا کسی اور کی۔ کیونکہ آپ اُس کی وازاں کی شناخت ہی نہیں کر سکتے۔ ناخن یا کہ گنہ کے خون سے اپنے

پیون رکا پتہا ہوا ”ستری! تم کیا خیال کرتے ہو کہ میں نادان ہوں نہیں؟
میں نے اپنی تسلی خوبی کر لی ہے کہ یہ ابختا ہی تھی۔ بھلاجیاں تو کوہ جب
ابھی سے اُس کے یہ خیال میں تو آینہ کب بہتری کی امید کر سکتے ہیں۔ اُس
کوئی شاک نہیں کروہ ایک اعلیٰ درجہ کی حیثیت ہے لیکن اتنا بھی عذر کی کر دے تو
کو وقارت کی نظر سے دیکھے ॥

منتری رکھ دیرو چک ادل تو لقیناً کہہ ہی نہیں سکتے کہ یہ کس کی اوڑھتی ہو، اگر بالغرض یہ مان بھی لیا جادے جیسا کہ آپ کاغذیں ہے تو بھی اس کی زندگی کا خاتمہ کرنا آپ جیسے دھرماتما کو زیبائیں اور انہیں سے بھی

بائیں ہے کہ آپ اس بات پر گناہ عظیم کے مذکوب ہوں۔

بائیں ہے سر جھکا سوچتا رہا اور دل ہی دل میں یہ تیکی کہ بیاہ سے بارہ برس

تک اس سے سہکلام نہ ہوئے۔ بولا چھا اُسرے سالنے لی اور رتن پور کو روانہ ہوا۔ مصنف ۵

کرم ٹپے بلوان ہیں کئے نہ برتھا جا۔ بوکے ٹپے بلوگ کے آم کہاں سے کہا

بعض نکتھیں اعتراض کریں گے کہ یون نے وجود اس قدر دنما اور عالم ہونے اور بغیر تحقیق کرنے اصلیت کے کیوں ایسی سخت پر ٹکیا کی؟

ناظرین! یہ کسی کے اختیار کی بات نہیں یہ اپنے اعمالوں کا تیجہ ہے۔ جب تک حکیف کے دن آتے ہیں ایک اچھی بات ہی بھی رسمی معلوم ہوتی ہے۔ ٹپے ٹپے پارتھی جپڑائی بھول جاتے ہیں۔ ایک کیا سہاروں میں موجود میں تصوری ویرعہ کرنے سے آپ کو معلوم ہوا لیکا کہ ٹپے ٹپے عالموں اور فاعلوں نے اس تقدیر کے آگے سر جھکایا پہتیری کوشش کی گمراх کچھ بن شاہی اس پر ایک ہندی شاعر نے کہا ہے۔ ۶

سماں کرے نزکی کرے سماں بلوان۔ بھیلا دولا اللہیادی ارجمند ہی ان

میرا خیال تھا کہ جہا بھارت کے ناز کے ایک لائیں اور عالم راجھ کی شان میش کر ناظرین کی تسلی کرتا۔ جو تحریر کوئی ایک نئی بات نہیں دن رات ہم لوگوں کو ایسے واقعات دیکھنے کا موقعہ ملتا ہے۔ اس واسطے مناسخیں ہیں کہ آپ لوگوں کا وقت منابع ہو۔

بھولتا لٹو یاں وہی ارجمند ہی بان

میرا خیال تھا کہ جہا بھارت کے ناز کے ایک لائیں اور عالم راجھ کی

شان میش کر ناظرین کی تسلی کرتا۔ جو تحریر کوئی ایک نئی بات نہیں دن رات

ہم لوگوں کو ایسے واقعات دیکھنے کا موقعہ ملتا ہے۔ اس واسطے مناسخیں

ہیں کہ آپ لوگوں کا وقت منابع ہو۔

शाम का वक्त है। आफताब के गरुब (अस्त) होने से तमाम जहान में **तारिकी** छा गई है। वही गुलजार जिसके देखने से **तखरिह तबह** होती थी और ईश्वर की कुदरत नजर आती थी कि किस तरह उसने एक सनबर पौधे से खुशनुमा दिल लुभाने वाले रंग बिरड़े फूल पैदा कर अपनी हस्ती साबित की है। इस वक्त वो भी डरावनी शक्ल बने हुए दिखाई देते हैं। कोई जगह ऐसी नहीं जहाँ अंधेरे ने अपना दखल न किया हो। हाँ आबादी में **मसनुई** रोशनी नजर आ रही है। वो भी कहीं ज्यादा कहीं कम लेकिन महेन्द्रपुर की बहार जो इस वक्त दिखाई देती है अजीब है। जिधर देखे चिरागाँ चिराग नजर आ रहे हैं। **जा बजा झाड** और फानूस लटके दिखाई देते हैं। राजा के महल की तरफ तो ध्यान किजिए बडे बडे झाड मुख्तलिफ **वजह** और शक्ल के जिन पर बड़ी नफासत से काम किया गया है रोशन हैं। इन का उजाला देखकर कुदरती रोशनी भी नीची मालूम होती है। घर घर मंगलाचार हो रहा है। शादियाने बज रहे हैं। छोटा बड़ा मारे खुशी के फूला नहीं समाता। **अमीरो जरा उम्दा उमदा पोशाके** **जेब तन** के आगे आगे और तमाशाईयों का हुजूम उनके पीछे पीछे शहर के जुनूबी दरवाजे को जा रहा है।

अहा! आज क्या है? अञ्जना देवी की शादी है। और बरात की पेशवाई को ये लोग जा रहे हैं।

वो देखिए बरात आ गई! आगे आगे चन्द सवार घोड़े दौड़ाते रास्ता

بَابٌ پانچواں شادی

شام کا وَقْتِهِ بَنَاب کے غروب ہونے سے نام جہاں میں تاریکی چاگئی ہے۔
وہی گھنڈا جس کے دیکھنے سے تغیر طبع ہوتی ہے اور الیشور کی قدرت نظر آئی تھی کہ اس سچھ اُس نے ایک سبز روپ سے نوشناول بھملتے والے رنگ برجی چپل پیدا کر لی بُنیٰ ہستی نابت کی ہے۔ اس وقت وہ بھی روایی شکل بنے ہوئے دکھائی دیتے ہیں کوئی جگہ لیسی نہیں جہاں انہیں سے پناہ نہ کیا ہے۔ اس ابادی میں معنوی روشنی نظر آری ہے وہ بھی کہیں زیادہ کہیں کم۔ لیکن ہمنہ درلور کی بہار جو اس وقت دکھائی دیتی ہے عجیب ہے۔ صدر دیکھئے چڑاغان چڑاغ نظر آرہے ہیں۔ ہاسجا جھاڑ اور فانوس لٹکتے دکھائی دیتے ہیں۔ راجہ کے محل کی طرف تو دعیان کیجھے بڑے بڑے جھاڑ مختلف وضع اور شکل کے جن پر بُری نفاست سے کام کی گی سے روشن ہیں۔ اِن کا اوچالا دیکھر قدر لی روشنی بھی بیج حلوم ہوتی ہے۔ گھر گھر منکلا چار ہو رہے۔ شادی نسبت بیج ہے۔
ہیں سچھوما بڑا سے نوشی کے چھولا تھیں سماں سامیر و زراعمہ محمدہ پوشاکیں فریض تک آگے آگے اور ماشینوں کا ہجوم اُن کے پیچھے پیچھے شہر کے جنوبی دروازہ کو ہمارا تھے۔

اَا! کچ کیا ہے؟ انجناؤی کی شادی ہے اور برات کی پیشوائی کو یہ لوگ جا رہے ہیں۔

وہ دیکھنے برات آگئی آگے آگے چند سوار گھوڑے دوڑतے راستے

ساف کرتے ہوئے آ رہے ہیں۔ ان کے بعد سکھ بیان میں پون جی کیسری کپڑے پہنے سر پر جراوکٹ زماں جس پر میں تینتی سو سو سو چڑھتے ہوئے جملگا رہے ہیں۔ رکھا ہے۔ پر حلا دو ویا و حراو اس کے لاکین دربار طبری ج رجست گھنڈلہ اور نا تھیوں پر سوار ہیں۔ اور ان کے پچھے بے شمار پیدل عمدہ عمدہ نفیس پوتا کیں ہیں۔ برات کی زینت کو بڑھتے ہوئے، اور ہے ہیں۔ تاشینوں کی جوم جسدے زیادہ ہے۔ ہر ایک اسی کوشش میں ہے کہ سب سے آگے بڑھ کر دو لہا کو دیکھے۔ مگر بہت سے مالیوں کی نظر آتے ہیں ماروں طرف سب سکبا دا در داد واد کی اکانہ آرہی ہے۔ شادیوالوں اور جنہا نجی وغیرہ نوبت کی آوانزوں سے آسمان گونج اوقعا ہے۔ کانوں کی شفافی کی طاقت زائل ہو گئی ہے۔ اب دیکھے اشاروں سے کام لے رہے ہیں۔

جب یہ برات میں ستان و شوکت کے ساتھ شہر کے چوک میں بیخی تو راجہ ہفت رہائے جو پہنچے ہی سے پر دھان وغیرہ و کوسا تھے اسے انتظار کر رہیں۔ رسماں ملنی کو دا کرنے کے لئے آگے بڑھا۔

آنے! یہ کیسی عین نظر نہ ہے دیکھنے دلوں را جس کس تپاق سے ایک دیسرت سے خیر و عافیت پوچھ رہے ہیں جب اس رسماں کو دا کر پکنے تو بڑی عدالت کے ساتھ برات کو جنوا سے کے مکاں میں اونا۔ اور سب کے ہاتھ پاؤں و حلا میان پیارہ ہے میں۔ تھوڑی دیر بعد حلوایوی کچوری اور نیزیں مٹھائیوں کے، تعالیٰ ہر ایک باری کے آگے رکھے گئے!

جب سب نے سیر موکر کیا ان سے نا تکھنیا تو بان الاحق قسم کیا۔ اور بعد ازاں سب اپنے اپنے استروں پر جا کر ریٹ گئے۔

ٹھیک ہے۔ دعویٰ کے بعد جہاں نا اشتہرت پڑا یا جاتا ہے نہ کو جہاں کہتے ہیں۔

۱ جو پانی یا شربت پیلایا جاتا ہے اسکو میربناں کہتے ہیں

जब लग्न का वक्त हुआ तो पवन जी को लाकर वेदी के नीचे शाहाना मसनद पर बैठाया ही था कि पण्डितों ने वेद मन्त्र पढ़ हवन करना शुरू किया। और सखी सहेलियों ने अञ्जना देवी को नहला धुला **रुखसाना** लिबास पहना जड़ाऊ जेवरात से आरास्ता (सजा) कर पवन जी के दाए तरफ ला बैठाया और गठ जोड़ किया।

आह! जिस वक्त अञ्जना देवी ने पवन जी के गले में जयमाला डाली उनका चेहरा मारे गुस्से के सुर्ख हो गया। दिल मे वही ख्याल प्रतिज्ञा का पैदा हुआ और कानों मे वही आवाज भर गई। दिल ही दिल मे कहने लगे औरतों का चरित्र देखिए **बातन** में तो अपने हुस्न का इस कदर गुरुर कि मुझको जहर का समन्व जानती है और जाहिरा जयमाला डालकर **जोजियत** () का दम भरती है। मैं तो ऐसी सीना स्याह औरत से शादी करने से बाज आया

नाजरीन! इस तरह के ख्याल पवन जी के दिल में गुजर रहे थे कि इतने मे पण्डितों ने वेद का वो मन्त्र पढ़ा जिस के माने ये थे कि जब तक मैं अपनी औरत के किसी एक दोष (ऐब) का पूरी तौर पर इतमिनान न कर लूँ यकीन न करूँगा। और इस तरह स्त्री के वास्ते भी हिदायत थी।

इस मजकूरा बाला मन्त्र को सुनकर पवन जी के ख्यालों ने पलटा खाया और उधर औरतों के दिलकश राग और पण्डितों का यकजबान होकर आखिर में एक सुहावनी आवाज से लफज स्वाहा का अदा कर हवन कुण्ड में सामग्री डालना और अञ्जना देवी की सखी सहेलियों का फूलों की बरखा कर दुल्हा को मुस्कराती हुई नजर से घूरना सोने में सुहागा का काम कर दे गया गो पवन जी के जिस्म के अन्दर इन्तहा दर्जे का रज्ज और वही ख्यालात छुपे हुए उसको बचैन कर रहे हो लेकिन इस वक्त तो सब बालाएं ताक पड़े हुए नजर आते हैं

جب لگن کا وقت ہوا تو لوون جی کو لا کر بھی علکے نیچے شامانہ مسند پر سٹھایا
تھی تھا کہ بینڈلوں نے وید منتر پڑھ ہوں کرن اشروع کیا اور سکھی ہمیں یوں نے
اسجنادیلوئی نہیں دھلنا عوسمانہ لباس پہن جڑا تو زیورات سے آ راستہ کر
لوون جی کے دامن طرف لا سٹھایا اور سکھ جو کی۔

آہ! جس وقت انجنا دیلوی نے پون جو کے لگئے میں ہے مالا
و طلبی اُن کا چھروہ مارے عضو کے سُرخ ہو گیا۔ دل میں وہی خیال پر تکمیل کا پیدا
ہو اور کالتوں میں وہی آوارہ بھرگی۔ دل ہی دل میں کہنے لگے عُوں توں کا چتر ریختے
باطن میں تو اپنے حسن کا اس قد رغور کے مجکونہ ہر کام سمندر جانتی ہے اور ظاہر ا
بھے مالا دال کر زوجتیت کا دم بھرتی ہے میں تو ایسی سینہ سیاہ عورت سے
شناوی کرنے سے باز آتا۔

ناظرین! اس طرح کے خیال لوپن جی کے دل میں گذر ہے تھے
کہ اتنے میں پڑھلوں نے دید کا وہ منیر ٹھہرا جس کے معنی یہ تھے کہ جب تک
میں اپنی خورست کے کسی ایک (دونوں دعیب) کا پورے طوب پر اطمینان نہ کروں
لیقین نہ کروں گا مادر اسی طرح استری کے داست بھی ہر ایت تھی۔

اس نہ کوہ بلا منستہ کو سُنکر لون جی کے خباؤں نے پڑا کھایا۔ اور
اوہ مھر عورتوں کے دلکش راگ اور پیٹد توں کا یک زبان ہو کر آخر میں ایک سو ہولی
اذراستے لفظ سوانح کا اداکر ہون گئنڈیں سانگری ڈالنا اور انجنا دلیوی کی
سکھی سہیلیوں کا پھاؤں کی بڑھا کر دلخا کو سُنکرانی ہوئی لظر سے گھورنا سونے
میں تکہاگ کا کام دے گیا گوپون جی کے جسم کے اندر انہما درج کا وجہ اور
سیالات چھپے ہوئے اس کو بے صین کر رہے ہوں لیکن اس وقت تو سب
باکے طاق پڑے ہوئے نظراتے ہیں۔

देखिए! कैसे खुशी खुशी हवन कुण्ड मे सुगन्धित्, सामग्री डाल रहे हैं। और वेद मन्त्रो को पढ़ औरत खाविन्द के हकूक को मानकर **औहद पैमान** कर रहे हैं।

जब पण्डितों ने ब्याह संस्कार को खत्म कर शान्ति पाठ पढ़ा तो चारों तरफ से मुबारिकबाद की आवाज आने लगी।

सखी सहेलियाँ अञ्जना देवी को महल में ले गई और पवनजी **अवतारे** के मकान में आए।

राजा महेन्द्र राय का इन्तजाम काबिले तारीफ था। किसी को शिकायत करने का मौका न मिला। जिस चीज को तलब किया फौरन मुहूर्या की गई।

तीन रोज तक बरात वहाँ रही। चौथे रोज बेशुमार दहेज दे विदाई करने लगे तो राजा महेन्द्र राय और रानी बेगमोहिनी के चहरों पर उदासी की घटा छा गई। उधर औरतों के अलविदाई गीतों ने सबके दिल को हिला दिया। राजा महेन्द्र राय आंसू भर हाथ जोड़ प्रह्लाद विद्याधर से कहने लगे

राजा महेन्द्र राय

धन **वयोस्**, गम आज को पूर्ण भई मुराद
कर, जोड़ करूँ बिनती सुन विद्याधर प्रह्लाद
है अञ्जना देवी बालिका, न जाने जग मर्याद
दया दृष्टि राखयो करयो क्षमा अपराध,

नाजरीन! जिस वक्त राजा महेन्द्र राय ने भडभडाई हुई आवाज से **मजकुरा** बाला दोहे को कहा सब हाजरीन के आंसू आँखो मे भर गए और इस की **आजजी** पर अश अश करने लगे।

१ खुशबूदार चीजे २ वन ३ हाथ ४ नादान ५ उपर मेहरबानी की नजर रखना अगर कोई कसूर हो तो माफ करना

دیکھے! کیسے خوشی خوشی ہوں کند میں سو گلہیت سامگری ڈال رہے ہیں۔
اور وید مন्तروں کو پڑھوئے فادنے کے حقوق کو مان کر عہد پیمان کر رہے ہیں۔

جب پنڈتوں نے بیاہ منکار کو ختم کر شانتی پائٹھ پڑھا تو چاروں هرف
سے مبارکباد کی آواز آئے گلی۔

کتبہ پر خواہ
سکھی سہیلیاں انجن دلیوی کو محل میں اور لون جی افقار
کے مکان میں آئے۔

راجہ جہندر را سے کا انتظام قابل تعریف تھا لیکن کوئی خاتم کر سکا
موقوفہ نہ لایا جس پر طلب کیا فو امہتائی گئی۔

تین روز بک برات وہاں رہی پوتے روز بے شمار جہنیر سے وداع
کرنے لگے تو راجہ جہندر را سے اور رامی بیگ موسینی کے چہرہ دل پر یوں
کی گھٹا چھا گئی اور حضور نوں کے الوداعی گیتوں نے سبکے دل کو ہلا دیا۔ رسم
جہندر را سے آنسو بہرا تھجور پر صلا او و دیا و دھر سے کہنے لگا۔

راجہ جہندر را سے - ۵

دھن دلیوں حم آج کو پوراں بیسی مراد کر جو گردن بینتی سن و دیا و دھر ہلہ
بے انجن دلیوی بالکا زجائے جگ میلو دیا و دشی را کھیو کر یوں کھما اپر احمد
ناظرین! جس دست راجہ جہندر را سے نے بھر بھر لی جوئی

اواز سے نہ کورہ بالا دہ ہے کو کہا ب ما ضرین کے آنسو انکھوں میں بھر گئے۔
اور اس کی عاجزی پر عش عشق کرنے لگے

لے جو شہزادیں سہ دن تھے نا تھے شہزادان شہ اپر سہر رانی کی نظر کھنا۔

اگر کوئی تصویر پر تو معاف کرنا

राजा प्रह्लाद विद्याधर महेन्द्र राय का हाथ पकड़कर
ईश्वर का धन्यवाद सुनो महेन्द्र रा
करुँ अधिक्, पवन से प्यार मैं मत व्यथा घबरा

आनन्द मंगलाचार से रहें दुल्हन दूल्हा
आयु करे व्यतीत, यह गुण ईश्वर का गा
जिस वक्त बरात वहाँ से विदाई हुई हर एक के चेहरे पर उदासी छा गई। सखी
सहेलियाँ अबर नू बहार की तरह आंसू बहा अञ्जना देवी के सुखपाल की तरफ
टिकटिकी लगा देखती रहीं। उस के लडकपन की भोली भोली बातें याद कर आंसू
बहाती रहीं। जब नजर ने जवाब दिया तो मायूसाना सूरत बना सब वापस आयी।
जब दूसरे रोज बरात रत्नपुर पहुँची तमाम नगर मे धूम मच गई। औरत मर्द सब
इन्तजार की ताब न लाकर दौड़ो दुल्हा और दुल्हन को देखकर निहायत खुशी हुई।
आहा! छोटे छोटे लडके और लडकियाँ कैसे देखने के जोश मे भागे जाते हैं कि गिरने
का भी खौफ नहीं।

देखिए वो लड़की गिर पड़ी। मगर झट ओढ़नी को सम्भाल फिर भागी जा रही है। गरज बड़ी **जहोजलाल** के साथ बरात शहर में दाखिल हुई। चारों तरफ से मुबारिबाद की आवाजें आने लगीं।

जब शाही महल कि दरवाजे पर पहुँचे तो रानी कितुमती ने दूल्हा और दुल्हन के सर से पानी वार कर पिया और दुल्हन को देखकर ईश्वर का धन्यवाद किया। नाजरीन रानी कितुमती अञ्जना देवी का हुस्न देखकर ऐसी **फरिपफ्ता** हुई कि बार बार उसके मुँह की तरफ देखती और सैर न होती। गर बड़ी खातिर तवज्जो से पेश आई।

१ ज्यादा २ अपनी उम्र ईश्वर ही की भक्ति मे गुजारे

راجہر۔ حملادوپا و مضر لاجھنہ رکے کامانچہ پکڑیں ۵
اویشنور کا دہنسا اوہ سنو جھیندر را کردیں اور بک پون سے بیاریں تجھا جھیرا
آنند منگل چار سے ہیں دو ہم دلخا آلوکر کی دستیت یہہ گن شیشور کا گاہ
جس وقت برت وہاں سے دو رع ہوئی سڑاکی کے چھرے پر لادی
جس عالمی سکھی سہیلیاں برلنوبیا کی طرح آنسو بیا انجنا او یوی کے سکھ پال کی
طرف ٹکنی لگا دیکھتی رہیں۔ اُس کے لذکپن کی بھولی بھولی باہیں یاد کر آنسو بیا جی
ہیں جب نظر فے جواب دیا تو بایوسانہ صورت بنا سب واپس آئیں۔
جب دوسرے روڈ برات رتن پور پر بخی تمام نگر میں دھوم چکی۔
غورت مرد سب انتظار کی تاب نہ لاکر دوڑتے۔ دلخا اور دو ہم کو دیکھر
نمایات خوشی سوئی۔

آنا! جھوٹے چھوڑے اڑکے اور اڑکیاں کیسے دیکھنے کے جوش میں بجھ کے
جلتے میں کاگر نے کامبی خوف نہیں
دیکھنے وہ اڑکی کر پڑی۔ سگر محبت اور ہمنی کو سنبھال یعنی بھالی جاری
ہے عزم بڑے جاہ و جلال کے ساتھ برات شہر میں وصل ہوئی۔ جا دنخوت
سے ساریک دلکی آوازیں آئے لگیں۔

جب شایی محل کے دروازہ پر پونچ تو رانی کیستو می نے دلھا اور
وہ بھن کے سرسے پالپی دار کر پیا۔ اور دبھن کو دیکھ ایشور کا دبھن دیکھ -
بخطیرت رانی کیستو می اجنبادیوی کا حسن دیکھدا یعنی خسر و فضت
بعض کہ بار بار اس کے سنبھل کی طرف دیکھتی، وہ سیرہ بھوتی۔ خرض بڑی خاطر لڑائیخن
سے پریش آئے۔

لے زیادہ نہ بھی عمر میتوں کی جگہ میں کہاں

अञ्जना देवी ने इन बातों को गनीमत जान ईश्वर के हुजूर में सर झुका शुक्रिया अदा किया

बाब (अध्याय) छटा

दिल के अरमान दिल में रहे

सुबह का सुहावना वक्त है। आसमान पर तारें अभी झिलमिलाते हुए दिखाई देते हैं कि अञ्जना देवी बिस्तरे ख्वाब से उठी और जरूरयात से फारिग हो स्नान कर नित कर्म करने बैठ गई।

जब संध्या उपासना कर चुकी तो अपने कमरे में बैठी हुई बसन्तमाला के साथ इधर उधर की बातें कर हंस रही थीं कि किसी के आने की आहट मालूम हुई। दिल में ख्याल गुजरा कि पवन जी आते हैं। ये सोचकर दोनों खामोश हो गईं।

इतने में एक औरत **पसरत** कद, मोटी गर्दन, गोल चेहरा, साँवला रंग, सिर के बाल बिखरे हुए, बसन्ती दुपट्टा ओढ़े, साड़ी पहने आई और प्रणाम करके खड़ी हो गई। बसन्तमाला बड़ी मुलायम आवाज से “बहन बैठ जा”

पसरत कद औरत “मुझको कुछ बहुजी से अर्ज करनी है”

अञ्जना देवी “बहन! बैठो तो सही”

पसरत कद औरत “बहुत अच्छा”

ये कहकर जरा पीछे हटकर बैठ गई

अञ्जना देवी “कहिए! क्या हुकम लाई हो?”

انجنا دیوی نے ان بالوں کو गृहित जान थियर के حصनोर में
سر्हिका शक्री दाकी।

باب چھٹا

دل के ارمان دل मैं हूँ

صیم کا नहिं बना ना वक्त है। - آسمान भैरवारे ऐसी ज़िलते होंगे
देखाई देते हैं कि انजنا دیوی बत्तर खोब से अल्पी औ ضرورियां से
فانغ ہوا شدن کرنے कर्म کرنे भिजेंगी।

جب سندھिया اوپासना की तो वापे करे मैं भिजी भोजी
بست مالا के ساتھ औ صرود चरकी बांधें कर्नें रसी भिजी कि कسी के अने
کि आहेत معلوم जोली سعل बैं خیال گندके پون जी आते हैं : پूर्ज कर
दलोں खसूश ہو گئीں।

استنے مैं एक عورत पैस्त قد۔ موہن گردन گول چिरہ۔ سانولہ
رینگ۔ سرके बाल बक्खरे होंगे۔ بستنی ڈو ڈिरे और हते۔ سارुसी ہونے
کئी और پر نام کरके कھट्टी ہو گئी।

بست مالا۔ (بڑी) खाली आवाज से) ہم भिजे जा۔

پैस्त قد عورत۔ تیکو کچु भोजी से عرض کरता है।

انجنا دیوی سہمن ابرिचु नूसी।

بست قد عورत۔ بہت اچھा।

یہ کہہ کر दरामिज्हے ہٹकے भिजेंगी।

انجنا دिवी۔ کہیئے अंजी حک्म लाली भर ?

पसरत कद औरत ‘कुँवरजी ने आपके लिए पालकी भेजकर फरमाया है कि आप दूसरे महल मे जो यहाँ से करीब ही है जाकर रहें’

इस बात को सुनकर अञ्जना देवी तो हैरान सी हो गई। मगर बसन्तमाला चुटकी ले मुस्करा कर बोली

बसन्तमाला “अञ्जना देवी! मेरी तरफ ख्याल रखना। ऐसा न हो कि पवन जी की मोहबत में आकर मुझको भूल जाओ। मैंने तो तुम्हारी खातिर माँ बाप को छोड़ परदेस इस्थित्यार किया है।”

अञ्जना देवी “क्या तुम मेरे साथ वहाँ न जाओगी? आपने कौल¹, को पूरा कर ना दिखलाओगी? तुम तो कहती थी कि जब तक जिस्म मे जान है तुम को ना छोड़ूँगी। चाहे कुछ भी क्यों न हो तुमसे मुँह न मोड़ूँगी। प्यारी! अभी से ऐसी बाते सुना कर क्यों डराती है। भला ये मुमकिन है कि तुम को छोड़ मैं अकेली जाऊँ।”

ये कहा और दोनों पालकी में सवार हो गईं।

रावी बेचारी अञ्जना देवी नहीं जानती थी कि जो सामान खुशी के थे आज तमाम हुए। और रज्जोगम कुछ अरसा के लिए मेरी सेवा, करने को आए हैं।

प्यारे नाजरीन! आपको मालूम हो कि जो प्रतिज्ञा पवन जी ने की थी उसको अब पूरा करने लगा है।

जब अञ्जना देवी उस महल मे आई तो सिवाए दरबानों के जो दरवाजे पर खडे थे किसी को न पाया। दिल मे ख्याल गुजरा कि शायद स्वामीजी ठोड़ी देर के बाद आएँगे।

और इसी इन्तजार मे शाम हो गई। बसन्तमाला मे शमादान रोशन किया और अञ्जना देवी नित नियम करने लगी। जब फारिग हुई तो भी वहाँ सिवाए

१ याने वादा वफा २ यानी स्विदमत

पस्त ق در عورت۔ کنوں جی نے آپ کے لئے پالکی بھیجکر فرایا ہے کاپ دوسرے
 محل میں جو ہبھاں سے قریب ہی ہے جا کر رہیں۔

اس بات کو من کر اجنا دیلوی توجہ ران سی رہ گئی گل بست مالا
چکی نے مسکرا کر بولی۔

بست مالا۔ اجنا دیلوی! میری طرف خیال رکھنا ایسا نہ ہو کلون
جی کی محبت میں اگر مجکو بھول جاؤ میں نے تو تمہاری خاطر ماں باپ کو جھوٹ
پرولیں اختیار کیا ہے۔

اجنا دیلوی۔ کیا تم میرے ساتھ وہاں نہ جاؤ گی؟ اپنے قول کو نپورا کرنا
دکھلاوے؟ تم تو کہتی تھی کہ جب تک جسم میں جان ہے۔ تم کوہنے جھوڑوں گی۔

چاہے کچھ بھی کیوں نہ ہو تم سے منہنہ مٹوڑوں گی۔ پیاری! ابھی سے یہی یہیں
شنا کر کریوں ڈالتی ہے۔ بیدا یہ مکن ہے کہ تم کو جھوڑوں میں اکیلی جاؤں۔

یہ کہا اور دلوں پالکی میں سوار بوجیں۔

راوی! پیاری اجنا دیلوی نہیں جانتی تھی کہ جوسان خوشی کے قصے آج
تامہوڑے اور بنج و عنم کچھ عوصد کے لئے میری سیوڑے کوئے ہیں۔

پیار سے ناظرین! آپ کو حملہ ہو کر جو پر گیا ہوں جی نے کی تھی اسکا
پورا کرنے لگا ہے۔

جب اجنا دیلوی اُس محل میں آئی تو سوائے دہانوں کے جو دروازہ
پر کھڑے تھے کسی کو نہ پایا۔ دل میں خیال گزرا کہ شاند سو ایجی جی تھوڑی دیر کے
بعد میں گئے داسی انتشار میں شام بوجی۔ بست مالا نے شمحدان روشن

لکیا اور اجنا دیلوی نت نیک کرنے لگی۔ جب فارغ ہوئی تو بھی وہاں سوائے
لے لینے و عددہ وفا ٹے لیعنی خدمت

बसन्तमाला के किसी न देखा। मुखतलिफ ख्याल दिल मे पैदा हो घबराहट पैदा करने लगे। कई तरह के फर्जी घोडे इस बात की असलियत मालूम करने को दौड़ाती मगर कुछ समझ मे न आता। आखिर जब आधी रात गुजर गई तो बसन्तमाला से बोली अञ्जना देवी “सखी! क्या तू बतला सकती है कि स्वामीजी क्यों नहीं आए? और मझको इस महल मे क्यों रखा गया है?”

बसन्तमाला “अञ्जना देवी! क्यों घबरा रही है। उन को कुछ जरूरी काम हो गया होगा इस लिये वो नहीं आ सके!

और ये अकस्मात् राजकुमारों का दस्तूर है कि शादी करने के बाद माँ बाप से अलहैदा रहना पसन्द करते हैं। शायद उन्होंने भी ये सोचकर तुम्हारे लिए ये महल तजवीज़ (नामित) किया हो”

अञ्जना देवी “मेरा ख्याल था कि मैं बड़ी खुशकिस्मत हूँ जो ऐसी सास मिली है जिसके मिलने से एक ही रोज मे वो प्रेम जो मैं अपनी बालदा के साथ बरसों से रखती थी भूल गई। अगर उनके पास रहती तो क्या ही अच्छा होता। प्यारी! इस बात को सोच कर कि जब से मैं आई हूँ स्वामीजी ने तो मेरे साथ बात तक नहीं की और न ही अब तक यहाँ आए हैं मैं तेरे **कायामो** को क्योंकर दुरुस्त मान सकती हूँ कि उन्होंने ये महल अपने रहने के बास्ते पसन्द किया है। सखी! इसमे जरूर कछ भेद है”

ये कहा और न जाने क्या ख्याल दिल मे गुजरा कि आँखो से आंसू निकल पडे और निहायत बेचैन हो गई।

बसन्तमाला ने बहुत कोशिश की कि किसी तरह ये थोड़ी देर आराम

لبنت مالا کے کسی نہ کیا مختلف خیال دل ہیں پیدا ہو گھبڑا ہٹ پیدا
کرنے لگے۔ کئی طرح کے فرمی گھوڑے اس بات کی اصلاحیت معلوم کرنے کو
دوسرا تیسرا مل کر پھر سمجھوں نہ آتا۔ آخر جب اوصی رات گندگی تو لبنت مالا سے
لے کر چکا۔

اسخنا دلیوی۔ سکھی اکیا تو جلا سکتی ہے کہ سوامی جی کیوں نہیں آئے؟
اور جکب لواس عمل میں کیوں رکھا گیا ہے؟

بست ملا۔ انجنا ویوی! کیوں گھیرا جی ہے۔ ان کو کچھ ضروری
کام ہو گیا ہوگا۔ اس لئے وہ نہیں آسکے!

اور یہ اکٹھ راجھاں دوں کا دستور ہے کہ شادی اُرثے کے بعد مال باپ
سے علیحدہ رہنا پسند کرتے ہیں۔ شاہزادوں نے بھی یہ سوچ کر تھا سے
سے یہ محل تجویز کیا ہے۔

انجنا دیوی۔ میر اخیاں تھا کہ میر بڑی خوش قمت ہوں جو ہمیں ساس ملی
ہے۔ جس کے ملنے سے ایک ہی روز میں وہ پر محروم ہوئیں اپنی والدہ کے ساتھ بروپا
سے رکھتی تھی بھول گئی۔ اگر ان کے پاس ہستی تو کبھی اچھا ہوتا۔ تیسا رسی!
اس بات کو سوچ کر کہ جب سے میں اپنی ہوں گامی جسی نئے تو میرے ساتھ بات
تک نہیں کی اور نہ ہی اب تک یہاں آئے ہیں میں تیرے قیاس کو کیوں کر
درست ماں سکتی ہوں کہ انہوں نے یہ عمل اپنے رہنے کے واسطے پینڈ کیا ہے
سکھم، اس میں ضرور کچھ جیجد ہے۔

یہ کہا اور نہ جانے کی خیال مل ہیں گزرا کر انکھوں سے آنونخل پڑے
اور بہارت بے صین مونگی۔

لیست مالا نے بہت کوئی طرح یہ تصوری دیا رام

करे। मगर आराम किसको! दिल तो उसका माहिबेआब की तरह तडप रहा है। आँखे बेसब्री से इन्टजार कर रही हैं। ख्याल बुरे बुरे पैदा हो मगज को परा गन्दा कर रहे हैं। और सूनसान मकान डरा रहा है। नींद आए तो क्योंकर?

गर्ज अज्जना कभी तो पलंग पर लेट कुछ सोचती है। जब वहा से दिमाग ने चक्कर खाया तो झरोखे मे जा बैठी। वहाँ से उठी तो बसन्तमाला से जा बोली “प्यारी! स्वामीजी तो अब तक नहीं आए। हाय किससे पढँ?”

गर्ज इनहीं बातों में रात बसर की। जब सुबह होने को हुई तो स्नान कर संध्या की। कि इतने में वही पसरत कद औरत जिसका नाम शायद ललिता है आई जिसको देखकर अज्जना देवी बड़ी गमगीन आवाज से बोली “बहन आज क्या हुक्म लाई हो?” ललिता “बाग को जा रही हूँ आपको देखने के लिए आ गई”

बसन्तमाला ‘बहन! पवन जी कहाँ हैं?’

ललिता ‘संध्या कर अभी बाहर को गए हैं’

बसन्तमाला बड़ी सीली जबान से “प्यारी बहन! क्या तू बतला सकती है कि कुँवर जी ने अज्जना देवी को इस महल मे अल्हैदा क्यों रखा है। और खुद क्यों नहीं आए और न ही रानी साहिबा ने खबर ली है। अज्जना देवी तो कल से गे गे कर हैरान हो रही हैं।”

ललिता ने अज्जना देवी की तरफ देख सर्द सांस ली और कुछ जवाब न दिया।
ललिता की ये हरकत देख अज्जना देवी का माथा ठनका और बसन्तमाला के होश
उड़े और कहा “हाय गजब हआ ऐसी क्या बात है?”

گرے۔ مگر آئے کس کو اول لوتوں کیا ہی بے آب کی طرح تڑپ رہا ہے۔ تکھیر
بے صبری سے انتظار کر رہی ہیں۔ خیال بڑے بڑے پیدا ہو مخز کو پر الگندہ
کر رہے ہیں اور شناس سکان ڈار ہا ہے۔ نیند اے تو ٹونکرہ؟
غرض اینکا بھی یہ نیگ پریٹ کچھ سوچتی ہے۔ حب و ہال دماغ نے چکر لکھا یا
لو بھرو کے میں جا شیشی۔ وہاں سے اٹھی تو بست۔ ملاستے جا بولی۔ پیاری
سومی جی تو اپنے تک نہیں آئے۔ ناے کس سے پوچھوں؟

للتا۔ باغ کو جرسی ہوں آپ کے دیکھنے کے لئے آگئی۔

بنت مالا بین! یون بی کہاں ہیں؟
للتا سندھیا کرا ایجی با رکو گئے ہیں۔

لہست مالا۔ رہڑی سیلی زبان سے پیاری ابھن کی تو سدا سکتی ہے۔ کہ
کنور جی نے اجنا دیوی کو اس محل میں علیحدہ کیوں رکھا ہے؟ اور خود کیم
نہیں آئے اور نہ سی رانی صاحبہ فخری ہے۔ اجنا دیوی تو محل سے
مرد و دکر حیران ہو رہی ہے۔

للتاسع ایجتاڈ یوی کی طرف دیکھ سرو سالن لی اوپر کچھ

جواب نزدیکی
للت کی یہ حرکت دیکھا سنبھال دیوی کا ماتھا ٹھنکا اور سبنت مالا
کے پوشانوں سے اور کمہڑے ہے غضب ہوا۔ بیسی کی بات ہے؟

बसन्तमाला ललिता के गले मे दोनो हाथ दालकर “बहन! सच बतला बात क्या है?”
ललिता “क्या बतलाऊँ?” माथे को हाथ लगाकर “अज्जना देवी की किस्मत फूट गई। कुँवरजी ने किसी बात पर जिसको बतलाने से गुरेज (बचते) करते है प्रतिज्ञा की हुई है कि ब्याह से बारह बरस तक अज्जना से बात न करेंगे बल्कि इस की शक्ति देखने के रवादार न होंगे। और अपनी माता को भी बात करने से कर्तव्य ममानत कर दी है।”

ये कहकर ललिता तो चलती हो ली और अञ्जना देवी के हाथ पाँव फूल गए। आँखो मे अंधेरा छा गया। बोलने की ताकत जाती रही। और बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी। बसन्तमाला ये हाल देख अपने दिल को सख्त कर अञ्जना देवी का सर अपने जान् (जंघा) पर रख बोली-

बसन्तमाला अज्जना देवी के सर को हरकत देकर “अज्जना देवी! अज्जना देवी! प्यारी क्यों नहीं बोलती जब कुछ भी जवाब न दिया तो बहुत घबराई और चीख मारकर बोली “हाय! अज्जना देवी को क्या हो गया? अब मैं क्या करूँ?” और थोड़ा सा पानी लाकर उसके मुँह पर छीटा दिया। कदरे होश आई तो ये कहा “हाय! दिल के अरमान दिल ही मेरहे” और खामोश हो गई।

तब फिर बसन्तमाला ने उसके सर को हिलाकर कहा ‘सखी! क्यों इस कदर बेचैन हो रही है? तेरी ये हालत देखकर मेरा जी घबराता है। सीना चाक हुआ जाता है। यहाँ हमारा गमखार कौन है जो पवन जी को जाकर समझाएगा? या हमारे ही हाल पर तरस खा हमको तसल्ली देगा मैं जानती हूँ कि तू बेगुनाह है लेकिन क्या करूँ। मेरी कौन सनता है! अब तो सिवाए ईश्वर

بسم اللہ الرحمن الرحیم
بسم اللہ الرحمن الرحیم

للتا۔ کیا بتلاوں؟ رات تھے کوہا قدر لگاگر، انجنا دلیوی کی قسمت پھوٹ گئی؟
کنور جی نے کسی بات پر جس کو وہ بتلاনے سے گزر کرتے ہیں پڑھیا کی ہے ای ہے کہ یا
سے بارہ برس تک انجنا سے بات ٹکریں گے۔ بلکہ اس کی نسل دیکھنے کے بعد ادا
شہوں گے۔ اور اپنی نائکوں سی بات کرنے سے قطعی مانافت کر دی ہے۔
یہ کہ مکر للتا تو علیٰ ہوئی۔ اور انجنا دلیوی کے ناخقاڈوں پھولی گئے
آنکھوں میں اندر چھا چھا گیا۔ بوئنے کی طاقت جاتی رہی اور بے ہوش جو کرنیں پڑیں
گزیری۔ بیٹھت مالا یہ حالت دیکھا اپنے دل کو سخت کر انجنا دلیوی کا سر
اس سخنے زدنے پر کچھ کہ کے دیا۔

بست مالا۔ راجنا دیوی کے سر کو حرکت دیکر، راجنا دیوی! راجنا دیوی، اپنے کیوں نہیں بولتی۔

بُشِّریوں پر اسی یوں بیان یہ ہے
جب اُس نے کچھ بھی جواب نہ دیا تو ہبہت گھبرائی اور چیخ مار کر کوئی
کام سے انجنا دلوی کو کیا مہوگی ہے اب میں کیا کروں؟ اور تجوہ اس پانی لاک
اس کے شنید پر چیختا دیا۔ قد، سے ہوش آئی تو یہ کہا۔ ناٹے بدل کے رہا
دل یہ ہے اور فاء و مس ہو گئی۔

تب پھر سنت مالا نے اُن کے سر کو ملا کر کہا۔ سکھی اکیوں اسقدر
بے عین بھروسی ہے جو تیری یہ حالت دیکھ کر میری جی کھپر آتا ہے۔ سیدنا چاک
ہوا جاتا ہے۔ یہاں چار اغمونگوں کوں ہے جو پوون جی کو جا کر سمجھ لیں گے
با جا رے ہی حال پرنس لکھا ہم کو متسلی وریگا میں جانتی ہوں کہ تو مجھے گفتہ
ہے لیکن کیا کروں۔ میری کون سنتا ہے! اب تو سواسے ایشور

के कोई सहारा नहीं। इस कदर गम करने से तो कुछ फायदा नजर नहीं आता।”

“प्यारी! तुम खुद दाना (बुद्धिमान) हो ज्यादा कहने की जरूरत नहीं। जरा विचार तो करो मैं क्या कर सकती हूँ? **बजज** इसके कि तुमको इस हालत में देख आँखों से आंसू बहाऊँ।” ये कहा और पानी मुँह में डाला और सर को हाथ से हिलाया। जब अञ्जना देवी ने आँख खोलकर उसकी तरफ देखा तो बसन्तमाला ने कहा “प्यारी! दिल को मजबूत कर ईश्वर पर भरोसा रखा। देख ज्ञानी वही है जो मुसीबत में धीरज रखे। क्या तुझको अपने महेन्द्रपुर के बाग की बो बात, जो सैर करते वक्त अक्सर कहा करती थी, याद नहीं। जो दुःख सुख शरीर का भोग जान ईश्वर पर भरोसा रखता है वही सुख पाता है।” ये सुनकर अञ्जना देवी ने बड़ी नरम आवाज से कहा “मैं सब कुछ जानती हूँ लेकिन दिल नहीं मानता सब को बहतेरा हौसला देती हूँ कि ये किसी का दोष नहीं मेरे ही कर्मों का फल है। मगर जब उस दासी की बात याद आती है बेइछित्यार (अनियंत्रित) जी घबराने लग जाता है।”

“और तो कुछ फिक्र नहीं सिर्फ ख्याल है तो इस **अमर** का कि वो कौनसी ऐसी बात है जिसने उस प्राण प्यारे को मेरी तरफ से **बरजन** कर ऐसी प्रतिज्ञा करने पर आमादा किया। जहाँ तक सोचती हूँ यहाँ क्या माँ बाप के घर भी तो कभी मैंने जबान से ऐसा कलमा नहीं निकाला जो दूसरे के मलाल का **बाइस** हुआ हो। और खास कर स्वामीजी के साथ या उन की बाबत गुफ्तगू करने का तो मौका भी नहीं मिला। उनको रंज हुआ तो क्योंकर अरे कुछ समझ में नहीं आता। असलियत इसकी क्या है?”
बसन्तमाला “जो कुछ तुमने कहा दुरुस्त है इसमें कुछ शक नहीं कि तुम

के कोई سहारानहीं। एस क्या उम्र करने से तो कुछ फायदा नजरनहीं आ।”
“بیماری اتم خود دانہ بہزادہ ہے کی صورت نہیں۔ ذرا بسیار لوگوں!
میں کیا کر سکتی ہوں؟ بجز اس کے کہ تم کو اسی حالت میں دیکھنے کھوں سے
آنہوں باؤں۔ چہ ماں بیانی سندھیں ڈالا اور سر کو ہاتھ سے ہلایا جب اپنادیلوی
نے آنکھ کھول کر اس کی ہدف دیکھا تو بست مالانے کہا پیاری بادل کو
مضبوط کر ایشور پر بھرد سر کھم۔ دیکھ لیا وی ہے جو محبت میں دھیرج
رکھے۔ کی تھکوا پہنچنے مہندر پور کے باعث کی وہ بات جو سیر کرتے وقت اکثر
بپ کرتی تھی یا نہیں۔ جو دکھ سکھ سری کا بھوگ جان ایشور پر بھرد سر کھتھے
ہی سکھ پاتا ہے۔ یعنی راجنہادیلوی نے بڑی نرم اوائز کہا۔ ”میں
سپ کچھ چانتی ہوں۔ لیکن دل نہیں مانتا میں کوئی تھیرا خوشی تھی ہوں
گویر کسی کا دوسرا نہیں میرے ہی کروں کا بچل ہے۔ مگر جب اوس داسی کی
بات پیدائی ہے بے اختیار جی گھبرانے لگ جاتا ہے۔
اور تو کچھ نہیں۔ صرف خیال ہے تو اس امر کا کہ وہ کوئی ایسی
بات ہے جس نے اس پر ان پیارے کو میری طرف سے بہن کریں
پڑ گیا پر کہا کیا۔ ”
”جہاں تک میں سچتی ہوں یہاں کیا، ان پاپ کے گھر بھی تو کبھی
میں نے زیان سے ایسا کلمہ نہیں بخالا جو دوسرے کے مال کا باعث ہوا ہو۔
اور خاص کر سوامی جی کے ساتھ یا ان کی بابت لفظ کرنے کا تو موقوفیتی میں
خالاً ان کو سچ ہوا تو کیونکر؛ نہ ہے۔ کچھ سمجھیں نہیں آتا! اصلیت اس کی
بنتے؟!!“
جست مالا۔ جو کچھ تم نے کہا درست ہے۔ میں جس کچھ شک نہیں کنم

बेगुनाह हो लेकिन घबराने से कुछ हासिल नहीं होता।” अज्जना देवी सर्द सांस लेकर “क्या घबराना है ये पिछले जन्म के कर्मों का फल है किसी का दोष नहीं।” ये कहा और टप टप आंसू आँखों से गिरने लगे।

जब इस तरह दिन रात की **आहोजारी** और बेकरारी मे कुछ अरसा गुजरा तो एक रोज संध्या कर ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी कि रोकर इस तरह कहने लगी

दोहा

**कौन अवज्ञा बैन कवि दीन बन्धु भगवान् न मेरी ओर को निहारते मेरे प्रियतम प्राण
विधना क्या तो ए बैर था जो लिखा मुसोर भाग**

ऐसे प्रियतम चित्र दिया सो है बैराग

**प्रियतम मेरे प्यारे कहाँ करूँ अपराध तेरे दरस को तरसते मेरे नयन असाध
बसन्तमाला मेरी प्यारी तुम कुछ करो उपाए**

जाहिद पवन जी कर लो बदी बना

कहे दास मसन अज्जना मत व्यर्थ घबरा नयन दोष किसको प्यारी करूँ तकिया
ये कहा और पेरेशानी की हालत में फिर कुछ सोचने लग पड़ी। बहुत देर तक आलमी सकूत (शान्ति) मे पड़ी रही। लेकिन जब ये ख्याल दिमाग से चक्कर खाता हुआ जुबान पर आया “ऐ! बारह साल की प्रतिज्ञा” तो सीना गम से थरथरा दिया। आँखों मे आंसू भर आए और पवन जी को मुखातिब कर यूँ कहने लगी “ऐ प्राण प्यारे! मेरे हाल पर रहम करो बगैर आपके यहाँ मेरा कौन है? महाराज आप इस दासी से क्यों ऐसे बदगुमान (सदिग्धचित्त) हो गए जो ऐसी सख्त प्रतिज्ञा की? मैंने तो अभी तक आपके दर्शन भी अच्छी तरह नहीं किए। मेरे नयन तो चकोर की तरह आप का चाँद सा मुखड़ा देखने को तरसते हैं। और न ही अब तक आप की खिदमत करने पाई हूँ कि इसमे कुछ पसोपेश (उल्टा पुल्टा) हुआ हो। हाय! समझ मे नहीं आता की आप मेरी तरफ से बर्जन क्यों

بے گناہ ہو۔ لیکن گھبرانے سے کچھ مصالن نہیں جوتا۔
اجنبادیوی (سر و سالن سے کر) اک گھبرانا ہے!!! یہ پچھلے جنم کے کر مول کا
پھل ہے کسی کو دوس نہیں!
یہ کہا اور سب طب آنسو انکھوں سے گرفتے گئے۔

سب اس طرح دن رات کی آہ و زاری (دسمبئے فراری) میں کچھ عصر گندم
و ایک دو سو سندھیا کر ایشور سے پر رخندا کر ہی بخشی کر دکڑاں طرح ہنتے گئی۔

دو چھٹا
کون او گیا میں کسی دن بندھو گیکن ہمیری درہنار میرے پر تتم میان
بدھن کہا تو سے پر تھا جو لکھا نہ تھو یہی پر تتم جھرنے دیا ہوتے بریگ
تیر کو سارے کھان کرو اپراہ تیر کو سارے کھان کرو اپراہ بست ملا تیر خیالی تیر کچکر دادیا جامد تکین بلوان جی کر یوہ ہی بنا
کہے دس من ما جنہا مت بتحا گھبیر ہیں دس کسیکو بنا لئے کرم نعلیا یہ
یہ کہا اور پریشانی کی حالت میں پھر کچھ سچنے لگے پڑی بعثت دیر تک معلم
سکوت میں بھجی ہی۔ لیکن جب یہ خیال دوڑھ سے چکر کھانا ہوا زمان پر آیا
ایں بارہ سال کی پر گیتا۔ تو سینہ غم سے تھر تھرایا۔ انکھوں میں انزو بھرے
اور بلوان جی کو مجاہطہ کر یوں کہنے لگی۔ اسے بڑاں بیمارے! میرے عالی
پر رحم کر۔ بغیر آپ کے بیہاں میرا کون ہے؟ ہم مارج آپ اس دو می سے
کیوں ایسے بدلان ہو گئے جو ایسی سخت پر ٹھیکی؟ میں نے تو ابھی تک اسکے
درجن بھی اچھی طرح بھیس کیتے! میرے نین تو چکور کی طرح آپ کا چاند سا کھرا
و بیخنے کو ترسے ہیں اور زیبی بنت آپ کی خدمت کرنے پائی ہوں کہ سبیں
چھوپ پیش ہوا ہے۔ تھے اس کچھ میں نہیں آتا کہ آپ میری طرف سے بدن بن کر

हो गए? ”

कस्मा करदा परादना तहा से दुखिया भारी

मात पिता को छोड आई मैं शरण तुम्हारी

बिना आप महाराज कौन मेरा हितकारी **दया का ही बैराग** पति मैं दासी तुम्हारी
नाजरीन! अज्जना देवी ने इन **मजकूरा बाला** फिकरों को ऐसी दर्दनाक आवाज से रोते
हुए जबान से निकाला कि जिन को सुनकर पवन जी का दिल भी, जो हुस्ने इत्फाक
से उसी वक्त इसी महल के नीचे से गुजर रहे हैं, पाश पाश (टूट) हो गया है।

अगर इन फिकरों को सहदसामरी (जादू) कहे तो बजा है जिन्होने इन के कानों मे
पहुँचते ही आगे बढ़ाते हुए कदम को वही रोक दिया और अज्जना देवी के पास जाने
पर आमादा कर दिया है।

आहा! जिस वक्त पवन जी ने आखिर का दोहा सुना तब तो बेइखियार ही लौट ही
पड़े। मगर एक दो कदम जाने के बाद ठिठक कर वही खड़े हो दिल ही दिल मे कहने
लगे “उफ! मैंने तो बारह साल की प्रतिज्ञा की हुई है। अभी तो ग्यारहवाँ बरस गुजर
रहा है। फिर खुद ही अगर मेरी प्रतिज्ञा रासती पर न हुई तो मुझसे बढ़ कर बेरहम और
कमअक्ल कौन होगा? जिसने एक आवाज को सुन बगैर तहकीक और तसल्ली
करने के ऐसी सख्त प्रतिज्ञा की। अफसोस! मुझसे बड़ी नदानी हुई! बेशक नादानी
हुई! कोई भी अक्लमन्द ऐसा नहीं करता जैसा कि मैंने किया है!”

“आह! अगर इस तरह गर **ये जारी** करते करते मर गई तो बस क्यामत ही है। मैं तो
दीन का रहा न दुनिया का” कुछ सोचकर “कुछ ही क्यों न हो अब तो जरूर प्राण
प्यारी से मिल उसका हाल दरयापत करूँगा। वरना नाहक उसका खून मेरी गर्दन पर
होगा।” ये सोचकर कदम उठा कर आगे बढ़ा मगर फिर झिझक कर खड़ा हो गया
और कहने लगा

جواب ۵

اہما کردار ادا نہیں دکھیا بھاری مات پتا کو جھوڑ آئی میں شرن تھماری
بناں آپ مدراج کون سیر تھکاری دیا کاہی بیراگ پتی میں داس تھماری
ناظرین **ابنجنا دیلوی** نے ان مذکورہ بالاقفروں کو اسی **وہ دکا**
اواز سے روٹے ہوئے زبان سے بکالاکہ جن کو سُنگر پون جبکہ ملہی جو حن
اتفاق سے اُس وقت اُسی خل کے نیچے سے گزرا رہے ہے میں پاش پاش
ہو گیا ہے۔

اگر ان فقروں کو سحر سامری کہیں تو بجا ہے۔ جنہوں نے ان کے
کافوں میں پہنچتے ہی۔ اسے بڑھتے ہوئے قدم کو دیں روک لیا اور **ابنجنا دیلوی**
کے پاس جانے پر آمادہ کر دیا ہے۔

آہ! جس وقت پون جبی نے اخڑ کا دو ماٹا توبے اختیار ہو
لوٹ ہی ٹپے گمراہیک وقدم چلنے کو بعد ٹھٹک کر دیں کھڑے ہو دل ہی
دل میں رہنے لگے۔ اوف میں نے تو بارہ سال کی پرستیکی ہوئی ہے۔ ابھی تو گیا ہوا
برس گذر رہا ہے (بچر خود ہی) اگر میری پرستی پر ہوئی تو مجھے بڑھ کر
بے رحم اور کم عقل کون ہو گا؟ جس نے ایک آواز کوئں بغیر تحقیق اور متلی
کرنے کے لیے سخت پرستیکی۔ افسوس! مجھے بڑی ناداںی ہوئی! ابے شک
ناداںی ہوئی!!! کوئی بھی عقلمند ایسا نہیں کرنا جیسا کہ میں نے کیا ہے!!

آہ! اگر اسی طرح گریز اری کرتے کرتے مرگی تو میں قیامت ہی ہے میں
تو دین کا رہانے دینا کا (ارکچے سوچکر) پچھری کیوں نہ ہواب رضور پر ان پیاری
سے مل اُس کا حال دریافت کروں گا۔ وہ ناجی اُس کا خون میری گدن پر
ہو گا۔ یہ سوچکر دم اٹھا کر اسے بڑھا گدھ بچھیج کر کھڑا ہو گیا اور رہنے لگا۔

“अफसोस मैं क्या बेवकूफ हूँ कि एक दफा की ना अविवियत अंदेशी से तो अब तक पशेमान हो रहा हूँ दूसरा एक और धब्बा अपनी जिन्दगी पर लगाने को तैयार हुआ हूँ इससे तो क्यामत तक रिहाई मुश्किल है। क्योंकि जब ये बात आम मशहूर हो जावेगी कि पवन ने प्रतिज्ञा कर उसका पालन नहीं किया तो तमाम जहान मेरी रुसवाई होगी। हर एक से मुँह छुपाना पडेगा। और जो प्रतिज्ञा कर उसका पालन न करेगा वो ही मुझको बतौर मिसाल के पेश करेगा। आह! ऐसा काम तो मैं कभी नहीं करूँगा।” ये कहकर नीचे नजर किए सोचता हुआ वहा से चला गया।

बाब (अध्याय) सातवाँ कशिशे दिल

दिन के तीसरे पहर का वक्त है। जब कि राजा प्रह्लाद विद्याधर के दरबार में एक सन्नाटा सा छा रहा है कि किसी की आवाज सुनाई नहीं देती। क्या यहाँ राजा साहब तशरीफ नहीं रखते और अहलकार (कर्मचारी) चले गये हैं जो ये आलिम स्कूल (शान्ति) हैं? नहीं! वो देखो राजा प्रह्लाद विद्याधर और पवन जी दोनों चलने को तैयार खड़े हैं और दरबारी अहलकार अपने अपने कागजात संभाल **मुंतजिर** इस बात के दिखाई देते हैं कि ये कब दरवाजे से बाहर कदम रखें और हम चलते चलते नजर आए। ज्यों ही राजा वहाँ से चलने लगा एक सिपाही फौजी वर्दी पहने दरवाजे से दाखिल हुआ और झुककर आदाब करते ही एक खत जेब से निकाल राजा को दिया और आप अलग खड़ा हो गया।

राजा खत को हाथ मे लेकर पहले तो खड़ा ही पढ़ता रहा मगर बाद में बैठ गया। कभी खत को रख देता और सर झुका सोचने लग जाता और कभी फिर हाथ मे ले उसको देखता।

انوس ہر کیا بے وقوف ہوں کہ ایک دفعہ کی ناعابثت اندازی سے توابتک
پر شمان ہو رہا ہوں۔ وہ دسرا الیک اور دھبہ اینی زندگی پر الگ کو تیار ہوا ہوں
اس سے توفیا ملت ہے کہ رہائی مشکل ہے۔ کیونکہ جب یہ ات عاصم شہر ہو جائی
کہ یون نے پر ٹک کر اس کا پالن نہیں کیا تو قام جہاں میں میری رسوائی ہو گئی
ہر ایک سے منہ جھپٹانا پڑے گیا اور جو پر ٹک کیا اک اس کا پالن نہ کر سکا ہے ہی جکلو طور
شال کے پیش کر یکجا۔ آہ! ایسا کام تو میں کبھی نہیں کر دیکھا یہ کہ کر کچھ نظر
کے سوچتا ہوا دن سے چلا گی

باب سالوان

دن کے تیسرے پہر کا دفت سے جبکہ راجہ پر حملہ دو دیا وھر
کے دربار میں ایک سنتا سایچھار نہیں ہے کہ کسی کی آدم ازستائی نہیں دیتی۔ کیا
یہاں راجہ صاحب تشریف نہیں رکھتے اور الہکار چلے گئے ہیں جو یہ عالم
سکوت ہے ؟ نہیں ! دو دیکھو راجہ پر حملہ دو دیا وھر ادلوں جی دیون چلے
کو تیار کھڑے ہیں اور دربار میں الہکار پہنچے اپنے کاغذات سنبھال منتظر اس بات
کے دکھائی دیتے ہیں کہ یہ کب درعاڑہ سے باہر قدم رکھیں اور ہم چلتے پھرتے
نظر آیں جو ہبھی راجہ دہان سے چلتے تھا ایک سپاہی فوجی درودی ہیئتے درعاڑہ سے
داخل ہوا اور جھوک کر ادا ب کرتے ہی ایک خاص جیب سے نکال راجہ کو دیا ادا آپ
اللگ کھڑا ہو گیا۔

رجح خط کو نا تھیں مے کر پہلے تو گھر اپنی پڑھتا رہا۔ مگر بعد میں مجھ کیا
کبھی خطا کو کھدیتا اور سر صحکا سوچنے لگا جانا۔ اور کبھی بھرنا تھیں مے اسکو دیکھا

ईश्वर जाने! इस खत का मजमून क्या है जिसको पढ़कर राजा देर से सर झुका सोच रहा है। हाँ! कभी कभी पवन की तरफ भी देख लेता है। राजा की ये हालत देखकर हाजरीन दरबार बड़ी हैरत में हो राजा के मुँह की तरफ देखने लगे मगर किसी की जुरत न पड़ी कि जबान से कुछ कहे।

बालाहद थोड़ी देर के बाद राजा में खुद प्रधान से मुखातिब होकर कहा

राजा “महाराजा रावण लिखते हैं की **दुरमती** नगर के राजा वरुण से कुछ अरसा हुआ है जंग हुआ था। जिसमें वो गालिब (विजयी) आकर खर और दूषण कि कैद करके ले गया है। अब इनके रिहा कराने की गर्ज से जंग का इरादा है। इसलिए तमाम राजाओं को जो मातहत लंका के हैं तलब किया है। चुनाचा हमको भी लिखा है।”

“अब मैं ये सोचता हूँ कि वहाँ खुद जाऊँ या पवन को भेज़ौँ।” प्रधान कुछ जवाब देने को था कि पवन जी ने आगे बढ़कर यूँ कहा

पवनजी “महाराज अगरचे आपके नजदीज ये कुछ अहम मामला नहीं लेकिन मेरी मौजूदगी में आपका जाना गोया मेरी खिदमत का जाना है। इसलिए **दस्त बस्ता इत्मास** है कि मुझको जाने की इजाजत दी जावे।”

जब पवन जी ने इस तरह कहा तो प्रधान ने इस बात की **तायर** की। मंत्री वगैरा मे जोर दिया। इनकी बाते सुनकर पहले तो राजा कुछ देर तक नीचे नजर किए सोचता रहा। बाद मे प्रधान से बोला

राजा “अच्छा! कूच की तैयारी का हुकम दे दो ताकि पवन कल सुबह ही यहाँ से रवाना हो जाए।”

प्रधान ने ये सुनते ही फौरन फौजी अफसरों को बुला कर सब सामान दुरुस्त करने के वास्ते ताकिद की।

सुबह होते ही पाँच सौ जंगी जवान नंगी तलवारे कांधों पर रखे तरकशों

الشوشنے اس خطاب مضمون کیا ہے جس کو پڑھ کر راجدیر سے سُجْهَ کیا ہے۔ ناں اکبھی کمھی پولن کی طرف بھی دیکھ دیتی ہے۔ راجدیر کی چیزات دیکھ راضین دیبار بڑی حیرت میں راجدیر کے سُجْھ کی طرف دیکھنے لگئے۔ ملکیوں جرات نپری کہ زبان سے کچھ کہے۔

بالآخر صوری دریس کے بعد راجدیر خود پر وحشان سے نماطیت کر کھا۔

راجدیر جہاں جراون لکھتا ہے کہ ورمی نکر کے راجوران سے کمھ عصہ جواہے کہ جنگ ہوا تھا۔ جس میں وہ غالب اکھڑا درود و لکھن کو قبیہ کر کے نے گیا ہے۔ اب ان کے ہا کرانے کی غرض سے جنگ کا ارادہ سے ماسٹے نام رجوں کو جو مائن لفکار کے ہیں ہلکب کیا ہے۔ چنانچہ ہم کو بھی لکھا ہے۔

اب میں یہ سچھائیوں کو دہان خود جاؤں بالبولن کو بھجوں پر وحشان کو پھو جواب دیتے کو تھا کل لوں جی نے اسے چڑھدیوں کا

پولن جی۔ مہاراج اگرچہ اپنے نزدیک کچھ آہم معاملہ ہیں۔ میکھیری جو دنیں میں آپ کا جانا گویا ہیری حرمت کا جانا ہے!! اسے دست لبند التماں ہے کہ بیکو جانے کی اجازت دی جادے۔

جب پولن جی نے اس طرح کہا تو پر وحشان نے اس بات کی تائید کی۔ زیری دعویٰ فرنڈ دیاں لیں تکریبے تو راجدیر نکل یعنی نظر گئے سوچتا رہ۔ لبیرن وحشان سے بولا۔

راجدیر جھاٹفیج کی تیاری کا حکم دید تاکہ پولن کل صبح ہی ہبھا سے روانہ ہو جائے۔ پر وحشان نے سنتے ہی فوراً فوجی افسروں کو بلکہ اس سامان درست کرنے کے دوستے نکیے۔

صحیح ہوتے ہی بانج سر جنگی جوان نجی تواریں کامنھوں پر کھڑکشوں

को तीरों से पूरा करके रत्नपुर के जुनूबी दरवाजे से बाहर किसी के इन्तजार में दिखाई दिए।

आहा! जिस वक्त पवनजी सर पर मुकुट, रखे जरा बकतर पहने घोडे को दौडाते वहाँ आए तो सबने जंगी कायदो के मताबिक सलामी दी।

थोदी देर के बाद नाकूस बजा जिसकी आवाज सुनते ही वो सिपाही जो आगे पीछे होकर साफे बांधे कदम मिलाए मुन्तजिर (प्रतिक्षा) हुकुम खडे थे बड़ी तेजी के साथ चलते हुए नजर आए जिनके कदमों की थपा थप की आवाज कानों में पहुँच क्या सहावनी मालम होती है।

सबसे आगे आगे पवन जी मंत्री के साथ बातें करते हुए जा रहे हैं। और इन सबके पीछे सेनापति **दोहनरबेर** बड़े आन बान से घोड़े को ऐड़ी देता हुआ कभी दाएँ तरफ निकल जाता है कभी बाएँ तरफ। जरा किसी का कदम इधर उधर हुआ कि **दोहनरबेर** ने वही डॉटा।

इस तरह बड़ी शानोशौकत के साथ जा रहे थे कि आपत्ताब ने अपनी शोख किरणों को सुर्ख नकाब में छुपा महताब (चाँद) के खौफ से मगरिब में पनाह ली। और इन दिलवरों ने उम्दा जगह देख एक नदी के करीब डेरा जमाया।

आहा! सब लोग तो सिवाए उन सिपाहियों के जो रात की हिफजत के वास्ते मामूर् (नियुक्त) किए गए हैं सो गए हैं। मगर पवन जी और उनका मंत्री अबतक बातें करते सनाई देते हैं।

कुछ जिकर कर रहे थे की एक जानवर की दर्दनाक आवाज सुनाई दी। पवन जी ने हैरान होकर मंत्री से पूछा “ये कौन जानवर है जो इस वक्त बोल रहा है?”

१ जो एक ताज की किस्म का होता है

کوئی دل سے پُر کئے رعن پور کے جنوبی دروازہ سے باہر کسی کے انتظار
میں دکھالا دیتے ۔

اُنا جس وقت پلوان جی سرگفت رکھے نہ بکتر پینے گھوڑے کو
درڈلتے ہوئے دیاں آتے تو سب نے جنگلی قائد کے مطابق سلامی دی۔
تعودھی دیر کے بعد ناقوس سجا جس کی آواز سنتے ہی رہ سپاہی جوانگے
جیچے ہو کر تینیں باندھے قدم ملائے منظرِ حکم کھڑے تھے بڑی تیزی کے
سامنے چلتے ہوئے لفڑ آتے جن کے تندوں کی چپ تھپ کی آواز کا نوں میں
لوبھ کی سہماوی مسلموم ہوتی ہے۔

سب سے آجے آگے پوں جی متری کے ساتھ باتیں کرتے ہوئے
جاتے ہیں اور ان سب کے پنجھے سینا بیتی و دھن دسیر ٹرست آن بان سے
کمودسے کو ایئری دیتا ہوا کبھی دلیں طرف نکل جاتا ہے کبھی باہیں طرف۔ ذرا
کے سکھ مارچ دھن دسیر نے دسیر دھن دسیر -

اس طرح بڑی شان دشکوت کے ساتھ جا رہے تھے کہ آفتاب نے اپنی شوخ کر گزوں کو سرخ لفتاب میں چھپا۔ اب کے خوف سے مغرب میں پناہ لوئی، بعد ان دلادوروں فے عمدہ حبگوں دیکھتے ایک نمی کے قرب تیریہ جایا۔

آنا! سب لوگ تو سوائے اُن سپاہیوں کے جو رات کی حفاظت
کے داسٹے معمور کئے گئے ہیں سُرگپون ہجی اور انکامنتری اب تک
ہاتھ کرتے شناختی دستے م۔

کچوڑ کر دے تھے کہ ایک جانور کی دنناک آداز سُنائی دی۔ پونہ جی نے ہر ان ہوائی منتری سے پوچھا یہ کون حاضر ہے جو اس وقت بول رہے ہے جو ایک تاج کی نسم کا ہوتا ہے۔

“پہلے تو بھی ایسی آواز سننے کا تقاضا نہیں ہوا”

مंत्री “مہاراج! اسکو چکوری کہتے ہیں۔ یہ اکسر پانی میں رہتی ہے۔ دن بھر نہ نار اور مادا ایکٹھے رہتے ہیں۔ مگر اس کو الگ الگ بوجاتے ہیں۔ یہ ادھ سے جو نر کے دیراگ میں بول رہی ہے۔ گویا اس کو بولواری ہے۔

پوانجی ہیران ہو کر “ک्या یہ رات کو دوئیں اک جگہ نہیں رہ سکتے?”

مंत्रی “نہیں! کुدرات نہیں اسکے لئے اک دوسرے سے نہیں میل سکتا۔”

پوانجی “ऐ! سیف رات کی جو دل رہی رہتی ہے۔”

مंत्रی “جی ہاں! آپ اس کو دل رہی رہتی ہے۔”

پوانجی “ایسا کی آواز سونکر میڈاکو اور ہی خیال پیدا ہو گیا ہے۔ اور وہ یہ ہے کہ ہم نے شادی کرتے ہیں اسخنا دیوی کو علیحدہ مکان میں رکھا ہوا ہے اور تک اس کی شکل بھی نہیں دیکھی۔ جب اس حیوان کا یہ حال سے تردد ہے تو اس کی بیوی نے بھی ہوتی ہو گئی؟ گوٹا بڑھ کر ہو گردل ہی دل میں سُختی ہو گئی۔”

مंत्रی تا جزوب کے لہجے میں “کیوں؟ آپ نے اس کو کیا کیا?”

پوانجی “کیا تum کو وہ مہندر پور کی بات یاد نہیں؟ جب ہم tum شادی کرنے سے پہلے gے تو اسکے لئے دیکھنا دیوی کے لئے کہا تھا۔ اسی بات پر ہم نے پہنچ دل کی بیوی

ہوئی ہے کہ شادی سے باہر برسنے کے سامنے ہے۔ اس کے سامنے ہم کلام نہ ہے۔”

پہلے تو بھی ایسی آواز سننے کا تقاضا نہیں ہوا۔

مंत्रی۔۔۔ مہاراج! اس کو جکوئی کہتے ہیں۔ اکثر پانی میں رہتی ہے۔ دن بھر زادروادہ اکٹھے رہتے ہیں۔ مگر اس کو الگ الگ بوجاتے ہیں۔ یہ ادھ سے جو نر کے دیراگ میں بول رہی ہے۔ گویا اس کو بولواری ہے۔

پوانجی ریحان ہو کر) کیا! اس کو دلوں ایک جگہ نہیں رہ سکتے؟

مंت्रی۔۔۔ جی! نہیں! قدرتی ایسا ہے کہ یہ راست کو ایک دوسرے سے نہیں ل سکتے۔

پوانجی۔۔۔ یہ! صرف رات کی جدائی میں ایسی بول جی ہے!!

مंت्रی۔۔۔ جی! ہاں آپ اس قدر ریحان کیوں ہوئے۔۔۔ یہ کوئی تھی بات نہیں۔۔۔

پوانجی۔۔۔ اس کی آواز من کو جکو ادھی خیال پیدا ہو گیا ہے۔ اور وہ یہ ہے کہ ہمہ نے شادی کرتے ہیں اسخنا دیوی کو علیحدہ مکان میں رکھا ہوا ہے اور

آج تک اس کی شکل بھی نہیں دیکھی۔ جب اس حیوان کا یہ حال سے تردد ہے تو اس کی بیوی نے بھی ہوتی ہو گئی؟ گوٹا بڑھ کر ہو گردل ہی دل میں سُختی ہو گئی۔۔۔

مंت्रی۔۔۔ رجوب کے لہجے میں کیوں؟ آپ نے ایسا کیوں؟ اکیا؟

پوانجی۔۔۔ کیا ہم کو وہ مہندر پور کی بات یاد نہیں؟ جب ہم شادی کرنے سے پہلے گئے تھے تو اسخنا دیوی کے لئے کہا تھا۔۔۔ اسی بات پر ہم نے پہنچ دل کی بیوی ہے کہ شادی سے باہر برسنے کے سامنے ہے۔۔۔

مंت्रی۔۔۔ (ریحان سمجھیگی سے) آپ نے اسی بات پر ہم کو ایسی سختی پہنچ دی کیا ہے اور غصہ سی کر دیا۔۔۔ کیونکہ بات تو قابلِ یقین نہ تھی۔۔۔ اور یہ نے اس وقت سمی۔۔۔ جی عرض کی تھی۔۔۔ گوڑھوس آپ نے کچھ توجہ نہ کی۔۔۔ اس دیوی کی ایسا کہ پہنچ

खबा! अज्जना देवी ने मेरी स्त्री से जो अक्सर उसके पास जाया करती है कभी इस बात क जिक्र भी नहीं किया और न ही किस्म की शिकायत जबान पर लाई है। उसके विद्वान होने पर तो तमाम औरते **अश अश** कर रही हैं। उफ! बारह साल हो गए मगर आपने पहले कभी जिक्र नहीं किया। वरना कब मुमकिन था कि मैं इस गुनाहे अजीम का आपको मुर्तिकिंब (अपराधी) होने देता। आह! ये बात सुन कर मेरे तो रोगटें खड़े हो गए हैं। आपने बड़ा जुल्म किया! हकीकत मे जुल्म किया! ऐसे पाक ख्यालों के खबने वाली वो देवी और उसपर ये जोरो जफा (क्रूर) सितम! सितम! आप बड़े बेरहम हैं।

नाजरीन! मंत्री की बाते पवनजी के बदन मे बिजली की तरह उतर कर गई। उस पर ये खूब **सोजोन** है कि जादू वो जो सर चढ़ कर बोले। पवनजी ने बगैर किसी बात का जवाब देने के यूँ कहा

दुख का कारण मैं भेद बता पाई न जना
शीलवती प्यारी अज्जना कुछ न किया बचा
जब पवन जी ने इस तरह कहा तो मंत्री बोला
मंत्री “महाराज! जो वक्त गुजर गया वो हाथ नहीं आता। लेकिन अब भी रत्नपुर
नजदीक है। आप जाकर उसकी तशफि (तसल्ली) कर आवें और मैं सेना को लेकर
रामनाथ पर आपका इन्तजार करूँगा।”

पवनजी कुछ देर सोचने के बाद “आहा! मंत्री बड़ी खुशी की बात ये हुई कि आज बारह साल प्रतिज्ञा को भी पूरे हो गए।”

मंत्री “तो अब आप देर न करे क्योंकि रात पहले ही बहुत गुजर चुकी है।”

पवनजी “खैर इस बात का तो कुछ फिक्र नहीं लेकिन अगर मैं इस वक्त वापिस गया तो पिताजी ख्याल करेंगे कि मैं लडाई से डरकर वापिस आ गया हूँ और बाद सब हंसेंगे।”

रक्का!! अंजना औलोयी ने बहरी अस्त्री से जो क्षत्रादोस के नाम जड़ाया करती है।
उसी एस बात का दूर स्मृति नहीं की। एरने वी कसी क्षम की शकायत जबान पर लाई है।
एस के द्वद्वान हमें प्रत्यामुखी तौर पर उत्तम उत्तम उत्तम कर रही है। - ऑफ बारह साल
हो गئे!! ऐक्टर अपने पैले कम्ही दूर नहीं की। !! एरने के नक्कन त्राकर में एस ग्नाव उत्तम
का आप करने के बहुत दिन। ए बात मुझे करने के बिरसे तो दूर नहीं करते हैं जैसे जैसे
आप ने ब्रह्मात्मक अहिंसा में खाली आपने ब्रह्मात्मक अहिंसा में खाली आपने ब्रह्मात्मक अहिंसा
हो गयी। एस पर ये जुरो वजहा। अस्त्र आप अपने ब्रह्मात्मक अहिंसा में खाली आपने ब्रह्मात्मक अहिंसा
नाखत्रिन अस्त्री की बातें पूछने वी जी के बैन में बहुत की खूबी की खूबी की खूबी
एस पर ये खूब सूरजोन बैने के ब्रह्मात्मक अहिंसा में खाली आपने ब्रह्मात्मक अहिंसा में खाली आपने ब्रह्मात्मक अहिंसा
एसी बात का जवाब दियें के यो बात कहा है
दूक्ष कामन मैं ब्रह्मात्मक अहिंसा में खाली आपने ब्रह्मात्मक अहिंसा में खाली आपने ब्रह्मात्मक अहिंसा
खूब पूछने वी एस खूब कहाने वी अस्त्री ब्रह्मात्मक अहिंसा में खाली आपने ब्रह्मात्मक अहिंसा
अस्त्री। एस खूब इज्जत के दूर नहीं की। एस खूब इज्जत के दूर नहीं की। एस खूब इज्जत के दूर नहीं की।
त्रिदीप है आप बाकर आपनी त्रिदीप है आप बाकर आपनी त्रिदीप है। एवर मैं सिंह को ले कर रामनाथके
प्रिया बाकर आपनी त्रिदीप है।
यो जी। - रक्को दूर स्मृति के बाद, आप अस्त्री ब्रह्मात्मक अहिंसा की बात यीही
कर आज बारह साल पर ब्रह्मात्मक अहिंसा पर दूर स्मृति के बाद, आप अस्त्री ब्रह्मात्मक अहिंसा
अस्त्री। - एवां आप दूर नहीं की। क्योंकि रात पहले ही बहुत गुजर चुकी है।
यो जी। - खैर। एस बात का दूर स्मृति नहीं की। लेकिन आप मैं वक्त दूसरे साथ
प्रिया बाकर आपनी त्रिदीप है। एवर मैं सिंह को ले कर आपनी त्रिदीप है। एवर मैं सिंह को ले कर आपनी त्रिदीप है।
ब्रह्मात्मक अहिंसा की बात का दूर स्मृति नहीं की।

मंत्री “आपको किसी के मिलने की जरूरत ही क्या? सिर्फ अज्जना देवी तक जाइए और एक दो रोज रहकर वापिस आ जाइए”

पवनजी को मंत्री की तजवीज (सलाह) पसन्द आई। फौरन घोड़े पर सवार हुआ और घोड़े तो ऐड़ी लगाने की देर थी कि ये जा वो जा। आखिर नजर से गायब हो गया।

दोहा

बलहारी जगदीश के जा महिमा अपरमपार
नाम उसी का सत है झूठा ये संसार
दया करे जब दीन पर जरा ना लागे देर
निरास न हो प्यारी अज्जना था दिनो का फेर

बाब (अध्याय) आठवाँ

हसूले मुराद

एक पहर से किसी कदर ज्यादा रात बाकी है कि अज्जना देवी जो इस से पहले तमाम रात पवन जी के वैराग में जागती रही थी बेहोश होकर सो गई हैं। और सोई भी उस नींद में जिसको बेफिक्री की नींद कहे तो बजा है। क्योंकि जब से ये ससुराल में आई हैं ये नींद तो इससे कोसों दूर रहती थी। हाँ! सर्द आहें और गर्दिश अयाम की शिकायतें इसकी हमदम और रफीक थीं। आज मालूम नहीं क्या बाइस है कि बावजूद संध्या का वक्त होने के ये बेहोश सो रही हैं।

जब मामूल से ज्यादा वक्त हो गया और अज्जना देवी ने करवट भी न ली तो बसन्तमाला बहुत इन्तजार के बाद अज्जना देवी के कमरे में दबे पाँव आई तो मालूम हुआ कि वो बेहोश सो रहे और शमादान जल रहा है।

منत्री - आप को कसी के मैने गी ضرورत ही की जो صرف अंजनाड़ीयी
बैक जायेंगे - और आप दूर दूर बैक बैक आप आ जायेंगे -

پून जी को नत्री की खोज रखने की फूराहोर से प्रासार हो वा - और
गहरे से को बैरी लगाने की विधियाँ कर जाओ वा आ ख़रनेत्र से फायब हो गी -

दوहा

भारी ज़ज़दीस के जाहेमां प्रम पर नाम असी कास्त है ज्ञोहायी स्नार
दिकरे जी दिन प्रज्ञरान्तरांगे दिर न्यास न्योमारी अंजनात्मानों काच्चिर

بَابِ الْأَحْوَالِ

حَصُولِ مَرَادِ

एक पहर से की तरफ नियादह रात बाती है कि अंजनाड़ीयी जूस से
चौंके तामरात पून जी वे आप भी बाकी रही रखी बे बूश बूकर गूणी है
और सूली जी अस नींदेस जस को बिनकरी की लिन्द कीस तो जाही है किन्तु जब
से ये सराइ मैली है पैथिमी निष्टोस से कोसून दूर ही है वाल
सरो अम और ग्रदृश याम की खात्मिस अस की बद्रम और फ़िन त्यस लंग मूद्दम
नहीं एक बहुत है कि बावजूद संदर्भिया कावत होने के ये बैये बूश
सरी है -

जब हमूल से नियारह वक्त बूकी और अंजनाड़ीयी ने बैरोह
बिजी ने बैल तो लहंत मालाहेत से नितार के बद्र अंजनाड़ीयी के करें
विरोह मैल नामी नूस्तुरम बूकर देख बैये बूश मूर है बूश मूद्दान जल रही है

चूँकि पहले बसन्तमाला ने मुद्दत से इसको इस हालत में कभी न देखा था इसलिए घबरा गई और हाथ बढ़ा कर बेदार (जगाने) करने का इरादा किया। मगर झिझक कर इस ख्याल से रह गई कि बड़ी मुद्दत के बाद उसको ये नींद नसीब हुई है।

आहा! अगरचे अज्जना देवी ख्वाबे गफलत (लापरवाही) मे बेहोश सो रही हैं लेकिन उसके लबों से कुछ तबसुम के आसार पाए जाते हैं। न सिर्फ ये ही बल्कि आहिस्ता आहिस्ता हरकत भी कर रहे हैं। गोया ये ख्वाब में किसी से बाते कर रही हैं। बसन्तमाला बड़ी हैरानगी से बहुत देर तक इस प्यारी सूरत को देखती रही और कई तरह के ख्यालात पैदा कर हैरान होती रही।

जब संध्या का वक्त गुजरने लगा तो बसन्तमाला की बेचैनी हद से बढ़ा। ज्यादा सत्र की ताब न लाकर बोली

बसन्तमाला “प्यारी सखी! संध्या का वक्त हो गया है और तुम अब तक सोती हो! क्या आज उठने को दिल नहीं चाहता?” ये कहा और हाथ से हरकत दी। अज्जना देवी ने आँखे खोलकर एक दफा देखा और फिर बन्द कर ली।

बसन्तमाला अज्जना देवी की ये हरकत देख ताजुब में हुई और बोली

बसन्तमाला “सखी! आज ये क्यों! क्या मेरी शक्ति तुम देखना नहीं चाहती कमरे से बाहर निकल जाऊ?”

अज्जना देवी मुस्कराती हुई उठी और बोली

बसन्तमाला मैं स्वपन में देखे हैं भरतार

अती आनन्द मे मन देखे रही घड़ी दो चार

धन दिन प्यारी आज का जो देखा स्वपन अपार

तब से मग्न है मन मेरा जो राखे करतार

چونگر پیدے بہت مالا نے مرت سے اس کو اس حالت میں کم جی
نہ دیکھا تھا اس نے لگھر کی اور رات تھر بڑھا کر بیدار کرنے کا ارادہ کیا سرکر محجوب کے کلاس
ذیال سے رہ گئی کہ بڑی مرت کے بعد اس کو یہ نیند لفیضب ہوئی ہے۔
اُنہاں اگرچہ اجھنا دیلوی خواب غلطیت میں بے ہوش ہو رہی ہے
لیکن اُس کے بہوں سے کچھ تسمم کے آثار پائے جاتے ہیں مصرف یہی
بلکہ اس سے آہستہ حرکت بھی کر سکتے ہیں مگر گو بایہ خواب بس کمی سے باقی
کر رہی ہے۔
بہت مالا بڑی حیرانگی سے بہت دریک اس بیانی صوت
کو دیکھتی رہی۔ اور کسی طرح کے خیالات پیدا کر حیران ہوئی رہی۔
جب سندھیا کا وفات گزرنے لگا تو بہت مالا کی بے چینی
حد سے بڑھی زیادہ صبر کی ناہم نہ لا کر بولی۔
بہت مالا۔ پیاری سکھی! سندھیا کا وقت ہو گیا ہے۔ اور تمہارا
سوئی ہو۔ کیا! آج اٹھنے کو دل نہیں چاہتا۔
یہ کہا اور ناخ سے حرکت دی۔ اجھنا دیلوی نے انکھیں کھوکر
ایک دفعہ دیکھا اور پھر سنبھل کر لیں۔
بہت مالا اجھنا دیلوی کی یہ حرکت دیکھنے عجب میں ہوئی اور بڑی
بہت مالا۔ سکھی! آج یہ کیوں؟! اکیا بیسری شکل قمر دیکھنا ہمیں چاہتے
کہرس سے باہر نکل جاؤں؟
اجھنا دیلوی۔ سکرا تی جعلی اٹھنی اور بولی ۵
بہت مالا اس سوپن میں دیکھنے پڑھار اتنی اسندھی میں فکھے رہی گھٹری اور چار
ہن دن بیاری اجھا جو دیکھا سوپن آپا ر تباہے گن ہے من میرا جو رکھس کردا

बसन्तमाला कुछ कहने को थी कि दरवाजे खड़खडाने की आवाज आई। डरकर
झरोखे से जाकर देखा तो पवन जी को पाया। हंसती हुई आई और यूँ कहा
उठ देख प्यारी अञ्जना क्यों होवे बेचैन
स्वामी खडे द्वार पर सीतल कर उठ नैन
अञ्जना देवी “सखी! क्यों दिल लगी करती है। कभी तो ईश्वर कृपा करेंगे।”
अञ्जना देवी ये कहती रही कि बसन्तमाला ने जाकर दरवाजा खोला और पवनजी
को साथ लाई।

ज्यों ही उन्होंने कदम दालान मे रखा कि अञ्जना देवी को अपने पाँव पर पाया और
ये कहते सुना “धन है आज का दिन जो आप के दर्शन हुए महाराज! मेरे नयन तो
चकोर की तरह आपके दर्शन को तरस रहे थे। मालूम नहीं आप मेरी तरफ से क्यों ऐसे
बदगुमान हो गए जो आज तक खबर ही न ली। स्वामीजी! बिना आप के और कोई
सहारा नहीं। मेरे हाल पर रहम करो। मैं बेगुनाह हूँ। माँ बाप को छोड आपके शरण मे
आई थी सो आपने मन से ऐसे त्याग दिया जैसे सरहदहन दहाम को और मनुष्य मल,
को।”

ये कहा और जारजार रोने लग पड़ी।

पवनजी “प्रिया जी! मेरा कसूर नहीं। ये तुम्हारे ही अपमान का फल है। क्या तुमको
याद नहीं शादी से कुछ रोज पहले शाम के वक्त सखी सहेलियों के साथ आपने महल
मे बैठे हुए अपनी खूबसूरती के अभिमान में आ हम को जहर के समुन्द्र से मिसाल दे
दावर्धी की तारीफ कर रही थी।”

इस बात को सुनकर अञ्जना देवी तो हैरान हो पवन जी के मुँह की तरफ देखने लगी।
बसन्तमाला ने जवाब दिया।

१ मल याने गन्दी चीज को २ याने गरूर का नतीजा

بُشْت مالا کچھ کہنے کو تھی کہ دروازہ کھٹ کھٹانے کی آواز آئی دوسرے
جھروکے سے جاکر دیکھا تو پون جی کو پایا تھا جوئی آئی اور یوں کہا۔
اوٹھو دیکھ پیاری انجنا کیوں ہوئے تھیں سوامی کھڑے دروازے سیل کر لئھنے
انجنا دلیوی۔ سکھی کیوں دل لگی کرتی ہے کبھی تو شود کر پا کرئے۔
انجنا دلیوی یہ کہتی ہے کہ بُشْت مالا نے جاکر دروازہ کھولاؤ
پون جی کو ساتھ لائی۔

جونی انھوں نے قدم دلان بن رکھ کر انجنا دلیوی کو اپنے پاؤں
پر پایا اور یہ کہتے رہنا۔ دہن ہے اجکاں جو آپ کے درشن ہوئے جہاں جان ایسے
ہیں تو چکور کی طرح آپ کے درشن کو ترس رہے تھے۔ معلوم نہیں آپ میری
طرف سے کیوں لیتے بیگان ہو گئے جو آج تک خبری نہیں سوامی جی!
ہن آپ کے اور کوئی سہما نہیں۔ میرے حال پر حکم کردیں بے گناہ ہوں۔
مان ماپ کو چھوڑ آپ کے شترن ہیں کی تھیں سوآپنے من سے لیتے تیار
دیا جیسے سدھ دہن دنام کو اور منش مل کو۔

یہ کہا اور زار درستے لگ چڑی۔
پون جی۔ پری جی! میرا قصو نہیں یقیناً سے بی ایمان کا مصل ہے لیا تکم
یا وہیں ستادی سے کچھ ذریعے شام کے وقت سکھی ہی سلیوں کے ساتھ
لپنے ملیں۔ سمجھے ہوئے ایسی خوبصورتی کے ایمان میں آہ کو نہ کر کے سمند
سے مثال دستے و پرب کی تعریف کر رہی تھیں۔

اس بات کو سنکر انجنا دلیوی تو حیران ہو پون جی کے منکھ کی طرف
وچکنے لگی۔ سگر بُشْت مالا نے جواب دیا۔

لے مل لیتے گندی چیز کو ٹھیٹھے عزوف کا نتیجہ۔

--	--

हुए। “बसन्तमाला ने नादानी से दो तीन बातें बेअदबी की कही हैं सो उनके वास्ते मैं आपसे माफी माँगती हूँ”

इतने मे बसन्तमाला ने मुस्कराते हुए कहा

बसन्तमाला “सखी! क्या आज संध्या नहीं करोगी?”

ये सुनते ही पवन जी और अञ्जना देवी ने स्नान कर संध्या की और बाद मे इधर उधर की बातें कर दिल के अरमान निकालने लगे।

आहा! इस वक्त अञ्जना देवी का वही चेहरा जो जमाने की गर्दिश से रंजोगम मे मुबतला (ग्रस्त) रहकर जर्द (पीला) और डरावना मालूम होता था सुख्ख और दिल लुभाना दिखाई दे रहा है। पवनजी के न देखने से वो खून जो रग रग मे जम गया था जोशेजन है। बात बात पर तबसुम आ रहा है। और खुशी से चेहरा दमक रहा है।

आज वही महल जो एक अरसे से दिन रात की सर्द आहों को सुनता हुआ **तहमसरा** बन रहा था खुशी के कहकहों से गूज रहा है। देखो वही परिन्दे जो मौसमी के दरखत पर अक्सर बैठकर अञ्जना देवी की गमजदा हालत पर रोया करते थे खुशी से चहचहाते हुए सुनाई देते हैं। उसी फुलवारी से जिसको देखने से कलेजा मुँह को आता था आज बसन्तमाला फूलों के हार पिरो कर अञ्जना देवी और पवनजी के गले पहना रही है। और एक गुलदस्ता भी आगे रखा है। सच है जी से जहान है। अगर दिल खुश हुआ तो सब चीजे भाये वरना सब बबाले जान है।

जब तीन रोज गुजर गए तो पवनजी चलने को तैयार हुए तब अञ्जना देवी ने हाथ जोड़कर कहा

अञ्जना देवी स्वामीजी! क्या आप अपने वालदैन की तरफ न जायेंगे?

ہوئے۔ بسنت مala تہ دالی سے دو تین باتیں بے ادبی کیسی میں سو
اُن کے درستے میں آپ سے معافی بانگتی ہوں۔

اسنے میں بسنت مala سکھ لے سکتے ہوئے کہا۔

بسنت مala۔ سکھی اکیا آج سندھیا نہیں کر دی؟

یہ سننے ہی پون جی اور انجنا دلیوی نے اشان کر سندھیا کی او
بعدیں اور صراحتی باتیں کر دل کے ارمان نکالنے لگے۔

آنا! اس وقت انجنا دلیوی کا دھی چہرہ جوناہن کی گوش سے
سچ دعیم میں مبتلا رہ کر زد اور دُڑا دنامعلوم ہوتا تھا سارخ اور دل بہانہ دکھل

و سے رہا ہے۔ پون جی کے دیکھنے سے وہ خون جو گرگ میں جنم گیا تھا جنہیں
ہے۔ بات بات پر تسبیم آرنا ہے! اور خوشی سے چہہ دکاں رہا ہے!!

آج دھی محل جو یک عرصہ سے دن رات کی سرد آہوں کو سنا ہوا تھا
بن رہا تھا خوشی کے قہقہوں سے گونج رہا ہے۔ دیکھو دھی پرنسے جو مولی

کے درخت پر اکثر بیٹھتا انجنا دلیوی کی غم زدہ حالت پر رو برا کرتے تھے خوشی
سے چھپا تے ہوئے سُنائی دیتے من اوسی بھلواری جس کو دیکھنے سے کلیچ
سندھ کو آنا تھا آج بسنت مala پھوٹوں کے نارپر کر انجنا دلیوی اور

پون جی کے لئے پہنار ہی ہے اور ایک گلدرستہ بھی آگے رکھا ہے۔ رجھ ہے
جی سے جہاں ہے۔ اگر دل خوش ہوا تو سب چیزیں بھائیں سورہ سب
وابال جان ہیں۔

جب تین روز گزر گئے تو پون جی چلنے کو تیار ہوئے تب انجنا دلیوی
نے ناقہ جوڑ کر کہا۔

انجنا دلیوی۔ سوچی جی اکیا آپ اپنے والدین کی طرف جائیں گے؟

पवन जी “प्रियजी! इस वक्त तो मैं नहीं जा सकता। सीधा रामनाथ को जाऊँगा।”
अञ्जना देवी “महाराज! जिस वक्त ये खबर उनको हुई तो वो दिल मे ख्याल करेंगे
कि मैंने आपको उनके मिलने से बाज रखा है। इसलिए अब जरूर उनके पास जाए।”
पवनजी “प्रियजी! इस वक्त उनके पास जाने से मेरी हँसी होगी। वो यही ख्याल करेंगे
की लडाई से डरकर मैं वापिस आ गया हूँ। वरना जाने मेरुझे कोई **अजर नहीं।**”
अञ्जना देवी “अगर आप खुद नहीं जा सकते तो किसी को भेज कर ही उनको
इत्तला दे दें। नहीं तो मेरे लिए ये बेहतर न होगा क्योंकि ये तो काल, आपसे मिलने का
इत्ताफक हुआ है और मैं उम्मीद रखती हूँ की ईश्वर जरूर उस आरजू को जो खास
मुद्दा शादी का है और जिस का **अयले से अवने ख्वासतागर है पूरी कर देंगे।**”

पवनजी हाथ से अंगूठी उतारकर “प्रियजी ये अंगूठी पास रखो। उनको दिखला देना।
वो तुम्हारी बात पर कभी शक न करेंगे और मेरे आने पर यकीन लायेंगे।”
ये कहकर वहाँ से रवाना हुए।

अगर चे इस वक्त पवनजी का दिल अञ्जना देवी की बातें सुनकर हर्गिज नहीं चाहता
था कि एक मिनट के लिए भी उससे जुदा हो। लेकिन ये मौका नाजुक जान कर घोड़े
को सरपट दौड़ाए जा ही रहा है।

रामनाथ से अपने सिपाह को साथ ले लंका मे पहुँचा। और जब सब राजा जिन को
तलब किया गया था आ गए तो वरुण पर फौज कशी गई। उधर से वरुण भी मुकाबले
में निकला।

پون جی - پریयजी! اس وقت تو میں جا سکتا سیدھا رाह ناتھ
کو جاؤں گا۔

ابخنا دیوی - مہاراج! جس وقت یہ خبر میں کوہولی تو وہ دل میں خیال
کریں گے کہ میں نے آپ کوں کے ملنے سے باز کھا ہے۔ اس لئے اب منورہ
ان کے پاس جائیں۔

پون جی - پریयजی! اس وقت میں کے پاس بدلنے سے سیری نہیں ہو گی وہ
یہی خیال کریں گے کہ طائی سے ڈر کر میں واپس آگیا ہوں۔ ورنہ جانیں مجبو کوئی
غدر نہیں۔

ابخنا دیوی - اگر آپ خود نہیں جا سکتے تو میں کو سمجھ کریں گے ان کو اطلاع دیں
ہمیں تو سیرے لئے یہ بہتر ہو گا۔ کیونکہ توہاں میں آپ سے ملنے کا اتفاق
ہوا ہے۔ اور میں امید رکھتی ہوں کہ ایشو صرف اس آئندہ کوچھ فاصص معافی
کا ہے اور جس کا اعلیے سے ادنے خواستگار ہے پوری کریں گے۔

پون جی - اب تھے سے انکوئی اتنا کس پریجی! یہ انکوئی پاں رکھو۔ ان کو دکھا دینا
وہ تھاری بات پر کبھی شک نہ کریں گے۔ اور میرے آئے پریضیر، لا میں گے۔
یہ کہہ کر رہا سے مدد نہ ہوئے۔

اگرچہ اس وقت پون جی کا دل ابخنا دیوی کی باتیں سن کر سرگز
ہمیں چاہتا تھا कہ ایک منٹ کے نئے بھی اُس سے جدا ہو لیکن یہ مقدماً اُن
جان کر گھوڑے کو سر پت ڈالے جائی رہا ہے۔

راصر ناتھ سے اپنی سپاہ کو ساقے لئے لٹکا ہیں پونچا اور جب
براج جن کو طلب کیا گی تھا اُنकے توارن پر فوج کشی گئی۔ اور ہر سے
ورثان بھی مقابلہ میں مکلا۔



हर वक्त आँखे दर्शन की ख्वाहिश में रहती हैं।

ये कहा और सरो सांस लेकर दिल मे कहने लगी “मालूम नहीं स्वामी जी की मोहब्बत भरी आँखो ने खुद रफतगी का मुझपर क्या जादू कर दिया कि जरा चैन नहीं आता। तबीयत को बेहतर संभालती हूँ लेकिन किसी तरह नहीं संभलती। हाय! मझको क्या हो गया? ये कहा और पलंग पर जाकर लेट गई।”

जब इस तरह पवनजी की याद में अञ्जना देवी को पाँच महिने गुजर गए तो एक रोज बारंते करते बसन्तमाला ने कहा

बसन्तमाला “सखी! गो अब तो जाहिर नहीं करती मगर ये बात छुपाने से भी नहीं छुपती। मैं तभी हमल (गर्भ) के आशार पाती हूँ क्या अब ये मेरा ख्याल दुरुस्त है?”
अज्जना देवी नीचे नजर झुका कर “आज क्या दिल्लगी सूझी है जो इस तरह की बाते करती हो।”

बसन्तमाला “नहीं नहीं! मैं दिल्लगी नहीं करती। मेरा असल दरया पूछने का सिर्फ ये है कि अगर वाकई मेरा कहा सही रास्ते पर है और ईश्वर करें कि ऐसा ही हो तो इस हालत में तुमको किसी किस्म का रंज या फिक्र करना वाजिब नहीं क्योंकि इसका असर सन्तान पर खराब पड़ेगा।”

अञ्जना देवी “नहीं नहीं। मुझको तो कोई रंज नहीं। लेकिन ऐसा ख्याल जरूर रहता है कि अगर रानी (सास) ने स्वामीजी की अंगूठी देखकर यहाँ आने का यकीन कर लिया तो बेहतर वरना फिर बड़ी भारी मुसीबत का सहना नजर आता है।”

बसन्तमाला “इस बात का नाहक फिक्र करती हो अंगूठी से बढ़कर उनके आने का हम और क्या सबूत पेश कर सकती हैं। अगर न ऐतबार करें तो उन से पूछ मंगा मैं तुम क्यों डरती हो?”

ہر وقت اُنکے دشمن کی خواہش بیس رستا ہے۔

یہ کہا اور سرد سالن سے کر دل میں رکھنے کی معلوم نہیں سو ای جی کی محنت بھری
اگھوں سے خود فتنگی کا مجھ پر کیجا و کر دیا ہے کہ ذرا چین نہیں آتا طبیعت کو
بہتری انبھالتی ہوں لیکن کسی طرح نہیں بھلتی۔ ناٹے! جکو کیا ہو گی۔ یہ کہا
اور ملنگ پر جا کر ایست کی۔

جب اس طرح لیون جی کی یاد میں اختناک دلیوی کو پانچ مہینے گزر گئے تو
اک روز باتر شکر نے کرتے لستت مالانے کہا۔

بیست مالا۔ سکھی اگو تو ظاہر نہیں کرتی مگر یہ بات کسی بھی چھپائے سے
بھی نہیں پھیپھی میں تجھے محل کے آثار پاتی ہوں۔ کیا! یہ میر خیال درست ہے؟
اجتنادیلوی رنجی سرخھکار آج کیا دل الگی سوچھی ہے جو اس طرح کی باتیں
کر رہا ہے۔

بیفت مالا۔ نہیں! نہیں! میں دل لگکی تھیں کرتی میرا اصل مدعا پر چھٹے
کا صرف یہ ہے کہ اگر واقعی میرا قیاس راستی پر ہے اور ایشور کر سے کہ ایسا
تھی ہوتا تو اس حالت میں تم کو کسی قسم کا سنج یا فکر کرنا واجب نہیں کیونکہ اس کا
اثر سنتان بزرگا۔

ا جنہا دیلوی نہیں ابھیں ملکوتو کوئی سچ نہیں لیکن اتنا خیال ضرور
رسنگاہے کہ اگر طالی (ساس) نے سماجی جگہ کی انگوٹھی دیکھ کر پہاں آئے کہ
یقین کر لیا تو ہبہر دن بھر بڑی بخاری صیبیت کا سامنا نظر آتا ہے !!!
سمعت مالا۔ اس بات کا ناجی غذکر لی ہو انگوٹھی سے بڑکراؤ کے
آئے کا ہم اور کیا ثبوت پیش کر سکتی ہیں۔ اگر ن اعتبار کریں تو ان سے
یو جھومنگاہیں باختم کیوں مذکولی ہوں؟

ناजरीन! ابજنا دے وی فیا ج (उदार) اور رہم دیل اب्बल دर्जे کی हैं। देखिये बहुत से हाजिर मन्द इसके दरवाजे पर खड़े हैं और ये मुख्तलिफ (अद्वितीय) किस्म की खैरात कर रही हैं। कोई रोटी लेकर खुश हो रहा है कोई रूपये माग रहा है और कोई कपड़े का सवाल कर रहा है।

अबજنا दे वी तो इस वक्त गरीबों की हमदर्दी में मसरूफ (व्यस्त) हैं।

जब तक हम रानी कितुमती के महल को चलें। एक तो मुद्दत से उसे देखा नहीं दूसरा मालूम करे कि अबજنا की **निसबत** इसका क्या ख्याल है।

आहा! रानी कितुमती का महल भी निहायत उम्दा दिखाई देता है। **जेबोजीनत** के सामान जा बजा हो रहे हैं। नफिस **चिलमते** दरवाजों पर पड़ी हैं और सुर्ख कालीन का फर्श किया हुआ। और एक ख्वास **दस्तबस्ता** बा अदब खड़ी है। इसको तो हम पहचानते भी हैं। शायद इसका नाम ललिता है जिसको पहले अबજنا दे वी के पास देखा था। बेशक! वही है। वो देखो! रानी कितुमती भी बड़ी आन बान से जरक बरक की पोशाक पहने बैठी हुई इसके चेहरे की तरफ देख तेवर बदल कह रही हैं।

रानी “क्या ये सच है अबજنا भाग जाने का इरादा रखती है और तमाम **सीमोजर** बैदर लुटा रही है।”

ललिता “जी हाँ! मैंने ऐसा ही सुना है।”

ये सुनते ही रानी का गोरा गोरा चेहरा गुस्से के मारे तमतमा गया और दिमाग चक्कर में आया तो सर को हाथ से थाम नीचे झुका थोड़ी देर सोचती रही। बाद **अजाँ** गुस्से के लहजे में ललिता की तरफ इशारा करके बोली।

रानी “जाओ हमारा सुखपाल लाने ले वास्ते हुक्म दो।”

ناظرین! **ابجنادیو** नि�اض اور مجمل اول درج کی ہے۔ دیکھئے بہت سے حاجتمند اس کے دروازے پر کھڑے ہیں اور یہ مختلف قسم کی خیرات کر رہی ہے۔ کوئی روڈی لے کر خوش ہو۔ بلہ کوئی روپیہ الگ رہتا ہے اور کوئی کپڑے کا سوال کر رہا ہے۔

ابجنادیو تو اس وقت غریبوں کی ہمسروں میں معروف سے آئے جب تک ہم رانی کیستومتی کے محل کو صلیب ایک لوہت سے اوتے دیکھانس دوسرا معلوم کریں کہ ابجنا کی نسبت اس کا کیا خیال ہے۔ آہا! رانی کیستومتی کا محل بھی ہنایت عمدہ دھائی دیتا ہے زیب و زینت کے سامان جا بجا ہو رہے ہیں۔ نفیس چلپتیں دروازوں پر ٹھیکی میں اور سرخ قالیں کافرش کیا ہوا اور ایک خواص دست بستہ باوب کھڑی ہے۔ اس کو تو ہم چاہتے ہیں۔ شاید اس کا نام للتا ہے جس کو ہے **ابجنادیو** کے پاس دیکھا تھا۔ بیٹا کا دوہی ہے۔ وہ دیکھو! رانی کیستومتی بھی ہری آن بان سے نرق برق کی پوشاک پہنے بیسی جو بی بی اس کے چہرے کی طرف دیکھتی ہو بدل کرہے رہی ہے۔

رانی کیا! اے سچ ہے کہ ابجنا بھاگ جانے کا ارادہ رکھتی ہے۔ اور نام سیمود زربید لیٹ لیا رہی ہے؟

للتا۔ بھی ہاں ایسی ہی سُننا ہے؟ یہ سُنتے ہی رانی کا گورہ اور چہرہ عضد کے مارے تھما گیا اور دماغ چکڑ من کیا تو سر کو نتوسے تھامن تھے جبکہ تھوڑی دیر سوچنی رہی لجماز ان عضد کے لیے میں للتا کی طرف اشارہ کر کے بولی رافی۔ جاؤ بھارا سکھپال لانے کے واسطے حکم دے۔

ललिता “जी अच्छा”

ये कहा और भाग गई और थोड़ी देर के बाद आकर कहने लगी।

ललिता “माताजी! सुखपाल आ गया है।”

रानी उसी वक्त सुखपाल में बैठ अञ्जना के महल को गई। ज्यूँ ही इसने दालान में कदम रखा और अञ्जना की निगाह उस पर पड़ी भाग कर रानी के कदमों में जा गिरी और बोली।

अञ्जना ‘शुक्र है कि इतनी मुदत के बाद आप ने दर्शन दिए। आज का दिन मेरे लिए निहायत मुबारिक है जो आपने भी इस तरफ का रुख किया।’

रानी बजाए इसके कि उसकी **हाजिजाना** गूफतगू का कुछ जवाब दे नाक मुँह चढ़ा तेवर बदल गजबनाक हो उसकी तरफ देखने लगी। ज्यूँ ही हमल (गर्भ) के आशार पाए आगबबूला हो गई और बड़े गुस्से से बोली।

रानी ‘क्या तू गर्भवती (हामला) है या कोई रोग (बिमारी) हो गया है?’

अञ्जना - शरम से मुँह नीचे कर लिया

रानी पेट की तरफ इशारा करके “अरी ये क्या हुआ है? तेरा खाविन्द तो लडाई पर गया हुआ है और तूने तू बड़ी बेहया निकली।”

इन अल्फाजों को सुनते ही अञ्जना अचम्भा सी रह गई। चेहरा सफेद पड़ गया। नाजुक दिल पर सख्त चोट लगी। सर पर गम का पहाड़ गिरा। आँखों में आंसू भर आए धड़कते हुए दिल और सनसनाती हुई तबीयत को सम्भाल हाथ जोड़कर बोली माता सुनो मेरी विनती मैं निर्दोष नार

नहीं और किसी को जानती बिना एक भरतार कर पाई जगदीश ने जा महीमा अपरमपार

स्वामी आए गरो मेरे कर कुछ सोच विचार दिन तीन वो यहाँ रहे करते बहुत से प्यार गए ऋतुदान दे युद्ध देखे प्रियतम प्राण आधार

للتا۔ بہت اچھا۔

پر کہا اور بھाग गئी। اور تھوڑी देर के بعد आकर बैठी।

للتا۔ ماجی اسکھپाल आये हैं।

रानी असी وقت سکھपाल में जिहा अञ्जना के खूँ लगी जो विस ने दालान में दर्शन करका अञ्जना की बगाह अस बर्परी बहाक कर रानी के नदमों में जाकरी।

करी।

اوہ بولी।

अञ्जना۔ निकर रहे कि अभी मृत के बुझापे ने दर्शन दिया। आज का दिन सिर्फ़ नेहायत मبارक है जो आपने भी इस दूर्घटना के बाहर की ओर रख किया।

रानी जिले इस के कि अस की उच्चजारी लक्षणों को जो जो बाप से नाक मन्त्र चिह्नात विवेद उपचार नाक बोक्सी दूर्घटना के बाहर की ओर जाकर आपने

आग बगूला होकरी।

ओर ब्रेस्ट से उच्चारण हो गया।

रानी۔ किया तू गर्भवती (रामल) है या बोक्सी रोग (बिमारी)।

अञ्जना दर्शन से उच्चारण करी।

रानी۔ (प्रैथ की दूर्घटना करके) एरी यह किया हो रहा है? तिराखांद तो त्रायी प्रैक्टिक हो रहा है। और ये तूने तू त्रैरी भी जास्की।

इन अफ़त्खों को सुनते ही अञ्जना असमानी रही। चेहरे सफिर दिखी। नार के दिल पर जूत लगी। सर पर उम्र का बेहार गरा। अंखों में अस बहार होते हैं।

दिल और सनसनाती होती उचित को सिन्हासन पर जूत कर दिया।

वासनों से भिजी विस नर्दोसन नार नहीं। और किसी को बानती नियांक भजता नहीं।

कर बाकी ज़दी दिल ने जामीन पर मार दिया। और मेरे कर बड़े सौज जार दिया।

दिन तीन विहार से कर बहिर्भूत चिर्तुर्भूत नामार

“माताजी! जिस वक्त वो वापिस जाने लगे मैंने बहुत मिन्नत खुशामद की कि आप अपने वलदैन की कदमबोसी हासिल करें। ताकि वो आप के आने के हाल से आगाह हो जावें। वरना दूसरी सूरत में वो मेरी तरफ से बदगुमान हो जावेंगे। लेकिन उन्होंने यही कहकर टाल दिया कि इस वक्त हमारे जाने से उनके (वालदैन) दिल मे ख्याल गुजरेगा कि हम लडाई से डरकर वापिस आ गए हैं। इसलिए हमारा जाना इस हालत मे अच्छा नहीं। ये कहा और” अंगूठी दिखाकर “ये अंगूठी अपने हाथ से उतारकर मझको दी ताकी आपको दिखा कर उनके आने का यकीन दिलाऊँ।”

अज्जना अभी कह रही थी कि रानी फिर गजबनाक होकर बोली-

झूठ न बोल री पापनी ऐसा नहीं कुमार
यद्धु देखे मेरा सरमा है जिसकी तू नार

ये अनर्थ हैं तै किया हो तुझको धिक्कार

काहे मेरी न नीचनीद हरक जीवन संसार
खोटा करम है तै किया कुछ न करे विचार

है किसकी मैं पत्री किस स्वामी की नार

गर बह बहिया का हो और से धरयो नाम कुम्मर

जा दूर हो मेरी नजर से चंचल चतुर तू नार

“कमबख्त! जब से तेरी शादी हुई उसने (पवन) तेरी शक्ल तक न देखी हमकलाम होना तो दरकिनार है। अब रास्ते मे से लौट कर तेरे मिलने को आना! घड़ी नहीं! दो घड़ी नहीं! तीन रोज यहाँ रहा! और बगैर मिले हमारे चला गया! भला कोई भी अकलमंद तेरी इस बात को मान सकता है कि पवन ने ऐसा किया हो रहा है! तू बड़ी चालाक है! इस तरह कहते हुए शरम तो नहीं आती। अंगूठी दिखा कर पाक दामन बनती है नेकबख्त और पारसा होने का दम भरती है। तेरी सारी पारसाई जाहिर हो गई। जा! मेरी आखो से दर हो बेहया।

ناماجی! جس وقت وہ والپس جانے لگے میں نے بہت مت خوشابد کی کہ آپ اپنے والدین کی قدم یوسی حاصل کریں تاکہ وہ آپ کے آنے کے حال سے انکا ہموجادیں ورنہ دوسری صورت میں وہ میری طرف سے بدگاں ہو جائے لیکن انھوں نے یہی کہہ کر ٹال دیا کہ اس وقت ہمارے جانے سے ان کے والدین والی میں خیال گزد سے گا کہ ہم ٹالی سے ڈر کر والپس آگئے ہیں۔ اس نئے ہمارا جانا اس حالت میں اچھا نہیں۔ یہ کہا اور انکو علیٰ دکھا کر یہ انکو علیٰ اپنے ناخن سے اوپا کر مجبودی تاکہ آپ کو دکھا کر ان کے آنے کا تقبیح دلاؤں۔

اجھا بھی کہہ رہی تھی کہ رانی پھر غصب ناک ہو کر جوں ۵

جو جو نبول سی پانچ ایسا ہمیں کنار
 مید و کھے میرا سورا ہے جلکی تو نار
 کا ہے مری نیخنی درک جیون سنار
 ہوں کلکی ہیں پستہ کس سوائی کی نار
 جا ورہ بیوی کا سڑادست دہر یونام کما ر
 بخت بھبست تیری شناوری ہوئی اُس نے رپون (تیری) شکل تک
 دیکھی ! مکا صورنا تو دکنا رہے ۔

بدرستہ میں سے لوٹ کر تیر سے ملنے کو آیا بھڑکی ہیں! دو گھنٹے ہیں!!

ن دو یہاں رہا !! اور بغیر ملے ہمارے چلا گیا ؟

بھلاؤںی بھی عملمندیری اس بات کو ان سکتے ہیں کہ لوں نے ایسا کیا

ووو سے بوری چلا سہیے!! اس حج ہے تو سترم توہینیں لیں!!!!

وہی رہبر پندت سن بھی کرے۔ یہ بھت اور پارسا ہوئے کا دم بھری ہے۔

तुमको मौत भी नहीं आती।”

नाजरीन! रानी के मुँह से ये सख्त अलफाज तीर की तरह निकल कर अञ्जना देवी के पाक दिल को जो सामने उसके सर झुकाए एक गुनाहगार की तरह बैठी है जख्मी कर रहे हैं। और उसकी आँखों के नीचे अंधेरा फैलता जाता है। कान जिन्होने कभी ऐसे तुर्श (कडवे) सख्त न सुने थे अपनी ताकत को **जायल** कर रहे हैं। दिल में **कातबे** तकदीर की रो रो कर शिकायत कर कह रही है। हाय! अब क्या होगा? क्या करूँ किधर जाऊँ?

जब रानी का गजब कम हुआ तो एक मरतबा कुछ यूँही सी उपर नजर कर देखा। और अपनी दाएं तरफ बसन्तमाला को पाया।

आह! इस वक्त उसकी पाकदामनी और गैरत कह रही थी के बस अब तेरा दुनिया में रहकर मुँह दिखाना अच्छा नहीं। लोग क्या कहेगे! उफ! इस ख्याल के आते ही जिस्म की तमाम **कुवतों** ने **अज खुदरकल** होकर थोड़ी देर के लिए अपना अपना काम छोड़ दिया और सकते के आलम में हो गई। जब कुछ **अफाका** हुआ तो हाथ जोड़कर बोली।

अञ्जना “माताजी! मैं बेगुनाह हूँ। स्वामीजी के आने पर आपको सब रोशन हो जा एगा। इस वक्त माफ करो।”

अञ्जना देवी की **आजरी** बजाए इसके कि रानी के दिल को नरम करती उसके गुस्से की आग पर तेल का काम दे गई। सुर्ख आँखे निकाल **पुर** गजब हो बोली।

रानी “तेरे दिल मे ख्याल होगा कि यहाँ रहकर इनके खानदान को धब्बा लगा पवन के नाम को बदनाम करूँ। भला मैं ऐसा कब कर ने दूँगी।”

त्वयोत्तमी शानी!!!

नात्रीन! रानी के मन्त्र से ये سخت अफाज तीर की तरह निकल कर अञ्जना दिल के पाक दिल को जो सामने उसके सर झुकाए रायक बहार की तरफ बिज्ही है। रन्धी करते ही मैं उस की आँखों के नीचे अंधेरा फैलता जाना है। कान जग्हों ने नींबी लिये तरस खन रहने तक अपनी ताकत को राजा कर रहे हैं। मैं दूल में कातब त्वयोत्तमी की रुरुक शकायत कर कर्कहे रही है। “मैं ए अब किया होगा। एकी करूँ। एकी बहर जाऊँ।!!!”

जब रानी का अफ़स तक हो गया। एक रूटे बेक्षण दिल्ली सी ओर तेज़ कर दिया। और आपनी दाएँ तरफ लृष्ट नाला को पाया।

आह! एस वक्त एस की पाल मनी ओर अन्यर कहे रही थी कि बस अब तिरायास रेहर मुहर कहाना अच्छा है। गोँग की आँखें गे। एवं एस खियाल के अन्ते ही जह्म की ताम त्वयोत्तमी ने अखोर रक्ष्मि दिवर के नीं एपापाना अंजगूर दिया। और बेक्षण के उल्लम्भ में गूँगी।

जब क्षेत्र अपार बोला तो जहर कर दिया।

अञ्जना-तामीजी मैं बे ग़नाह हूँ। स्वामीजी के अने पर आप को रुठ देंगा। एस वक्त माफ़ करो।

अञ्जना दिलों की उाज़री बिजाए एस के कर्माने के दूल को रुम करती। एस के अप्सरों की एक परमिल काम दें गी। तर्ज अंकहिंस निकल पर अफ़स देंगी।

रानी-तेरे दूल हीं खियाल होगा कि यहाँ बहार के खानदान को देखते नकाल पूर्ण के नाम को बदनाम करूँ। अब जूँ लिया करने दूँगी।

दासी की तरफ इशारा करके “जाओ जल्दी पातकी रथ, लाओ। मैं इसका अभी फैसला कर दूँ”

अञ्जना कांपते हुई “माताजी! जब तक स्वामीजी जंग से वापिस नहीं आते मुझको यहीं रहने की इजाजत दो। मैं आपकी लौंडियों (दासी) की तरह स्थिरता करूँगी। माँ बाप से घर जाने से मेरी बेजजती होगी।”

रानी “खूब कही! बड़ी चतुर है। माँ बाप के घर जाने से तो तेरी बेजजती होगी। अरी बेहया ये उस वक्त सोचा होता। तेरे यहाँ रहने से जो हमारे खानदान को धब्बा लगेगा उसको तो नहीं विचारती। जा दूर हो ज्यादा बकवास न करा।” इतने में लौंडी ने आनकर कहा “माताजी! पातकी रथ दरवाजे पर मौजूद है। और ये स्याह (काली) पोशाक” अञ्जना की तरफ इशारा करके “इसके लिए लाई हूँ” ये कहा और अञ्जना के आगे रखकर पहनने का इशारा किया।

आह! जिस वक्त लौंडी ने स्याह कपड़े लाके अञ्जना के आगे रखे और पहनने के वास्ते कहा बहुत ही घबरा गई। जबान से तो कुछ बोला नहीं जाता मगर आँखों से आंसू छम छिर रहे हैं। या गर्दन फेर कर इधर उधर देख रही है। गोया इस बात की ख्वासतगार १ कि कोई उसके हाल पर रहम कर रानी के गुस्से की आग को फरद करा उसको समझा दे कि ये बेकसूर है।

मगर अफसोस! यहाँ कोई भी ऐसा नहीं जो इस वक्त आगे बढ़कर रानी को उसके इरादे से बाज रखे या यही कहे कि पहले पवन से उस बात की असलियत मालूम करे और बाद अञ्जना को सजा दो।

१ एक किस्म का रथ होता है जिसके बेल परदे बगैरा सामान सब स्याह होता है। जब कोई ऐसा गुनाह अजीम हो तो उसमें सवार किया जाता है।

(दासी की तरफ इशारा करके) जाओ जल्दी पातकी रथ लाओ—। इस का अभी फिर कर दूँ
अञ्जना—(हाथी बोली) माताजी! इजिन तक स्वामीजी जंग से वापिस नहीं
तेरे खब्बों मां सहने की इजाजत दो। मैं आप की लौंडियों की खूब खेड़ी दूँगी
माँ बाप के गुरजाने से मेरी बेउती जूँगी—
रानी—खूब कही! बड़ी चतुर है। माँ बाप के गुरजाने से तृतीय बेउती
होगी—। अरी! बेई ये अस वक्त सोचा है?!! तेरे ये यहाँ सहने से जो जहारे
उन्हें आनंद न करेंगे। इस को तो नहीं बचारती! इजाए दरमो इजाए देक्को अस न कर—
अन्त में लौंडी ने आनंद कहा माताजी! पातकी रथ दरवाजे पर स्याह हो गया है और ये सियाह पूष्ट क
राजनी की तरफ इशारा करके) इस के लाली मूँ?—। ये कहा एवं अञ्जना के आगे
रखकर सहने का इशारा की—

आह! अस वक्त लौंडी ने सियाह कपड़े लाकर अञ्जना के आगे रखे और सहने
के दास्ते कहा! इसे बहुत ही! अब आँखी नृत्य से तो कुछ दूलाहीं जाना गर्ज खुशी
से आंसू छम छिर रहे हैं—। यार दूलाहीं चौधरी कर दहरा दहरा दिख रही है—।
इस बात की खास खास हासी है कि कोई अस के ताल पर रहम कर रानी के उपर्युक्ती आग
को फ्रोकराम को सम्मान से कर रहे छठोर है—।

ग्राम खोसी यहाँ कोई भी ऐसी नहीं ऐसी अस वक्त आगे रखकर रानी को अस के
आओ से बाज रखे—। यारी के कर्पें पूल से इस बात की असलियत
मस्तुम कर दो। और लौंडी अञ्जना को स्त्रावो—।

लह एक तरफ का स्त्रावना है जिस के बीच बिन्दे व गुर्जर सामान से सियाह होता है—
जिस कोई ऐसा गुनाह अन्तिम जगती में स्वार किया जाता है—।

नाजरीन! यहाँ इस वक्त सिवाएँ इस बदजात लौंडी या बेचारी बसन्तमाला के और कोई नहीं।

आह! स्याह कपडे देखकर बसन्तमाला निहायत बेचैन हो गई और सब्र की ताब ना ला दौड़कर रानी के पाँव पर जा गिरी। और बोली

बसन्तमाला “माताजी! ऐसा जुल्म न करो। अज्जना बेकसूर है। जब तक पवनजी नहीं आते सच और झूठ का फैसला नहीं हो जाता इसके यहाँ रहने दो। बाहर जाने से न सिर्फ इसकी आबरू जावेगी बल्कि आप का नाम भी ज्यादा बदनाम होगा। और पवनजी सुनकर बहुत कलक करेंगे। उस वक्त सिवाए पछताने के और कुछ न बन पड़ेगा।” बसन्तमाला की बातें सुनकर रानी का गुस्सा और भी बढ़ा। द्युझला कर बोली।

रानी ‘‘चल दर हो हरामजादी दलाला॥’’

ये कहा और पाँव से झटक कर पीछे फेंक दिया और सुखपाल मे बैठ अपने महल को आई। और राजा से एक खत महेन्द्र राय को इस मजमून का लिखवा कर उसी वक्त रवाना किया कि जिसको देखकर बजाए इसके कि वह अपनी जुल्म रसिदा लड़की के हाल पर रहम की नजर से देखे उसके खन का प्यासा हो जाए।

बाब (अध्याय) दसवाँ

जलादतनी

सिंदूर चा ख्याले मद फलक दरचा ख्याल

मौसम गरमा है और दिन के पहले पहर का वक्त है। जबकि अञ्जना देवी रोती और बिलबलाती हुई पातकी रथ में बैठ बसन्तमाला को साथ ले रत्नपुर से

آخرین ایام اس وقت سوائے اُس بذات لونڈی یا چاری بست مالا
کے اور کوئی نہیں۔

۶۰۱ سیاہ کپڑے دیکھ کر سبنت مالاہ بنا یتھے بنے چین ہو گئی۔ اور صبر کی
ناب نہ لاد دیکھ کر رام کے ہاتھ ملکاگری اور لولی۔

سبت مالا ساناجی! ایں اظہم تر کرو! اپنے بے قصو ہے! احبت نک
پون جی نہیں آتے سچ اور جھوٹ کافی صرف نہیں بوجاتا۔ اس کو بیان میں
دو۔ باہر چانس سے نصرف رس کی آبرو جاوائیگی بلکہ آپ کا نام جی زیادہ نہ
بوجا کا۔ اور پون جی سُنکریت تلقی کریں گے۔ اُس وقت سو اے
بیختانے کے اور کچھ نہیں بڑھے گا۔

لیست مالکی ہاتھ فنگر کا عضو اور بھی طرحا جنگل کا بولی۔

سالنی- جل ددہ ہو۔ حاضر اوسی اولادا!!
یہ کہا اور بیاؤں سے جھٹکا کر بھیجے چینکہ یا اور سکھیاں میں بمحض اپنے
 محل کو آئی اور راجھ سے ایک خط مہمن دربارے کے کواس خضمون لکھوا کر
 اُسی وقت رواد کی کہ جس کو دیکھ کر بجاے اس کے کردہ اپنی ظلم و سیعیہ
 روڈ کی کے حال پر حکم کی نظر سے دیکھے یا اوس کے خون کا پیاسا سا ہو جائے!!!

باب وسوال

سندھ خاں یہم و فلک در پڑھیاں -
موسم گردان ہے اور دن کے بچھے پہ کی وقت ہے جبکہ اجنبیاں ایلوی روتی
اور سببلا تی ہوئی پائیں رخ میں بیٹھے لبنت مالا کو ساتھ دے سکن پورے

रवाना हुई।

आह! इस वक्त के दर्दनाक सीन को देखकर बहुत से मर्द औरत जमा हो गए। मगर उनमे से ऐसा कोई भी नहीं जिसने आँखो से आंसू बहा इस पर जुल्म होने की शाहादत न दी हो। अगरचे जाहिरन हर एक का मुँह रानी के खौफ से **मुकफिल** है। मगर **बातन** मे सब रानी के जोरोजफा की शिकायत परमेश्वर से कर रहे हैं।

इन लोगों को अज्जना देवी नीचे सर झुका हसरत भरी निगाहों से देखती हुई जा रही हैं। और कई तरह के ख्याल दिमाग से दिल और दिल से दिमाग में आ रहे हैं। खुद ही उनकी **तायद** करती है। और फिर थोड़ी देर के बाद **तरदूत** करने लगा जाती है। कभी सोचती है कि और जगह जाने से माँ बाप के घर जाना अच्छा है क्योंकि वो मेरे हाल पर जरूर रहम कर दर्द शरीक होंगे। मगर जब वो मुझसे इस स्याह लिबास का सबब दरयापूर करेंगे तो क्या बताऊँगी।

जिस्म पर नजर दालकर आह! मैं तो उनके रुबरु जाने कि लायक ही नहीं। हाय! इल्जाम भी तो मुझपर वो लगाया गया है जिसके बयान करने से शरम आती है। ऐसी जिन्दगी से मौत अच्छी है क्योंकि दुनिया में वही औरत मुबारक है जिसकी जिन्दगी हुरमत और आबरू से गुजरे। वरना ऐसी बेहुमती का जीना न जीना बराबर है। बस अब मेरा मरना ही वाजिब है। अंगूठी की तरफ देखकर यही हीरा मेरा काम तमाम करने के लिए काफी है। खुदही नहीं नहीं! मेरा ये भी ख्याल दुरुस्त नहीं। ऐसा करने से ज्यादा बदनाम हूँगी। गो स्वामीजी अपनी वालदा की बात पर यकीन न करेंगे लेकिन दुनिया को कौन समझाएगा। और ये दाग जो मेरी अजमत पर लगाया गया है हमेशा के लिए रह जाएगा। उफ! मैंने पिछले जन्म में कैसे बुरे कर्म किए थे जिनके एवज मुझको आज ये दिन देखना नसीब हुआ। अच्छा माँ बाप

روانہ ہوئی۔
اہ! اس وقت کے در دن اک سین کو دیکھ کر بہت سے مرد عورت جمع ہو گئے
مگر ان میں سے ایسا کوئی بیخ نہیں جس نے آنکھوں سے آنسو بہا اُن غلام بڑے
کی تہذیب ات نہ دی ہو۔ اگر جو ظاہراً اہر را کیم کا منفرد رانی کے خوف سے مقفل ہے
مگر باطن میں سب رانی کے جو رو جھنا کی شکایت پر میشورت کر رہے ہیں۔
ان لوگوں کو اجنبی دلیلوی نیچے سر جھکا حسرت بھری مگاہوں سے دیکھتی
ہے لی جا رہی ہے۔ اور کسی طرح کے خیال دماغ سے دل اور دل سے دلخ
یں آ رہے ہیں۔ خود ہی اُن کی ایک تکلیف ہے پھر مخوبی ویر کے بعد تردید کرنے
لگا۔ جاتی ہے کہ کبھی سوچتی ہے کہ اور جگہ جانے سے ماں باپ کے گھر جانا
چاہتا ہے۔ کیونکہ وہ میرے حال پر ضرور حکم کر دو۔ شریک ہوں گے۔
گر جب وہ مجھ سے اس سیاہ لباس کا سبب دریافت کریں گے تو کیا تباہی
جمہر پندرہ وال کر، آہ! میں تو اُن کے دو برو جانے کے لائق ہی نہیں۔ تا اے
از اعم بھی تو جو پرداز لکھا یا لگایا ہے جس کے بیان کرنے سے شرم آتی ہے۔
ایسی زندگی سے سوت اچھی ہے کیونکہ دنیا میں ہی عورت مبارک ہے
جس کی زندگی حُرمت اور آہ و سے گز سے درہ ایسی بے خوشی کا جینا نہ چین
پڑا رہے۔ بس اب میرا منہا ہی واجب ہے رانگوٹھی کی طرف دیکھ کر ہی بہرا
پر اکام تاام کرنے کے لئے کافی ہے (خود بھی) نہیں! نہیں! میرا بھی خیال
ہوت ہیں۔ ایسا کرنے سے زیادہ پدنام ہوں گی۔ کو سوچی جی اپنی والدہ
بات پر نہ چین رکریں گے لیکن دنیا کو کون سمجھا سیکھا اور یہ دلخ جویری محنت
لکھا یا گیا ہے، ہمیشہ کے فی رسما جائیگا۔ اوف! میں نے چھپے ختم میں کیسے بُرے
ہم کے تھے جن کے عوض مخلوک ارج یہ دن ویکھنا لغیب ہوا۔ اچھا بابا! باپ

के घर जाकर क्या करूँगी। कहीं और ही जगह जाकर अपनी जिन्दगी के दिन बसर कर दूँ कि थोड़ी देर सोचने के बाद हाँ बेशक ये ही दुरुस्त है। अब उनके पास न जाऊँगी। फिर खुदही नहीं नहीं! ये भी ठीक नहीं। ऐसा करने से सच और झूठ का फैसला क्योंकर होगा। माँ बाप के जेर साया ही रहना अच्छा है क्योंकि मैं बेकसूर हूँ। खुद ही मगर इसका मेरे पास सबूत ही क्या है। वही एक अंगूठी का जिसको रानी जी ने यह कहकर रद कर दिया है कि उनकी नहीं और मैं फेरब करती हूँ हाय! लाखों कसमें खाऊँ लेकिन मेरी बात का इस हालत मे कौन यकीन करेगा।

ये कहा और छम छम आंसू आँखों से गिरने लग पड़े। बसन्तमाला जो सर झुकाए उसकी मुसीबत जदा हालत पर कुछ सोच रही थी। ये हालत देखकर कहने लगी बसन्तमाला “अब्जना! क्यों रोती है। सखी! रोने से तो कुछ हासिल नहीं। सब्र कर ईश्वर पर भरोसा रख। वही सबके दुखों को दूर कर सुख के देने वाला है।”

अब्जना देवी “बहन! तुम मेरे रोने का ख्याल न करो। अभी गम का पहाड़ गिरा है। ताजा सदमा है। अब एक **बारगी** तो मैं दिल को पत्थर नहीं बना सकती। खुद ही संभलते संभलते संभल जाएगा। जो मकसूम का लिखा है कहरन और जबरन मानना पड़ेगा। बसन्तमाला! कहाँ ऐसे ख्याल दामनगीर था कि कब स्वामीजी वापिस आये और मैं उनको ये खुशबूबरी सुनाऊँ, और कहाँ आज अपनी ये दुर्दशा (खराब हालत) देख रही हूँ। बतला अब रोऊँ न तो क्या करूँ। मालूम नहीं अभी क्या क्या मुसीबत मेरी किस्मत मे लिखी है? माता पिता मेरे साथ क्या सलूक करेगे? आब महेन्द्रपुर का नाम याद आते ही कलेजा मुँह को आता है।”

के गुरुकार किरूँ गी कहीं औरी जगह बार अपी ज़ندगी के दैन बसर करूँ।
ایشور ہی دیر سوچنے के بعد، ہाँ बیٹا کس یہ ہی درست ہے اب اُن कے پاس نجाब دی لپचنخود ہی انہیں انہیں! یعنی تھیک نہیں ایسا کرنے سے رنج اور رنجوٹھ کا فصل کپڑک سوکا۔ ان بाप کے زیر سار ہی رہنا اچھا ہے۔ کیونکہ میں بے قصور ہوں (خود ہی) مگر اس کا میرے پاس ثبوت ہی کیا ہے۔ دی! ایک انگوٹھی کا جس کو لانی جی نے یہ کہکر دکرو یا ہے کہ اُن کی نہیں! اور میں فریب کرتی ہوں!! ہائے بالاکوئوں قسمیں کھاؤں لیکن میری بات کا اس حالت میں کون یقین کر سکتا۔

یہ کہا اور چشم حکم کو شاخوں سے گرتے گا۔ پڑے۔ بسنت مالا لاجو سر جھکا۔ اس کی صیحت نہ دہ حالت پر کچھ سچ رہی تھی۔ حالت دیکھ کر گئی تھی۔
بسنت مالا۔ اجنبی گیوں روئی ہے۔ سکھی اروتے سے تو کچھ حاصل نہیں۔ صبر کر! ایشور پر بھروسہ رکھو ہی سب کے دکھوں کو دور کر سکتے کے دینے والا ہے۔

اجنبی دیلوی۔ بین! تم میرے روئے کا خیال نہ کرو۔ ابھی غم کا بیان مگر۔
ہے۔ تازہ صدمہ ہے اب ایکبار گئی تو میں دل کو پھر نہیں بناسکتی۔ خود ہی سنبھلے سنبھلے سنبھلے جائیکا جو مقصوم کا لکھا ہے۔ تھراً جھراً نہ اس پر گیا۔
بسنت مالا۔ اکہاں لیق جیال دامنگی تھا کہ سماجی جی والپیں ایں اندھیں گن کو یہ خوشخبری سناؤں۔ اور کہاں آج! اپنی یہ دشادھار بحالت دیکھو ہی ہوں۔ تسلی ارڈن نہ کیا کروں! ہم حلوم نہیں! ابھی کیا کیا صیحت میری مشت میں لکھی ہے۔ ناتا پتا میرے ساتھ کی سلوک کر گئے؟ ابھی ہند پلور کا نام بادا تھے ہی کلیچ منکھ کو آتا ہے۔

बसन्तमाला “हौसला रखा अब घबराना अच्छा नहीं। तू तो खुद दाना है। माँ बाप के घर जाने से कोई ऐ नहीं। वो तेरे हाल पर जरूर रहम करेंगे और कोई ऐसी बात कहने नहीं पावेगा।”

नाजरीन! अज्जना तो अपनी मुसीबत के दुखडे रोती हुई महेन्द्रपुर के नजदीक मंजिले तय करती हुई आ गई है जिसको सुनकर हमारी तबीयत भी बेचैन होती जाती है। इसलिए इनको यहीं छोड़ कर हम आगे बढ़कर देखे कि **आया** राजा प्रह्लाद विद्याधर का खत यहाँ पहुँच गया है या नहीं? और इसकी वालदा उस पर क्या सोचती है। आहा! रानी बेगमोहिनी तो अज्जना देवी से भी बढ़कर बेचैन हो रही है। वो देखो महेन्द्र राय चौकी पर गमगीन सूरत बनाए हाथ मे एक कागज लिए (शायद ये वही खत प्रह्लाद विद्याधर का है) पढ़ रहा है और रानी पलंग पर बैठी कैसे **ख्वास बाख्ता** हो राजा के मुँह की तरफ देख रही है। और तरह तरह के ख्यालात उसके दिल से दिमाग तक चक्कर खा उसको परेशान कर रहे हैं। **ख्वासों** में अख्तलाल होता जाता है और **खुफकान** होने का अंदेशा है।

रानी घबराहट के लहजे में ‘‘महाराज! हाय! अज्जना को क्या हुआ? वो तो बड़ी अकलमन्द थी।’’

राजा ‘‘प्रियजी मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता। ईश्वर जाने क्या मामला हुआ है जो राजा प्रह्लाद विद्याधर अज्जना के बरखिलाफ़ इस कदर सख्त लिखता है।’’

रानी ‘‘जरा फिर इस खत को तो देखो और राजा के दस्तखत पहचानो। किसी दुश्मन का लिखा तो नहीं। अज्जना तो इस इल्जाम के लायक न थी।’’

سخت माला- हुच्छर कहा कहरना आज्हासिं तो तु खुद नहीं है - माँ बाप के कह जानेसे कोई उमिय नहीं वह ये हाल पर ضرور रहम कर देंगे और कुछ ऐसी विजी बात कहने नहीं पायेगा।

नاظरिन! इंजना तो ऐसी مصيبة के दृष्टि से रुठी हुई महेन्द्रपुर के द्विदीप नृत्यिनी तेरकी हुई आँखी है जिन्हें कर्मारी खैबित भी भै चैन होती जाती है ऐसे इन को यहीं ज्ञान रहम आँखे बढ़ाव देकर जीवित कर दिया राजेर चला दविया ओहरा खत बियां पैंच गी है यानहीं? अस की दलहसुन पर की सूची है

आबरानी बीँग मौहिनी तो अंजना है बहु ब्रह्मकर भै चैन होरही है वह दियोराज महेन्द्र रामे जौकी पैर गलिन चूरत बनाए तात्परियाँ एक कान्देले रानी दवी खत पर चला दविया ओहरा कर दियोरहर है - और रानी पैन्ड पैश्चिय किसी जास बांधते हो राजे के मन्त्रों की ओर दियोरहर ही है औ खेज त्रै देखी खिलात एस के दल से दाम नाक चढ़ाकहा एस को पैर थान कर दें हीं जासों में अंतराल होता जाता है औ खेज त्रै होने कान्देले है -

रानी - (कहरसे के लियें) महाराज! हामे इंजना को किया हो इवह तो भूमिष्ठ चौ!!

राजे पर यहीं बासिये जी बासिये तो कुछ नहीं आ आयोर जाने कीा मामला हो वा है जो राजेर चला दविया ओहरा अंजना के बरखाफ़ एस के दस्तखत लकड़ा है -
लाली - दराच्छरास खत को देखो और राजे के दस्तखत चौपानों की दस्तीन
कालकाता नहीं! इंजना तो एस ब्लाम के लाभी न रही -

राजा खत को दोबारा देखकर “प्रियजी ये देखो” खत को आगे कर के “उसीके हाथ का तो लिखा हुआ है। राजा प्रह्लाद विद्याधर कोई मामूली समझ का आदमी नहीं। उसने भी तो खूब छानबीन करके ऐसी **तहरीर** का हौसला किया होगा वरना वो हर्गिज ऐसी जुर्त न करता। क्या उसको अपनी आबरू का ख्याल नहीं है? आह! अब तो मैं किसी सूरत से अञ्जना का देखना गवारा नहीं कर सकता। और न ही उसको पनाह देने के लिए तैयार हूँ” आंसू बहाकर “और तुमको भी ताकीद करता हूँ कि उसको यहाँ हर्गिज न आने देना। और न ही कोई बात करना। उसने हमारी इज्जत खाक मे मिला दी!” ये कहा और रुमाल से आंसू पोछता और सर्द आहें भरता हुआ बाहर चला गया। और इन फिक्रों को राजा के मुँह से सुन रानी का रंग फक हो गया। दिल बैठ गया सर झुक गया और सर्द आहें निकालने लगी। रंजोगम का अबर (बादल) दिल पर छा गया और आँखो से आंसू अबर नो बहार की तरह बरसने लगे। और अञ्जना के लडकपन की बातें याद आ उसके दिल को बेचैन करने लगी।

आह! अञ्जना की भोली भोली बातें सखी सहेलियों के साथ हँस हँस कर खेलना। ये सब लडकपन का सीन रानी की आँखों के आगे फिर रहा था कि यक लफत ये ख्याल दिमाग से उतर सीने में आ जबान से निकला “आह! आज उसी प्यारी अञ्जना को जिसको एक पल भर ना देखने से राजा बेचैन होता था आज देखना नहीं चहता।” ये कहा तो सर चक्कर खा गया और आँखों के आगे सरसों फूल गई बेहोश होकर गिर पडी।

लौंडी ने भागकर दुपट्टे के आँचल से हवा की और गुलाब और केवडा छिड़का तो आँखे खोल लेटे लेटे दिल ही दिल मे कहने लगी ‘ऐं! क्या ये सच है कि अज्जना बदचलन हो गई है? हाय! मैं उस प्यारी बेटी के हक में कैसा

راجہ - رخط کو دوبارہ دیکھ کر پریسی جی! یہ دیکھو خطا کو آگے کر کے اُسی کے
اتھکا تو کہا ہوا ہے۔ راجہ پر مصلاد و یادو حصر کوئی معمولی سمجھ کا آدمی نہیں
اُس نے بھی تو خوب چھان بنن کر کے الیخ تحریر کا حوصلہ کیا ہو گا درستہ ہرگز
لیسی جولات نہ کرتا۔ کیا اُس کو اپنی آرسہ کھیال نہیں ہے؟ آہ! اب تو یہ کہی
صورت سے اجھنا کا دیکھنا کووار نہیں رکھتا اور اسی اُس کو پیشہ دینے کے
لئے تیار ہوں (آنوہہ کر) اور تم کو یہ تاکید کرنا چوں کہ اُس کو پیاس ہرگز
نہ کافی دینا اور زندہ کوئی بات کرنا اُس نے ہماری عزت خاک میں ملا دی! -
یہ کہا اور رونال سنت انسو پوچھتا اور سرداہ بھرتا مہاباہر ملا گیا اور ان فقروں کو
راجہ کے منہوں سے ٹھنڈائی کا رنگ فنی ہو گیا دل میٹھا گیا۔ سر صحک گیا۔ اور
سینکڑوں سرداہیں مخلکتے لگیں۔ سرخ و غمکار ابردل پر چھاگیا اور اسکھوں سے
انسو اپنہہ کی طرح پرستنے لگے اور اجھنا کے ٹرکپن کی باتیں یاد آؤ اوس کے
دل کو بے چس کرنے لگیں۔

اہ! انجمنا کی بھولی بھولی یا توں سکھی تھیں لیوں کے ساتھ نہیں رکھیں
یہ سب دلکشیں کا سین رانی کی آنکھوں کے آگے بھرنا تھا کہ یہ لخت یہ
نیشاں دماغ سے اور ترسینہ میں آزادی سے نکلا۔ آہ! اچھی پایاری انجمنا
کو جس کو ایک پل بھر زد دیکھتے ہیں چین ہوتا تھا ان دیکھنا نہیں چاہتا
یہ کہا تو سر چکر کھا گیا اور آنکھوں کے آگے مرسوں پھول گئی۔ پیہو شش
موکر گڑھی۔

نوٹری نے بھاگ کر دوپتے کے انچ سے روکی اور گلاب اور کیوڑا جھکا تو انھیں کھول لیتھے دل ہی دل میں کھنٹ لی۔ ایں اکیا یہ سچ ہے کہ اجنبنا بد چلن ہو گئی ہے۔ تاہم اسی پیاری بیٹی کے حق میں کیسا

�राब लफज जबान पर लाई हूँ जिसको अपनी जान से अजीज जानती थी। आह! ये जबान जम जाए जिससे ये कलमा निकला। वो तो इस लायक नहीं है। वो तो एक साहिबे असमन और पारसा लड़की है जो लड़कपन के जमाने में भी ईश्वर की भक्ति से गाफिल न थी। लोग उसको हया और शरम की देवी कहते थे। उफ! अब उसको क्या हो गया? ”

इतने में एक लौंडी ने दबी हुई जबान से आकर कहा अञ्जना देवी आई है रानी ताज्जुब के लहजे में ऐ! क्या कहा? अञ्जना आई! कहाँ?

ये कहा और उठकर बैठ गई और लौंडी से कुछ पूछना चाहती थी कि अञ्जना दौड़ कर रानी के गले से जा चिमटी और जारोजार रोने लग पड़ी। पहले तो रानी ने भी रोकर उसकी मुसीबत की दाद दी। मगर बाद में जो कुछ ख्याल आ गया तो बोली रानी “अञ्जना! उसके लिबास की तरफ इशारा करके ये क्यों? तुझसे तो ऐसी उम्मीद न थी। तू क्यों ऐसी बेशरम हो गई। धिक्कार है तेरी इस जिन्दगी पर तुझको मौत भी न आई। यहाँ आने से जहर खाकर मर जाती तो क्या ही अच्छा होता। आह! मैं ऐसी औलाद होने से बांझ क्यों न हुई ताकि आज का दिन तो देखना न पड़ता। कमबख्त! तूने कुछ भी ख्याल न किया। बाप और भाई की इज्जत को खाक में मिला दिया। जा जहाँ तेरा दिल चाहे चली जा लेकिन हमारे देस में न रहना!”

इन बातों को सुनकर अञ्जना के बदन मे सन्नाटा सा छा गया। खून जहाँ हरकत कर रहा था वही जम गया। आँखे पथरा गई। चेहरा गो पहले ही से जर्द हो रहा था। मगर सिर्फ एक यहाँ की उम्मीद बाकी थी जिसने अभी तक उसको डरावना नहीं बनाया था जैसा कि अब दिखाई देता है। वही मोटी मोटी आँखों से जिन को देख कर हिरन भी

तुराब لफ्तज़ बान प्रलमी होव हस्को बनी जान से عزیजान्ती त्यक्षी आह! मिरी येर ब्लन ज्ञजासे जस से ये क्लन ख्लादह तो अस लायि नहीं है - वह तो एक साहिब उच्छत ओ पारसाल की है जो लौकिन के दान में भी इत्योर की ज्ञती से खाफ़ि त्यक्षी लौक अस कोहिए और शरम की दिल्ली कहते थे - ओ व इब अस को किया शोकिया?
अन्ये में एक लौंडी ने वली होली जबान से आकर कहा। अंताओ लियो अी की है -

रानी - تعب کے اچھے میں کیا کہا؟ ابھن آئی، کہاں؟
ایکھا او اٹھکر پیٹھکی او اس لونڈی سے کچھ پوچھنا چاہتی تھی कہ ابھن دوڑकर انی کے گلے سے جا چکھی اور زلزارد مرنے لگا۔ پہلے تو رानी نے بھी دوडकर अस کی سعیت کی दاد دی - گر لعید میں جو کچھ خیال آگیا (ابولی) -

रानी - ابھن ایस कے بास کی طرف اشارہ करनے) یکیوں؟ تجھے سے تو ایسی لعید تھی! تو کیوں ایسی بے شرم ہو گئی میا و دھकارہ تیری! اس زندگی پر ابھکو موت بھی نہ آئی۔ یہاں अने سے نہ رکھا کر مرحبا! تو کیا ہی اچھا ہوتا - آه! ایس ایسی اولاد ہوئے سے باخچکیوں نہ ہوئی تاکہ کچھ کادون تو دیکھنا نہ پڑتا۔ کبخت! تو نے کچھ بھی خیال نہ کیا بآپ اور بھائی کی عزت کو فاک میں ملا دیا۔ جا بھہاں تیرا دل چاہے چلی جا! الیکن ہمارے دلیں میں نہ رہنا -

اُن باتوں کو سُن राज्ञा के दृष्टि में सनाता साच्छाही। खुन जीरन हरकत करना त्रास जगाए - اُंकहिं त्यरासीं ज़ेरासीं ज़ेरासीं ज़ेरासीं ज़ेरासीं ज़ेरासीं - ग़र صرف एक - یہां की لعید باتि تھी जस ने अभी तक अस को दूर नहीं बनाया तھا। جسकर एब लक्खाई दिता है - वही दूली होली अंकहिं जैन को दिखकर बैठ भी

शरम से मुँह छुपाते थे अंदर को घुस गई हैं। वही चेहरा जो किसी वक्त दमकते हुए कन्दन से तश्वीद दिया जाता था इस वक्त गोश्त तो नाम को नहीं लगता।

हाँ! इस तरखावान और पोस्त जरूर है। इसका चिल्ला चिल्ला कर जोर से रोना भी बंद हो गया। ख्वाह इसकी वजह ये हो कि अब दुनिया में उसको अपना कोई गम ख्वार नजर नहीं आता जो उसकी गिरयावजारी को सुनकर रहम करे। इसलिए उनहीं आँखों ने अन्दर को रज कर परमेश्वर के हजूर में, जो बमोजब ख्याल अहले हनूद के सबके अन्दर मौजूद है, अञ्जना की दाद की फरयाद करनी शुरू करदी है। या ये कहो कि इन हैरत अंगेज बातों को, जिनका उसको ख्वाबों ख्याल न था सुनकर, उसके दिल को सख्त सदमा पहुंचा है। और इस हैरानगी की वजह से सीने ही में जज्ब हो गई है खैर कुछ ही क्यों न हो। देर तक अञ्जना खड़ी हो माता की तरफ देखती रही और आँखों से गरम गरम आंसू गिरकर उसके सकूत को दूर करने में कोशान रहे। आखिर ज्यूँ त्यूँ कर बड़ी आजजी से बोली

अञ्जना “माताजी! मैं बेकसूर हूँ भला मैं आपको छोड़ कर कहा जा सकती हूँ मेरा और गमछ्वार कौन है जहाँ मुसीबत के दिन बसर करूँ। औरत का ज्यादातर जोर खाविन्द पर दूसरा वालदैन और तीसरा सास ससुर पर होता है। एक मैं ऐसी बदनसीब हूँ कि खाविन्द के परदेस जाने से सब कोई दुश्मन हो गया। माता मैं सच कहती हूँ कि सास की बाते सुनकर मैं इस कदर न घबराई थी जैसे कि अब! मुझे यकीन था कि आप जरूर सच और झूठ का फैसला कर मेरी दाद देंगी। मगर हाय! **शोबदा बाज** फलक ने आप के कोमल दिल को भी पत्थर बना दिया।” ये कहा और जमीन पर बेहोश हो गिर पड़ी। रानी ने जल्दी होश में लाने की

شرم سے سمجھ پایا تھے اندر کو گھس گئی ہیں۔ وہی جھرہ جو کسی وقت
ولتے ہوئے کندن سے تشبیہ دیا جاتا تھا اس وقت گوشت تو نامہ کندن
کا استخوان اور پوست ضرور ہے۔ اس کا چلا چلا کر زور سے روپا بھی بند
بیگانی سے خواہ اس کی وجہ ہو کہ اب دنیا میں اس کو پتا کوئی سمجھو از نظر نہیں
آتا جو اس کی گزیہ وزاری کو سُنْکَرِ حکم کرتے اسلئے اُنھیں آہوں نے اندر کو
سمجھ کر ریشمپور کے حضور میں جو بھوجب خیال الٰہ ہندو کے سب کے اندر موجود
ہے انجمنا کی داد کی فریاد کرنی شروع کر دی ہے۔ یا یہ کہو کہ ان تحریرت الگینیلوب
کو جن کا اس کنخواب و خیال نہ تھا سُنْکَر اس کے دل کو سخت صد سلوپی سچا
ہے۔ اور اس حیرانگی کی وجہ سے یعنی ہی میں جذب ہو گئی ہیں۔ رخیر کچھ بڑی
لیبوں نہ ہو۔ ویرتک انجمنا کھڑی ہو ماہا کی طرف دیکھتی رہی اور انگھوں سے
لرم گرم آٹوگر کراس کے سکوت کو دور کرنے میں کوشاں رہے۔ آخر جھیوں
توں کرٹی جا عجزی است بولی۔

ابنخدا۔ ملتاحی امیں بے قصور ہوں۔ بھلابیس آپ کو جو پڑکر کہاں جاتی
ہوں اسرارِ اوز غنیوار کوں ہے جہاں صفت کے دن لبر کروں عوت
کا زیادہ تر زور خاوند پر وعدہ الدین اور تیہہ اساس سسر پر ہوتا ہے۔
ایک میں الی بدل ضعیف ہوں کہ خاوند کے پردیں جانے سے سب کوئی
دشمن ہو گیا۔ ملتاحی میں سچ کہتی ہوں کہ اساس کی باقیں شنکر میں اس قدر
نگھبڑی تھی جیسا کہ اب اجھکے یقین تھا کہ آپ ضرور سچ اور جو شد کافی ہی
رسیری دادوں گی۔ مگر ناسے اشعبدہ باز فلک نے آپ کے کمال دل کو
بھی میتھرنا دیا!!

तदबीरं की और रो रो कर खुद बेहाल हो गई।

जब अञ्जना को कदरे होश आई तो बोली

अञ्जना ‘माताजी! जब तक स्वामिजी वापिस नहीं आते मुझको यहाँ रहने की
इजाजत दिजिए। उनके आने पर आपको सब हाल रोशन हो जाएगा। उस वक्त जो
दिल मे आए तो सो किजिए।’

रानी “अञ्जना! मेरे कुछ इखितयार नहीं बेबस हूँ। अगर कोई और बात होती तो
अपनी जान पर खेल जाती लेकिन तुझको इस हालत मे बाहर जाने हर्गिज न देती।
मगर हाय! तुमने वो काम किया जिसको बयान करने से शरम आती है। वही तेरा बाप
जो तुझपर जान निसार करता था आज तेरा नाम सुनने से बेजार हो जाता है। अगर
तुझको यहाँ रहने की ख्वाहिश होती तो इन बातों से नफरत करती। जा यहाँ से! जल्दी
चली जा! अगर स्वामीजी आ गए तो मेरी भी शामत आ जाएगी।”

रानी के मुँह से ये बात निकलने की देर थी कि दो तीन लौंडियों ने रोती हुई अञ्जना
को घर से बाहर निकाल दिया। अगरचे उसने बहुत कोशिश की कि एक दफा फिर
किस्मत आजमाई करे लेकिन अफसोस! लौंडियों ने कुछ भी न सुना और एक उनमे
से बोली

लौंडी

कहे दासी सुन अञ्जना यहाँ तेरा क्या काम
किया सास ससुर माँ बाप को जग में ते बदनाम

तद्विरें कीस एवं लद दर्क खुद दे जाल ہو گئी। -
जब अञ्जना को दर्क दे ہوش آئی تو बولी!

अञ्जना - نामाजि! जब तक स्वामिजी वापिस नहीं आते खंबोहान रहने की
اجازत दिखेंगी तो क्यों ने प्राप्त को सब जाल रोशن ہوا جائेका। अर्थात्
जुड़ल में आये सो कर्जिये।

रानी - अञ्जना! मेरे कुछ अंतिम नहीं आये बस ३०! अगर कुली और बात
होती तो आपनी जान पर चमिल जाती लिकें त्यक्तु। ऐसी हालत में बाहर जाने हर ग्रन्ति
नहीं! ऐक ग्रन्ति से तमने वह काम किया जिस को बियान करने से शरम आती है। ये
तेरा बाप जो अंधेरे जान शार कर राखा था तेराम खने से त्यार ہوا जाता है। अगर
खंबोहान रहने की खواہिश ہوती तो उन बातों से नफरत करनी जायेगी।
से जल्दी जाकीसी यही दूर दशा न करा।

अञ्जना - आ! ये मेरे ही कर्मों का चम्प है जो आप जीसी शील धर्मी नहाल
भूमि पर्यावरणी की काकी कहना।

रानी (बाहर की तरफ दिखेकर) बस नियादे बातें नहीं। जल्दी जास। अगर स्वामीजी
को लगें तो मेरी यही शामत आजाएगी।

रानी के मुख से ये बात खलने की दिल्ली के दरियावाले ने रुक्ति ہوئी
अञ्जना को गھर से बाहर निकाल दिया। अर्जुन चास से बहत कूष्ठिश की कर एक
दفعہ पर चमत्त आनंदी करे लिकें अफसोस लोथियों ने कुछ यही न सना।
एसकी ओर बैठ से बोली।

لौंडी ५

हे दासी मूँ अञ्जना यहान तेराकाम की सास राम लायक जग में त्याम

अद तुम कल महाराज की धूल मिलाया नाम
 दूर होजा दुराचारनी और न कर बदनाम
 लौंडी की ये बाते सुनकर अञ्जना देवी के दिल को सख्त सदमा पहुँचा। और तो कुछ
 पेश न गई। रोकर इतना कहा
 बोल कबूल न बोल री पतिव्रता मैं नार
 कठोर वचन क्यों बोलती दासी जीभ संभार
बपत धुनी मैं फिरूं निर्दोष मैं नार करम देख प्यारी न डे जो लिखया करतार
 वाल्दा का आखिरी हुक्म सुनकर अञ्जना रोती हुई दरवाजे से निकलकर थोड़ी दूर पर
 गई होगी कि एक शख्स, जिसकी उम्र चालिस से पचास साल से कम नहीं और उम्दा
 लिबास ही **जेबतन** से मिला, जिसको देखते ही अञ्जना की चीख निकल गई और
 बेइचित्यार होकर उसके गले लिपट रोना शुरू कर दिया। जिसकी **आहोजारी** को
 सुनकर वो शख्स भी **अजखुदरफता** सा हो गया है और आँखों से आंसू जारी हो रहे
 हैं। एक हाथ तो उसके सरपर रखा है दूसरा कमर पर है और जबान से कह रहा है
 “क्यों रो रो परेशान होती है? अब रोने से तो कुछ हासिल नहीं होता” और साथ ही
 इधर उधर भी देख लेता है जिससे पाया जाता है कि किसी का खौफ भी इसको जरूर
 है।

नाजरीन! आप हैरान होंगे कि ये शख्स कौन है जो अञ्जना देवी की मुसीबत जदा
 हालत पर आंसू बहा रहा है? आईए हम आपको बतलाते हैं। ये अञ्जना का भाई है
 जो इत्फाक से उसको इस जगह मिल गया है। सुनिए क्या कह रहा है
 प्रसन्न कीर्ति “अञ्जना! तेरी मुसीबत को देख मेरे दिल को सख्त सदमा पहुँचा है
 और जिगर पाश पाश (टुकड़े टुकड़े) हो गया है। मगर इस हालत मे तेरी किसी तरह
दस्तगीरी नहीं कर सकता क्योंकि तुझसे निहायत ... कसूर हुआ है जिसके बावत
 तुमसे बात करने मे आर (कठिनाई) मालूम होती है।” दिल मे “उफ! पिताजी देख लेंगे
 तो क्या कहेंगे।”

اوّم مکمل ہندراج کی وصول ملایا نام دو را بسوجا دراچارنی اور نہ کرہ بنام
 لونڈی کی یہ باتیں **سُنکاراجخنا دیلوی** کے دل کو سخت صدمہ پہنچا۔ اور تو
 کچھ میش زنگی روکراتا کہا۔
بول کبوال بول یتی بر تایں نار کٹھور بچن کبوال بولتی داسی جب سکھا
 بیٹ دھونی میں بچروں زد منج نا۔ رُزم ریکھ پیاری نڑے جو لکھیا گرتار
 والدہ کا آخری حکم **سُنکاراجخنا سوتی ہوئی دروازہ** سے نکلنے تھوڑی در پر گئی ہوئی
 کو ایک شخص جس کی عمر جالیں پچاس سال سے کم نہیں اور عمدہ بابس یہی نیب تن
 ہے ملا۔ جس کو دیکھتے ہی انجنا کی جنینہن محل گئیں اور یہ اختیار ہو کر اُس کے
 سکھ لیپٹ رونا فری دع کر دیا جس کی آہ وزاری کو **سُنکارا** د شخص بھی ان خود رفتہ
 سا پہنگیا ہے۔ اور اسکھوں سے آنسو جاری ہو رہے ہیں۔ ایک ناچھتوانس کے
 سر پر لکھا ہے دوسرا لکھا ہے اور زبان سے کہہ رہا ہے۔ ”کیوں رود و پر نشان
 ہوئی ہے اب رفتے سے تو کچھ حاصل نہیں ہوتا۔“ اوس انکھی اور ساری دم رکھی
 دیکھ لیتا ہے جس سے پایا جاتا ہے کہ کسی رخوف بھی اس کو ضرور ہے۔
 ناظرین! آپ حیران ہوں گے کہ یہ شخص کون ہے جو انجنا دیلوی کی میمت
 زدہ حالت پر انویہارتا ہے؟ آئیے ہم آپ کو بتلاتے ہیں۔ یہ انجنا کا بھائی
 ہے جو تعالیق سے اس کو اس جگہ مل گیا ہے۔ سنئے! کیا کہہ رہا ہے؟
 پرسن کیسری!۔ انجنا ایتری محیبت کو دیکھ لیتے دل کو سخت صدمہ
 پوچھا ہے اور جگہ بانش پاٹیں ہو گیا ہے۔ مگر اس حالت میں تری کسی طرح
 دستگیری نہیں کر سکتا۔ کیونکہ تجھے ہنایت
 قصور ہوا ہے۔ جس کے باعث تم سے بات کرنے میں عار معلوم ہوئی ہے
 (دل میں) اوپ اپساجی دیکھ لیں گے تو کیا کہیں گے۔

आज्जना कुछ कहने को थी कि प्रसन्न कीर्ति जल्द जल्द कदम उठा अपने महल की तरफ चला गया और अज्जना देवी अचम्भा सा रह गई। दफातन (अचानक) ख्याल जो दिल मे पैदा हो कुछ कुछ तसकीन (आराम) देने लगे थे ना उम्मीदी में बदल गए। तबीयत यकबारगी तकदीर की तरह बिगड गई। दुनिया नजरों मे **तेगवतार** हो गई। होशोहवास उड गए और बेखुदी के आलम में हो सर चक्कर खा गया तो सर को हाथ से पकड एक दिवार के सहारे खड़ी हो गई है। थोड़ी देर के स्कूट के बाद पहले जो इसके मुँह से बात निकली थी ये है “ऐ ईश्वर! मैंने ऐसा क्या गुनाह किया है कि जिसके **गोज** अपने बेगाने होते जाते हैं। हाय! इस दुनिया मे कोई हमदर्द नजर नहीं आता। ईश्वर! ये क्या माजरा है समझ में नहीं आता। आप पर भी इल्जाम नहीं दे सकती इंसाफ खास आपका ही वस्फ (गुण) है। तो फिर ये क्योंकर” ... थोड़ी देर सोचने के बाद “उफ! ये मेरे ही **पूर्वले**, कर्मों के फल हैं और किसी को क्या दोष, दूँ” नाजरीन! इस वक्त बहुत सी औरतें और नवउम्र लड़कियाँ अज्जना देवी के इर्द गिर्द खड़ी हैं मगर सबकी सब आंसू बहा अफसोस कर रही हैं। जिन्होने उसके लड़कपन क जमाना देखा हुआ है वो तो **मुतख्यइयर** हो **अंगशत** बदनदान अयाम गर्दिश की शिकायत कर लड़कपन की तारीफ कर रही हैं। मगर जिन को अभी तक इसके देखने का मौका ही नहीं मिला अज्जना के मुँह पर से आँचल उठा सूरत को देख हाथ मल मल कर हमदर्दी जाहिर करती हैं। आह! इस वक्त अज्जना देवी के दिल में हजारों ख्याल **सरासमगी** के पैदा हो तबीयत को उलझाकर दिल को बिगाड़कर रह जाते हैं। और बेचारी किस्मत की मारी ज्यादा सुनने की ताब न लाकर आहिस्ता आहिस्ता कदम रखती हर्ई आगे को बढ़ी चली जाती है।

१ पिछले जन्म के आमाल २ इल्जाम

اپنے! کچھ لکھتے کوئی کہ پرمن کیر لی جلدہ جلدہ قدم آٹھا اپنے محل کی طرف
چلا گیا اور اجنباء دلوی اجنباء سارے ہی دفعہ تھے وہ خال جو دل میں پیدا ہو
پڑھ جو نکیں دینے لگے تھے نامیدی میں بدل گئے۔ طبیعت یکبارگی تقدیر
کی طرح بگرا کری۔ دنیا لظاہر ہیں تیرہ تواریخی۔ ہوش دھواس اور طریقے۔ اور یہ تو یہی
کے عالم میں ہو سر جکڑ کھا گیا تو سر کو ما تھس سے پکڑ لیک ریو اور کے سہارے کھڑی
ہو گئی ہے۔ تھوڑی دری کے سکوت کے بعد یہی جو اس کے مخفہ سے بات
تلکی دہی ہے۔ اُسے ایشور امیں نے ایسا کیا گناہ کیا ہے کہ جس کے عرض
اپنے بیگانے ہوتے جاتے ہیں۔ تاکہ اس دنیا میں کوئی چددو نظر پس نہ آتا
ایشور ایسا با جراحت کیا ہے؟ سمجھ میں نہیں آتا اُپ پر بھی الزام نہیں دے سکتی!
لیکہ اسے خاص خاص اپ کا ہی وصف ہے۔ تو پھر یہ کیون نہ کر..... (تھوڑی
دری سر پنچھے کے لئے) اوف! یہ سیرے ہی پول بلے کر مول کے پھل ہیں۔ اور کسی کو
کب دوسروں

ناظرین اس وقت بہت سی عورتیں اور نوجوان طوکیاں انجمنا دیلوی کے ارادہ لرڈ کلکٹر میں گردب کی سب انسانوں پر افسوس کر رہیں۔ جنمیں نہ سکنے کو پس کی زادہ بیکھرا ہوا ہے وہ تو تھی خروں اپنا گشت۔ بدندان یامگ مرؤں کی خشکیت مزدگین کی تحریف کر رہی ہیں۔ گردن کو الجھی تک اس کے دیکھنے کا موقعہ ہی نہیں بلکہ ابھننا کے منحدر سے اپنی آٹھا صورت کو دیکھنا فکر میں کرا فوس کر رہی ہیں۔ درج طرح کی ایس کریمہ دی خلیل کرتی ہیں۔

۱۵ اس وقت اجتہاد لیوی کے دل میں ہزاروں خیال سر ایمگن کے پیدا
و طبیعت کو الجھا کر دل کو بچاڑکر سمجھاتے ہیں اور یہ سچاری قسمت کی ادائی
باداہ سننے کی تاب نہ لائیا ہے تاہم کھٹی ہوئی آنکھ کو بڑھی جلی جاتی ہے
لئے چھٹے جنم کے اعمال۔ شہزادام

वही दिन है और उसी दिन का पहला पहर गुजर चुका है। जबकि अज्जना देवी दिलकी **अफसुरदगी** से गर्दन झुका और फिर खुद ही सर उठा हसरत भरी निगाहें महेन्द्रपुर के **मर्दों जनोरो** दीवार पर डालती और रोती हुई बसन्तमाला को साथ लिए शहर से बाहर निकल उस पगड़ंडी से, जो खेतों में से होकर शमाल (उत्तर) को जाती है, जा रही है। अभी दो तीन कोस ही गई होगी कि तीन रास्ते मुख्तलिफ **सीमतों** तो जाते हुए दिखाई दिए। इन को देखकर अज्जना बहुत घबराई और दिल में कहा कि अब कौन सा रास्ता इछित्यार करूँ। पहले दाए तरफ को देखती रही और फिर बाए को मगर उन दोनों में मुसाफिरों **कशरत** से **आदरोरफत** देख और अपने लिबास पर नजर कर न जाने किस सोच में पड़ गई की पलक तक नहीं झपकती और परेशान होकर खड़ी है। थोड़े से सकूत के बाद आसमान से नजर मिला ये कहा “हाय! अब किधर जाऊँ” फिर सर्द सांस ले यूँ कहने लगी

दिया सास ससुर ने त्याग पति ने सुध बिसारी करें सभी दुत्कार नगर के नर और नारी हुए निरास उदास आई मैं शरण तुम्हारी बिना आप भगवान कौन मेरा हितकारी कौन करे हितकार प्रभु जब तुम **रसयाओ**, मेरे अवगुण बेशुमार प्रभुजी न चित लाओ किस पर करूँ पुकार नहीं कोई और ठिकाना था मात पिता पर जोर सोई मैं झूठा जाना भाई ने देनी **तराह** देखकर हित का बाना हाय करे दासी **बरयार** सुनले अपने काना और न दो सन्ताप प्रभु मैं अति दुखियारी नहीं जीने की चाह मुझे अब मौत प्यारी करो का है अब देर जल्द यमदूत पठाओ होकर पाल दयाल प्रभु मेरा दुख मिटाओ १ रसियाओ खफा होना

بَابُ بِيَارِ حَوَالٍ

مَكَّةَ اَبَدْ كَهْرَبَاجَاؤْلَ

وہی دن ہے اور اسی دن کا پہلا پہر لگز چکا ہے جبکہ انجمنا دیوبی ملکی افسر دگی سے گردن چکائے اور پھر خود ہی سرما ہما حضرت بھری نجاح ہیں تہمند پیور کے مردو زان درود پیار پر والتی اور عین ہمیں بستنت مالا کو سانچئے تھے سے باہر خلائیں پاک ڈنڈی سے جو گھنیتوں میں سے ہو گئی تھاں کو جاتی ہے جاہی ہے۔ ابھی دو تین کوس ہی کئی ہو گئی کہ تین راستے مختلف سمتیوں کو جاتے ہوئے دکھائی دیے۔ ان کو دیکھ کر انجمنا بہت بھر لی اور دل میں کہا کہ اب کون راستہ اختیار کروں۔ پہلے دایں طرف کو دیکھتی رہی اور پھر دیسیں کو۔ گران دلوں میں مسافوں کی کثرت سے آمد و نعمت دیکھ اور اپنے بنا پر نظر کر رجاء کے کس سوچ میں پڑ گئی ہے کہ پاک تکنسیں چھکتی اور پر ایمان ہو کر گھری ہے۔ فھرٹ سے سکوت کے بعد آسمان سے نظر طایپ کھانا تے اب کہ در جاؤں۔ پھر سر دسانی سے بیوں کہنے لگی۔ ۷ دیاس س مسرت نیا گپتی نے سو بیکی کریں ہمیں دیکھ کر زادہ ناری ہونے سے نہ اس اور اس آئی میخ رکھا ہی بنا اپ بھگلوں کوں میرا ہنکاری کون کرے ہنکار پر بھو جب تم ریا و میرے لوگن بیشتر بھو جبی نہ چلت لاؤ کس پر کروں پوکار نہیں کوئی اور ٹھکان حفاظات پتا پرندہ سونی میں جھٹکھا جانا بھائی نہ دیتی رہا دیکھ کر سیت کا بنا بلکے کہیں دہائی بیمارستانی چکانی اور زد و سنتا پر بھو میں ات دو کھیا یہیں ہمیں ہمیں کی چاہ مجھے اب موٹ پیاری گردکا ہے اب دیر جلد محروم دت پیغاد ہو کر بال دیال پر بھو میرا دو کھشاد لہ رہیا و نھا ہونا

हैं ऐसे मंदे भाग मौत न मेरी आवे
है मुझको विश्वास नहीं पर याब ऐ नाकारी,
दोष नहीं कुछ सास ससुर को न पिता और भाई
दास दोष है पूर्व कर्मा विधना बर बनाई
ये कहा और इन दोनों रास्तों को छोड़ा और सामने का, जहाँ से कोई भी गुजरता हुआ
दिखाई नहीं देता और ना ही ज्यादा आदतोरफत के आशार पाए जाते हैं, इखितयार
किया है।

आह! प्यारी अज्जना! तू कहाँ को जा रही है? इस तरफ तो कोई ठिकाना नहीं जहाँ
बैठकर अपना गम गलत करेगी या किसी को अपना दर्द शरीक बनाएगी। तेरी शादी
क्या हुई बबाले जान हो गई कि दुनिया की तमाम तकलीफों ने तुझको आ घेरा। आए
दिन की नई मुसीबत का बोझ तेरे नाजुक दिल को आ दबाता है। उफ! दुख का तो
एक दिन भी पहाड़ दिखाई देता है, तुझको तो तेरह सालों से इसका सामना है। पहले
बारह साल तो स्वामीजी की जुदाई में गुजरे और तेरहवाँ सब से बढ़कर मनहूस
निकला। अज्जना! बतला तो सही अब किधर को जाएगी? जंगल कि तरफ क्यों जा
रही है? इस तरफ तो खुंखार दरिदे फिरते होंगे जिनकी शक्त देखकर तेरा नन्हा सा
दिल घबरा जाएगा। क्योंकि तूने पहले कभी उनको नहीं देखा। देवी! ये रास्ता छोड़ दे
और दाए हाथ का रास्ता इखितयार कर जो आबादी को जा रहा है। अफसोस वो कुछ
नहीं सुनती। बसन्तमाला को उस तरफ जाने के लिए मजबूर कर रही है। अगरचा वो
बहुत समझाती है और इस तरफ जाने मे कई तरह की मुसीबतें बतला जान का खौफ
जतलाती है। लेकिन ये एक नहीं मानती। क्या इसको आबादी से नफरत है? जो इस
को छोड़ जंगल को जा रही है! हाँ! ऐसा ही मालूम होता है। क्या आप भूल गए? सास
ससुर की बदसलूकी माँ बाप

१ बेइंसाफ़

‘‘मैं ऐसे मन्दे से बहाल होत निरी को किया जाना किया जाना लिये बदलना दखला से
है जिक्र निषाश नहीं पर ये बिना कारी। जूनी है बुनि दूनि की कमील है सारी
दूस नहीं किया जाना सरको निषाई और साई। दूस दूस है फूर्ब काल बदला दैनिया
ये कहा दूर
दूर
दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर दूर[—]

‘‘हे बिसारी! अज्जना! तू किया जाना है? इस तरफ तो कोई लक्षण नहीं।
जहाँ खिल कर आप उम्मत कर सकते हैं कि याक्सी को बनावद दर्शक बनावे कि अतिरिक्त शादी
की वाही दबाल जान हो गई कि दैनिक तात्त्व कलिफों ने खिलू अंगुर आये दून
की विचित्रता का लोधी तरफ से नाज़क दून को बदलाया है। अन्फ बदल कर बायक
दून बिसी विसी दखली दिल है। जिक्र तू विरोधालों से असाधना है।
पहले बारह साल तो सोमायी की जूदाई में लड़दासे अतिरिक्त खुलासे दून से बदलकर
खुन लखा। अज्जना! अतिरिक्त खुलासे अब कदह को जायी है। खिलू कियर कियों जायी
है? इस तरफ तो खुन खुराद दून से बदलकर होने वाले जूदाई के लिए दिलकर तिरा
ना साल लग्जर जायी जूदाई की जूदाई है। कभी अन को नहीं दिखा। दिलों
पर रास्ते जिक्र दूसे और दूस नात्तेकर रास्ते अतिरिक्त जूदाई को जारी है।
अन्फों वह क्यों नहीं नुक्ती? वह विचित्रता माला को असी विरुद्ध जाने के लिए जिक्र
कर रही है। अर्जुदे बहत बहती है। एवं इस तरफ के जाने में कोई खूब
ली विचित्रताएं बिलाजान का खूफ जलानी है। ऐसा असी विरुद्ध जाने के लिए जिक्र
जूदाई से लगता है? जूदाई को जिक्र जूदाई है। बायक नहीं बाटी। किया एक स्क्रॉ
स्क्रॉल है। क्या आप बहुल लगते हैं? सास सरकी बिस्लूकी साव बाप
स्लूम है। क्या आप बहुल लगते हैं? सास सरकी बिस्लूकी साव बाप

لئے ये الصاف

की बेपरवाही लौंडियों के ताने और शहर की औरतों की बातों को सुनकर उसके दिलने आबादी से जंगल को तरजीह (वरीयता) दी है। और ये सच भी है जहाँ कोई अपना गमख्वार और **पुरसान** हाल न हो वहाँ जाने से सिवाए रंज के और कुछ हासिल नहीं होता। इस वक्त इसका कोई भी दर्दी नहीं जो इसकी मुसीबत जदा हालत को देख आंसू बहा इसके **पुसरमदा** दिल को तसल्ली देवे या यहीं कहे कि प्यास ने तुझको व्याकुल, कर रखा है इस चश्मे से जो नजदीक ही है पानी पी लो। नहीं नहीं! वो देखिए इसकी पुरानी गमख्वार, जिसने दुनिया की तमाम नैमतों को छोड़ लज्जतों से मुँह मोड़ लड़कपन ही से इसका साथ दे रखा है, बराबर कह रही है मगर अज्जना यही जवाब देती है कि दिल नहीं चाहता।

नाजरीन! अज्जना अभी चंद ही कोस गई होगी कि पहाड़ों की बुलन्द चोटियाँ दरखतों में से दिखाई देने लगी और आफताब का रंग भी तबदील हो गया है। उसकी शोख किरणे अब मध्यम पड़ गई हैं और बजाए उनके कुछ जर्दी सी छाई हुई मालूम होती है जिसको देखते ही घबरा कर बसन्तमाला ने अज्जना देवी से कहा बसन्तमाला सखी! आफताब गरूब (अस्त) हुआ चहता है और सुनसान वीरान जंगल ही चारों तरफ दिखाई देता है। जरा कदम को तेज करो ताकि पनाह की जगह देख रात गुजारने की तजवीज करें।

अज्जना ‘प्यारी! इस आफताब के गरूब होने से तो कुछ फर्क नहीं। मैं तो अपने मुकद्र के मेहताब को रो रही हूँ जो आज के दिन गरूब हो चुका है। जिसके **मादूम** होने से हर एक के दिल पर मेरी तरफ से तारिकि छा गई है। इस जंगल को देख क्यों घबराती है। मैं तो इसको आबादी से तरजीह देती हूँ।

१ बेचैन

की बेपरवाही लौंडियों के टहने और शहर की उत्तरों की बातों को शैक्षिक करने वाले ने आबादी से ज़म्मू को त्रिजु दियी है। और ये सच भी है जहाँ कोई याना गुर्ज़ोर प्रसान चाल नहीं दिया जाने से सोने से ज़ंग के लम्ज़ों चाल में नहीं। ऐसा वक्त अस काकनी भी दरवी नहीं जो अस की चृष्टि रुद्ध हालत को देखता है। अस के शर्मोद वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो। यारी की देखता है कि पैसे जम्मू वाल के लिए आज नहीं हैं। अस के लिए ज़म्मू वाल को तस्ली दियो।

بُشْتَ مالا۔ سکھی! آفتاب غروب ہو اپاہتا ہے اور سناں دران
جِمْلِ سی چاروں طرف دیکھائی دیتا ہے ذرا قدِم کو تیر کرو تاکہ پانچ کی جگہ
دیکھ رات لذارت کی جو بز کریں۔
اجْنَا۔ پیاری! اس آفتاب کے غروب ہونے سے تو چھنڈ نہیں میں تو اپنے
مقدار کے ہناب کو روہی ہوں جو کچھ کئی دن سے غروب ہو چکا ہے جس کے
بعد موم ہونے سے ہر لایک کے دل پر میری طرف سے تاریکی چھاؤنی ہے
اس جِمْلِ کو دیکھ کیوں گھبراتی ہے میں تو اس کو ابادی سے ترجیح دی ہوں
لہ بے چین

क्योंकि मेरे दिल को दुखाने वाला तो यहाँ कोई नहीं।” रोकर “आह! जल्द चल कर किसकी पनाह में जाना है। जहाँ रात पड़ गई वहीं हमारा ठिकाना है।”

बसन्तमाला “सखी! जो कुछ तुमने किया दुरुस्त है। जमाने की जिस कदर शिकायत करे बजा है। मगर गिरगिट की तरह जमाने के बदलते रंग इसके **तफिरात** को साबित कर रहे हैं और मुसीबत जदों को अच्छी तरह यकीन दिला रहे हैं कि अगर कल का दिन आज नहीं तो इसमें कोई शक नहीं कि आज की हालत भी कल तक न रहेगी। कभी तो मुकद्र सीधा होगा कभी तो अच्छे दिन फिरेंगे।”

अञ्जना मगमूम आवाज “बसन्त क्या कहती हो? ये वो तकदीर नहीं जो कभी पलटे। जमाने के इंकलाब की मैं खुद कायल थी और जानती थी कि दुख सुख चढ़ रोजा होता है। मगर अब यकीन हो गया कि ये सब मन के ढकोसले हैं। सरासर गलत और झूठ हैं। जरा ख्याल तो कर जबसे शादी हुई क्या सुख नसीब हुआ? आज तेरह साल से बराबर यही हाल हो रहा है। इंकलाब की उम्मीद कहाँ है।”

बसन्तमाला बात काटकर “अब तो आफताब कहीं नजर नहीं आता। हाँ! रात की **तारिकि** अपने चारों दामन फैला डरावनी शक्ल बना तमाम जंगल को अपने आगोश में छिपाए चली जाती है।”

अञ्जना आसमान की तरफ नजर करके “उफ! मैंने तो अभी संध्या करनी है।” ये कहा और एक बड़ के दरख्त के नीचे संध्या करने बैठ गई और बसन्तमाला ने घास पात बिछा कर बिस्तर जमाया और कुछ जंगली फल जो उस वक्त मयस्सर हो सके लाकर रखे।

आह! बसन्तमाला तो अञ्जना को इन फलों के खाने के वास्ते मजबूर कर कस्में दे रही है और ये बेचारी जार जार रो रही है!

کیونکہ میرے दूल कुदूक्हाने दला तो बिहान कोई नहीं रुक़ (रुक़) आ! جلد चूँके रक्स की पानह में जाना है—जहां रात बूँकी वहीं हमारा लक्खना है।—

بُسْنَتْ مَالَّا سَكِّعِي اِيجوْ كِچْمِنْ تَيْ كِيَا درست है—जाने की जूँ قدر निकायत करिं बिजाहै—मौर्गूक्त की खूँ ज़िमान के बैठने होये रङ्ग अस के त्यूरत कूथाबत करहै—मौर्मिहित रुदून को अच्छी खूँ यिचिन द्वारहै—मौरहै—मौर्गूक्त कल कादून आज नहीं तोस मौं कोई शक नहीं कर कर्ज की मालत बिजी कूँ ताक नहीं कुही तू मقدر سید हामोका कुही तो अच्छे दून बिजी है—

اجन्हा—**رِغْمُوم آدَاز** بُسْنَتْ اِيكाही है—ये वह تقدीर नहीं जूँ कुही लैंचे रान के अफ्लाब की मैं खुद वायल त्युही ओर बाति त्युही के दूकह स्केक्ह खूँ रुदूर है—मौरहै—मौर अब त्यूरिन होलीकारे रुप रुन के दूक्हाले मैं—सरासर गलत ओर बिजी है—ज़रा खियाल तू कर्ज बै—शादी होयी कूँ स्काह न्यिब बुवाजाह तेर्वाल से बिर बिजी चाल होहा है—अफ्लाब की सिद्दीक्हान है!

بُسْنَتْ مَالَّا رُبات काल्की अब तू आता बै—मौर रुप तीकी अप्से जारूर दामन ब्यसिला और लूक्ली शक्ल बना ताम ज़ंगूक कौस्तुक गुदूश मैं जूँ चैलैटे चैली जाती है—

اجन्हा—रासान की खूँ न त्रैकर के एफ बिने तू अच्छी सेंद मियाकन है—येक्हा आइक बैके दृक्त के चैचे सेंद मियाकने बिज्गी ओर **بُسْنَتْ مَالَّا** ने लुहास पात बिज्हाकर बिस्तर जाहा और जूँ खूँ खूँ चैल जूँ अस ओर कर होके लाकर कर करे—

आ! **بُسْنَتْ مَالَّا** तो अज्ञा कूँ खूँ लूक्लों के लक्खने के दृस्त बिजुर त्यूरिन है—रही है—ओर ये बिजारी नार नार दूर है—!!

ناजरीन! परमेश्वर करे की मुसीबत का दिन किसी को न सीब न हो। देखिए वही राजा की लड़की है जिसने अपना लड़कपन का जमाना ऐशो इशरत मे बसर किया था। हजारों लौंडिया हर वक्त दस्तबस्ता हाजिर रहती थी। खाने के वास्ते तरह तरह के खाने दस्तरखान पर चुने जाते थे। नीमखाब और मखमल की तोशकें बिछा सलवट का ख्याल किया जाता था। जरासी तकलीफ होने से तमाम महल मे कोहराम मच जाता था और हजारों बल्कि लाखों रुपयों की खैरात की जाती थी। आज वही बेसरोसामान सुनसान वीरान जंगल में इस हालत में, जबकी पाच छः माह के हमल से है और ये वो वक्त है जिसको हुक्माने औरतों के लिए निहायत नाजुक करार दिया है, बैठी है। और तीन दिन के बाद ये चंद जंगली फल आगे पड़े हैं। और बजाए उन मखमली तोशकों के घास पात का बिस्तरा हो रहा है। बेचारी! रोए न तो क्या करे? बसिद मुश्किल से एक दो फल खाकर पानी पिया। दिन भर की थकान ने मजबूर किया तो लेट गई।

आह! लेटते ही कई तरह के ख्याल पैदा हुए तबीयत को और भी बेचैन करने लगे तो घबरा कर उठ बैठी। और दिल में कहने लगी मुझको क्या हो गया? मैं क्यों बदनाम की गई? मेरी कैसी रुसवाई हुई। लोग दिल मे क्या ख्याल करते होंगे। वालदा के दिल में क्या गुजरती होगी?

उफ! इस ख्याल के आते ही तबीयत बिगड़ गई। बदन मे सन्नाटा सा पड़ गया। सर आसमान की तरह चक्कर खा गया तो उसको एक हाथ से और बेकरार दिल को दूसरे हाथ से पकड़कर रह गई। इतने मे ये ख्याल दिमाग से उतर सीने मे आ जबान से निकला हाय! कैसी कैसी मुसीबतों के बाद स्वामीजी का दर्शन नसीब हुआ था। दिल में कहती थी कि अब मुसीबत के दिन गुजर गए आइन्दा चैन से गुजरेगी।

اماظرین! برس کرے कہ مصیبت کا دن کسی کو لفبیب نہ ہو۔ دیکھنے وی راجپکی اڑکی ہے جس سخاپ ایک پن کا زمانہ عیش و عشرت میں بسر کیا تھا۔ اڑکوں لوٹ دیاں ہر وقت وست بستہ حاضر ہی تھیں کھانے کے واسطے طرح طرح کے کھانے دستروں پر پہنچنے جاتے تھے۔ کمبوحاب اور مخل کی تو شکیں بھا سوت کا خیال کیا جاتا تھا۔ نوسراستی تکلیف ہونے سے تمام محل میں کہرام مجھ جاتا تھا اور شہزادوں بکار لاکھوں روپیوں کی خیرات کی جاتی تھی۔ آج وہی بس رومن سان سنسان ویران خیکل میں اس حالت میں جبکہ پنج پھر ماہ کے محل سے ہے اور یہ وقت ہے جس کو نکلا نے عورتوں کے لئے ہنایت نازک قرار دیتے تھیں جیسی ہی۔ اور تینون کے بعد یہ چند بھکلیں آگے ٹرے ہیں اور جیسے آن مخلی تو شکوں کے گھاس پات کا بستہ ہو رہا ہے بیماری اور کسے شہ تو کیا کرے؟ اب بعد شکل ایک وہیل کھا کر بانی بیاون بھر کے تھان نے مجھ پر کیا تو لیت گئی۔

آہ! بیٹتے ہی کھیج کے خیال مید مطبعیت کو اور بھی بے چیز کرنے لگے۔ تو چھکر کا اٹھ بیٹھی اور دل میں کہنے لئے جبکہ کیا ہو گیا ہے میں سیوں بدنام کی گئی! میری کیسی سوالی ہوئی!! لوگ دل میں کی خیال کرتے ہونگے !! والدہ کے دل میں کی گذرتی ہو گئی؟

اوہ! اس خیال کے آفہری طبیعت بگر گئی بدن میں سنا اس اپنگیا۔ سر اسماں کی طرح چکڑ کھا گیا تو اس کو ایک ناقہ سے اور تھیرا دل کو دوسرے ناقہ سے پکڑ کر گئی۔ اتنے میں یہ خیال دیاغ سے اور سینہ میں آر زبان سے مخل۔ ہائے ایسی کیسی صیبوں کے بعد سوامی جی کا درشن لفبیب سوا تھا دل میں کہتی تھی کتاب صیبت کے دن گذگئے۔ آپنہ چین سے گذر گئی

ਮगर वाह री किस्मत! खूब ही रंग दिखाया!

गर्ज इसी तरह कभी तो घबराकर लेट जाती और कभी दिवानों की तरह उठ बैठती। और इसी आहोजारी में सुबह हो गई तो स्नान कर नित, कर्म से **फरागत** पा आगे को चल पड़ी। आह! ये तो उन गुनजान (सघन) को दरखतों को जा रही है जिनके बीच में से एक पगड़ंडी **पशुमखा** वन में से गुजर कर उन ऊँचे ऊँचे पहाड़ों को जाती है जो दूर से दिखाई दे रहे हैं। अभी चार पाँच कोस ही गई होगी कि दरखतों और जंगली झाड़ियों की गुनजानी के बाइस एक तंग **तारिक** रास्ते से गुजरना पड़ा। गो बसन्तमाला ने हर चंद कोशिश की और अकल के घोडे दौड़ाए मगर सिवाए इस रास्ते के और कोई भी नजर न आया। तब घबराकर बोली

बसन्तमाला “बहन! यहाँ से वापिस होकर किसी और तरफ को जाना अच्छा है क्योंकि ऐसे खौफनाक रास्ते से गुजरना अच्छा नहीं! अब्बल तो हमको मालूम नहीं कि कहाँ को जाता है। दूसरा उजाला भी बहुत कम है। तीसरे अगर इसको तय करने से पहले रात पड़ गई तो इस हालत में जैसे कि अब देख रही हूँ शब **बाशा** कहाँ होगी?” अब्जना ‘सखी! हमारा तो कोई ठिकाना नहीं! जहाँ किस्मत ले जावेगी वहाँ चली जायेगी। रात की फिक्र न करा जहाँ देखेंगी वहाँ ही पड़ रहेंगी।’’ जरा उपर नजर करके “अभी दिन बहुत बाकी है। शाम तक आठ दस कोस बखूबी चली जावेंगी रास्ते की तरफ देखकर ऐसा **बिखरा** रास्ता तो थोड़ी दूर तक मालूम होता है।’’ फिर गौर से देखकर “अंदाजन दो तीन कोस से ज्यादा न होगा। अब पीछे लौटना वाजिब नहीं।” नाजरीन! बावजूद इस कदर तंगोतारिक **बीहड़** और खौफनाक रास्ता होने के

१ संध्या उपासना

گرہ اور سی قسمت! خوب ہی زنگ و کھایا!!

خوف اسی طرح کبھی تو گہر کار میٹ جاتی اور کبھی دیوازوں کی طرح اٹھ بھیتی اور اسی آہ دری میں صبح ہو گئی تو اشنان کرنے کرم سے فراغت پائے کے کوہل ٹپری۔ آہ! تو ان گنجان کو رختوں کو جاہی ہے جن کے سچے جس سے ایک پکڑ نہیں پشوکھابن میں سے گذراں ادپچے اوسچے پہاڑوں کو جاتی ہے جو دور سے دکھائی دے سکے ہے جو سماں چھپائیجی کی کوں آگئی ہو گئی کہ دنہتوں اوہ بھگی تباڑیوں کی کنجائی کے باعث ایک تنگ تاریک راستے سے گزرا نہ پڑے۔ کو بستہ مالا نے ہر جنید کوشش کی اور عقل کے گھوڑے دوڑا سے گزرا اس لاستہ کے اور کوئی بھی لظر کا یا سب گھبر کر بولی۔

بستہ مالا بہن بہیاں سے والیں ہر کرسی اور طرف کو جانا اچھا ہے۔ کیونکہ ایسے ٹوپناک راستہ سے گزرا اچھا نہیں! اول تو ہم کو مدد نہیں کر کہاں کو جانا ہے۔ دوسرا اونہا لاجھی بہت کم ہے۔ تیسرا اگر سوں کو طے کرنے سے پہلے رات پر کمی تو اس حالت میں جیسے کہ اب دیکھ رہی ہو شب باش کہاں ہو گئی؟

اچھا۔ سکھی! اہم ارتو کوئی تھکانا نہیں جہاں قسمت لیجاوے گی وہیں چلی جائیں گی! رات کی نذر کر جہاں دیکھیں گی۔ وہاں ہی پڑیں گی! ازدرا اور لظر کر کے اونھی دن بہت باقی ہے۔ شام تک آنھوں کوں تجویں جیلی جائیں کی راستہ کی طرف دیکھ کر ایسا بچھڑا راستہ تو تھوڑی دوز تک معلوم ہوتا ہے (چراغور سے دیکھ کر) انداز اور تین میں سے زیادہ نہ ہو گا۔ اب پچھے اونہا اجب نہیں۔

لطفیں ابا و جودا اس قدر تنگ تاریک کجھڑا اور ٹوپناک راستہ ہونے کے

अञ्जना देवी जरा भी नहीं घबराई। और ईश्वर पर भरोसा रखती हुई ऐसी जा रही है जैसे बहादुर सिपाही दुश्मन के **ताकन** में। अगरचे कई किस्म के जंगली जानवर खौफनाक बोलियाँ बोल रहे हैं जिनकी आवाज सुनकर एक नौजवान बहादुर भी हौसला छोड़ जाए लेकिन ये (अञ्जना) बड़े **इश्तकलाल** के साथ आगे को पाँव रखती हुई जा रही है।

आह! झाडियों के तेज काटे चुभकर खून पाँव से बह रहा है और दर्द हैरान कर रहा है। मगर ये इन बातों की कुछ भी परवाह न करती हुई यही कहती जा रही है कि “ईश्वर तेरी मगल इच्छा पूर्ण हो”

ऐसे खौफनाक और तंग तरिक रास्ते को खत्म कर अब एक ऐसी जगह आ गई हैं जो बनिसबत पहले के तो बहुत **फाराख** है मगर दाए बाए दूर तक जंगल ही जंगल दिखाई देता है। और सामने दो चार कोस के फासले पर एक झोपड़ी भी नजर आई है जो गालिबन जमीन की सतह से बुलन्द जगह पर **वाकिह** है। जिसको देखकर अञ्जना देवी को कदर से **तसकीन** हुई कि यहाँ कोई न कोई रहता होगा। आज रात हम यहाँ ही बसर करेंगी।

आह! फलक कजर कनार को इसकी इतनी तसल्ली भी न गवारा गुजरी। और यकायक स्याह बादल उठे और घटाटोप अंधेरा छा गया। उफ! अंधेरा भी कैसा है हाथ पसारा नजर नहीं आता। हूँ! क्या आलम है! तमाम जंगल में दहशत सी बरस रही है। जंगली जानवर मुख्तलिफ खौफनाक बोलियाँ बोल शोर मचा रहे हैं। मगर अज्जना देवी बसन्तमाला के हौसले को बढ़ाती हुई बडे अस्तकलाल के साथ जा रही है। हालाँकि तारिक इन्तहा दर्जे की बढ़ गई है कि एक दूसरी आपस में नजर नहीं आती। आह! यक नशुद दो शेर भी कहीं नजदीक ही डकारता हुआ सुनाई देता है!

اچھا اور بھی نہیں گھبرا لی اور ایشور پر بھوسہ رکھتی ہوئی بارجی ہے جس سے
بہادر سپاہی دھمن کے تعاقب میں ارادہ کمی قسم کے خلکی جاذرخوناں ک
بولیاں بوا رہے ہیں جن کی آوارستہ ایک نوجوان بہادر بھی ہو سکتا ہو
جاتے لیکن یہ اچھا بڑے استغفار کے ساتھ گے کو پاؤں رکھتی ہوئی
بارجی ہے۔

۷۵! جب کریم کے تین رکھنے پہلے بکر خون پاؤں سے بھہ رہے۔ اور درود حیران کر رہی ہے۔ مگر یا ان باتوں کی کچھ بھی براہ نکلی ہوئی یہی کتنی صاریحی ہے کہ "الشَّوَّتِرِي مُسْكٌ الْحَصَالِوْنَ سُو"

ایسے خوف کا اور نگاہ تاریک رہستہ کو ختم کر اب ایک ایسی تجھداہی ہے
جو پہ نسبت پہلے کے توبہت فراخ ہے مگر دمین بائیں دوڑ کاں جنگل ہی
جنگل وکھانی ویتا ہے اور سا بھنے درچار کوس کے فاصلہ پر ایک جھونپڑی
بھی نظر آتی ہے جو غالباً زمیں کی سطح تسلیم کا جگہ برداشت ہے۔ جس کو
دیکھ کر انجنا ولیوی کو قدر سے تسلیم ہوئی کہ یہاں کی کوئی رہتا ہو گا
ارج رات ہمہ بائیں ہی سے کرن گے۔

آہ انفلک بچ قاتار کو اس کی اتنی تسلی بھی ناگوار گزرنی اور یک یا کسی سیاہ بادل اُٹھے اور گھٹا ٹوب ان حصیر اچھا کیا۔ اوف انڈ جیہر اعجمی کیسا ہے ٹانچ پاسا لظر نہیں آتا! ہو کا عالم ہے تمام جنگل ہیں وحشت سی برس بھی سے جنگلی چانپا مختلف خوفناک بولیاں بول شور مچا رہے ہیں۔ سگرا جتنا دیلوی بست نالا کسی حوصلہ کو طبعاتی ہوئی بڑے استقلال کے ساتھ جا رہی ہے۔ حالانکہ ایک انسماں و جو کی بڑھ گئی ہے کہ یک دوسری آپس میں لنظر نہیں آتی۔ کہا! یک اندھہ دو ششیر بھی کہیں نہ دیکھی ڈکا رتا ہوا سعنائی دیتا ہے! بادل گرج

और बिजली कडकडा कर दम खुश्क कर रही है। उस वक्त बसन्तमाला घबरा गई और बोली

बसन्तमाला “बहन! कहाँ हो? मुझको तो कुछ नहीं सूझता।”

अञ्जना देवी उसकी आवाज को सुनकर समझ गई की अंधेरे को देखकर घबरा गई है। इट उसका हाथ पकड़कर अपनी बगल में दबा लिया और बोली

अञ्जना “बसन्त! घबराओ मत हौसला रखो।” आसमान की तरफ देख कर “बादल फटने की देर है अभी थोड़ी देर में उजाला हो जाएगा।” दिल में “आह! वाह री किस्मत पहले तो सिर्फ अंधेरा ही सता रहा था या दरिंदों की खौफनाक आवाजें दिल को हिला रही थीं। अब जमीन भी नाहमवार (असमतल) आ गई है।”

अगर एक पाँव हमवार जमीन पर पड़ता है तो दूसरा गड्ढे में पड़ सर को झुका कमर को लचकाता है। अगर टटोलते टटालते वहाँ से बचा ही लिया तो जंगली झाड़ियों ने अपना ही शिकार बना लिया। ये हालत देख कर अञ्जना के आंसू निकल पड़े और न जाने क्या दिल में ख्याल गुजरा है कि सर्द सांस ली और बोली “अच्छा! जो ईश्वर तेरी मर्जी” तब बसन्तमाला ने कहा

बसन्तमाला “अञ्जना! मैं सुनती थी। नहीं नहीं! यकीनन जानती थी कि तेरा वालिद बड़ा दाना और नेक सीरत राजा है। और इसी तरह आली **हजालकिया** तेरी वालदा को। लेकिन इस वक्त तो मैंने उन से बढ़कर कोई भी बेरहम और नहीं देखा। हाय! उन्होंने जब अपने लखते जिगर की मुसीबत का कुछ भी ख्याल नहीं किया तो दूसरों का क्या खाक इंसाफ करेंगे।”

बसन्तमाला की बाते अञ्जना के नाजुक दिल पर तीर की तरह लगी और बड़े गुस्से में होकर कहा

ابو جھी क्रांति और मन्त्रकर हो रही है। ऐसे वक्त लिंगत माला गंधर्वार्थी। और बोली -

लिंगत माला-बहन! कहाँ हो- ज़बकुतों को जो नहीं सूझता!!
अञ्जना और योगी ऐसे की आवाज को सुनकर यह गंधर्वी का अनुभिते को दिखाकर हो रही है।
जैसे ऐसे का नाम नहीं करायी बन्दूल में दबाया और बोली -
अञ्जना-लिंगत! अच्छावस्त्र और स्त्री आसान की ओर दिखाकर। बाद
लिंगत की दिर्स हैं अञ्जना खोराती दिर्स में दबाला हो जायेगा। बाल में। आह! बोहरी
लिंगत! अप्पे तो सच अनुभिते ही स्तराना तथा बारन्दूल की खोनाक और अन्य
दूल नाम ही त्याग आप्पे में ही नाम हो रही गंधर्वी है -

अर्थात् यादूल नाम ही त्याग आप्पे है तो दूल अर्थात् दूल में त्याग कर दिखाकर हो रही है।
अर्थात् दूल सानी दूल से बचा ही लिया तो ज़बकुती ज़बकुती ज़बकुती ज़बकुती
ये चालत दिखाकर अञ्जना के दूल नहीं थी एवं जानी की दूल में दिखाकर सानी दूल में
दिखाकर सानी दूल और बोली “अच्छा! जो योशितरी मरणी तब लिंगत माला
ने कहा।

लिंगत माला-अञ्जना! मैं स्त्री त्याग नहीं बन्सी बिचारा जानती त्याग की तिरा
वाली तिरा दाना और निकास सिरत राज है और असी त्रै उल्लिङ्गा स तिरी वाली
को दिलेकर मैं वक्त त्यास ने अन बैठकर कोई बिची देर रहम और.....
नहीं दिखा-ताए! अन्धों ने जब अपने लृत ज़बकुती चिंता को
मिथाल नहीं किया तो दूसरे काकी खाक लगाव करीं गे !!

लिंगत माला की बातें अञ्जना के नाजुक दूल पर तीर की त्रै लगाव लगें दूब जाएं
उच्चदूल में होकर कहा - ८

पिता मेरा सखी अती गुणी और बड़ा बुद्धिमान
राज काज मे चतुर मस्तक देखे जो
हो

दया धर्म को पालता करता हर का ध्यान
गुण अवगुण पहचान कर दण्ड दे जपकसी

जो मम हाल न परखया तिसका और है **बयद** पूर्व कर्म मेरे अती बुरे जिन दिखलाया **कहयद**
माता शील स्वभाव है पतिक्रता तस नाम कण्ठ मे जिसके बस रहा प्यारी एक ईश्वर का नाम
कठोर वचन नहीं जानती सबसे करे प्यार नगर निवासी हित करे क्या पुरुष क्या नार
बसन्तमाल मत बोल री मुख से बात अयोग मात पिता के बस नहीं विधना लिखया संजोग
“बसन्त! क्या कहा? जरा सोच कर बात किया करा सखी! वालदैन कभी नहीं चाहते
कि अपनी औलाद को रंज मे देखें। दुनिया मे ईश्वर के बाद उन्ही का मरतबा है। उनका
हक तो कभी अदा नहीं हो सकता। भला सोच वो वालदा जिसने बरसों खूने जिगर
पिलाया। रात दिन गोदियों मे खिलाया। नाजोनैमत से परवरिश किया। लिखाया
पढ़ाया। हमारी खुशी मे अपनी खुशी समझी। जरा सा रंज होने से खुद रंज मे मुबतला
(शामिल) हो गई। हमारे लिये अपने कुल आराम छोड़ दिए। निहायत अफसोस है कि
ऐसी मादरे मेहरबान के बेशुमार अहसानों को भूल कर उसको बेरहम या जालिम
करार दे! बसन्त! उनका कसूर नहीं ये मेरे बुरे आमालो का नतीजा है।” अफसोस!
अभी ये कह ही रही थी की धम से एक गड्ढे मे जो करीब तीन गज के गहरा और
चार पाँच गज **तोल** मे है (जहाँ किसी जमाने मे कुँआ होता था) गिर पड़ी। और
बसन्तमाला के उपर गिरने से और भी सदमा पहुँचा। सर को सख्त चोट लगी। हाथ
पाँव कांटो से जख्मी हो गए। बेहोश हो कुछ देर तो पड़ी रही। जब होश आई तो सांप
और बिच्छुओं को रेंगते हुए सुनाई देना और खुंखार दरिन्दो की खौफनाक आवाजों
का कानों मे आना जलती आग पर तेल का काम दे गया। आह! ऐसे दर्दनाक सीन
को देखकर वो कौन सा जवान मर्द है जो इस्तकलाल (धैर्य) से काम

پتا میر سکھیات लौटी और बرا बढ़ी मान दिया दर्शन को पाल करता हर का دصیان
راج کا ج میں چترے سے टके दیکھे जو گن اونکن پیچان کر ڈنڈو سے زمکشی हو
جومہ حال شیر کھیات کا اور ہے بیب پورب کرم میرے ات عربے جو ڈھنلا یا کہہ
ماتا شیل سچھا وہ سے بی برتائی نام کٹھ میں جیکے میں ناپیاری ایک لیشور کا دم
کھنچو بچنے میں صانتی سب سے کرے بیار بگرو اسی ہست کریں کیا پرش کیانار
بہشت مال است بولی می کھوتے با یوک ات یانکے لمبیں بدھننا کمیا سمجھ
بہشت اکیا کہا ہے دلساوج کربات کیا کر سکھی اولادین کمی نہیں جا ہتے کر
اینی اولا دکوسخ میں دیکھیں! ای دنیا میں! ایشور کے بعد انھیں کام مرتب ہے! ای انکا
حق تو کبھی اونہیں ہو سکتا! بصلسا وج وہ والد جس نے برسوں خون جگر
پڑایا۔ رات دلن گو دیلوں میں کھلایا سناز لغفت سے پروشن کیا۔ لکھایا۔
پڑھایا۔ ہماری خوشی میں اپنی خوشی سمجھی۔ ذرا ساری ہوف سے خود رنج میں تبدلا
سمجھی۔ چار سے نئے اپنے کل آرام چھوڑ دیئے۔ ہنایت انھوں ہے کے ایسی
ماں جہریان کے بے شمار احسانوں کو بھول کر اُس کو بے رسم بیاطالم فرار دیں؟
بہشت! ان کا قصور نہیں۔ یہ میرے بُرے اعمالوں کا تیتجہ ہے۔ انھوں
ابھی یہ کہہ ہی رہی تھی کہ دھم سے ایک گڑ ہمیں جو قریب تین گز کے کھرا دھار
پانچ گز طول میں ہے رجبان کسی زمانہ میں کھواں ہوتا تھا) اگر بڑی اویسٹ میں
کے اوپر گرنے سے اد بھی حصہ اپنی سر کو خفت چوٹ لگی۔ ساقھ پا دل کا شوش
سے زخمی ہو گئے۔ بے ہوش ہو گچھ دیر قوپڑی رہی جب ہوش آئی تو سانپ
اور بچھیوں کا رینگتے ہوئے سُنائی دینا اور خونخوار درندوں کی خوفناک
آوازوں کا کانوں میں آنجلتی اگ پر میں کا کام دے گیا۔
آہ! ایسے دروناک سین میں دیکھ کر وہ کوئی جا لخورد ہے جو استقلال سے کام

ले। मगर नहीं! धर्म के पालने वाली सुशीला अज्जना बिल्कुल नहीं घबराई और बड़े हौसले से बसन्तमाला को कहने लगी

अज्जना “बसन्त! गर्दीश अयाम उसीको कहते हैं जब तकलीफ दर तकलीफ और रंज पर रंज हो। मगर इस हालत में घबराना इंसान का काम नहीं हाँ! इन बातों को देख गुनाहो से इबरत (चेतावनी) पकड़नी फर्ज है। ये दुनिया नापायदार (नष्ट होनेवाला) है किसी को क्याम नहीं, कोई दस रोज आगे और कोई पीछे। मरना बर हक है। बस जब एक दिन इस जहान फानी को छोड़ना जरूर ही तो हम को इन दर्दिदों से क्या डर! मौत का क्या फिक्र! अगर हमारी हयात (जीवन) का खातमा इनही के जरिए लिखा है तो बचाने वाला भी कोई नहीं प्यारी! घबराओ नहीं उठ कर हिम्मत बांधो और यहाँ से निकलने की कोशिश करो।”

दोनों ने हर चंद तदबीर की और अकल के घोड़े दौड़ाए, मगर अफसोस कामयाब न हुई और हारकर बैठ गई। आह! इस वक्त अञ्जना के दिल में हजारों ख्याल सरासिमगी के पैदा हो उसके मायूस दिल की चुटकियाँ लेने लगे। कभी तो सखी सहेलियों से खेलना, बाग की सैर करना, माता का उसको जरा सी तकलीफ में देख अपने आराम को कुर्बान करना, और स्वामीजी का एक बेबुनियाद बात पर यकीन कर प्रतिज्ञा कर पछताना। ये सब बातें आ लातबरकी तरह दिमाग से दिल और दिल से दिमाग में दौरा करने लगे। बहुतेरा दिल को सम्भाला, कई तरह के ख्यालों से टाला। मगर अब वो ताकत नहीं रही जो इन बातों को अंदर ही अंदर जज्ब कर सके। बेड़खियार जबान से निकल ही गया।

“माता! देख वही तेरी अज्जना जिसके पाँव मे जरा सा कंकर चुभने से तू लौंडियों को मार मार कर हलाक कर देती थी कि अच्छी तरह झाडू न देने के बाइस इसको तकलीफ

لے اگر نہیں! دھرم کے پاسنے والی سو شیلا اجنبیا بالکل نہیں گھبڑی اور
بڑے حوصلے سے بُعدت مالا کو کہنے لگی۔
اجنبیا۔ بُعدت اگر وہیں ایامِ انجی کو کہنے ہیں جب تکلیف پر تکلیف
اور تین پورن ہو۔ سگراں حالت میں گھبڑا انسان کا کام نہیں! مالا ان لوگ
کو دیکھو گناہوں سے عبرت کر لئی فرض ہے! یہ دنیا ناپایدار ہے کسی کو
قیامت نہیں کوئی دس روز اگے اور کوئی پچھے۔ رُنا برحق ہے۔ پس جب
ایک دن اس جہان خالی کو جھوڑنا ضرور ہے تو ہم کو ان درندوں سے
کیا ڈر موت کا کیا نکار! اگر ہماری حیات کا خاتمہ نہیں کئے خدیجہ لکھا
ہے تو بچائے والا بھی کوئی نہیں! ایسا یاری! گھبڑا نہیں! اٹھو مر عربت قندو
اور ہیاں سے بُخلت کی کوشش کرو۔

و دونوں نے ہر جنبد تدبیریں کیں اور عقول کے گھوڑے دوڑا سے گمراہ کر دیا
کہ میاب نہ ہوئیں۔ اور نارک شیخوں کیمیں۔ آہ! اس وقت ابھانک کے دل میں
ہزاروں خیال سرایمکی کے پیدا ہواں کے یاوسن ل کی جھکیاں لینتے
لجمی تو سکھی ہمیلوں سے کھیلن۔ باغ کی سیر کرنا۔ تاہا کا اسٹ کو زد اسی تکلیف
میں دیکھا پئے اراہم کو قربان کرنا اور کجھی سوچی جی کا ایک بے بنیاد بات پر
یقین کر پڑکیا کہ چھٹانا۔ یہ سب بانیں آلات بر قی کی طرح دیاغ سے دل اور
دل سے دیاغ میں وعرہ کرنے لگیں پتھریں ارادل کو سنبھالا کئی طرح کھیلو
تے ملا۔ گلاب وہ طاقت نہیں رہی جو ان بالتوں کو انہیں اندھہ جنبد کر سکے
زبے اختیار زبان سے بخل ہی گیا۔

نامادیکھدہ ہی نہری اجنبی اجنس کے پاؤں میں ذرا سا انگکار چیز سے تو نونڈیوں کو اسارکے ٹلاک کر دیتی تھی کہ اچھی طرح جھاڑو زندہ یعنی کے باعث اس تو تکلیف

हुई है जान से बेजार हो रही है। हाथ पाँव जख्मी हो खुंखार दरिंदे डरा रहे हैं। भूख प्यास सता रही है। अब कोई दम की मेहमान है। इसी गड्ढे मे तडपती तडपती मर जाएगी और लाश भी ज़ंगली जानवर और परिंदे नोच खायेंगे।

आह! इस फिक्र के जबान से निकलते ही अञ्जना बेहोश को बेइखितयार जमीन पर गिर पड़ी। वो देखिए! कैसे हाथ पाँव फैलाए **बेहिसोहरकत** पड़ी है और **बाली** पर बसन्तमाला बैठी रो रही है।

आह! बसन्तमाला क्या हुआ? क्यों कुछ उम्मीद है कि बस खातमा हो गया! आह! एक हाथ से तो नब्ज की हरकत देख रही है दूसरा मुँह के करीब रख सर्द गर्म सांस की तमीज कर रही है। कुछ दिल को तमल्ली हुई तो बुलन्द आवाज से बोली “अञ्जना! क्यों घबरा गई?” सर हिलाकर “सखी! जबान से तो बोला” “आह!” इस वक्त एक सर्द आह उस करीब **लाजतताम** जिस्म से निकली और **सातहरी** ये कहती सुनाई दी “स्वामीजी! अगर आप अपने वालदैन को मिलकर जाते तो आजका दिन मुझको देखना नसीब न होता। आह! मैं कैसी बदकिस्मत हूँ कि अच्छी तरह आपका दीदार भी नसीब न हुआ और मुसीबत की बिजली टूट पड़ी। उम्मीद थी कि आप से दर्शन होने से ये सब तकलीफें भूल जाऊँगी। और वो दाग जो मेरी इस्मत पर झूठा लगाया गया है दूर हो जाएगा। आह! दिल की आरजूँ दिल में रही और मौत का पैगाम आ पहुँचा। अब कोई सूरत यहाँ से रिहाई की नजर नहीं आती। मगर हाँ! इतना शुक्र है कि गो लोग कुछ ही क्यों ना ख्याल करे लेकिन आप पर तो बखूबी **वाजया** है कि जिस बात का मुझको इल्जाम लगया गया है सरासर झूठ और गलत है।”

ज्ञानी है - जान से बिजार होरही है - नात्म्हादून रज्ञी है जो ज्ञानों को लेन्दे
दरार है मैं अज्ञोक्तु प्राप्ति स्तरही है अब कोई दृष्टि की महान है -
असी ग्रन्थ में त्रिप्ति त्रिप्ति रमजाग्नी एवं लाश भूमि ज़ंगली जानवर और परिंदे ने निप
कहाँ हैं गे” !!!

आह! इस फ़قرे के जबान नक्ते ही अज्ञना बे बोश हो रहे अधिकारीहीन पर
त्रिप्ति वह दिखते कैसे नात्म्हादून प्रचिलाके बे चूर्चकत त्रिप्ति है
ओर बालीन प्रज्ञन माला भूमि बुरही है!!!

आह! इस नृत्य मालाकी बाहुदारी क्यों ऐक्षण्यमिद है कि इस खात्मे मूँगी! आह! एक
त्रिप्ति से त्रिप्ति की धूरकत दिखतही है दूसरा मिन्द के त्रिप्ति रक्ख सूर्यम
साँस की त्रिप्ति करही है! ऐक्षण्य दूल को त्रिप्ति मूँगी त्रूप लेन्दा वार से बोली! अज्ञना
क्यों लिखे गए एवं सूर्यमारक सूर्यकी बाजान से त्रूप बोल! आह! इस वक्त एक
सरदार! इस त्रिप्ति लाजतताम जिस से नक्ते ओर सातहरी ये लिखी खानी है।-
त्रिप्ति ज्ञानी आरजूँ पैन्दे वालीन को त्रूप कर जाने त्रूप आदान फ़िक्रों दिखाए अफ़िब
न रहोना - आह! मैं कैसी ब्रह्मसंस्कृत होऊ कै लिखी त्रिप्ति आरजूँ अप का दिवार लिखी लिखिब
न रहोना और रसियेंत की लिखी त्रूप त्रिप्ति - एमी लिखी कर आरजूँ के दर्शन हो रहा त
ये बे नक्तियें बहुल जादू गी - और वह दाख जो मिरी उच्चत प्रज्ञों द्वारा लिखा गया
की है दूर हो जाएगा - आह! दूल की आरजूँ मैं दूल मैं रहौं और सूरत का प्रियाम
आप हो जाएगा! अब कोई चूरत यीबास से राती की नृत्यहीन आती बगडान! अता
त्रिप्ति है कर दूल कै लिखी क्यों न खिल करीं लेकिन आप प्रत्यक्षी दाख
है कि जब बात का मुख्य को लाजाम लगाया गया है से एस ज्ञानों द्वारा
नक्ते हैं”

ये कहा और सर्द आह ले खामोश हो गई। बसन्तमाला कुछ कहने को थी कि आंधी का तूफान आया और गुड गुड गुड की आवाज आई और कुछ वजनदार चीज इस गड्ढे में गिरी। बसन्तमाला के दिल में ख्याल गुजरा कि शेर कूदा है। ये सोच कर वो तो अज्जना के साथ लिपट गई और बड़ी हैरत से उस तरफ देखने लगी। जब कुदरती रोशनी का चमकार, जो सब रोशनियों से आला और अफजल है, पड़ा तो उस गिरी हुई चीज की **नाहीत** को पहुँची जिसको देखते ही बसन्तमाला की सब हैरानगी काफूर हो गई और जोर से चिल्ला उठी। अज्जना! देख उस पारा **बरहम** परमात्मा की कुदरत निराली है। जिसको मैं शेर समझी थी वो तो एक दरखत का ठहना है।

ये कहा और अज्जना का हाथ पकड बड़ी आसानी से दोनों ने उपर आ ईश्वर का शुक्रिया अदा किया। ओहो! अब तो बादल भी बैठना शुरू हो गया गया। उजाला यही तारिकी को बहकाए चला जाता है। और ये दोनों आगेको चली जाती हैं। थोड़ी सी दूर जाने पर एक जलता हुआ चिराग दिखाई दिया जिसको उन्होंने अपना रहबर बना उसी तरफ का रुख कर लिया है और कैसे जल्द जल्द कदम उठाए जा रही है।

बाब (अध्याय) बारहवाँ

आह! ये क्या मामला है

रामनाथ के शमाल (उत्तर) में अभी एक जहाज ने लंगर किया है। जिसमें से बहुत से सिपाही फौजी वर्दी पहने उतर रहे हैं। मगर एक नौजवान जो सब से पहले बड़े **करोफर** से उतरा है हाथ से छड़ी को धुमाता हुआ जहाज की तरफ देख रहा है। गोया इन सब के इन्तजार में खड़ा है।

इसका शाहाना लिबास अमीराना **वजह** और **जाहोजलाल** बतला रहे हैं कि ये कोई अपसर

۷۴

یہ کہا اور سروड़ाह ने خاموش ہو گئی۔ بسنت مالا کچھ کہنے کو بھतی کि آندھی کا طوفان ایسا اور کڑا... کڑا... کڑا کی آواز آئی اور کچھ دزن دار چینہ رُس کر ٹھके میں گری بسنت مالا کے دل میں خیال گزر لکھیر کو دا ہے پرسوچ کردہ تو اسجننا کے ساتھ لپٹ گئی ادھیری ہیرت سے اُس طرف دیکھنے لگئی جب قدرتی رُختنی کا چمکار جو سب روشنیوں سے اعلیٰ اور افضل ہے پڑا تو اس سے گری ہوئی چینی کی باہشت کو بلوچی جس کو دیکھتے ہی بسنت مالا کی سب جیرائی فخر ہو گئی اور نہ سے جلا اٹھی۔ اجنبیا! دیکھا اس پاربرہم پارتمانی کی قدرت زرالی ہے جس کو میں شیر سمجھتی ہو ایک درخت کا ٹھہرہ ہے۔

یہ کہا اور اجنبیا کا ہاتھ پکڑتی آسانی سے دلوں نے اور آئینور کی عشکری ادا کیا! اوہ پو ابتو بادل بھی پھنسا شرع ہو گیا جایا ہیں لیکن کوئی ٹکٹائے چلا جانا ہے اور یہ دلوں آگے کوچلی جاتی ہیں تھوڑی سی درجلنے پر ایک جلتا ہو اچڑانے دھکھائی دیا جسکو انہوں نے اپنا رہبر بنانے اُسی طرف کا رخ تریلیہ ہے۔ اور اب یہ سے جلد جلد دو مانہوں سے جاہری ہیں۔

بَابِ بَارِصَوَانِ

آه! یہ کیا معاملہ ہے

راہمنا تھو کے شمال میں بھی ایک جہاڑنے انگر کیا ہے۔ جس میں سے بسنت سچا ہی ٹوچی وردی پہنچے اور تر رہے ہیں۔ مگر ایک لوگوں جو سب سپتے ٹپتے کر دنے سے اوترا رہے تھے چھٹری کو گھٹانا ہوا جہاں کی طرف دیکھ رہا ہے۔ گویا ان سب کے انتظار میں کھڑا ہے۔

اس کا شاہزاد بیاس سامیرت و ضع اور جاہ و جلال تبلار ہے کہ یہ کوئی افسر

या राजा का लड़का है।

जब सब उतर चुके तो उनमें से एक ओहदादार जरा बुकतर पहने तलवार कमर से लगाए ढाल हाथ में लिए आया। जिसको ये नौजवान अफ्सर मुखातिब होकर कर रहा है।

वही अफ्सर “देखो! हम मंत्री को साथ ले आगे चलते हैं। तुमने खबरदारी से सिपाह को ले कर मंजिल मंजिल आना” ये कहकर घोडे पर सवार हो गया। पहले तो उसने घोडे को खूब सरपट डाल दिया मगर बाद में न जाने क्या सोच कर बाग को इस कदर जोर से खेंच लिया है कि घोडे की गर्दन भी दोहरी हुई जाती है और ये रोके ही चला जाता है। अगर चाह इसका घोड़ा बहुत चाहता है कि अपनी तेज रफ्तारी के जोहर दिखाए लेकिन ये अफ्सर उसको इस बात की इजाजत ही नहीं देता। और सर झुकाए दिल ही दिल में कहने लग जाता है “आह! आज रात कैसी परेशान खाब दिखी है। ईश्वर करे ये झूठ हो। उस प्राणप्यारी को तो मैंने अच्छी तरह अभी देखा भी नहीं।” खुदही “कहीं वो ही बात तो नहीं हुई जिससे वो डरती थी? नहीं नहीं! मैं समझ गया। जिस वक्त मैं रवाना होने लगा था उसने कहा था कि मैं हमल की उम्मीद रखती हूँ। शायद अब वो वजह हमल के बाइस तकलीफ में हो।” घोडे को रोककर कुछ देर सोचने के बाद “हाँ बेशक बेशक! यही दुरुस्त होगा। जच्चा को अक्सर इस मौकह पर सख्त मुसीबत का सामना होता है। अंजाम बखैर हो।” फिर कुछ सोचकर “ऐ! इस बात को तो डेढ़ साल गुजर गया है। अगर प्रियंजी का ख्याल रास्ती पर था और ईश्वर करे कि ऐसा ही हुआ हो तो इस वक्त बच्चा भी आठ सात माह का होगा।” थोड़े सकूत के बाद “आह! ये क्या मामला है कुछ समझ में नहीं आता।”

याराज़क़ह लड़का है।

जब बै और टिके तुमन में से एक उम्हेद दार जर्द बक्तर है -
त्वारकर से लकाए ऊहाल नामद में लेते आया जून को ये तुमन असर न अन्धे
मौक़ कर देते हैं -

वही असर दिखो! अम्हेन्त्री को सातहे एक ग़े चलते हैं तू तुम न ख्वारी
से सपाह को रक्षित बन्द आना -

ये कहे कर ग़हूर से पर सौर ग़हूर ये तुमने ग़हूर से को खूब سर थ और दिया
मगर उद्द में न जाने किया सूज कर बाक को अस قدر रुदर से लेखन लाया है कर ग़हूर
की ग़दान अभी दूधरी होली जाती है और ये रुके ही चल जाता है! अर्जुन का
ग़हूर असैत जानता है कि अपनी तिर रफ्तारी के जूहे रुक्काए लिकन ये अस
अस को मैं बात की अजात ये नहीं दिया और सर ग़हूर काए दल ही दल मैं लेते
लग जाता है - आह! आज रात कियी पर तिन खूब दिखी है - अश्वर करे
ये खूब लहू! अस पान पियारी को तुमने अच्छी खूब अभी दिखा भी नहीं -

(खूबी) कहीं वही बात तुम्हीं होली जूस से वह दृष्टि त्यां ही नहीं नहीं।
मैं समझ लिया! अस वक्त मैं रुदर ने लकात्राअस ने कहा त्याकर मैं जूल
की असिद्ध रुचि हूँ। शायद वह वधु जूल के बायत त्याकर मैं जूल
रग़हूर से कोरोक कर चुप्हे दिर सूचने के बाद) नाल बिट्क बिट्क बियी वर्त
होगा - न जो को अन्तर मूल वर्त पर जूल वर्त लाया है - अगाम खूबी -
रप्चर कर चुप्हे कर एन बात को तुदीर साल नदी ग़ी है अर्पर जी का जील
रास्ती पर त्याए वर्त बिट्क बिट्क बियी वर्त वर्त वर्त वर्त वर्त वर्त वर्त वर्त
काहुग़ा (त्याकर से स्कूट के बाद) आह! ये किया मुबाले है कर ग़हूर मैं नहीं आता -

ये कहा और सर्द सांस ले सोचता हुआ आहिस्ता घोडे को रोके जा रहा है। नाजरीन! आप समझ तो गए ही होंगे कि ये अप्सर पवन ही है जो लंका से वापिस आया है। इसकी ये हरकत देख मंत्री निहायत हैरान होकर बोला

मंत्री “महाराज! ऐसा क्या पेचीदा मामला ख्याल मुबरिक में आ गया जिसने चलते चलते ऐसा फिक्रमंद कर दिया कि घोडे को थाम कर सोचना पड़ा। क्या खैर तो है?” पवन “क्या बताऊँ बहुतेरा सोचता हूँ मगर तकदीर के लिखे की तरह कुछ समझ में नहीं आता कि असलियत इसकी क्या है?”

मंत्री “अगर कोई राज पोशीदा (छुपा) न हो तो बन्दे को भी इस **अमर** से आगाह किजिए”

पवन “आह! क्या कहूँ! उस सीन को जो कल रात ख्वाब में देखा है बयान करने से कलेजा मुँह को आता है। अन्जना देवी निहायत बेचैन हो जमीन पर बेहोशो हरकत पड़ी है और रो रो कर कह रही है। हे प्राणप्यारो! तेरी दासी अब कोई दम की मेहमान है अब तो कृपा कर दर्शन दें ताकि ये अरमान दिल में न रह जाए कि अन्त में आपका दर्शन न हुआ। उफ! जिस वक्त से यह ख्वाब देखा है हजारों तरह के ख्याल पैदा हो माहिबे आब की तरह बेचैन कर रहे हैं और कुछ समझ में नहीं आता कि मामला क्या है”

मंत्री “बेशक बेशक! बिल्कुल दुरुस्त! आपका मुतफिक्र होना बेजा नहीं। वाकई ये हैरत अंगेज ख्वाब है। आप के मुँह से सुनकर मेरे **ओसान** खता हुए जाते हैं। मगर इन ख्वाबों का ऐतबार ही कुछ नहीं।”

पवन “ये तो मैं भी जानता हूँ कि इन का ऐतबार कुछ नहीं लेकिन दिल को चैन नहीं आता। जब तक **बचशाम** खुद उसको देख नहीं लेता तस्कीन (आराम) नहीं होती।” ये कहा और घोडे को सरपट डाल मंजिले तय करते हुए रत्नपुर पहुँचे।

ये कहा और साल्फ़ से सूचना हो आहेस्ते ग्होर्टे को रोके जारी है। नाखरीन! आप समझ लोगे होंगे कि ये अस्त्रीयों ही हैं जो लिंगकासे दोप्स आया है। एस की ये ग्हरक विज्ञेय तस्कीन होकर आया।

मंत्री - नहाराज! आपका ये जिधी मुख्याल मामले खाल म्हारक मिस ने चलते ऐसावर्षकर्त्ता कर ग्होर्टे के खाम कर सूचना ढारा किया थिरत है? योन - क्या बताऊँ ये तस्कीन होने वाले तस्कीन के लिखे की तरफ कुछ ज्ञान नहीं आता कि असलियत इसकी क्या है?

मंत्री - आपकी राजपाल शिवेद म्होलवंडे को ज्ञानी आरसे आगाह कीजिये।

योन - आह बीक्हो आपसीन को बांगल बात खोबीन दियाहाते बियान करने से कुछ ज्ञान को आता है। अन्यथा द्वियो निहायत बीजीन होवर्दीन पर ये चूं वे खरकत ढारी है और दो वर्क लिहायी है। ये प्राण पीयारसे बियादी दायी अब कोई उसकी महान है। अब तक पांच दशन वृत्ताकर ये अरान दल हीं निर्वाजासे कराते हैं अपारदर्शन नहीं। एफ अस वक्त से ये खोब दियाहाते त्रिरात्रि त्रिवेदी ज्ञान ये खाल दीवा होवायी बीजीन करते हीं एवं कुछ ज्ञान नहीं आता कि असलियत क्या है।

मंत्री - यीश्वर बांगल दरसत आप का तस्कीन होना बिजानीहीं वृत्ती विजित अन्यथा खोब है। आप के मुख से सूचना मीर्ये आवान खताहोये जाती है। योन - ग्हरान खोबों का अन्यथा बिजानीहीं!

योन - ये तो ये जाता होने का अन्यथा बिजानीहीं। लिंग दल को चूर्ण नहीं आज तक तस्कीन खोबों को दिया नहीं लिंग दल कीन नहीं होती। ये कहा और ग्होर्टे को सरिष्ठ दाल मंत्रीलिंग त्याकरते होये रत्न पूर्व पूर्वजे।

जब पवन ने अञ्जना के महल को मुकफिल पाया तो दिल में ख्याल गुजरा कि बच्चा पैदा होने के बाइस वालदा उनका अलहैदा रखना गवारा न कर अपने ही महल में ले गई होंगी। कुछ सोचकर जरूर ऐसा ही हुआ होगा। भला मुद्दतो के बाद उसको ये दिन नसीब हुआ यहाँ क्योंकर रहने देती थी।

ये कहा और महल में आते ही रानी कितुमति (वालदा), जो किसी ख्याल की धून में सर झुकाए बैठी कुछ सोच रही है, के पाँव पर सर को रखा। पहले तो वो दिझक गई मगर बाद मे पवन को देख बाग बाग हो पेशानी (माथा) पर बोसा (चुमना) दिया और कलेजे से लगा ईश्वर का शक्रिया अदा किया। और बोली

रानी ‘‘बेटा! तेरी मुफारकत (जुदाई) ने, परमेश्वर जानता है, जो हमारा हाल किया। दिन रात तेरा जिक्र, तेरा ही फिक्र दिल को मसलता रहा। तेरी कहानी दर्दे जबान थी। शुक्र है जो आज तुझको देखा। कलेजा ठण्डा हुआ। दिल के फिक्र दूर हुए। कहो तुम इतनी मद्दत लंका में ही रहे?’’

पवन “माताजी! क्या कहूँ जब खर और दूषण को छुड़ा लंका में वापिस आए तो भीलों से तनाजा (संघर्ष) शुरू हो गया। उधर से फारिंग हुए तो और ही झगड़ों में पड़ गया। गर्ज इसी सिरफिरी में डेढ़ साल गुजर गया”

गो पवन अपनी वालदा की बातों का जल्द जल्द जवाब दे रहा है मगर इसका परेशान दिल दिलीदिलों को अंदर ही अंदर जबज कर आँखो से काम ले रहा है। बहुतेरा इधर उधर देखता है मगर अज्जना और बसन्तमाला को अब तक न देखकर बेकरार हो जाता है। और जल्दी से अपने मायूस दिल को सम्भाल कर वलदा के सवाल का जवाब दे रहा है। थोड़ी देर के बाद रानी उठकर दूसरे कमरे में गई तो पवन ने उस वक्त को गनीमत जान लौटी से पछा

جب پون دے اجنبیا کے محل کو مغلیل پایا تو دلیر خمال گزرا گئے تھے۔ پیدا ہونے کے باعث والدہ امیں کا علیحدہ رکھنا گورنر کرنے سے بچا محل میں نے کئی ہمگی کچھ سوچ کر ضرور ایسا ہی ہوا ہو گا۔ بھلامتوں کے بعد امیں کوئے دن لصیب ہوا یہاں کیونکر رہنے دتی تھی۔

یہ کہا اور محل میں آئے ہی رامی کیدوتی (والدہ) کے پاؤں پر جو کسی خیال
کی دھن پر سرخ چھاٹے تھیں کچھ بچ رہی ہے سر کو رکھا۔ پہلے قودہ جھجہ
گئی سگردیدہ میں پون کو دیکھ لاع باخ ہو پیشانی پر پوسدیا۔ اور کلیج سے لکھائی
کا شکریہ ادا کیا اور بولی۔

رمانی۔ بیٹا بتری مفارقت نے پریش رہا تاہے جو ہمارا حال کیا۔ دن رات
تیرا ذکر تیرا نگر دل کو مسلتا رہا تیری کہانی ورزشان تھی۔ شکر ہے جو آج
تجھکو دیکھا۔ کلچر پھنڈا ہوا۔ دل کے قدر در ہوئے۔ کہوتم اتنی مدت لینکا

پلوں - تاتا بھی اکیا کہوں جب کھرا و دوکھن کو چھوڑا لینکا میں دا بس
اسے تو کھلیوں سے تمازع شروع ہو گی۔ اوہر سے فارغ ہوئے تو اور ہی
حتماً دل ہر ہرگی غرض اسی سر پھر من ڈوڑھ سال گزر گنا۔

ٹولیوں اپنی والدہ کی باتوں کا جلد جواب دے رہا ہے مگر اس کا پریشان دل ولی ولولوں کو اندھی اور ضمپٹ کراں کھوں سے کام لے رہا ہے۔ بتیا اور ہر دھرم کیکھتا ہے مگر ابھی اور بست نالا کو اب تک نہ دیکھ کر بیخوار ہو جاتا ہے اور جلدی سے اپنے یالوس دل کو سنبھال کر والدہ کے سوال کا جواب دے رہا ہے۔ سخنواری دیر کے بعد ای اٹھ کر دسرے کمرے میں آگئی تو ٹولیوں نے اس وقت کو غینت جان لونڈی سے پوچھا۔

पवन “प्रियाजी और बसन्तमाला कहा हैं! जरा उनको भी खबर कर दो।”

लौंडी सर्द आह भर सर झुका खामोश

पवन हैरानगी से उसकी तरफ देखकर “क्यों खैर तो है?”

लौंडी बडबडाती हुई आवाज से “महाराज! उनको तो एक साल हुआ है कि यहाँ से...”

आह! इस बात को सुनकर पवन अचम्भा सा रह गया। दिल धड़का कलेजा फड़का। बदन मे सनसनाहट सी पैदा हो गई। आँखे लौंडी की तरफ देखते देखते पथरा गई। खून जहाँ हरकत कर रहा था बर्फ की तरह जम गया। लौंडी उसकी इस कदर परेशान सूरत देख घबरा गई और भागकर रानी को इस **अमर** की इत्तला की।

लौंडी से पवन का हाल सुनकर रानी के दिल मे ख्याल गुजरा शायद पवन उसकी बात समझा नहीं। असल मतलब की तह को पहुँचा नहीं। इसलिए **मुतफिक्र** हो गया है। ये सोच आनकर कहने लगी

रानी ‘बेटा! क्यों मगमून सूरत बनाए सर झुकाए बैठा है। मैंने तो दीदाओ दानिस्ता (जान बूझ कर) पहले इसी वास्ते जिक्र नहीं किया था कि सुनकर तुझको मलाल न हो। दिल में कुछ ख्याल न हो। उस बेहया ने तो ननगो नामूस (आचार संहिता) का कुछ भी ख्याल न किया। शरम हया को बालाए ताक रख गैरों से.. जब पूछा तेरी अंगूठी दिखा मुझको भरमाने लगी। कई तरह की बातें बना परचाने लगी। लेकिन मैंने उसी वक्त पातकी रथ मे बैठा शहर बदर किया। गैरों के तानों से अपनी आबरू को बचा लिया। बेटा इस बात का फिक्र न कर। फिर भी अच्छा हुआ जो वक्त पर खबर हो गई। अब यहाँ से महेन्द्रपुर गई है।’

नाजरीन! पवन जो लौंडी की कलाम जिसको मुसीबत का पयाम कहा जाए तो बेजा न होगा।

پون - پری جی! اور سبنت مالا کہاں ہیں! اُن کو بھی خبر کر دو!

لونڈی - رسداہ بھر سمجھکا خاموش

پون - رحیز نگی سے اُس की طرف دیکھ کر کیوں اخیر تر ہے؟

لونڈی - ریٹھ بڑتی جوئی اوائی سے) جہاراج! اُن کو تو ایک سال ہوا ہے کہ یہاں سے.....

۴۵! اس بات کو سند کروں اچھا سار گیا۔ دل دھर کا کھلیج پھر کا۔ بدن میں سنسنہ اڑ سکی پیدا ہو گئی۔ آنکھیں لونڈی کی طرف دیکھتے دیکھتے تھھر گئیں خون جہاں حرکت کرتا تھا برف کی طرح جنم گیا۔ لونڈی اُس کی اس قدر پرستی صورت دیکھ گئی۔ اچھا گل کر رانی کو اس امر کی اطلاع کی۔

لونڈی سے پون کا حال سند کرنی کے دل میں خیال گزرا شایہ پون اُس کی بات کھھا نہیں۔ اصل مطلب کی تکوپی پا نہیں۔ اس نئے تفکر ہیں ہے۔ یہ سوچ آتا کہنے لگی۔

رانی۔ بیٹا! کیوں مفہوم صورت بنائے سمجھکاے یہاں ہے۔ میں نے تو دیدہ داشتہ پیٹے اسی داسٹے ذکر نہیں کیا تھا کہ سند کھبو ملاں نہ ہو۔ دل میں کچھ خیال نہ ہو۔ اُس بے حیاتے تو شک ناموس کا کچھ بھی خیال نہ کیا تھرم جیکو بالا سے طاق رکھ غیروں سے.....

جب بوجھا تو تیری انگوٹھی دکھا جکو بھر بانے لگی۔ گئی طرح کی ہاتیں بنا پڑنے لگی۔ لیکن میں نے اُسی وقت پانکی رخھیں بیٹھا شہر میر کیا۔ غیروں تے طعنوں سے اپنی آبرو کو بچایا۔ بیٹا! اس بات کا فذر لکھ بھر بھی اچھا ہوا جو وقت پر خبر سو گئی۔ اب یہاں سے ہمہندر یور گئی ہے۔

ناظرین! پون جو لونڈی کی کلام جس کو محبت کا پیام کہا جائے تو جاہنگی

سونکر جو اس باختہ جو بھی رعایت حاصل رہا اسی زبان سے یہ بتائیں مکمل کراس کے سونکر جو اس باختہ جو بھی رعایت حاصل رہا اسی زبان سے یہ بتائیں مکمل کراس کے مالیوں ل پریز نشتر کی حکمرانی ہیں۔ بخ و غم کے لشکرنے اس سے چارے کے عضو عضو پر قبضہ کرنا شروع کر دیا ہے۔ بیعت کا اجھسن۔ دل کی سیکلی چڑپا کا انتشار۔ دماغی قوت کو راہ کرنا ہے۔ قوت سامنے لے لیں ہے حرمتی کی تہب سونکر کے دوپٹے کو اندر کھینچ ہو جو بنا دیا ہے۔ جگر کا ضعف ترقی پر ہے۔ دل بچے بیٹھنے کو بجا گا جاتا ہے۔ تماں کاٹ پو افادہ سامنے دکھائی دینے لگا۔ اور ہر بے قرار دل نے اجنبی کی بد جو اس صورت کو جو خواب میں بھی تھی جلدی سے پیش کر دیا۔ جس کو دیکھتے ہی سب بدن کا نب اٹھا۔ اور آجوس کا غباریل کے شیم کی طرح کلیچ سے مکمل دیمان کو پڑھاتا ہے اختیار ہو کروں سے احمد کھڑا ہوا۔ اور نہایت پر درود ہمیں یہ کہا ۵

آہ! جھوٹھا دیا کلنک اُس نہیں ساخت جل ایک دو کھکارن لو بی ایشور لکھے ٹیک
تین دیوں تک میں ماکتی نہیں کر جو ڈا مات پتا سے تم لو شنکاریں نہ اور
سماجوں ملائے کچھ گیا یہ ت کاں نشچ کارن آپ کے کر جھوشن دیا کمال
اہ ان پہل میر سب جتن حصول ملایا نام دو کھکریا اسے ت گھننا آپ ہوئی بنام

ہوئے ڈری تھی جس بات سے دی ہنا سمجھو۔ رائے ہند کی مقننا تجھے ملا دو کھکر آگوں
اوہ اب کیا آزدہ میں تھیں۔ کیا کیا تنسا میں تھیں۔ مگر اج سب خاک میں گلیں
رباہ کی طرف دیکھ کر آہ اودہ پیاری صورت اب کہاں دیکھنی نصیب ہو گی؟
میں بے گناہ کو جو اذیت پوچھی وہ سب سیرے ہی باعث۔ والدہ کی طرف
دیکھ کر آہ اتنا تو کیسی سندل ہے تجھکو کچھ بھی رحم نہ آیا
یکہا اور سو آہ بھرنتری کو ساتھے دہاں سے اجنبی کی تلاس میں بھل ہے۔

बाब (अध्याय) तेरहवाँ
दिलेरी मे कम न होगा

सुबह का वक्त है। आफताब तुलु (उदय) हो रहा है। उसकी सुर्खी माइल जर्द किरणें पश्चोमुखाबिन के बुलन्द दरखतों पर पड़ उनके जोबन की बहार दिखला रही है। और पारिदे उड़ उड़ कर दरखतों की शाखों पर बैठ खुशी से चचहाते हुए अपनी नोकदार मनकारों से परों को साफ कर रहे हैं। पंजे फैला कर अंगडाईया ले रहे हैं। और बाजे उड़ उड़ कर अपनी खुराक की तलाश में जा रहे हैं। मगर मनहूस गिद्ध एक पीपल की बुलन्द शाख पर बैठी हुई गर्दन फेर फेर कर इधर उधर अपने शिकार की जुस्तजू कर रही है। और अञ्जना देवी एक झोंपडी के बाहर, जो एक पहाड़ की सतह पर वाकह है और जिसके चारों तरफ जंगल दिखाई देता है, बैठी हुई अपने दाए हाथ को उलटा पुलटा कर देख कुछ सोचती हुई इधर उधर बड़ी हैरानगी से देख रही है। इसके चेहरे पर हद दर्जे की बढ़ी हुई मायूसी बतला रही है कि किसी चीज के गुम होने से ये इस कदर परेशान हो रही है। और यही सही है। सुनिए बसन्तमाला से कह रही है। अञ्जना बसन्त कहीं अंगूठी तो नहीं देखी?
बसन्तमाला ताज्जुब के लहजे में ऐं कौनसी?
अञ्जना वहीं जो स्वामीजी दे गए थे और कौन?
बसन्तमाला वो तो तुम्हारे हाथ में थी क्यों नहीं मिलती!

पश्चोमखा वन ये दरयाई कृष्णा के शमाल (उत्तर) मे **सामाइन** के जमाने में **वाकह** था जंगली जानवर यहाँ **कशरते** पाए जाते थे

بَابْ تِبْرِهُوَالْ

”ولیری میں کم نہ ہوگا“

صیحہ کا وقت ہے آفتاب طلوع ہو رہا ہے۔ اس کی سرخی مالں نہ کرنیں پتوں کھابن کے بلند دخنوں پر پرانے کے جو بن کی بہار و کھلاد بھی ہیں۔ اور پرندے اور اورکر دخنوں کی شاخوں پر شیخوں سے چھپتے ہوئے اپنی نوکلہ ارمنقاروں سے پرول کو صاف کر رہے ہیں پنج پھیلا پھیلا کر اخراجیاں لے رہے ہیں۔ اور بعضے اور اورکر اپنی خوارک کی تلاش میں جا رہے ہیں۔ مگر منہوس گدا یک پیلی کی بلند شاخ پر شیخی ہوئی گردان پھیپھیر کر اور صراحتینے شکار کی جستجو رہی ہے۔ اور اجنا دیلوی ایک جھونپڑی کے باہر جو ایک پہاڑی سطح پر واقع ہے جس کے چاروں طرف جنگل ہی جنگل و کھائی ویسا ہے۔ شیخی ہوئی اپنے دائیں مانکوں کو اولٹا پیٹا کر دیکھ کچھ سوچتی ہوئی اور صراحتینے جیرانگی سے دیکھ رہی ہے۔ اس کے چہرہ پر صدر درج کی ٹھیک ہوئی مالوسی تبلاری ہے کہ کسی پیڑکے گم ہونے سے یہ اس قدر پریشان ہو رہی ہے اور یہی سیمچ ہے۔

اجنا۔ بنت مالا۔ کہیں انگوٹھی تو نہیں دیکھی؟

بنت مالا۔ (توب کے لیجیں) ایں! کونسی؟

اجنا۔ ہی جو سوامی جی دے گئے تھے! اور کون؟

بنت مالا۔ وہ تو تھا سے ن تھیں تھی۔ کیوں نہیں ملتی!!

لے پتوں کھابن یہ دریائی کرشنا کے شمال میں را میں کے زات میں واقع تھی۔ بیکھی جائزہ۔
یہاں کشرتستے پائے جاتے تھے۔

अञ्जना “हाय! गजब हुआ! वहीं एक जिन्दगी का सहारा थी। उसी को देख कर तसकीन होती थी। उसका गुम होना मेरी तमाम तमन्नाओं का गुम होना है। हाय! अब क्या करूँ?”

ये सुनकर बसन्तमाला बड़ी हैरानगी में पड़ गई। देर तक खड़ी सोचती रही। बाद मे कहने लगी “रात को कहीं इधर उधर गिर गई होगी। आओ तलाश तो करें।”

ये कहा और दोनों दूर तक सर झुकाए देखती हुई चली गई। झुके झुके कमरे थक गईं बल्कि लकड़ी की तरह अकड़ गईं मगर अंगूठी का कुछ पता न मिला तो मायूस हो वापिस उस झोपड़ी को आईं तब अञ्जना सर्द आह भर कहने लगी “आह! वाहरी किस्मत वाहरे मुकद्दर! ये एक ही एक सहारा था वो भी जाता रहा! ये कहा और जार जार बुलन्द आवाज से रोने लग पड़ी।

योंही उसके रोने की आवाज उस साधू ने सुनी, जो इस झोपड़ी मे ईश्वर के ध्यान में महव बैठा, जल्दी से बाहर निकल आया। आहा! इस जटाजूट दराज कद सफेद बराक रेशा साधू को देखते ही अञ्जना देवी भौचककी सी रह गई और बड़ी हैरानगी से एक दफा उसकी तरफ नजर उठा नीचे सर झुका सोच मे पड़ गई। तब उस साधू ने कहा

साधू बेटी! कुछ फिक्र न करो। सिर्फ इतना बतला दो कि तुम कौन हो और इस सुनसान वीरान जंगल में क्योंकर आना हुआ?

अञ्जना देवी उसकी बदराना शफकत बजुर्गाना मोहब्बत की बातें सुनकर हाथ जोड़कर बोली

राजा महेन्द्रनगर का राय महेन्द्र नाम ता राजा की मैं सुता^१, अञ्जना मेरा नाम प्रह्लाद विद्याधर ससुर मम पवन नाम भरतार नाम नगर है रत्नपुर सास ने दिया निकार

^१ यानि लड़की

ابجنا۔ تاے غصب ہوادی ایک زندگی کا سہلا تھی۔ اُسی کو دیکھ کر تدریس تکمیل ہوتی تھی اُس کا گھم ہونا بڑی تامن تداں کا گھم ہونا ہے۔ تاے اب کیا کروں؟

یہ شکر بست مالا بڑی حیرانگی میں پڑ گئی در تک کھڑی سوچتی رہی بعد میں پہنچنے لگی۔ سات کو کہیں ادھر ادھر گئی ہوئی آڈ ملش توکریں۔

یہ کہا اور دلوں در تک سر جھکائے دیکھتی ہوئی بیٹی گئیں۔ جچکے جھکے کمریں تھک کر گئیں سبلک لکڑی کی طرح لاڑکیں گز گز گھٹتی کا پچھہ تماں ملاؤ بالوس اور اپس اور اس چھوپڑی کو آئیں۔ تب ابجنا سر و آہ پھر کہنے لگی۔ آہ! اداه رسی قسم! اداه رسی قسم!“ یہی ایک سہلا راتھا دہمی جانارتا! یہ کہا اور زار نازار بلند آوانسے روئے لگا پڑی۔

یونہی اُس کے روئے کی آواز اُس سادھوئے سُنی جو اس جھونپڑی میں ایشور کے دھیان میں محو رہا تھا عالمی سے باہر نکل آیا۔

آئا اس جثا جو شر و انقاص فیض بر لیش سادھو کو دیکھتے ہی ابجنا دلیوی بھک سی رنگی اور بڑی حیرانگی سے ایک دفتر اس کی طرف نظر اٹھا یعنی سر جھکا پیچ میں پڑ گئی۔ تب اُس سادھوئے کہا۔

سادھو!۔ بیٹی! کچھ تکڑے کرو صرف انسانیاد و کر کم کون ہو۔ اور ہس ان دہیان جنگل میں کیوں کرنا ہوا؟

ابجنا دلیوی اُس کی پدرانہ شفقت بزرگ تر محبت کی باتیں سُنداز تھے جو کر بولی۔

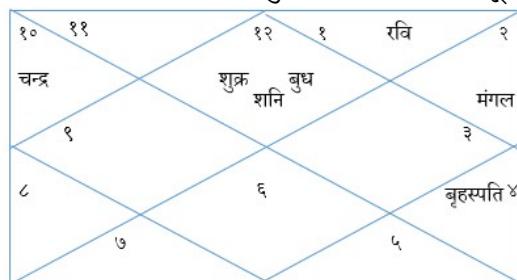
راجہ مہمندر نگر کا رائے چوتھا رام تاراج کی میں سُنداز ابجنا میرزا
بہلاد و دیا و دھر سحر بیوں نھیں تھے نہم بھر ہے ترقی بیوں میں دیا کار
سے یعنی اڑکی

कलंक लगायो इत बुरा कर न सकूँ बखान विष्ट काल फिरूँ काटती आई तो स्थान पिता कहूँ सच आपसे हूँ निर्दोष नार निश्चय सब हो जाएगा जब घर आवन भरतार अञ्जना की मुसीबत को सुनकर साधू के दिल मे रहम आया। गर्दिशे फलक को लानत मलानत कर हमदर्दी का कलमा पढ कर कहने लगा।

साधू “बेटी कुछ गम न करो। जब तक दिल चाहे यहाँ बेफिक्र रहो। मगर हाँ इतना जरूर होगा कि बजबर जंगली फलो के यहाँ और कुछ मयसर न होगा।” नाजरीन! अञ्जना ने इस बात को गनीमत जान साधू का शुक्रिया अदा किया। और वहाँ रहकर अपने अयामे गर्दिश के दिन गुजारने लगी।

जब अञ्जना देवी को इस जगह रहते कुछ अरसा गुजर गया तो वजह हमल का दिन भी आ गया और इस बेसर्दोसामानी मे हमारे बहादुर जरनैल ने जन्म लिया चैत्र बड़ी अष्टमी पुष्य नक्षत्र जान दिन मंगल भरभात को जन्म लिया हनुमान कार्य किए सुहावने मस्तक चन्द्र समान बड़ा पराक्रमी, भासता, नयन मृग सम जान देख अञ्जना बारमबार मुख प्रभा का करती ध्यान

कठिन समय सहा तपाकर इसकी भगवान कोई नहीं बिन आपके हो जिसका मुझको मान दासी हूँ तेरे द्वार की दीन बन्धु भगवान हम अपने नाजरीन की दिलचस्पी के लिए जन्मकुण्डली, जो इस साधू ने तैयार की



जैल मे दर्ज करते हैं।

१ सितारे वाला २ जाहिर होता ३ देखो रामायण सजरोफ गुजराती सफा ७२

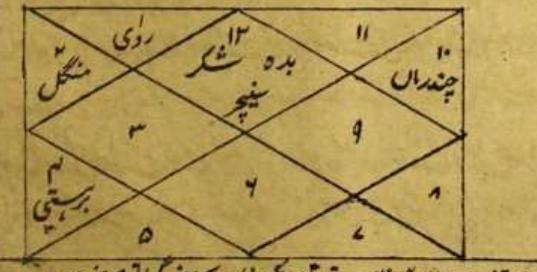
कलंग लगायात भरकर न स्कून बखान बैत काल ब्हरू लक्ष्मी ली तो स्थान पैतक्होन पैज आपसे हूँ न रुद्धन हा - त्रिष्णु ब्होजास्काज गुरावन भृत्यार अञ्जना की मृचित कौशिक सादहुके दल मे रहम कीया - गुरु शन व्याक कृष्ण उल्लेष कर हेदरो व्याक कलमे द्वे कर कहने लगा -

सादहुके बैश्वी कृष्ण न रहे जब दल चाहे ये यहां बे फ़कर मोहर्गुरू अना चर्दे हो गा कर भृत्यार चूलो के यहां लो कृष्ण मिस्त्र न हो -

नात्रीन! अञ्जना ने इस बात को विनिष्ट जान सादहुका लक्ष्मी ए अक्षी और वहां रहे करापे याम ग्रदृश के दल ग्नारने लगी -

जब अञ्जना विल्यो व्यास ग्नारह रहे कृष्ण उच्छव ग्नार लो औ घुम हूँ कादन बैही आगी औ इस बे सरदामानी में हमारे बहादुर जरनैल ने जन्म या २

चित्रास बैदी अश्वी कृष्ण उच्चर जान दल मंडल भृत्यार जहान कूजन्म लियाहेवन
कारे कैस स्वावते मैट्स चंद्र सामन ब्लापर कृष्ण उचास्तामिन रूप सम जान
दिक्षु अञ्जना बारम बारकृष्ण उच्चर करती रही कृष्ण स्वेच्छा पाकर आस्की बहुल
कूली हीन आपे बोहस का ग्नार मान से दास भून तर्से दोर की दिन बैहुग्नान
हम आपे नात्रीन की दल न्यूपी के ले जन्म लेले जो इस सादहुने तियार की दील में
दृग करते हैं -



लक्ष्मी उल्लेष त्रिष्णु ब्होज न रहम बैदी अश्वी ३

इस जन्म कुण्डली को कागज पर खींच कर साथू देर से देख रहा है। कभी तो इलम ज्योतिष की किताब पर नजर डाल लेता है और कभी दिल ही दिल मे सोचने लग जाता है। जब कुछ देर इसी तरह गुजर गई तो बसन्तमाला ज्यादा सब्र की ताब न लाकर बोली। बसन्तमाला “महाराज! मझको भी कछ बताए”

साधू “बेटी!” खुश होकर “अगरचा अज्जना की मुसीबत को देख मुझको भी मलाल हो रहा है। कई तरह का ख्याल हो रहा है। लेकिन इस होनहार लड़के का **जायचा** देख उससे बढ़कर खुशी का सरूर आ रहा है। ये लड़का दिलेरी में कम न होगा **शुजात** में शेर का मुकाबला कर बहादुरी की दाद लेगा। इल्म में **यकताए** जमाज होगा धर्म का पाबन्द रहेगा। **खवेश दाकरबा** सबकी नजरो में अजीज। दगाबाजों और अधर्मियों के वास्ते मौत का **पयाम** होगा। गर्ज जो **वस्फ** इसमें पाता हूँ एक से एक आली देखता हूँ। ईश्वर इसकी उम्र दराज करो।”

बसन्तमाला साधू की बाते सुनकर जल्दी से अज्जना देवी के पास गई और सब हाल उसके **गोशगुजार** किया। जिसको सुनकर उसका वो चेहरा जो मुद्दतों की परेशानियों और रात दिन की मुसीबतों से हँसना भी भूल गया था इस वक्त कुछ सिखिला हुआ नजर आ रहा है। और लड़के की तरफ देख कर दिल में कह रही है।

वो दिन कब पर बह आएगा जब घर आवन भरतार

नामकरण करूँ कर खुशी गाकर मंगलाचार
करे सभी वो हित मुझे जो करते धुतकार लोगन माहि उजली कब कर सो करतार
और कई तरह के ख्याल लड़के को देख देख कर पैदा हो चुटकियाँ ले रहे हैं जब
बेसरोसामानी के सामान देख आँखो से आंसू आ निकले तो बसन्तमाला ने कहा
बसन्तमाला “सखी! मैं बड़ी ताज्जुब मे हूँ कि तू इस कदर दाना होकर भी नहीं
सोचती कि तेरा इस वक्त गमगीन होना क्या क्या नतीजा पैदा करेगा। क्या इसका
असर दध पर पड़े

१ जो धर्म के बरखिलाफ जाने वाला

اس جنم کنتی کو کاغذ پر کچھ سادھو دیرتے دیکھ رہے ہیں۔ کبھی تو علم جوش کی تاریخ پڑھاں دل لیتا ہے اور کبھی دل ہی دل میں سوچنے لگ جاتا ہے! جب کچھ اس طبقہ کے تاریخ، تاریخ انسانی و مصیر کے تاب شکاری ہو۔

بیت مالا۔ جہاڑا ج بھکو بھی کچھ بتائیے؟
سادھو۔ بیٹی! دخوش ہو کر) اگرچہ اجنبی ای صیحت کو دیکھنے بھکو بھی ملال پورا
ہے کئی طرح کا خیال ہوتا ہے لیکن اس پوہنچار اڑکے کا راضچہ دیکھنا اس سے بڑا
خوبشی کا سروارتا ہے۔ یا طلا کا دلیری ہیں کم نہ ہوگا۔ شیخاعت میں شیر کا مقابلہ
کر بیاندھی کی دادلیگا علم میں یکتا سے زانہ ہو دھرم کا پابند رہیگا۔ خوشن و اقبال
سب کی نظر والیں عزیز و عطا بازدھن اور آدھر میوں کے داسطے مت کا پیام
ہو گا۔ غرض جو وصف اس میں پاتا ہوں ایک میں اعلیٰ دیکھتا ہوں۔ ایشور
اس کے بعد دراز کرے

بی مرد اور مرد
بیت مالا سادھو کی تامیں سنگھری سے انجن دیلوی کے پاس کی
درست حال اس کے گوش گذار کی جس کو سنگھر اس کا وہ چہرہ جوہد توں
کی پریشانیوں اور رات دن کی محیتوں سے منہنا بھی بھول گیا تھا منقت
چکھلا ہے انظر کر رہا ہے۔ اور لڑکے کی طرف دیکھ کر دل میں کہہ رہی ہے ۔
وہ دن کب پر بہہ آئیجا جب ٹھرا دن بختار نام کرن کروں کر خوشی گا کر مشکل چار
کریں سمجھی وہ ہر بھجے جو کرتے دھنکار لوگن ماہیں اوجلی کب کرسو کرتا ر
اور کئی طرح کے خیال لڑکے کو دیکھ دیکھ کر پیدا ہو چکیاں نے رہے ہیں جب
پیسو سماں کے سامان دیکھتا کھوں سے آنسو بنتے تو لبست مالا نے کہا
لبست مالا سکھی ایسی بڑے تھیں ہوں کہ تو اس قدسہ انا ہم کو کہیں
سوچتی کہ تیر اس وقت غلگین موناکی نتیجہ پیدا کریگا۔ کیا اس کا اثر دوھر پڑے

बच्चे के लिए मुजिर (बुरा) न होगा? सच है हाथी के दांत दिखलाने के और खाने के और प्यारी! क्या तू अपने कौल को भूल गई जो अक्सर कहा करती थी कि जो दुख सुख शरीर का भोग जान ईश्वर पर भरोसा रखता है वही दुनिया में खुश रहता है। अज्जना ‘बसन्त! मैं सब कुछ जानती हूँ हर चंद कोशिश कर बेकार दिल को संभालती हूँ मगर क्या करूँ ये मेरे काबू में नहीं रहता।’

आह! जिस वक्त ये लड़का जमीन पर लेटे लेटे खुद ब खुद कभी हाथ पाँव को फैला और कभी सिमट कर नाक मुँह चढ़ा रोने लग जाता है तो अज्जना उसको बेकसी की हालत में कुदरती फर्श पर लेटा देख बेचैन हो जल्दी से गोद में ले लेती है।

जब ग्यारह माह इसी तरह गए तो एक रोज दोपहर के वक्त जबकि बारिश हो रही है और अज्जना देवी लड़के को लिए झोंपड़ी में बैठी दिल बहला रही है। मगर लड़का एक ही जगह बैठे बैठे कुछ तंग आ गया है जोर जोर से चिल्ला चिल्ला कर रो रहा है। अगरचा अज्जना खड़ी हो और एक दो कदम इधर उधर ठहल कर भी उसको बहलाती है। मगर ये बच्चा रो रहा है।

बारिश थमी तो लड़के को लेकर झोंपड़ी के बाहर आ खड़ी हुई और उन जंगली दरखतों और खुदरा पौधों को, जो झोंपड़ी के इर्द गिर्द दूर तक फैले हुए दिखाई देते हैं, ऊंगली के इशारों से लड़के को दिखा उसका दिल बहला रही है।

आह! इन खुदरा पौधों के रंग बिरंगी फूलों और सब्जाजार के खुशनुमा सीन को देख अज्जना को अपने बाग की बहार जो लड़कपने के जमाने में सैर के वक्त देखा करती थी याद आ गई। आँखों से आंसू बह निकले और दिल में कई तरह के ख्याल पैदा हो कर उनके जमजोर करने लगे। तब उसने बड़े हौसले से दिलिदिलों को मजबूत कर इधर से निगाह को रोक आसमान का नीला नीला रंग और उसमें जा बजा उन सफेद बादलों के टुकड़ों को देखना

जो के ले मुत्तर हो गए? आह! ये नाची के दांत दिखाने के लिए
के लिए प्रीयारी एक लोपनी वाले को बहुल गी जो कर्त्तव्य की जुड़ी कठोर स्क्रिप्ट
सर्व का भगवान ईश्वर पर भरोसा रखता है वही दिनामिस खुश रहता है।
अज्जना-इस्त! मैं सब कुछ जाती हूँ हर चंद कोशिश कर बेकार दिल को
दल को संभालती हूँ ग्रंथी की ओर ये मेरे ताड़ों में नहीं रहता।

आह! ये वक्त ये त्रिकालीन पर लिये थे खुद बजूँह की जुड़ी दल की हालत
मैं इसकी निधनी प्रक्रिया को ले जाता हूँ अब ये त्रिकालीन दल की हालत
मैं यहां पर लिया दिया चौपाई से गोद में ले लेती है।
जब ग्यारह माह आसी खूब गंदर गंदर के त्रिकालीन दल की हालत
मैं अज्जना दली त्रिकालीन को ले जाता हूँ अब ये त्रिकालीन दल की हालत
ये त्रिकालीन को ले जाता हूँ अब ये त्रिकालीन दल की हालत
कहरी हो और ये त्रिकालीन दल की हालत की हालत है। ग्रंथी की हालत
रहती है।

बारिश थमी त्रिकालीन को ले जाता हूँ अब ये त्रिकालीन दल की हालत
और खुद दूपोदूल को जो ज्ञानप्रद त्रिकालीन को ले जाता हूँ अब ये त्रिकालीन दल की हालत
मैं अंगूष्ठी के शिख से त्रिकालीन को ले जाता हूँ अब ये त्रिकालीन दल की हालत है।

आह! ये त्रिकालीन के त्रिकालीन दल की हालत ये त्रिकालीन दल की हालत
अज्जना को ले जाता हूँ अब ये त्रिकालीन दल की हालत ये त्रिकालीन दल की हालत
याद आयी अंगूष्ठी के त्रिकालीन को ले जाता हूँ अब ये त्रिकालीन दल की हालत
लगे तब ये त्रिकालीन को ले जाता हूँ अब ये त्रिकालीन दल की हालत
असान का सिलाई लगे अब ये त्रिकालीन को ले जाता हूँ अब ये त्रिकालीन दल की हालत

शुरू कर दिया है जिन को हवा ने छोटे लड़कों की तरह अपना खिलौना बना रखा है। कभी वो टक्करें मिल एक हो जाते और कभी हवा का एक धृष्ट लगने से हाथी और घोड़ों की शक्लों में हो जाते हैं। चीलें उड़ती उड़ती ऐसी बुलन्द हो गई की स्याह टिक्की के बगैर कुछ मालूम ही नहीं होता। मगर जब वो सफेद बादलों के नीचे आ जाती हैं तो गोया अबर के साथ जुड़ जाती हैं।

इस तरह अज्जना देवी दिल बहला रही थी कि यकायक एक चमकदार चीज जो आफ्ताब का हमपल्ला मालूम होती है इस तरफ को आती हुई दिखाई दी। पहले तो बडे गौर से देखती रही बाद में मालूम हुआ कि कोई **बवान** आ रहा है। तब ये जल्दी से वही बैठ गई और नीचे सर झुका लिया। मगर इसको बैठे देख लड़का चिल्ला उठा और जार जार रोना शुरू कर दिया।

नाजरीन! इस बवान में एक शख्स सफेद रेश उम्दा लिबास जेबतन किए एक औरत से बातें करता हुआ आ रहा था कि नागाह (अचानक) उसकी नजर अञ्जना पर पड़ी और लड़के के रोने की आवाज कानों में पहुँची। न जाने उस के दिल में क्या ख्याल गजरा है कि बवान को थाम कर अपने हमनशीन औरत से कह रहा है।

वही शख्स “प्रियजी! आपने कुछ देखा?”
औरत “नहीं स्वामीजी! मैंने कछ नहीं देखा क्या है?”

वही शख्स उंगली से इशारे से “वो देखो झोंपड़ी के आगे एक नौजवान औरत सरझुकाए गमगीन सूरत बनाए बैठी है। और शायद वो उसका लड़का है जो पास ही बैठा रो रहा है।”

और त गर्दन फेर कर पीछे को देख ‘हाँ’ बेपरवाही से ‘किसी साधु

شروع کر دیا ہے جن کو ہوا نئے چھوٹے طکوں کی طرح اپنا کھلوا بنا لکھا ہے۔
کمیجی وہ مگر سے مل کر ایک ہو جاتے ہیں اور کبھی موکا ایک وعظیر لگتے سے الگ
الگ نظر آتے ہیں۔ ہل بڑے بڑے بادلوں ہوا کئے لگتے سے باخچی اور گھوڑوں
کی شکلوں پر ہو جاتے ہیں چلیں اور تی اور تی الیسی بلند ہرگزی میں کسیاہ
نکیک کے بغیر کچھ معلوم ہی نہیں ہوتا۔ مگر سب وہ سفید بادلوں کے تینچھے آجاتیں
قوکوڈا اپر کے ساتھ ہر جاتیں۔

اسی طرح انجمنا ویوی دل بہلاری تھی کہ بیکا یک ایک چکلہ اچیر عوامی کا
ہم پر معلوم ہوتی ہے، اس طوف کو آئی ہوئی وکھانی دی۔ پہنچ توڑے سے غور
سے دکھتی رہی۔ بعد میں معلوم ہوا کہ کوئی بو ان آرنا ہے۔ تب یہ جدیدی سے
وہیں پہنچ گئی اور پہنچ سر جھکایا۔ مگر میں کو شیخہ دیکھ رہا چلدا اٹھا اور زار زار
رونا شروع کر دیا۔

ناظرین! اس بوان میں ایک شخص سفید لیش عمدہ لباس زیب تن کے لیکھ عورت سے باتیں کرتا ہوا آ رہا تھا کہ ناگاہ اس کی نظر ان جنپ پر ٹرپی اور لڑکے کے دستے کی آواز کا لون میں پوچھی۔ ز جلد اس کے دل میں کی خیال گزرا ہے کہ بوان کو تھام کرنے منشہ بخ تسلیت سے کھبر رہا ہے۔

وہی شخص سپری ہے جو اس سی شہار و رکاب سے ہے۔

اوی خصوص - نگل کے اشارے سے) وہ دیکھو جو پندری کے آگے ایک لڑکا عورت سرچھائے نگلیں سورت بنائے تھیں ہے اور شاید وہ

خورہت - ہم سو ایسی ایسی نگہنیں دیکھا اکیا ہے؟

وہی شخص - پری ہے جو اس سی شہار و رکاب سے ہے۔

عورت۔ (گردن پھر کر تھی کہ دیکھئے) ماں (بے بردابی سے) کسی سادھو

کی لडکی ہوگی! اے! اسکا س্যاہ لیباس کیوں ہے?”

وہی شاہس “ایس بات کو تو میں سچ رہا ہوں اگر ساڈھو کی لڈکی ہوتی تو اسے س्यاہ کپڈے ہرگیج ن پہناتی۔ اس مें جرور کुछ بھेद ہے۔”

یہ کہ کر بوان کو درختوں کی آڑ میں زمین پر اوتارا اور خود اجنبی کے پاس جاکر بولा۔

وہی شاہس “دے وی تُ کیون ہے اور اس سونساں ویران جنگل میں کیوں ہے؟

اجنبی دیوی جاپنے ہی خیال میں سمجھ کر سچھ سچھ سوچ رہی ہے اس ناچاری کی آڑ کو سختے ہی چوناک پڑی اور جلدی سے سراوٹھا اور پکی طرف دیکھا تو فوراً اس کے قلب سے لپٹ پھوٹ پھوٹ کر رونے لگ پڑی۔

وہی شخص بھی اس کی شکل کو دیکھتے ہیں اور تیراول میں سوچتا ہے گر کچھ سمجھ دیں نہیں تاکہ یہ کون ہے اور کیوں رو رہی ہے؟ آخر جب کچھ دریسی طرح گزری تو نسل کی ہاتھیں کر پار دلاسا دے ٹہری منشک سے اس کے پیٹ جسم سے علیحدہ کیا۔ یہ میں اس کے چہرے کو غور سے دیکھا اور کوئی پیچا نہ خود فرمہ ساہب بولتا۔

وہی شخص۔ (حیرانی سے ایں! اجنبی! تو کہاں؟)

اہا! کسی نے پچ کہا ہے ۵

उسے فجل کرتے نہیں لگتی بار نہ سہو اس سے مالوس امیدوار

ناظرین! ادیکھ ایشور کی قدرت کا اتفاقاً اجنبی کا ہاموں راج پر تی سوریا پنی عورت روی سندری کو ساختھے سیر کرنا ہوا ہیں آگیا ہے۔ پہنچا دیوی کو اس حالت میں دیکھ پہیاں ہیں سکا۔ سگر جب اس نے

لی بڑکی ہوگی! ایں! اس کا سیاہ لیباس کیوں ہے؟
وہی شخص۔ اسی بات کو تو میں سچ رہا ہوں۔ اگر ساڈھو کی لڈکی ہوتی تو ایسے سیاہ کپڑے سہرگز نہیں۔ اس میں ضرور کچھ بھی ہے۔
پکہ کر بوان کو درختوں کی آڑ میں زمین پر اوتارا اور خود اجنبی کے پاس جاکر بولتا۔

وہی شخص۔ دیوی! تو کون ہے۔ اور اس سنسان دیلان جنگل میں کیوں ہے؟

اجنبی دیوی جاپنے ہی خیال میں سمجھ کر سچھ سچھ سوچ رہی ہے اس ناچاری کی آڑ کو سختے ہی چوناک پڑی اور جلدی سے سراوٹھا اور پکی طرف دیکھا تو فوراً اس کے قلب سے لپٹ پھوٹ پھوٹ کر رونے لگ پڑی۔
وہی شخص بھی اس کی شکل کو دیکھتے ہیں اور تیراول میں سوچتا ہے گر کچھ سمجھ دیں نہیں تاکہ یہ کون ہے اور کیوں رو رہی ہے؟ آخر جب کچھ دریسی طرح گزری تو نسل کی ہاتھیں کر پار دلاسا دے ٹہری منشک سے اس کے پیٹ جسم سے علیحدہ کیا۔ یہ میں اس کے چہرے کو غور سے دیکھا اور کوئی پیچا نہ خود فرمہ ساہب بولتا۔

وہی شخص۔ (حیرانی سے ایں! اجنبی! تو کہاں؟)

اہا! کسی نے پچ کہا ہے ۵

اہا! کسی نے پچ کہا ہے ۵
ناظرین! ادیکھ ایشور کی قدرت کا اتفاقاً اجنبی کا ہاموں راج پر تی سوریا پنی عورت روی سندری کو ساختھے سیر کرنا ہوا ہیں آگیا ہے۔ پہنچا دیوی کو اس حالت میں دیکھ پہیاں ہیں سکا۔ سگر جب اس نے

پہچان کر یہ کہا کہ ”اب جنا تو کہاں“ آہ! اب تو اب جنا اور بھی بلند آواز سے روپری اور کچھ جواب نہ دیکی تو راجھ بھی آنسو بھر کر بولا۔

راجہ بیٹی سوریا بیٹی کیوں روہ و پریشان ہوتی ہے؟ اب کچھ فکر کر دو اور یہ بتلائ کہ اس جگہ تیر آنا کیوں کرو۔ اور یہ یہاں کچھ لے کیوں پہنچتے؟ اگر جو اب جنا کچھ کہنا چاہتی ہے مگر روکر حکمی بندھ جانے سے اس کی بات اچھی طرح سمجھیں ہمیں آتی۔ یہنکہ بہت مالا جو اب جنا کے روئے کی آواز سُنکر اگئی ہے دراچ کو اس کی درستانہ صیبت سُناری ہے۔ یہی!

بہت مالا کی زبان سے ایک حرف بخل کر راجہ کو متغیر بار بڑھے کبھی اب جنا کی طرف نظر اٹھا کر دیکھتا ہے اور کچھ بھرپور سمجھنا سے سُننے لگ جاتا ہے۔ اف بھس وقت بہت مالا نے یہ کہا کہ اس کی والدہ نے بھی پڑھلا دو ڈیکھ کی بات پر قیاس کر پڑھ اور جھوٹھ کا کچھ بھی فیصلہ نہ کیا اور اس کو شہر پرداز دیا۔ اس وقت راجہ کے بدن میں سُننا ہا ساری گی۔ چہرہ مارے عضو کے سرخ ہو ہستہ گیا۔ زیادہ سُننے کی تباہ نہ لایا اور اب جنا کو لگے سے لکھا کر بولا۔

راجہ بآجنا! اب کچھ فکر کر۔ گذشتہ کے لئے تو میں کچھ کہہ نہیں سکتا لیکن آئندہ کوئی بھی تھماری طرف نظر اٹھا کر نہیں دیکھ سکتا۔

یہ کہا۔ اب جنا اور بہت مالا کو ساتھے رانی روی سُندری کے پاس آیا اور اس کو اس کی صیبت کے حال سے آگاہ کر بوان میں بیٹھ دیا۔

آتا بوان کو دیکھنے کشتنی ناشکل کا ہے۔ یہ طرف کا کوشل کا سامان ہے و دسری طرف ایک قسم کا سائبان تسلیہ جس کے چاروں طرف سنہری کا مام اس خوبی سے کیا ہوا ہے کہ اتنا بکی روشنی میں اس کی طرف دیکھنا ٹھوڑا

راجنا! اب جنا کو دیکھنے کا ہے اور جنا کو ساتھے رانی روی سُندری کے پاس آیا اور اس کو اس کی صیبت کے حال سے آگاہ کر بوان میں بیٹھ دیا۔

آتا بوان کو دیکھنے کشتنی ناشکل کا ہے۔ یہ طرف کا کوشل کا سامان ہے و دسری طرف ایک قسم کا سائبان تسلیہ جس کے چاروں طرف سنہری کا مام اس خوبی سے کیا ہوا ہے کہ اتنا بکی روشنی میں اس کی طرف دیکھنا ٹھوڑا

راجنا! بوان کو دیکھنے کا ہے اور جنا کو ساتھے رانی روی سُندری کے پاس آیا اور اس کو اس کی صیبت کے حال سے آگاہ کر بوان میں بیٹھ دیا۔

آتا بوان کو دیکھنے کشتنی ناشکل کا ہے۔ یہ طرف کا کوشل کا سامان ہے و دسری طرف ایک قسم کا سائبان تسلیہ جس کے چاروں طرف سنہری کا مام اس خوبی سے کیا ہوا ہے کہ اتنا بکی روشنی میں اس کی طرف دیکھنا ٹھوڑا

پیچان کریے کہا کہ ”اب جنا تو کہاں“ آہ! اب تو اب جنا اور بھی بلند آواز سے روپری اور

راجہ بیٹی سوریا بیٹی کیوں روہ و پریشان ہوتی ہے؟ اب کچھ فکر کر دو اور یہ بتلائ کہ اس جگہ تیر آنا کیوں کرو۔ اور یہ یہاں کچھ لے کیوں پہنچتے؟ اگر جو اب جنا کچھ کہنا چاہتی ہے مگر روکر حکمی بندھ جانے سے اس کی بات اچھی طرح سمجھیں ہمیں آتی۔ یہنکہ بہت مالا جو اب جنا کے روئے کی آواز سُنکر اگئی ہے دراچ کو اس کی درستانہ صیبت سُناری ہے۔ یہی!

بہت مالا کی زبان سے ایک حرف بخل کر راجہ کو متغیر بار بڑھے کبھی اب جنا کی طرف نظر اٹھا کر دیکھتا ہے اور کچھ بھرپور سمجھنا سے سُننے لگ جاتا ہے۔ اف بھس وقت بہت مالا نے یہ کہا کہ اس کی والدہ نے بھی پڑھلا دو ڈیکھ کی بات پر قیاس کر پڑھ اور جھوٹھ کا کچھ بھی فیصلہ نہ کیا اور اس کو شہر پرداز دیا۔ اس وقت راجہ کے بدن میں سُننا ہا ساری گی۔ چہرہ مارے عضو کے سرخ ہو ہستہ گیا۔ زیادہ سُننے کی تباہ نہ لایا اور اب جنا کو لگے سے لکھا کر بولا۔

راجہ بآجنا! اب کچھ فکر کر۔ گذشتہ کے لئے تو میں کچھ کہہ نہیں سکتا لیکن آئندہ کوئی بھی تھماری طرف نظر اٹھا کر نہیں دیکھ سکتا۔

یہ کہا۔ اب جنا اور بہت مالا کو ساتھے رانی روی سُندری کے پاس آیا اور اس کو اس کی صیبت کے حال سے آگاہ کر بوان میں بیٹھ دیا۔

آتا بوان کو دیکھنے کشتنی ناشکل کا ہے۔ یہ طرف کا کوشل کا سامان ہے و دسری طرف ایک قسم کا سائبان تسلیہ جس کے چاروں طرف سنہری کا مام اس خوبی سے کیا ہوا ہے کہ اتنا بکی روشنی میں اس کی طرف دیکھنا ٹھوڑا

है। इस पर कारीगर ने मोतियों की झालर बना और उसमे थोड़े थोड़े फासले पर एक एक सोने का मसनोइ (बनावटी) मोती गेंद के बराबर इस हिकमत (कौशल) से लगाया हुआ है कि जैसे इसकी रफतार तेज होती जाती है वैसे इनकी चमक दमक ज्यादा खुशनमा मालूम होती है।

ज्योंही अज्जना देवी के लडके की नजर इन चमकदार मसनोइ मोतियों पर पड़ी बेइखितयार गोदसे उछला, और उनको पकड़ना चाहा। मगर कामयाब नहीं हुआ और जमीन पर गिर पड़ा। आह! लडके को गिरता देख सब चिल्ला उठे। अगरचा उसी दम बवान को को रोका गया ताहम फासला बहुत हो गया। इसलिये बवान को पीछे लौटा जमीन पर उतारा। राजा तो लडके की तलाश में चला गया और ये तीनों बदहवास हो उस तरफ को देख रही हैं जिस तरफ वो गया है। और बुरे बुरे ख्याल पैदा हो इनके मायूस दिल की चुटकियाँ ले प्रेशान कर रहे हैं कि इतने में राजा लडके को लेकर वापिस आया और बोला।

राजा “अज्जना! तेरे लड़के का जिस्म तो वज्र, की मानिद (जैसा) सख्त है। कि इतनी दूर से गिरा और गिरा भी पत्थर की चट्टान पर लेकिन शुक्र है कि जब मैं गया तो ये बैठा अंगूठा चूस रहा था। और मुझको देखते ही दोनों हाथ पसार रोने लग पड़ा।”
राजा की बातें सुन और लड़के को देख सबकी जान मे जान आई। और रानी रविसुन्दरी ने

१ ये जो एक आम बात मशहूर है कि हनुमान ने पैदा होते ही आफ्ताब को उछल कर पकड़ा और मुँह में छुपा लिया बरेख्याल कि ये एक सिर्फ फल खाने का है। नाजरीन! हकीकत में न तो कोई फल था और न ही सूरज था। बल्कि इस बवान के चमकदार तर्लाई मसनोइ मोती थे जबकि मुसनिफों ने आफ्ताब से तशबीह दी थी। और बाद में सिकाकारों ने इस मुगाल्ते को फोत कर आफ्ताब ही बना लिया। देखो अञ्जना मतबनो रास सफा ३४

२ जिसका जिस्म मतफिर की मानिंद अजब हो

سے اس پر کا بیکرنے موتویوں کی حصارنا اور اس میں تھوڑے تھوڑے فاصلہ پر یا کسی ایک صورت کا مصنوعی موتوی گیند کے برابر اس حکمت سے لگایا جو ہے کہ جیسے اس کی رفتار زیاد ہوتی جاتی ہے ویسے ان کی چک وک زیادہ خوشنا معلوم ہو جائے۔

یونہی انجمنا دیلوی کے رہنے کی نظر ان چکدار صنعتی موتیوں پر پڑی ہے
اختیار گود سے اوچھلا اور ان کو کہنا جاتا ہے مگر کامیاب نہیں ہوا۔ اصریح ہے زمین پر

اہ بڑکے کو گتا دیکھ سب چلا شے اگر جاؤ سی دم بوان کو ردا کیا مام فاصلہ
بہت ہو گیا۔ اس سئے بوان کو پچھے نہمازیں پڑا تو ما را۔ راج تورڑکے کی تلاش
میں چلا گیا اور یہ نیوں بڑھاں ہو اس طرف کو دیکھ رہی میں جس طرف وہ گیا
ہے اور جس سے بُرے خیال بیدا بوان کے مایوس دل کی چکیاں لے پڑان
گر ہے میں کاتھے میں راج تورڑکے کوئے کرو دا میں آیا اور لو لا۔

راجہ۔ انجنا اپرے اٹکے کا جسم تو جو کی مانند سخت ہے کہ اتنی دور سے
گرا او گرامی پھر کی چنان پر لیکن نشکر ہے کہ جب میں گیا تو یہ بیجا انگوٹھا ہے
رائے کا دوچیکو ویکھتے ہی دونوں ہاتھ پسار دنے لگ بڑا! راجہ کی بیٹی میں دو
ٹوکرے کو دیکھ سب کی جان آئی اور انی روئی سندھی نے
لے یہ جو ایک حاصل پات شہرو ہے کہ ہنسوان نے پیدا ہوتے ہی آفتاب کو ادھل کر
لے یہ اور تھوڑے حصال پاتر بخدا گردک سرخ صد کے مانند ہے۔

ناظرين! احقيقته میں نوکریاں تھے اور تھی سوچ تھا بلکہ اسی بوان کے حکم لارٹل ایڈیشنز
مولیٰ تھے جو کوئی منفرد نہ تھے۔ شبیہہ میں تھی اور بعد میں یہ کتابوں میں اصل طرز کے فرم
کر افخای بھی بنالیا گواہ کیجھو ابھی استنسنی طبع صفوی (۲۰۰) نے جام جام سیرکل میں دعست ہے۔

जल्दी से लड़के को राजा से लेकर छाती से लगाया और पेशानी पर बोसा (चुम्बन) देकर कहने लगी बेटा बजरंगी **क्यान** की सैर की। तब से उसको सब कोई बजरंगी कहने लग पड़ा। और **बवान** वहाँ से आगे को खाना हुआ।

नाजरीन! अज्जना देवी तो अपने मामू के साथ हनुपुर को जा रही है और पवन बेचारा मालूम नहीं कहाँ भटक रहा है। आओ जरा इसका भी तो पता लों।

बाब (अध्याय) चौदहवाँ

ऐं दम भर में इसको क्या हो गया

राजा महेन्द्र राय के महल में अभी एक शख्स नफीस पोशाक पहने छड़ी हाथ में लिए चौकी पर आनकर बैठा है और रानी बेगमोहिनी उसकी पेशानी को बोसा दे सामने खड़ी खैरो आफियत पूछ रही है। लेकिन उसकी झुकी हुई गर्दन, दबी हुई नजर और इस **नोदरो** को देखकर आह सर्द भरना बतला रहा है कि इस शख्स के आनेसे उसके दिलको सख्त सदमा पहुंचा है। और बेशक यही दुरुस्त मालूम होता है। देखिए! कैसे आहिस्ता आहिस्ता कदम रखती हुई अब अपने कमरे को जा रही है। और दिल में ये ख्याल पैदा हो उसको और भी जाने पर मजबूर कर रहे हैं। आह! जब वो अज्जना का हाल दरयापत करेगा तो क्या बताऊँगी।

उफ! उसने तो मुझको कहीं का न रखा। अगर मर जाती तो अच्छा होता। आज इसके (पवन) सामने **सरनगूँ** तो न होना पड़ता। ऐ जमीन तू फट जा कि मैं तुझमें समा जाऊँ ताकि अज्जना का जिक्र सुनने की नौबत न पहुँचे।

नाजरीन! ये तो इस तरह दिल में कहती हुई पलंग पर जाकर लेट गई है। मगर वो **नोदरो** शख्स, जो गालिबन पवन ही है अज्जना की तलाश करता करता यहा आ गया है, रानी की ये हरकत देख निहायत हैरान हो गया और अब बड़ी मायूसी से इधर उधर देख रहा है लेकिन

جلدی से रुके को राजे से लिकर जाती से लगाया। और पीछे न प्रवासे दिक्कत कर्ने की बिज्ञानी कीन की सीरीकी तब से "स कूब कूनी बिज्ञानी कर्ने लग प्राव ब्रावन व बास से आगे को रवान होवा-

नاظरिन! आज्ञा दिलो तो वापें नामों के साथ नेवो लोर को जारी है। और लोन बिज्ञान लालूम नीन कीन ब्रावन भजक राहे हैं। और वास काम्ही तो पीर-

بَابِ چوہ صھوٰل

"ایں دم بھر من اس کوکیا مولیا"

راجہ مہندر رائے के محل میں بھی ایک شخص نفیس بوتاک پہنے چھڑی اتھ میں نئے چوکی پر انکر بیٹھا ہے اور رانی بیگ مونہنی اس کی پیشانی کو بوسہ سے ساہنے کھڑی خیر عافیت پوچھ رہی ہے۔ لیکن اس کی بھنکی ہوئی گونڈلی مہولی نظر اور اس نو دارہ کو دیکھ لادہ سرو بھرتا بیٹلا رہا ہے کہ اس شخص کے آپسے سے دیکھو سخت صدمہ پوچھا ہے اور بیٹک یہی درست معلوم ہوتا ہے اور بھنے کیسے اہستہ اہستہ تدمر کھنچی بھولی اب اپنے کمرے کو جاری ہے۔ اور دل میں یہ حیال پیدا ہوا اس کو اور بھی جانے پر مجبور کر رہے ہیں۔ آہ! جب وہ انجمنا کا اعلیٰ دریافت کر یا تو کیا بتاؤں گی۔ اوف! اس نے تو بھنکیں کا ذرکر۔ اگر جاتی تو اچھا ہوتا۔ کچ جس کے (لپन) اس پہنچے سرگوں تو نہ ہونا پڑتا! اے! زمین تو بچٹ جا کر میں تجھ میں سما جاؤں تاکہ اسخنا کا ذرکر سُنکل فہت پوچھی ناظرین یقتوں ملچ دل میں کہتی ہوئی پنگ پر جا کر دیٹ گئی ہے مگر وہ نو دار و شخص جو غائب لپون ہی ہے۔ اسخنا کی تلاش کر تاکہ تیہاں الیا ہے۔ رانی کی یہ حرکت دیکھہ نہایت حیران ہو گیا اور اب بڑی بایوسی سے ادھر ادھر دیکھ رہا ہے۔ لیکن

अज्जना को न पाकर उसका बेकरार दिल और भी बेचैन होता जाता है। इस **अमर** मे हर चंद गौर करता है कि क्या मामला है जो वो (अज्जना) दिखाई नहीं देती। मगर मुकद्दर के लिखे की तरह जब कुछ समझ मे न आया तो घबराकर वहाँ से उठना चाहा कि इतने मे प्रसन्न कीर्ति का लड़का सामने आता हुआ नजर पड़ा। जल्दी से पकड गोद मे बैठा लिया और पछने लगा।

पवन “बेटा! तेरी पहवा कहा है?”

लड़का मधूसाना लहजे मे ‘ऐं पहुवा! सुना है वो तो रोती हुई यहाँ से पशुमखा बन को चली गई थी। यहाँ तो सिर्फ थोड़ी देर खड़ी रोती रही। बाद मे दादी ने गुस्सा होकर बाहर निकाल दिया था।’ आह! इस बात को सुनते ही पवन का रंग फक हो गया, दिली आरजुएँ नाउमीदी मे बदल गई। पशुमखा के नाम ने उसके हर एक अजा को उसके दिल की तरह बेकार कर दिया। अब ये कहे तो क्या कहे, करे तो क्या करे। बहुतेरा दिल को सम्भाला है मगर वो किसी तरह सम्भलता ही नहीं और खुद रफ्ता हो आलमे सकूत मे उस चौकी पर बेहोशोहरकत होकर देखता का देखता रह जाता है।

जब कुछ देर इस तरह गुजरी तो फिर दिमाग में खराश सी पैदा हुई जिसने बिजली की तरह इसकी रग रग मे हरकत दे मुहर खामोशी तो तोड जबान को **वाक्या** “आह! मुझसे कैसी गलती हुई। मेरे ही बाइश उस प्राणप्यारी पर गम का पहाड टूट पड़ा।” अञ्जना के वालदैन की तरफ इशारा कर ‘तुम्ही कुछ सोचते। उसके हाल पर रहम करते तुम्हारा तो लखते जिगर थी। मगर तुम सब से ज्यादा बेरहम और बेमुख्त निकले जो उसकी इस हालत पर भी कुछ ख्याल न किया। उफ! कैसा खून सफेद हो गया। रहम तो दुनिया से जाता ही रहा।” कुछ सकूत के बाद “प्यारी अञ्जना! तू किन मुसीबतों में फस गई।

اجنہا کو نہ پا کر اُس کا بے قرار دل اور بھی بے چین ہوتا جاتا ہے۔ اس امر میں ہر جنہی غور کرتا ہے کہ ما سحالہ کے چونہ وجہہ راجنا ادھاری نہیں ویتی۔ مگر قدر کے لکھنے کی طرح جب کچھ سمجھ دیں نہ آیا تو گھبر کر دہاں سے اٹھا چاہا اڑتھے میں پرسمن کیرتی کا لڑکا سلبستے آتا ہوا نظر پر عبلدی سے پکڑ گوئیں جھا ل اور لو جھنے لگا۔

پون-بیسا! تیری پہا اکھاں ہے۔
لڑکا- رایوسان لہجیں) ایں اپہوا اسنا سے دہ تو ردی ہوئی یہاں سے
پشوکھابن کو حلی گئی تھی۔ یہاں تو صرف تھوڑی دیر کھڑی کھڑی رہی جب
میں دادی نے غصہ مورکا سر نکالا وہ پاتھا۔

اہ اس بات کو سنتے ہی ہون کارانگ فق ہو گیا۔ ولی آرزو میں نامیدی میں
بدل گئیں۔ پشو گھاکے نامنے اُس کے ہمراکب اعضا کو اُس کے دل کی طرح
بیکار کر دیا۔ اب یہ کہ تو کیا کہتے۔ کہ تو کیا کرے۔ تھیر اول کی سنبھالتا ہے مگر
وہ کسی طرح سنبھلتا ہی نہیں اور خود رفتہ رفتہ عالم سکوت میں اس جو کی پڑھیں
درست ہو کر دیکھتا کا دیکھتا روح تھا تھے۔

بیب کچھ دیر س طح گزدی تو پھر دماغ میں خراشی پیدا ہوئی جس نے بھلی
طح اس کی رک گئی کت و میں فرمادی کو توڑ بان کو دیا ایا ایا آہ اجھتے
غلطی ہعلیا! میر سے ہی باعث اس برلن بیماری پر عزم کا پہاڑ لوت پڑا۔
جن کے والدین کی طرف اشارہ کر تھی کچھ سوچتے۔ اس کے حال پر حکمران
خالتو نے جگر تھی سکرتمب سے زیادہ بے رحم اور بے مردست نکلے جو اسی
حال پر بھی کچھ خیال نہ کیا اس اوف اکیسا خون سفید ہو گیں ررحم تو دنیا سے
باتا ہی رہا کچھ سکوت کے بعد بیماری ابختنا! لون صیبوں میں بھنس گئی

जिन पर तेरी उम्मीदें नाज करती थी वही तेरे दुश्मन हो गए। तो गमखवार कौन होता? उफ! तेरे नन्हे से दिल ने ऐसी बेहुमती की बातें क्योंकर बर्दाशत की होगी? तू ऐसी जेहोशजी इल्म धर्म में मुस्तैद, हुस्ने सूरत और हुस्ने सीरत दोनों में **यक्या** मगर अफसोस तेरी किस्मत ने इन सबको खाक में मिला दिया।” पवन की बाते सुनकर एक खवास ने रानी से जाकर कहा

खवास “माताजी! आप किसी फिक्र में पड़ी हैं? किसी बात को सोच रही हैं? जरा बाहर निकलकर पवनजी की बातें तो सुनिए। क्या कह रहे हैं?”

रानी अफसोस के लहजे “वही अञ्जना की शिकायत करते होंगे।”

खवास “जी नहीं! वो तो सरासर झूठ और गलत करार देते हैं। और अञ्जना को बेकसूर और आप पर बेरहमी का इल्जाम लगाते हैं।”

रानी सर्द आह भरकर “आह! ऐसी किस्मत कहाँ।”

खवास “जरा चलकर तो सुनिए।”

रानी जल्दी से उठकर दालान की तरफ आई। ज्यूँही पवन की आवाज कान में पहुँची वही खड़ी हो गई। जब वो कह चुका तब आगे बढ़कर बोली।

रानी “आह! मैंने तो तेरे बाप कि तहरीर पर अमल किया। उसको सच जान अपने लाख्ते जिगर को शहरे बदर किया। क्या ये झूठ है?”

पवन “और क्या! बिल्कुल झूठा **इतहाम** सरासर गलत। ईश्वर जाने तुम सबकी अकल पर क्यों पर्दा पड़ गया कि किसी ने भी इस बात को तहकीक नहीं किया। और ज्यादातर गजब ये किया कि जो किसी पर नहीं वो जुल्म बेचारी अञ्जना पर किया गया। उफ! तुमने भी अपनी बेटी की बेजजती ही चाही। भला कुछ तो सोचा होता।” मालूम नहीं इन बातों में क्या जादू भरा हुआ है इन को सुनते ही रानी धम से

جن پر تیری اسیدین ناز کرنی تھیں وہی تیرے دشمن ہو گئے۔ تو غم خاکون توبا،
اوہ با تیرے نخنے سے دل نے الی بے حرمتی کی باتیں کیونکر برداشت کی ہنگی
توالیسی ذیہوت ذی علم و حرم میں مستعد حسن صورت او حسن سیرت دونوں
میں بیتا۔ مگر افسوس تیری قسمت نے ان سب کو خاک میں ملا دیا۔ پون
کی باتیں سُنکاریک خواص نے رانی سے جاگر کیا۔

خواص - رانی - تاجی! آپ کس ذکر میں پڑی ہیں کس بات کو سوچ رہی ہیں۔

فراباہر تکلار پون جی کی باتیں تو سنتے کیا کہہ ہے ہیں۔

رانی - رافضت کے لیجہ ادھی انجنا کی شکایت کرتے ہونگے۔

خواص - جی نہیں! وہ تو سارے جھوٹھوڑے اور غلط قرار دیتے ہیں اور انجنا
کو بے قصوراً دے آپ پر بھر جھی کا الزام لگاتے ہیں۔

رانی - رسد آہ بھر کر آہ! ایسی قسمت کہاں!!

خواص - فرماں کر تو سنتے ہیں؟

رانی جلدی سے اٹھکر دالان کی طرف آئی پونی پون کی آواز کان میں پونچی
وہیں کھڑی ہو گئی سبب وہ کہہ بجا تب آگے بڑھ رہی۔

رانی - آہ! میں نے تو تیرے باب کی خیری عقل کیا۔ اُسی کو سچ جان اپنے
لخت جگر کو شہر پر کیا! اکیادہ بات جھوٹھوڑے سے؟

پون - اور کیا! بالکل جھوٹھا اہم سارے غلط! ایشوش جنم بکی عقل پر کیوں پڑو
پڑ کیا کہ کسی نے بھی اس بات کو تحقیق نہیں کیا۔ اور سریادہ تعزب پر گیا کہ جو
کسی پر نہیں دہ ظلم بجا ری انجنا پر کیا گیا۔

اوہ! تھم نے بھی انجنا پر کیے عزیزی ہی جاہی! بھلا کچھ تو سوچا ہوتا۔

حالم نہیں ان بالوں میں کیا جادو بھرا ہوا ہے کہ ان کو سنتے ہی رانی دھم میں

जमीन पर गिर पड़ी है। चेहरे का रंग फक हो गया, मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगी, हाथ पाँव सर्द हो गए, दांतों के जबडे मिल गए हैं और दम रुक रुक कर आ रहा है। रानी की ये हालत होने से महल में कोहराम मच गया। कोई राजा के पास भागा जाता है और कोई वैध (डाक्टर) के चूँकि पवन की चरक शास्त्र से कुछ वाक्फियत थी इसलिए रानी के दिल की हरकत को महसूस कर नब्ज की रफ्तार पर गौर किया, तो सकते की मर्ज का हमपल्ला पाया। फौरन **जायफल जल्दतरी** हाथ पाँव में मला, **तानेशर** खिला, **लखलखा** सूंधाया। जिससे रानी को होश आई और हाय अञ्जना! कहकर फिर खामोश हो गई।

एक तरफ राजा बैठा हुआ इसकी हालत को देखकर अफसोस कर रहा है। दूसरी तरफ प्रसन्न कीर्ति आंसू बहा रहा है। और तमाम कुनबा बेचैन हो कह रहा है “ऐं दम भर में इसको क्या हो गया?”

नाजरीन! बहुत देर तक रानी की यही हालत रही। कभी तो होश आ जाती और कभी वही पहली सूरत। आखिर बड़ी कोशिश और तरहदूर के बाद रानी को कुली सेहत हुई तो उठकर बैठ गई और जारोजार दिल खोल कर रोझी गम का गुब्बार जो मगज को छढ़ गया था हलका हआ तो कहने लगी।

रानी “मैंने बेगुनाह अञ्जना के हाल पर कुछ भी ख्याल न किया और न ही उसकी मुसीबत को देखकर मेरे सख्त सीने से एक आह ही निकली, और न ही आँखो से आंसू टपका। उफ! कोई वालदा ऐसी न होगी जैसी कि मैं कमबख्त! जिसने भूखी प्यासी देखकर भी पानी तक न पूछा। आह! मेरा भला कहाँ होगा। **आकबत** (मरने के बाद) मैं क्या जवाब दँगी”

१ इल्म तबीयत की किताब

زیں پر گرد پہنچے۔ چہرے کا ننگ فتنہ ہو گیا۔ صفحہ پر ہوا ایساں اور نئے لگیں۔ ٹھنڈا پاؤں سر دہونگے مدناتوں کے جیڑاں سے مل گئے ہیں۔ اور دھڑک دھڑک کر آ رہے ہیں۔

رانی کی یہ حالت ہونتے محل ہیں کہ امام جوگلیا کوئی راجح کے پاس بجا کا جانا
ہے اور کوئی وید دو اکٹھ کے چونکہ پون کو چرکٹ شاسترست کچھ داقفیت تھی اس لئے رانی کے دل کی
حرکت کو موسمن کریبن کی فشار پر غور کیا تو سکتے کی مرض کا ہم بل بیار فوراً اعلان
جلوتی ناقد باؤں میں ملا تینی شکل انخلو سوگھا یا جس سے رانی کو ہوش آئی
اور ناکے 11 سجنہ اکٹھ کر پھر فاموش ہو گئی۔

ایک طرف راجب بیٹھا ہوا اس کی حالت کو دیکھ کر افسوس کرتا ہے۔ دوسری طرف پر سن کیتی آنسو سارا ہے اور تمام گنہے بے صین ہو کر ہر را ہے۔ اسی دھرم بھروس اس کو کسائیوں کا ۴

ناظرین ایست دیر تک رانی کی بی حالت رسی - کجھی توہش آجائی - سلوک کجھی
و بی سلی صورت با اخڑپی کو شش اور تر و کے بعد رانی کو کچھ محنت ہوئی
تو اچھل میچھگی اور زار زار دل کھول کر رونی - غم کا غبار جو مخز کو خدھگیا تھا
بلا کجاوا اونکھے لگا۔

رائی میں نے بے گناہ اجنبی کے عال پر کچھ بھی خیال نہ کیا اور رہنی اسکی
میہمت کو دیکھ کر میرے سخت سعینہ سے ایک آہ ہی تکلی اور رہنی کھل
سے آٹو پکسا اوف اکوئی والدہ الیسی نہ مل گئی جیسے کہ میں کسی سخت بحث
بچوں کی سیاسی دیکھ کر بھی باقی تکمیل نہ چھا اور امیر بھلا کہاں بیوگہ عاقبت
میں کیا جواب دے دیں گے۔

ये कहा और फिर रोना शुरू कर दिया। तब राजा ने कहा।

राजा “प्रियजी! इस कदर घबराने से तो कुछ हासिल नहीं होगा। वक्त जो गुजर गया उसका फिक्र करना बेफायदा है। इन्सान का फिक्र और लकड़ी का घुन बराबर है। इसको छोड़ो और ईश्वर पर यकीन रखो। वही हर हाल में सब का निगहबान (रक्षक) है। हाँ आइन्दा की फिक्र करो कि अब क्या करना चाहिए!”

गनी सर्द आह भरकर बोली।

अज्जना दीनी तराह काम मैं खोटा कीना जगा न की विचार मुफ्त मे असचबस कीना
करें मुझको दुतकार नगर के सारे वासी क्या रंक क्या राय करे सब मुझको हांसी
सुनी विद्याधर की बात न माना तेरा कहना हाय मेरी राजदुलारी पड़ा दुख तुझको
सहना

मेरा हर वो भया खड़ू सोच न मैंने कीनी
अब क्या करूँ उपाय बात मैं आप बिगाड़ी
न सुने अज्जना बैन न कुछ निश्चय कीना
हाय जाए पेट मेरा फूट जब से तेरी उए
हाय पाली दुख उठा बहुत मैं लाड लड़ाए
गई जंगल सिधार आह वो मेरी प्यारी
हूँ ऐसी निर्लज प्राण न मेरे छूटे
धरण ज्यूँ संसार बात ये सुनने जानी

बाब (अध्याय) पंदहरवा

हाय वो कहाँ गई

नाजरीन! रानी की बातें सुन और उसकी ये हालत देखकर पवनजी आँखों के

= کہا اور بھر رونا شروع کر دیا۔ تسبیح جسے کہا۔

راجہ پریس جی اس قدر گھبرا نے سے تو کچھ حاصل نہیں ہو گا۔ وقت جو
گذر گیا اس کا نکر کرنا بے فائدہ ہے۔ انسان کا نکر اور لکڑی کا حصہ سب اس
ہے اس کو چھوڑو۔ اور ایشور پریقین رکھو۔ وہی حال میں سب کا ہمیان
ہے۔ مگر آئندہ کی نکر کو اب کیا کرنا چاہیے؟

رائی آہ سرد بھر کر بولی ۵

انجنا دینی تراہ کام میں کھوٹا کینا
کریں ملکو دھنکار نگر کے سارے باسی
سنی وریا و حرکی بات نہ اتیر کہنا
سیرا رہ بھیا کھنور پوچ نہیں نئے کینی
اب کیا کروں اوپا و مات میں آپ بھاڑی
نئے انجنا سین زکچو تشوچہ کینا
ہے جائے پت میرھوٹ جبست تری او
ٹکے یالی و کھاٹھا بست میں لاد لے اے
کی جنگل سدھاراہ وہ میری پاری
ہوں الی زنجی پران نہیں سچھتے
دیکھ شیئی کی ہست نہیں نہیں سچھتے
پوئے داس بے صن گری و معقی پرانی

پاپ یند رحمواں

ہے وہ کہاں گئی

تاظرین رانی کی باتیں سُن اور اس کی یہ حالت دیکھ لیون جسی کی انگھوں کے

आगे वही फोटो ख्वाब का फिर गया जिस को देखकर ये पहले रोज लंका में प्रेशान हुआ था **खुदरफता** सा हो खड़ा हो गया और मंत्री को साथ ले महेन्द्रपुर से निकल उस रास्ते को इखितयार किया है जो बड़ के दरखत के नीचे से होकर पशुमखा वन को जा रहा है। अगरचा दिल मे कई तरह के ख्याल पैदा हो उसकी मायूसी को बढ़ा रहे हैं। मगर जब अञ्जना की भोली भाली सूरत उसको याद आ जाती है तो निहायत बेकरार हो दिल मे कहने लग जाता है। “अञ्जना! तेरी तमाम तकलीफों का **बाइश** मैं ही कमबख्त हुआ। पहले बारह (१२) साल उस तरह गुजरे। और अब तेरी बात को न माना और अंगूठी दे टालकर चला गया तो ये नौबत पहुँची।” खुदही “वालदा ने भी तो गजब ही कर दिया। मालूम नहीं उसकी अकल पर क्या पर्दा पड़ गया जो कुछ भी ख्याल न किया। उफ! अञ्जना! तेरे दिल मे उस वक्त क्या गुजरी होगी जब तुझको कहा गया होगा। आह! तेरे नाजुक दिल ने इन बातों को क्योंकर बर्दाश्त किया होगा।” थोड़े से सकूत के बाद “वाहरी किस्मत किस किस पर अफसोस करूँ। देखिए जिसका लख्ते जिगर थी उसने भी तो कुछ ख्याल न किया बल्कि पानी तक न पूछा। आह! वो किस उम्मीद से यहाँ आई होगी और कैसी मायूसी से पशुमखा वन को” खुद ही “ऐ पशुमखा वन! वहाँ तो बेशुमार खुंखार दरिंदे फिरते होंगे वो क्या करती होगी। वहाँ तो कोई पनाह की जगह भी नहीं।”

आह! इस ख्याल के आते ही पवन निहायत बदहवास हो घोडे को रोक सोचने लग पडा तब मंत्री ने कहा

मंत्री “इस मे कोई शक नहीं कि आप के दिल को सख्त सदमा पहुँचा है। मगर अब गुजिश्ता बातों को याद करने से सिवाए रंज के कुछ हासिल न होगा। महराज! तकदीर बड़ी जबरदस्त है। उसके आगे किसी का चारा नहीं चलता।

اگے ہی فوٹو خواب کا یقین گیا جس کو دیکھ کر پہلے روز لینے کا میں پر نہ
ہوا تھا۔ خود رفتہ سامنے مل گئی۔ اور مستری کو ساتھ رہنے والوں سے
مکمل اُس رہستہ کو اپنی دل کیا تھا جوڑ کے دخت کے نجی سے ہو کر شوک مکھا
بُن کو جاری ہے۔ اگرچہ دل میں کئی طرح کے خیال پیدا ہو اُس کی بلوسوی کو بڑھا
رسے ہے۔ مگر جب اپننا کی بھولی بھالی صورت اُس کو یاد آجائی ہے توہینیات
بُن کر رہو دل میں ہنسنے لگ جاتا ہے۔ اپننا اپنی تاہم تکلیفوں کا باعث میں
ہی لجھت ہوا پہلے بادشاہ سال اُس طرح گزرے۔ اور اب تیری بات کو نہنا
اور انگوٹھی سے ٹال کر چلا گیا تو یہ نوبت پُنجی (خودی) والدھنے بھی غصب
ہی کر دیا۔ اصلاح نہیں اُس کی عقل پر کیا پڑھ پڑ گی جو کچھ بھی خیال نہ کیا اوف!
اپننا اپنے دل میں اُس وقت کیا گذسی ہمیں ہے جب جگو..... کہا
گیا ہو گا۔ آہ! اپنے نارک دل نے ان بالوں کو گیو نکر برداشت کی ہو گا۔ (توہن)
سے سکوت کے بعد وادھی قسمت اسکس کس پر افسوس کروں۔ دیکھئے جس کا
لخت جگر تھی اُس نے بھی تو کچھ خیال نہ کی۔ بلکہ پانی تک نہ پوچھا۔ آہ! دس کس
اسمیدے سے یہاں آئی ہو گئی اور کیسی بلوسوی سے پتوں مکھا بن کو رخودی! ایں اپنے
مکھا بن! ایو! تو بینا رخونخوار درندے سے پھرتے ہوں گے۔ دو کیا کرنے ہوں!
اے! تو کوئی پناہ کی جگہ بھی نہیں!

آہاں خیال کے آتے ہی پوچھنا ہمایت بدھواں ہو گھوڑے کو روک
سوچنے لگ پڑا۔ منتری نے کہا۔
منتری۔ اس میں کوئی شک نہیں کہا۔ پس کے دل کو ختم صد مروپی چاہے
مگر اب گذشتہ بالوں کو یاد کرنے سے سوائے رنج کے کچھ ماحصل نہ ہو گا۔
جہاراج! اقدیر بڑی نزدیک است ہے اس کے آنے کسی کا چارہ نہیں چلتا

उस बेचारी की किस्मत में तो यही लिखा था। किसी का कुछ कसूर नहीं। आप खुद दाना हैं। इन बातों को अच्छी तरह जानते हैं। मेरे कहने की जरूरत नहीं।”

पवन “मंत्री मैं सब कुछ जानता हूँ अच्छी तरह समझता हूँ अपने न सम्भलने वाले दिल को बहुतेरा सम्भालता हूँ मगर जब उसकी वो शक्ति जो ख्वाब में देखी थी और पशुमखा वन का जाना याद आता है तो सर आसमान की तरह चक्कर खा जाता है। और बेझिल्यार हो जाता हूँ सच कहता हूँ मैं अब वो पवन नहीं रहा। रंजोगम का मुकाबला है। न खाने से रखबत न पानी की प्यास है। रात को नीद नहीं आती।

माहिबेआब की तरह तडपता रहता हूँ। अगर कुछ ख्याल है तो ये कि वो बेगुनाह कैसी मुसीबत में पड़ गई। पशुमखा वन जैसे सुनसान वीरान जंगल में क्योंकर रहती होगी? वहाँ तो एक रोज रहना दुश्वार है। उसको तो साल भर के करीब हो गया। अब उसको कहाँ देखूँगा।” खुद ही “अच्छा अगर मिल गई तो बेहतरा वरना पवन भी जिन्दा न रहेगा। इसी जगह भटकता मर जाएगा।”

मंत्री “क्यों इस कदर घबराते हो? सब्र और इस्तकलाल से काम लो। अगर उसकी हयात (जिन्दगी) है तो कोई उसको नुकसान नहीं पहुँचा सकता। हाँ तकलीफ जरूर है।” इस तरह की बातें करते करते पशुमखा वन पहुँच गए जिसको देखते ही बदन में सनसनाहट सी हो गई। कई तरह के ख्याल पैदा हो बिच्छू की तरह डंक मारने लगे। और शाहे मशारिक भी मगरिब में जा छुपा और रात की **तारिकी** और भी सितम करने लगी। तो एक दरखत के साए में घोड़ों का बाग डोरों से बांध दिया। और खुद कुदरती सब्ज मखमली फर्श पर जमीन का तकिया बना लेट गए। नींद तो कोसो दूर है। हाँ करवटे लेते और सर्द आहे भरते रात गुजर गई। सुबह होते ही पवन **रफाए हाजत** के लिए मंत्री से कहकर चल पड़ा।

اُس بیماری کی قسمت میں یونہی لکھا تھا۔ کسی کا کچھ مقصود نہیں۔ آپ خود وہنا
میں۔ ہن باتوں کو اچھی طرح جانتے ہیں میرے کہنے کی ضرورت نہیں۔
پولن منتری اب میں سب کچھ جانتا ہوں۔ اچھی طرح سمجھتا ہوں۔ اپنے
ذمہ دار ہو گئے تو اسے دل کو تھیہ رسانہ ہاں ہوں۔ مگر جب اُس کی دشکل جو حباب
میں دکھی تھی اور پتوں کھابن کا جانا یاد رہتا ہے تو سرماں کی طرح چکر کھا جاتا ہے
اور بے اختیار ہو جاتا ہوں۔ پس کہتا ہوں میں اب وہ پولن نہیں رہتا۔ منج
و غم کا مقابیلہ ہے ذکھانے سے مغلبت نہیں کی پیاس ہے۔ رات کو نیند
نہیں آتی۔ ماہی بے آب کی طرح ترپا رہتا ہوں۔ اگر کچھ خیال ہے تو یہ کہ وہ
بیگناہ کس مصبت میں پڑکی۔ پتوں کھابن جیسے سُنسان ویران جگل میں
کیونکر متی ہوگی؟ وہاں تو ایک روز رہنا دشوار ہے۔ اُس کو تو سال بھر کے
قریب ہو گیا۔ اب اُس کو کہاں دیکھوں گا (خوبی) اچھا! اگر ملکی تو ہتروز
پولن بھی زندہ نہ رہیگا۔ اسی حکیم ٹھکنہ بیٹھکتا مر جائیگا!!!

منتری۔ کیوں اس قدر مکہراتے ہو؟ صبر اور استقلال سے کام لو الگی
حیات ہے تو کوئی اُس کو نقصان نہیں پوچھا سکت۔ ہاں تکلیف ضرور ہے
اس طرح کی باتیں کرتے کرتے پتوں کھابن میں پوچھ گئے جس کو دیکھتے ہی بدل
میں سنسناہست سی ہو گئی۔ کئی طرح کے خیال پیدا ہو گیوں کی طرح دنگ مارنے
لگئے۔ اداشا و مشرق بھی مغرب میں جا چھپا۔ اور رات کی تاریکی اور بھی سمکرنے
لگی تو ایک دخت کے سامنے میں گھوڑوں کو بگڑ دڑوں سے باندھو یا۔
اوونوقدرتی سنبھالی فرش پر زین کا تکمیلہ بنالیٹھ گئے۔ یعنی تو کو سوں دو ہے
تال کر ڈھن لیتے اور سردار اُسی پھر نے رات گذر گئی۔ سچ ہوتے ہی پولن فتح
 حاجت کے لئے منتری سے کمکریں پڑا۔

आह! देखिए कैसी मायूसी से सर झुकाए जा रहा है कि दफतन (अचानक) जो कुछ ख्याल दिल में आ गया। तो वहाँ खड़ा हो सोचने लग पड़ा और अब बड़ी हैरत से इधर उधर देख रहा है।

नाजरीन! वही ख्याल का फोटो नजर में फिर गया है। और कानों में अज्जना की आहोजारी की आवाज गूंज उठी है। और दिल में उसकी मुसीबत की दास्तान छिड गई है जिसने इसको निहायत बेकरार कर दिया है। बस फिर क्या था कभी तो रो पड़ता है और कभी खामोश हो दीवानों की तरह दाँ बाँ देखता हुआ जा रहा है। जब पाँच सात कोस इसी हालत में चला गया तो एक नदी दिखाई दी, जिसको देखते ही वहीं खड़ा हो गया है और अब पीछे की तरफ देखकर कह रहा है “उफ! बड़ी दूर आ गए” ये कहकर रफाए हाजत (शौच) की और स्नान कर नित कर्म, किया। जब वहाँ से वापिस हुआ तो रास्ता भूल गया क्योंकि आती दफा अपने ख्याल की धुन में ऐसा महव (खोया) था कि रास्ते की कुछ तमीज न कर सका। और तमाम दिन इसी सरगरदानी (इधर उधर घूमना) में गुजरा। मगर मंत्री और घोड़ों का कुछ पता न मिला। जब फिरते फिरते शाम हो गई, बदन सुस्त पड़ गया, टांगों ने जवाब से दिया, आँखे देखते देखते थक गई और दिल घबरा गया तो हारकर एक दरखत के नीचे बैठ गया। आह! इस वक्त जो पवन के दिल में गुजर रही है वही जानता है। या कुछ थोड़ा बहुत उसका अक्स इस वक्त मुसन्निफ के दिल पर पड़ रहा है जो उसकी हालत को अपने दिल में महसूस कर लिख रहा है।

नाजरीन! जरा गौर फरमावें की एक अमीर का लड़का जो नाजो नैमत से पला हो और तमाम उम्र ऐशो इशरत में बसर की हो। उस वक्त जबकि वो अपनी प्यारी बेगुनाह मुसीबत जदा औरत की तलाश में एक गमखार को साथ के घर से निकला और

१ संध्या उपासना

آه! دیک्षेत्री मायूसी से सर झुका के जार है - कर दफ्तर जूँग बेखिल लैन
आज्ञा लौड़िया कहरा हो सूचने लग भ्रांत ब्रांत भ्रांत भ्रांत भ्रांत भ्रांत
रहा है -

नاظरीन! इही ख्याल का फूल न तर्मिस बहर गया है - और कानों में अंजना की आह
जारी की आवाज गूंज आती है और दिल में असी की मिसेंट की दास्तान जहरी
है - हमने इस कृपनायित बिहरार कर दिया है - लैं प्रेक्षक बाहर की तो दूर प्रत्याये
लौकिक खांश बोद्यालों की खूँ दौमें बारैं दिक्षिता हो जाना है जब पाँच
सात कोस असी हालत में जिलागी तो वािक नदी दक्षाली दौरी - हम कर दिक्षेत्री बैं
कहरा हो गया है - और अपनी की तरफ देखकर कह रहा है - औफ ब्रांत भ्रांत
कृपनायित ये कहे कर रफ्त हाजत की ओर अश्वान करने कर्म की - जी दूर से
दौलप्स ज्वान ओर वर्सते बहुल गया - किंवद्धकाती दफ्तर अपने खिल लै दूर्जन मैं आसा खु
दक्षालकर दास्तान की जूँग तिर भर कर सका - और उमामूल असी सर्गदाली मैं लौड़िया कृष्णत्री
और खुरुदल का जूँग तिर भर ला - जब बहरे चर्चे शाम बोकी बैन रुस्त प्रांगीया -
नान्कों ने जवाब दिया - एक्षियन दिक्षेत्र तक गैसिं एडल ग्हर ग्हर ग्हर ग्हर -
हाकर एक दृक्ष के निचे बिल्लियां -

आह! अस वृत्त जूलों के दल में लौड़ियी है वही जानता है - बाक्ष खुरुदल
बहत अस के अक्स अस वृत्त मृणन के दल प्रप्रदा है जो अस की हाल
को अपने दल में खुम्स कर कहरा है -
नान्कों वृद्धावर वृद्धावर के एमीर कार जूनान नमृत से ब्लाहोर और नामाम
मृणन दृक्षत्री मैं ब्रसरी हूँ - अस वृत्त जब कर दूर अपनी बिल्ली बिल्ली है!
मिसेंट रुद्ध उमरत की तलाश मैं एक गमखार को साथ के ग्हर से निकला - और

और ऐसे लकोदफ जंगल में हजारों खुंखार दर्दिदे और बेशुमार जहरीले जानवर हों और कोई जगह पनाह की न हो तो इस हालत में उसके रफीक का गुम होना और खुद तनहा रहना एक थोड़ी सी बात नहीं। एक तरफ तो औरत का गम और मंत्री की जुदाई सता रही है और दूसरी तरफ जंगली जानवरों की खौफनाक आवाजें कानों में पहुँच दिल को हिला रही हैं। और आफताब का मगरिब को जाना रात की आमद आमद सुना रहा है। मगर इन सबकी कुछ भी परवाह न करता हुआ हमारा बहादुर उसी दरखत के नीचे बेसरोसामान तकदीर की शिकायत करता हुआ कह रहा है ‘ऐ बेरहम फलक! तुझे जरा भी गमजदों की हालत पर रहम नहीं आता। जरा ख्याल तो कर माँ बाप को छोड घर बार से मुँह मोड मंत्री को साथ ले उस प्राणप्यारी की तलाश में आया था कि दो घड़ी उससे बात कर गम गलत कर लिया करूँगा। लेकिन हाय तुझको वो भी नागवार गुजरा और पहली ही मंजिल में उसको जुदा कर दिया ऐ जालिम! इतना क्यों सता रहा है। तेरे जुल्म की कुछ इन्तहा भी है कि नहीं। मैंने कौन सा ऐसा गुनाह किया जिस के एवज हाथ धोकर मेरे पीछे पड गया है। अगर तुझको यही मंजूर है तो मिसबत कहता हूँ की मेरा खातमा कर ताकि हर रोज की तकलीफ से निजात हो।’’ फिर खुद ही कुछ सोचकर ‘‘नहीं नहीं! ऐसा न करना ईश्वर के वास्ते ऐसा हर्गिज न करना। मैंने अभी उस प्राणप्यारी से मिलकर अपने कसूर की माफी माँगनी है। आह! वो इस वीरान जंगल मे क्योंकर रहती होगी।’’ ये कहा और बेहोश हो वहीं लेट गया। जब कुछ अरसे के बाद होश आई तो क्या देखता है कि चारों तरफ आलम सकूत है। न तो कोई परिन्दा ही पर फड़कता है और न ही किसी दरिंदे की आवाज आती है। हाँ कभी कभी गीदड हुआ हुआ करते सुनाई देते हैं। या हवा फराटे भर रही है। और रात भी ऐसी अंधेरी है कि हाथ

اور ایسے لق و دوق جنگل میں جہاں شہزادوں خونخوار دندنے سے اور بیٹھا زہر سیلے
چانور ہوں اور کوئی جگہ بنا کی نہ ہو تو اس حالت میں اُس کے رفیق کا گم ہوتا
ادھر خود تھہراہنا ایک تھوڑی سی بات ہیں۔ ایک طرف تو عورت کا غم اور منیری
کی جدالی ستارہ ہی ہے اور دوسری طرف جنگلی جانوروں کی خوفناک طاقتیں
کا ذمہ ہیں پوچھ دل کو ہماری ہیں۔ اور افتادہ کا مغرب کو جانا۔ رات کی آمد
ستارہ ہے۔ مگر ان سب کی کچھ بھی پروادہ مکر نہ ہوا جہاڑا بہادر اُسی درخت کے
پیچے بے سر و سامان تقدیر کی تکایت کرنا ہوا کہہ رہا ہے۔
”اے! سیر جنم فلکاں بجھے در ابھی غزدوں کی حالت پر جنم ہیں آتا خدا خیال
 تو کہ! ماں باپ کو جھوٹا گھر بارستے منہ مطہری کو ساقھے اُس پران پیاری کی
 ملاشیں میں آیا تھا کہ دو گھری اس سے بات کر غم غلط کر لیا کروں گا۔ لیکن ہائے
 تجھکو وہ بھی ناگوار گزرا اور پہلی ہی منزل میں اُس کو جد اکر دیا۔ اے خالہ! اتنا
 کیوں ستارہ ہے۔ تیرے طلمب کی کچھ انتہا بھی ہے کہ نہیں ایس نے کوتا
 ایسا گناہ کیا جس کے عرض ناخود ہو کر میرے پچھے ٹرگیا ہے! اگر تجھکو ہی منظو
 ہے تو مت کہنا ہوں اب کہ میرا خاتمہ کرنا کہ ہر روز کی تکالیف سے بجات ہو۔
(پھر خود کی کچھ بچوچ کر) نہیں! نہیں! ایسا نہ کرنا۔ ایشور کے واسطے ایسا ہر گز نہ کرنا۔
 میں نے ابھی اُس پران پیاری سے ملکراپنے قصوں کی معافی المانی ہے آہ! وہ
 اس دیران جنگل میں کیونکر ہمتی ہو گی
 یہ کہا اور بہوش ہو دہن لیٹ گی۔ حب کچھ عرصہ کے بعد ہوش آئی تو کیا دیکھتا
 ہے کہ چاروں طرف عالم سکوت ہے۔ تو کوئی پرندہ ہی پر پھر کلتا ہے اور زمین
 کسی درندے کی آواز آتی ہے۔ ماں کبھی کبھی گیرد ہو جیں ہوں گرتے سنائی
 دیتھیں سیاہوں اپھر اسے بھر ہی ہے۔ لور رات بھی الیسی آندھیری ہے کہ ناچ

को हाथ नहीं सूझता। वही खुदरो पौधे, जिन को दिन में देखने से उस परब्रह्म की कुदरत नजर आती थी, इस वक्त डरावने मालूम होते हैं। आह! पवन की अजीब हालत हो रही है। अगर मुँह सर लपेट लेटता है तो अञ्जना की वही मायूस सूरत सामने आ जाती है। जिस के साथ ही बुरे बुरे ख्याल दिमाग से उतर चुटकियाँ लेने लग जाते हैं। तो बेकरार हो उठ बैठता है। हाँ अगर कुछ तस्कीन (आराम) होती है तो आसमान पर तारों को देखने से। मगर अफसोस इसके मुंतशिर (बिखरे हुए) ख्यालात इसको इस तरफ देखने की भी इजाजत नहीं देते। ज्योँही आसमान की तरफ देखता है वही फलक के **जोरोजफा** याद आ जाते हैं, तो बेचैन हो जाता है। गर्ज इसी परेशानी में रात गिजरी तो सुबह को फिर तलाश करना शुरू कर दिया। मगर कुछ सुराग न मिला। जब चार दिन इसी तरह गुजर गए और तमाम जंगल छान मारा और उसका कुछ पता न मिला तो हैरान हो एक दरख्त के नीचे बैठ गया। अभी थोड़ी देर ही सुस्ताया होगा कि फिर कुछ वहम सा उठा और दाहिनी तरफ जो बहुत से गुजान दरख्त दिखाई दिए चला गया। थोड़ी दूर जाने पर एक मसमारशुदा चाह (गड्ढा) दिखाई दिया। न मालूम क्या नजर पड़ा कि उसमें झाँकते ही चला गया और अब कुछ चीज जमीन पर से उठाकर देख रहा है।

आह! ये क्या है कि जिसको देखते देखते इसके चेहरे का रंग फक हो गया है और हैरत अंगेज ख्यालों ने पैदा हो इसके मायूस दिल पर कबजा कर लिया है।

नाजरीन! ये वही अंगूठी है जो इसने अञ्जना को बतौर निशानी के दी थी। जिसको अब उस जगह देखकर हवास बापता हो रहे हैं। और कई तरह के ख्याल पैदा

को नहीं सूझता। वही खुदरो पौधे जन कुदन में बिछते हैं अब परब्रह्म परमात्माकी قدرत लेता है। इस वक्त द्रावने मुलूम होते हैं। आह! पून की उनीबूहत होती है। अर्थात् सरलप्रिय लिला है तो अज्ञा की दी यास चूर्त साहने आजती है। जिस के साथ ही बैठ खिल दाख से ओर चढ़ाया लिने लग जाते हैं। लोतसिर हूँ तुम्हें बिछता है। नाल अर्कज्ञ लिला है। तो सामन पर तारों को बिछते हैं तो ग्राहण की अनेक खिलात इस को एक दिखते हैं। कभी अजाजत नहीं दीते योनी समान की तरफ बिछता है वैसे खाल के जुरु जुरा याद आजते हैं तो जीवन जुरा है। खूफ सामी बिछतानी में रात गुदरी तूच को पूर्णलाश कर नाशर रुक दिया लग कर अर्कज्ञ सरांख नहीं है।

जब चारों ओर खूँ गँद गँद होते हैं और ताम्र खंडल जग्जान मारा ओर इस का कुछ तोहने न लाते हैं। जिसने वही एक दरخت के नीचे बैठ गया। उन्होंने दिखाया है कि वह अपने दो अंगों पर एक चाहा अद्वाही तरफ जोहत से लगान दरखत दक्षाली दिखता है। चाहा गीला अनुच्छेदी दर जाने पर एक सारांश दिखाया गया। लक्षणी दिया न है। अपने दो अंगों पर एक चाहा अद्वाही चाहा गया। और अब कोही हिंजी में बैठते हैं।

आह! क्या है? क्या जिस को बिछते दिखते हैं। एक चैहे कर नीक फूँ बोल गया है। और जिरत अंगूठे खाली ने बिदा हूँ। इस के यास दल पर बिप्र करिया है?

नाजरीन! ये वही अंगूठी है जो इस ने अज्ञा को लेपन लानी के दी है। जिस लोब इस खूँ दिखाया बाखते होते हैं। और की खूँ के खिल पैदा

हो इसके दिमाग से दिल और दिल से दिमाग को जा रहे हैं। मगर कुछ समझ में नहीं आता कि ये अंगूठी उस गड्ढे में क्योंकर आई। आखिर उसकी हैरानी हद दर्जे की बढ़ हई तो सर को पकड़े वही बैठ गया। थोड़ी देर के सकूत के बाद जिस ख्याल ने इसके दिमाग को **परागन्दा** कर दिल दिल को परेशानी में डाल बोलने पर आमादा किया वो ये है। ‘बस अज्जना का मिलना दुश्वार है’ ये कहा और खामोश हो गया। थोड़ी देर के बाद सर्द आह भर कहने लगा।

“आह! मेरा ख्याल था कि वो जंगल में नहीं आई वरना जरूर उसका कुछ न कुछ सुराग मिलता। लेकिन हाय! अफसोस उसको तो किसी दरिंदे ने हमेशा के लिए मुझसे जुदा कर दिया है। वरना वो जीते जी कभी इसको अपने से अलैहदा न करती। प्यारी! तेरी मौत का **बाइश** में ही बदबख्त हुआ। आह! इस जगह इस उम्मीद से आया था कि तुम को तलाश कर तुम्हारा गम गलत करूँगा। और जिन के सामने तेरी इस्मत पर धब्बा लगाया गया था उनही के रूबरू तेरी पाकदामनी साबित करूँगा। मगर हाय अफसोस कोई भी आरजू पूरी न हुई और सब उम्मीदे खाक में मिल गई। अब मेरा भी जीना ला हासिल है। **तबीर कुनद बंदा तकदीर कुनद खंदा।**”

इस तरह कह ही रहा था कि सर चक्कर खा गया। आँखों के आगे अंधेरा छा गया तो सर को पकड़ कर वही बैठ गया। जब कुछ अफाका हुआ तो कहने लगा ‘‘मेरी सजा अब यही है कि इसी जगह जलकर खाक हो जाऊँ।’’

ये सोच और मुसम्मम (पक्का) झरादा कर के उसी गड्ढे में लकड़ियाँ जमह कर चिता बनाई और पथरी से आग निकाल उसमें लगाई। और आसमान की तरफ देखकर कहने लगा ‘‘ऐ फलक सितमगर तुमने मेरी सब उम्मीदों का खून कर दिया सब आरजुओं को खाक में।’’

ہواں کے دماغ سे دل اور دل से دماغ कو جا رہے ہیں۔ سمجھ کچھ سمجھو نہیں
آتا کریں گے کوئی اس گزتے میں کیونکرائی۔ آخر اس کی حیرانی صدر جملکی بڑھ کر تو
سر کپڑوں میں پیغمبری تھوڑی دیر کے سکوت کے بعد جس خیال نے اڑاکے
دماغ کو یہ لگنہ کر دیا کو پریشانگی میں ڈال لٹک پڑا کیا دی یہ ہے۔ اب، اس بھा
کا ملنادشوار ہے۔ یہ کہا اور خاموش ہو گیا۔ تھوڑی دیر کے بعد سرد آہ جھر
کہنے لگا۔

آہ! میرا خیال تھا कہ وہ اس جگہ میں نہیں آئی۔ ورنہ ضرور اس کا کچھ کچھ سارغ
ہوتا۔ لیکن ہم سے افسوس اس کو تو کسی دندے سے نہیں کے لئے مجھ سے جُدا
کرو یا ہے۔ ورنہ وہ جیتے جی کچھی اس کو اپنے سے علیحدہ ذکری! پیاری بیڑی
موت کا باعث میں ہی بدبخت ہوا۔

آہ! اس جگہ اس اسید سے آیا تھا کہ تم کو نلاش کرنا چاہئم غلط کر دیا اور جن کے
سلبھنے تجھکو سے حرمتی کا جام سنباتیری عصمت پر دھبہ لگا۔ آگئی تھا اپنیں
کے روپ و تیری پاک لامنی ناہت کر دیا۔ مگر ہم اسے افسوس کوئی بھی آرزو پوری
نہ ہوئی اور سب اندیش خاک میں گلگیں۔ اب میرا بھی جینا لا جائیں ہے۔
عند بسیر کرنہ بنہ لقیدر کرنہ خنہ۔

اس طرح کہہتی رہا تھا کہ سر کچک چھاگیں اخنوں کے آگے اندھیرا چھاگیں تو سر کو
پکڑو ہمیں پیغمبر کیا جب کچھ انقدر ہوں گے۔ ”سیری سرا اب یہی ہے کہ اسی جگہ
چلکر فاک ہو جاؤں“

پسچ اور صعم اڑادہ کر کے اسی گزتے میں لکڑیاں جمع کرچے بنائی اور سپھری
سے آگ نکال اس میں لگائی اور آسمان کی طرف دیکھ کر کہنے لگا۔ اے غلاب
سمجھ تھے میری سب اسیدوں کا خون کرو یا سب آرزوؤں کو خاک میں

ミلا دिया और इस प्यारी सूरत को हमेशा के लिए मुझसे जुदा कर दिया। जालिम! तेरी ही बदौलत मुझको भी इस दुनिया से नामुराद जाना पड़ा। अच्छा तेरा भला हो। ये कहा और ईश्वर से प्रार्थना कर

बाब (अध्याय) सोलहवाँ

मेरी अकल पर क्यों पत्थर पड़ गए

शाम का वक्त है जबकि रात कि तारिकी बढ़ रही है। और राजा प्रह्लाद विद्याधर के महल में भी जा बजा शमादान रोशन हैं। मगर ताहम तमाम महल में कुछ सन्नाटा सा छा रहा है। और कमरे कमरे में दहशत बरस रही है। किसी के बोलने की आवाज नहीं आती। हाँ सर्द आहों की आंधी चल रही है। रानी कितुमती गमगीन सूरत बनाए सर झुकाए पलांग पर बैठी है और राजा प्रह्लाद विद्याधर एक **जरनिगार** चौकी पर परेशान सूरत बनाए रानी की तरफ देख रहा है। और चंद **ख्वासे** थोड़ी दूर सामने चुपचाप खड़ी हैं। जब कुछ देर यूँही गुजर गई तो राजा रानी से मुखातिब हो **पुरदर्द** लहजे में कहने लगा।

राजा “प्रियजी! क्या पवन अञ्जना के बयान कि तसदीक (पुष्टी) करता है? और अब कहाँ गया है?”

रानी सर्द आह भर कर “जी हाँ! वो तो उसकी **जलावतनी** सुनते ही **अफसरदाखातर** हो बगैर खाना खाने के अञ्जना को बेकसूर बतलाता हुआ उसकी तलाश में शायद महेन्द्रपुर को चला गया है।”

राजा तेवर बाल गुस्से में हो “आह! गजब हुआ! मुफ्त में मैं उस बेगुनाह

ملाद या और अस पीरी चूरत को हमेशे के लिए जगह से जुड़ा कर दिया। ظالم اتیری ہی بدولت جگو بھی اس دنیا سے نامراजانہ پڑا۔ اچھا تیرا کھلا ہو۔ یہ کہا تو اشیور سے پرارختناک

باب سولھواں

میری عقل رکیوں سپھر کئے

شام کا وقت ہے جب کہ رات کی تاریکی پڑھ رہی ہے اور صنوعی روشنی ہرگز سہولی شروع ہو گئی ہے۔ اگرچہ راجہ پر صلاد و دویادھر کے محل میں بھی جا جا شمعدان روشن ہیں۔ مگر تاہم تمام محل میں کچھ سناٹا سچھار ہے اور کمرے کمرے میں روشنی ہے۔ کسی کے بولنے کی آواز نہیں آتی۔ میں! سرد آہوں کی آندھی جیل رہی ہے۔ رانی کیتو متی غمگین صورت بنائے سر جھکائے پنگ پیچھی ہے اور راجہ پر صلاد و دویادھر ایک زندگانی پر پر لیستان صورت بنائے رانی کی طرف دیکھ رہا ہے۔ اور چند خواصیں تھوڑی دور سامنے چپ چاپ کھڑی ہیں۔

جب کچھ دریوں ہی گذرگئی تو راجہ رانی سے مخاطب ہے پر دریوں کیس کہنے لگا۔
راجہ سپریت جی کا کیا پوون اجنبی کے بیان کی تصدیق کرتا ہے؟ اور اب کیاں گیا ہے؟

رانی۔ رسد و آہ بھر کر) جی ہاں! وہ تو اس کی جلاوطنی سنتے ہی افسرده خاطر ہوں گے کھانا کھانے کے اجنبی کو بے قصور تبلماہوا اسکی نیاش میں شاید جھینڈل پور کو جلاگیا ہے۔
راجہ۔ (تیور بدل غصہ میں ہو) آہ! غصب ہوا! مفت میں میں اس گیناہ

अञ्जना की पाकदामनी पर शक लाया। हाय! मेरी अकल पर क्यों पत्थर पड़ गए कि कुछ ही ख्याल न किया और तुम्हारी बातों में आ उसकी बेहुरमती का बाइश हुआ॥” थोड़े सकूत के बाद ‘उफ! पवन दिल में क्या ख्याल करता होगा? महेन्द्र राय को क्या जवाब दूँगा। आह! तुमने तो मुझको सबकी नजरों से गिरा दिया। खाक में मिला दिया और अब ‘जी हाँ’ कर सुनाया॥”

नाजरीन! रानी जो पवन की तकरीर को सुनकर पहले ही से बेकरार हो रही थी अब राजा को पुर गजब देख और भी घबरा हैरत में पड़ गई। अगरचा इसके सब अजा सुस्त पड़ गए हैं। मगर कलेजा ही है जो रह रह कर उछल पड़ता है। और दिल देकाबू हुआ जाता है। नजर जमीन पर दहशत बरसा रही है। दिमाग अपना ही मनतक पढ़ रहा है कि ना आक्रिबत अंदेशी का नतीजा ही है जो आज पेश आ रहा है। और रानी बेचारी अपने किए पर पशेमान (पछता) हो रही है। राजा की बातों का जवाब देना तो दरकिनार दिल में मौत से हमकलाम हो रही है। आखिर राजा की बाते सुनते सुनते गम का गुब्बार कलेजे से निकल मगज में पहुँचा तो गरदनी खाती हुई पलांग से नीचे गिर पड़ी।

रानी की ये हालत देखकर राजा को और ही फिक्र दामनगीर हो गई। जल्दी से उसको उठा कर कहने लगा।

राजा “प्रियजी! अब तुम्हारा इस कदर घबराना ला हासिल है। इन बातों पर पहले गौर करनी चाहिए ताकि बाद मे नदामत (शर्म) उठानी न पड़े। मुझको हैरानगी तो इस बात पर आती है कि जरा जरा बात पर तुम इस कदर दलील करना कि घण्टों गुजार देना और अब ऐसे नाजुक मामले पर कुछ भी ख्याल न किया। जरूर तुम किसी के बहकाने मे आ गई होगी वरना ऐसी उम्मीद तुम से तो हर्गिज न थी॥”

रानी सर्द आह भर राजा की तरफ देखकर “हाय! मुझको तो कमबख्त ललिता, ने धोखा

१ एक लौंडी का नाम

। अज्ञाकी पालमनी प्रश्नाकालानामे मेरी عقل پرक्षियोں سپरिये के कुछ ही ख्याल नहीं किया। ओर त्वारी बातों में अस की भें खोती काबृत होवा रात्मोर स्कूट के بعد) ऑफ ब्लून डिल में कियाखिल कर रहा गया? उम्हें रासे को किया जाप रह गया। आह अत्मते तो खंजु सब की नेत्रों से गळा-गळा में लाद्या और अब “जी नाम कहें सनाया!”
नاظरिन! इसी जूलून की तिरी को स्नेक पीले से बिछार हो रही थी। अब राजे को प्रश्न दियो और जिजी त्वारी अत्मते में पर्की। अर्जुन के सब अंतर सुष्टु पूर्णे हैं। गळकियोंही हैं जो रहे कर और चल प्राप्त हैं और उन जैवालों ने जागता है नेत्र में प्रवृत्ति ब्रसारी है। दाखुं अपाही स्त्रैक त्रैरह ने अनुभव अनुभव की अनियति का नियति है। इस अनुभव के प्रथम हो रही है। राजकी बातों का जो बाब दिनांक दरकार दिन में होते हैं वे अकलात्म हो रही हैं। अत्र राजे की बातें सुन्त सुन्त गम का उन्नार किये गये हैं। इस लूंचातो गळी कहानी हैलू ब्लून से खें गळी कर दी।
रानी की यहात दियो राजे को और ही नक्द दियेंगी रह गये। जल्दी से अस को अंतर कर कहने लगा।

राजे—प्रियजी! अब त्वारी अस के गळे जैवाला हासिल है। इन बातों पर उन्हें उन्होंने करनी चाहते हैं। ताकि उन्हें नदामत अहमानी न दिये। जिस जिरान्गी को अस बातें अती हैं कि वह दो बातें प्रत्येक दिलें करनाकर गम्भीरोंना लार्डोंना लोराबाली हैं। ताकि उन्हें उन्हें कुछ ही ख्याल न रहि। अब उन्हें कम की के बहकाने में आ गयी होगी।
इसी—रासेदाह भर राजा की तरफ दियो कर) नामे भिक्षु त्वारी लामाने देखो कहा
म्हे एक लौंडी का नाम

दिया। मालूम नहीं उसने क्या जादू कर दिया कि बगैर तहकीक किए मैं उस बेचारी से बदजब हो गई। उफ! मैंने बड़ा जुल्म किया।”

राजा “बेशक! इसमे कोई शक नहीं तुमने सख्त गलती की। न सिर्फ खुद बल्कि मुझको भी मुगालते मे डाला।” सर्द सांस लेकर “मगर खैर अब इन बातों से क्या होता है। उसके मुकद्दर में ही ऐसा लिखा था।” कुछ सोचने के बाद लौंडी से मुखातिब हुआ।

राजा “देखो! अभी रथवान से कहदो कि सुबह होते ही रथ तैयार करके ले आवे। हम प्यारी जी के साथ महेन्द्रपुर जावेंगे।”

बाब (अध्याय) सत्रहवाँ

राजा प्रीति सुर्या

दोपहर ढल चुकी है। आफ्ताब हसरत भरी निगाहों से दुनिया को देखता हुआ मगरिब को जा रहा है। मगर जमीन अभी तक पा प्यादा चलने वालों को न जाने हसकी वजह से या कुछ और बात से कि आगे बढ़ने नहीं देती। इसलिए हम तो पीछे ही रह गए हैं। मगर हमारी नजर किसी के देखने के इश्तियाक (लालसा) मे बहुत दूर आगे निकल गई हैं। सामने कुछ सब्जी सी दिखाई देती है लेकिन दूरी के बाइश हम अच्छी तरह देख नहीं सकते। हाँ सीन तो एक दिलकश मालूम होता है जिसके देखने के शौक ने हमको बेइखियार कर उनके नजदीक पहुँचा ही दिया। वह शकूक जो हमारे दिल में पैदा हो रहे थे रफह हो गए। और उस सब्ज वजार की माहियत को पहुँचे तो मालूम हुआ कि वह दरख्त जो दिखाई दे रहे थे कईं एक किस्मों

دیا۔ معلوم नहीं। अस ने किया जादू कर दिया कि नगिर्ह تحقیق की मैं इस जिपारी से बरखून हो गई। ऑफ इस ने त्राखलम किया!!।

राजह-बिन्द क। इस में क्यों न ताक नहीं। अत्र ने سخت उल्टी की रुचर खो भले जो क्यों न ही खालत में ठाला (सर्द सालनी लिक)। मगर खिराब अन बातों से किया गया है। अस के مقدर में ही इस ने कहा। क्यों सूचने के बाद लोट्डी से खाल बना।

राजह— दियो! अभी रथवान से कहदो कि चिंग होते ही रथ तार कर के ले आवे। हम पर ये जी के साथ जहन्दर पूर जादीन गे।

ہاب ستار حکوای

راجہ پریتی سوریا

دوپہर उल्टी है।— اقبال حضرت بھری سما ہوں से دنیا کو دیکھापूरा سغرب کو جارہا है— سگز में अभी तक पापियाहे चल्ने वालों को जाने नहीं किया जा सकता। या क्यों न वार बात है कि आगे उल्टी नहीं दियी। अस ने हम तो पूछी ही रह गئी हैं।— सگر ہمارी نظر की के दिखने के अंतिम विहृत दूर आगे तक नहीं है— سا ہے क्यों न देखने की रुचरी वित्ती है— लेकिन दूरी के باعث हम अच्छी तरह दिखने नहीं सकते। नान सीन लो एक लक्ष मعلوم ہوتा है— جسके दिखने के शوق ने हम को बे اختیار कराने के न रोक। यो स्थानी दियाए तो नको जुहार से دل में पूरा हो सहे तھे रفع हो गئे।— ओ! अस سہ وندار की हستी को लौंगी तो معلوم हो। और वह درخت जुड़ कहानी दसे रहे तھे की एक قسم

के हैं। मगर सब से ज्यादा आम के हैं जिन की हर एक डाली कशरत से फैलने के बाइश नीचे झुकी हुई है। गरीब क्या अमीर जिसने एक दफा इन आमों को देख पाया फौरन दिल ललचा गया। इसमे कोई शक नहीं कि गरीबों के लिए जिन्दगी का सहारा हैं क्योंकि जिसने दो चार भी खा लिए फिर दिन भर खाने का नाम न लिया। लेकिन अमीरों के लिए ये आली दरजे की नजीर बन कर दिखला रहे हैं कि जिस तरह हम सब के लिए फल तैयार कर सर झुकाए पुकार कर कह रहे हैं कि आओ मन माने आम तोड़ो और खाओ। इसी तरह तुम भी अपने फर्ज को याद कर मस्तहकों के हक्कों को न भूलो और गरीबों को हिकारत की नजर से न देखो। क्योंकि ईश्वर ने तुमको आली रुतबा दिया है। खैर अब इस तकरीर को जाने दो और इस अंगूर की बेल को देखो जिसके सब्ज पत्तों में से अदवे अदवे अंगूर के खुश कैसे खुशनुमा दिखाई दे रहे हैं। और नजदीक ही गुलाब मोतियार बेल और कई तरह के खुशबुदार फूल अपनी खुशबु के खजाने से देखने वाले के दिमाग को मोत्तर कर रहे हैं। गर्ज जहाँ नजर पड़ती है निराला की नजारा दिखाई देता है। इस तरह सैर करते और कुदरती दिलचस्पियों को देखते हुए बाएँ तरफ को बढ़ा। चंद आलीशान मकान दिखाई दिए तो दिल में आबादी का गुमान हुआ। उसी धुन में उस तरफ को चल दिए थोड़ी दूर गए होंगे कि हमारा ख्याल सही निकला और एक शहर नजर पड़ा। ये तो हनुपर हैं जहाँ अञ्जना देवी अपने मामू के साथ आई है।

आओ जरा उस बेचारी का हाल तो दर्खापत करें।

ओहो! राजा प्रीति सुर्या के घर तो कोई लड़का लड़की नहीं और न ही अभी कुछ होने की उम्मीद है। तो फिर उसके महल के आगे शादियाँ कैसे बज रहे हैं। और धमधाम कैसी हो रही है। क्यों साहिब हैरान क्यों हो गए? अब्जना

کے ہیں۔ مگر سے زیادہ آہم کے ہیں جن کی سہ راک ڈال کشتر سے چھینٹ کے باعث نجی چمکی بولی سے غریب کی اسی حسنس نے ایک دفعہ ان ہمتوں کو دیکھ پایا فوراً دل لمحیا کیا! اس میں کوئی شک نہیں کہ غریبوں کے لئے زندگی کا سہارا میں کیونکہ جس نے دوچار بھی کھانے پھروں بھر کھاتے تھا نام نہ لیا۔ لیکن اسیوں کے لئے یہ اعلیٰ درج کی لذتیں بن کر دھلا رہے ہیں مگر جس طرح ہم سب کے لئے پھل تیار کر سر صحکاے پچاڑ کر کہہ رہے ہیں کہ آؤ من مانے آم لڑوا دو کھاؤ اسی طرح تم بھی اپنے فوض کو یاد رکھوں کے حق کو نہ جھلو دو غریبوں کو خفارت کی نظر سے نہ کیجو کیونکہ ایشور نے تم کو اعلیٰ رب ہو یا ہے خیر اس تفیر کو جانے دو۔ اور اس نگوسکی ہیں کو دیکھو جس کے سبز پتوں میں سے ادوے ادوے الگر کے خوشنے کیسے خوشنما دکھائی دے رہے ہیں۔ اور نزدیک ہی گلا۔ موتیار دلیں اور کئی طرح کے خوشبو و ریخبوں اپنی خوشبو کے خزانے سے دیکھنے کے درماغ کو محظرا رہے ہیں۔ خوش جہاں نظر پڑتی ہے زیلا ہی نظارہ دکھائی دیتا ہو اس طرح سیکرتے اور قدمتی دیکھیوں کو دیکھتے ہوئے ہائیں طرف کو جو پڑھتے چند عالیات ان مکان دکھائی دیئے۔ تو دلیں بیس آبادی کا گھمان ہوا۔ اُسی دھن میں ہیں طرف کو پلید رہئے۔ تھوڑی دور گئے ہوں گے کہ ہزار خیال صبحیں مکھا اور ایک شہر نظر

اب ای تو منہو لورہے جہاں انجنا دلیوی اپنے بھوں کے ساتھ آئی ہے۔
اوڑ زد اس بچاڑی کا حال تودریافت کریں۔
اوہ بارا بھپتی سور پا کے گھر تو کوئی بلا کھا بڑکی نہیں اور نہیں ابھی کچھ ہونے
کی اسید ہے تو پھر اس کے محل کے تھے شادیا نے کیسے بچ رہے ہے۔ اور
وہ عمد حاصم کیسی مورہ ہی ہے؟ کچھ صاحب احیران کیوں ہے تھے اجنبی

के लड़के का नामकरण संस्कार हो रहा है। उसी की खुशी मनाई जा रही है। राजा ने अपने शहर के नाम पर लड़के का नाम हनुमान रखा है। वह देखिए इस वक्त अञ्जना भी उम्दा लिबास **जेबेतन** किए बैठी है। मगर उसका चेहरा कुछ ऐसा **बशाश** नहीं बल्कि उदास सा मालूम होता है। और दूसरी औरतों का गाना बजाना भी नहीं भाता। ये इसी फिक्र में है कि अगर आज अपने घर होती तो स्वामी (पवन) जी इस मौके को देख कैसे खुश होते। हाय! मालूम नहीं वो कहा हैं और मेरी निस्बत क्या ख्याल रखते हैं?

नाजरीन! जब अञ्जना देवी को इस जगह रहते कुछ अरसा गुजर गया मगर **असज्जतराबी** न गई, तो एक रोज रानी रवि सुन्दरी ने राजा से कहा।

रानी “महाराज! अञ्जना देवी दिन रात गमगीन रहती है। दिन आहोजारी करते और रात करवटे लेते और सर्द आहें भरते गुजार देती है। मेरे ख्याल से आप इसको महेन्द्रपुर ले जावें और उनकी तसल्ली कर वहाँ छोड आवें तो अच्छा है”
राजा “प्रियंजी! बेशक आप का ख्याल दुरुस्त है। मैंने भी अक्सर इसको गमगीन ही देखा है।” ये कहकर उसी वक्त रथ तैयार कर बसन्तमाला और अञ्जना को साथ ले महेन्द्रपुर को रवाना हआ।

बाब (अध्याय) अठारहवाँ

अब तक वापिस नहीं आए

ठीक दोपहर का वक्त है जबकि आफताब ने अपनी गजबनाक **शर्वाई** डालकर दुनिया को सुनसान बना रखा है। इस वक्त न तो कोई दर्दिंदा ही बोलता सुनाई

کے لڑکے کا نام کرن سنکار پورا ہے۔ اسی کی خوشی منانی جباری ہے راجہ
نے اپنے شہر کے نام پر لڑکے کا نام ہتموان رکھا ہے۔ وہ دیکھئے اس وقت
ابخنا بعی عمدہ بس زیر تن کے بیٹھی ہے۔ مگر اس کا پھر گھر جایا بٹاں
نہیں۔ بلکہ اوداں سامعلوم ہوتا ہے۔ اور وسری عورتوں کا کافا نجما نا
بھی نہیں بھاتا۔ یہ اسی فکر سے کہ اراچ میں اپنے گھر ہوتی تو سو اجی (لپوں)
بھی اس موقع کو دیکھ کیسے خوش ہوتے۔ اسے اصول نہیں وہ کہاں ہیں
اور سیری لشکر کی خیال رکھتے ہیں۔“

ناظرین اجب انجمنا دیوی کوئں جگہ رہتے کچھ عرصہ گذرگی اسکے اضطرابی نہ
گئی۔ تو یک روز رانی روی سندھری نے راجستہ کیا۔

رائی۔ تھا راج اجخنا دیوی دن رات غمگین رہتی ہے۔ دن آہ زاری
کرنے اور رات کو میں لیتے اور سرو آہیں بھرتے گزار دتی ہے۔ میرے خیال
میں آپ اسی ہندو پورے جاویں۔ اور ان کی نسلی کردہاں چھوڑا ہیں
فوجھا ہے۔

راجہ۔ پری جی اینٹک آپ کا خیال درست ہے۔ میں نے بھی اندر کو
عکسیں ہی دیکھا ہے۔ یہ مکار اُسی وقت رکھ تیار کر لبنت ملا اور اجنبی
کو ساتھ نہیں چھوڑ دیا تو کورڈ اونٹھ دیا۔

باب اہم امور حوالہ بیک والیں نہیں رائے

تمکن دوہ کا وقت ہے جکڑ اپنی حضن ک شعایر میں ڈال کر
پر کسانوں سانان بنا رکھا ہے اس وقت نہ لکھی دیندہ ہی پوتا نہ لی

देता है और न ही कोई परिंदा उड़ता हुआ नजर आता है। क्यामत की उदासी छा रही है। हाँ कभी कभी हवा के झोंके आकर पत्तों की खड़खडाहट करते हुए गुजर जाते हैं। बाद मेर सन्नाटे का आलम हो जाता है। अलबत्ता एक जानवर कूहकू कहता हुआ सुनाई दिया है। आह! ऐसे सुनसान वीरान जंगल में एक बांका जवान मूँछों को ताव दिए उम्दा सफेद पौशाक **जेबतन** किए, दुपट्टे का अँचल सर पर डाले एक दरखत के नीचे खड़ा है। और जंगली झाड़ियों की तरफ देख रहा है। उसकी हसरत भरी निगाहे चारों तरफ दौड़ दौड़ कर किसी गमख्वार की तलाश में जाती हैं मगर बड़ी मायूसी के साथ वापिस आ जाती हैं। ईश्वर जाने दिल मेर क्या सोचता है जो कुछ देर सर झुका जमीन की तरफ देखकर फिर सामने देखने लग जाता है। मगर जब इसका गमजदा दिल इसके काबू से निकल उसको मजबूर कर देता है तो उस बेखुदी के आलम मेर दीवानों की तरह तीस चालीस कदम इधर उधर चला जाता है और रह रह कर झाड़ियों की तरफ देखता हुआ गमगीन हो वापिस आ जाता है। और जरासी आहट आने से चौकन्ना हो इधर उधर को देखने लग जाता है। उफ! इस वक्त तो गरमी निहायत दरजे की हो रही है और जंगल भी खौफनाक दिखाई देता है। ये नौजवान कौन है और क्यों इस कदर हैरान हो रहा है? आओ जरा इस को देखे तो सही कहीं पवन जी का मंत्री तो नहीं। आहा! ये तो वही है। वो देखो दोनों घोड़े अभी तक वैसे बंधे हैं। बेचारा हैरान न हो तो क्या करे? वो **रफह हाजत** को सुबह से गए अब तक वापिस नहीं आए बदहवास न हो तो क्या करे! जब थोड़ा सा दिन बाकी रह गया तो दिल मेर मुख्तलिफ ख्यालात पैदा हो घबराहट पैदा करने लगे। तब एक घोड़े पर सवार हो दूसरे की बागडोर पकड इधर उधर तलाश करने लग पड़ा।

ویتا ہے اور زمی کوئی پرندہ اوڑتا ہو انظر آتا ہے بیقاشت کی ادعا سی بچاری ہے اہل اکبھی کبھی ہوا کے جھوکے اگر تپوں کی کھڑکی سہت کرتے ہوئے ہے اگر جلتے ہیں بعد میں پھر وہی سنائے کا عالم ہو جاتا ہے۔ البته ایک حلوں کھلکھلوا کرہ کہتا ہوا سنائی دیتا ہے۔ آہ ایسے سنان ویران جھگل میں ایک ہادکا جوان موجھوں کو تلوڈے عمدہ عنید پشاک زیب تن کے دوپٹے کا اچھل سر پڑا لے ایک درخت کے نیچے کھڑے اور جھگل جھاڑیوں کی طرف ویکھ رہا ہے۔ اس کی حسرت بھری نگاہیں چاروں طرف دوڑ دوڑ کری غمغوا کی تلاش میں جاتی ہیں۔ مگر تری ہالوی کے ساتھ وہ اپس آجائی ہیں۔ الشور جاف دل میں کیا سوچتا ہے جو کچھ دیر سر جھکاناہیں کی طرف دیکھ کر ہیسا ہے وہ کھنکھنے کا جاتا ہے۔ مگر جب اس کی عمر زدہ دل اس کے قابو سے بکل اس کو جیو دکر دیتا ہی تو اس کی خیودی کے عالم میں دلیوں کی طرح نہیں چالیں قدھر اور صدر صلیحہ ہے اور رہ رہ کر جھاڑیوں کی طرف دیکھتا جو عکسیں ہو دیں اپس آجاتا ہے سخن دیسا سی اہست ائمہ سے چونکا ہوا وھر اور دھر کو دیکھنے لگ جاتا ہے! اوف! ایتھے لوگوں کی غایت دعج کی ہو رہی ہے۔ اور جھگل بھی حوفناک دکھائی دیتا ہے۔ یہ نوجوان کون ہے؟ اور کیوں اس قدر حیران ہو رہا ہے؟ آؤ! اذرا اس کی حصی تو سہی کہیں ہیں پونجی کا منتری تو نہیں؟ آتا! یہ تو ہو رہی ہے وہ دیکھو دیکھو سے؛ بھی یہک دیسے ہے ہیں۔ بیجا رہ حیران نہ ہو تو کیا کرے؟ وہ رفع حاجت کو سمجھ سے گئے بنک و اپس نہیں اسے اب حواس نہ ہو تو کیا کرے؟ جب تھوڑا سا دوں باقی رکھیا تو دل میں مختلف خیالات پیدا ہو گھر سہت پیدا کرنے گے۔ تب ایک گھر سے پر سوہر ہو دوسرے کی بگ دوڑ پڑا اور وھر ملاش کرنے لگا۔

سات آठ کوس تک خوب چکر لکھا۔ مگر پونہ کمیں ہی پناہ ملا تو جیران ہو گئی طرح
کے خیال ہوا تاہم اسام کے وقت اپنے دخالت کے لیے بڑھ گیا اور نہایت سچی
نے رات بسر کی جب صح ہوئی تو جیرائی کام میں شغول ہو گیا۔ درود زندگی جب انہا
پہنچ ہی نہ ان ملتو خیال کیا کہ شاید لکھا جاتا ہے اور اسی خوشی میں مجھے
بھول ہمندر پور پڑے گئے ہیں۔ یہ سوچ کر فروٹ گھوٹے پر اسواہ ہمندر پور
کو چل دیا۔

बाब (अध्याय) उन्नीसवा

ये सब मेरे ही पूर्व कर्मों का फल है

जब दूसरी मर्तबा रानी बेगमोहिनी बेहोश हो जमीन पर गिर पड़ी तो राजा महेन्द्र राय
बहुत घबरा गया और बड़ी कोशिश के बाद उसको होश में ला कहने लगा।
राजा “प्रियजी! क्यों इस कदर फिक्र करती हो? अच्छा जो उसकी तकदीर में लिखा
था हो गया अब उन बातों को छोड़ो और उसके तलाश करने की फिक्र करो। उस
बेचारी को तो एक घड़ी साल के बराबर गुजरती होगी। मालूम नहीं किस मुसीबत में
है।” इधर उधर देखकर “हैं! पवन कहा गया? उफ! तुम्हारी घबराहट में उसकी भी
किसी ने खबर नहीं ली।”

रानी सर्द आह भर बात काटकर “स्वामीजी! मेरे कुछ इखिलयार में नहीं। जब मुझको
अपनी बदसलूकी जो मैंने अज्जना देवी के साथ की है याद आती है और सीने से
बुखारत पैदा हो चक्कर दे बेहोश कर देते हैं तो बेबस हो जाती हूँ।

سات آٹھ کوس तक خوب چکر لکھا۔ مگر پونہ کمیں ہی پناہ ملا تو جیران ہو گئی طرح
کے خیال ہوا تاہم اسام کے وقت اپنے دخالت کے لیے بڑھ گیا اور نہایت سچی
نے رات بسر کی جب صح ہوئی تو جیرائی کام میں شغول ہو گیا۔ درود زندگی
پہنچ ہی نہ ان ملتو خیال کیا کہ شاید لکھا جاتا ہے اور اسی خوشی میں مجھے
بھول ہمندر پور پड़े گئے ہیں۔ یہ سوچ कर फروٹ گھوٹے पर एसواہ ہمندر पور
کو چل دیا۔

بाब ان्सिओال

یہ سب سیرے ہی بُو بُے کرنو کا پھل ہے

جب دوسرا مرتبہ رانی بیگم نے ہمیشہ ہو زمین پر گارڈی تو راجہ ہمندر را
بہت گھبر گیا۔ اور گارڈی کو شتش کے بعد اس کو ہوتھیں میں لائکنے لگا۔
راجہ پر یہ جی۔ کیوں اس قدر نکل کر لی ہو؟ چھا جاؤں کی تقدیر میں لائکا تھا گیا اب
ملنے والوں کو چھوڑ دو اس کے تلاش کریںکی نکر کرو۔ اس جیاری کو تو یہ ایک ایک گھری
سال کے برابر گندلی ہو گی معلوم نہیں کس جیبت میں ہے۔ (اوھر ادھر دیکھ کر
ہیں بُونہ کہاں گئی؟) اوپ اتھاری گھبراہٹ میں سُ کی بھی کسی نے خبر
نہیں میں!

ملنی۔ (رسد آہ بھرات کا گر) سو ای جی! سیرے کچھ اضطیار میں نہیں۔ جب
عکلو اپنی بہ سلوکی جو میں نے اجنا دیلوی کے ساتھ کی ہے یاد آتی ہے۔ تو
بے اضیاء ہو ہوں دھڑک کلیچ بڑک کر رہ جاتا ہے۔ اور سینے سے بخارات
ہیدا ہو مفرٹ کو چڑی سر کے پکر دے ہمیشہ کروتی ہیں تبے بس پہ باتی ہد

हाय! कोई भी ऐसा नहीं करता जैसा कि मैंने।”

राजा “प्रियजी! जो वक्त गुजर जाए दाना उसका फिक्र नहीं करते। बल्कि उससे तजुर्बा हासिल कर आइन्दा की एहतियात करते हैं।”

राजा अभी नजरिए को अच्छी तरह कहने ही नहीं पाया कि शोर गोगा की आवाज आई। मगर कुछ समझ में न आया कि ये क्या माजरा है। लेकिन हाँ सब के कान इस तरफ रुजू हो गए हैं और बड़ी हैरत से बाहर की तरफ देख रहे हैं कि इतने में एक ख्वास दोड़ती हई आई और कहने लगी “माताजी! अञ्जना आ गई है!”

गरचा इस बात को सुनते ही सब के चेहरों के रंग खुशी में तबदील हो गए हैं। मगर रानी के तो गोया मुर्दा जिस्म में जान ही पड़ गई है। वो देखिए कैसी जल्दी से उठकर कह रही है। “आई! कहाँ! मेरी प्यारी बेटी कहाँ है?”

इतने में अञ्जना सामने आती हुई नजर पड़ी। इस वक्त न जाने रानी के कमजोर बदन में ऐसी ताकत कहाँ से आ गई कि इस फुर्ती से कदम उठाया कि उसको (अञ्जना) को आगे बढ़ने की भी फर्सत न दी और गले से लगा रोती हुई नजर पड़ी।

आहा! इस वक्त तो हर एक आगे बढ़कर अज्जना का दर्द शरीक हो आंसू बहा रहा है। गानी कितुमती की लानत मलामत कर दिल के बुखार निकाल रहा है। और राजा प्रीति सर्या अज्जना की सर गजशत महेन्द्र राय को सना रहा है।

नाजरीन! अभी बहुत सी औरतें अज्जना देवी के इर्द गिर्द झुरमुट बांधे बैठी बातें कर रही थीं कि इतने में एक ख्वास में आनकर खबर दी कि राजा प्रह्लाद विद्याधर और रानी कितुमती आए हैं। ये सुनकर राजा प्रीति सूर्य और महेन्द्र राय तो उनकी पेशकदर्मी को आगे गए। रानी बेगमोहिनी और अज्जना देवी रानी कितुमती का इन्तजार महल में करने लगीं।

نے اسے اکوئی بھی تو ایسا نہیں کرتا۔ جیسا کہ میں نے !!
راجہ پریچی اب جو وقت گز رجاء سے دنا اس کا فکر نہیں کرتے۔ بلکہ اس سے
تجھے حصہ کرنے کا احتساب کرتے ہیں !۔

جیرہ حاصل ریزیدی اپنی درست بی۔
راجہ ابھی مس فقرے کو اچھی طرح کہنے ہی نہیں پایا کہ سور غونٹکی آواز آئی سگر
کچھ سمجھتیں تھیں کہ یہ کیا بجا رہے۔ لیکن نہ سب کے کان میں طرف جمع ہو گئے
ہیں اور بڑی حرمت سے باہ کی طرف ویکھ رہے ہیں کہ اتنے میں ایک خواص قدرتی
موری آئی اور کہنے لای۔ ملکی انجمنا بھی ہے۔

کوچک اس بات کو سنتے ہی سب کے چہروں کے رنگ خوشی میں تبدیل ہو گئے ہیں
گرامین کے لوگوں پر ایسا جسم میں جان پیدا گئی ہے وہ دیکھنے کی وجہ سے انھوں
کو سوتا ہے۔ آئے، آکیں! ہم سے یہ ساری ہمیشہ کہاں ہے؟

اپنے میں ابھننا سلہنے آئی ہوئی نظر پر بی۔ اس وقت ز جانے ملنے کے کفر دین
میں ایسی طاقت کہاں سے آگئی کہ اس بچھتی سے قدم اٹھایا کہ اس کو ابھننا
کو تو اگے بڑھنے کی بھی ذریت نہ دی اور اسکے سے لکھاروئی ہوئی نظر پر بی۔ تھا!
اس وقت توہراں ایک آگے بڑھکر ابھننا کا درود شریک ہوا انسو بہار نہیں ہے انی
کیتھوئی کو لعنت دامت کر دل کے بجان بنا کالا ہے! اور راج پسلی سوریا
ابھننا کو سے گذشت جمندہ رلے سے کوئی نہ ہے۔

بھی اسی درجہ پر ملے جائیں۔ ابھی دلوی کے ارد گرد جگہ سٹ باندھے
تھا تھیں اور اپنے بھائی قصیر کا تھے سی ایک خواص نے انکو خبر دی کہ راجہ پر حملہ
بھیجی ہے اسی کی خبری تھیں کہ اتنے سی ایک خواص نے انکو خبر دی کہ راجہ پر حملہ
ویا وھر اور راتی لیتو متی آئے ہیں۔ یہ سن کر راجہ پری سور یا در جہندار
تو ان کی پیشقدمی کو آگے گئے۔ یاں میاں گ مونہنی بڑا بخنا دیلوی رانی
لیتو متی کا نظر اعلیٰ ہیں کرنے لگیں۔

ज्योंहि रानी ने कदम दहलीज पर रखा अञ्जना उसके पाँव पर गिर पड़ी और बड़ी आजजी (विनप्रता) से बोली।

अज्जना “आज का दिन कैसा मुबारक है कि मैं आप के दर्शन कर रही हूँ। माताजी! आप अच्छी तरह तो हैं?”

अञ्जना देवी की बातें सुनकर रानी कुतुमती शर्मिन्दा सी हो गई। शरम से आँखे नीचे को झुक गई। बदन में काटो तो खून नाम को नहीं रहा। दिल में मौत को तरजीह (चुन) दे रही है। और अपनी बदसलूकियाँ याद आ खामोशी का कूफल लगा रही है। जवाब दे तो क्योंकर!

नोट नाजरीन! देखिए रानी कितुमती क्यों इस कदर शर्मिन्दा हो जिन्दगी से मौत को तरजीह दे रही है। क्या अब अब्जना या उसके वालदैन ने उसको कुछ कहा है? नहीं ये इसकी खुद अपनी ही कम फहमी का **खमरा** है जिसने इसकी गर्दन को झुका, मुँह को छुपा रखा है जो हर इन्सान इसको लानत मलामत कर शर्मिन्दा कर रहा है। आँखे सामने होने से गुरेज (बचना) करती हैं। जबान हमकलाम होने से शर्म जानती है। मगर ये सब कुछ क्यों? एक बात के न सोचने का नतीजा है इसलिए प्यारे नाजरीन जो काम सोच विचार कर किया जाए **ख्वाह** उसका अंजाम अच्छा हो या बुरा मगर इस कदर रंज नहीं आता जैसा कि देख रहे हो।

शाबाश अञ्जना तुझको और सदजमत तेरी वालदा को जिसकी गोद मे तूने परवरिश पाई और जिससे इन्सानियत के जोहर सीखे। बावजूद इसके कि रानी कितुनती ही तुम्हारी सब मुसीबतों का बाइश हुई मगर तुमने उन बातों की कुछ भी परवाह न कर इसीके पाँव पर सर को रखकर बतला दिया कि इन्सान में कहाँ तक बरदाश्त करने की ताकत मौजद है।

इसे आजकल की मस्तोरातो (औरतो) तुम भी जरा विचारो और अञ्जना की तकलीफ का मुकाबला कर के देखो। अगर तुम में से कोई होती तो जब तक बाल बाल न उखाड़ लेती कभी चैन न पड़ता। गृहिणी **जाहलाज** है दुरुस्त नहीं जो कोई कमअक्ली के बाइश तुमसे बदसलूकी करे उसको समझाने की कोशिश करो और नरमी से काम लो। तुम्हारा ये बरताव उसको वो सदमा पहुँचा सकता है जो दूसरी तरह बिल्कुल नामुकिन और **गैरदई** है।

بیوںی سلسلے کے قدم دہنیز پر کھا بخنا اُس کے پاؤں پر گرپی اور ٹبری عاجزی سے بولی۔

انجمن - آج کا دن کیسا مبارک ہے کہ میں آپ کے درشن کر رہی ہوں۔

ما راجی! آپ اچھی طرح توہین؟
 انجمنا دیلوی کی باتیں سُنکر رانی کی تیمورتی شرمندہ سی ہو گئی۔ شرم سے سخیز
 یچے کو جھک گئیں۔ بہن میں کاٹو تو خون نام کوہنیں رہا۔ ادل میں موت کو تیرج
 دے رہی ہے اور پانچ بدر سلوکیاں یاد آخو شی کا فضل بخاری میں جواب دے
 تو کیوں نہ ॥

لوٹ سنائیں دیکھ لالی کیتمو تی کیوں اس قدر خشنہ ہو زندگی سے موت کر تجویز دے
بھی ہے کیا اسچن باؤس کے دل میں نے اس کو کچھ کہا ہے ؟ نہیں ایس کی خود اپنی بھی
اک فہمی کافی ہے میں نے اس کی گدن کو جھکا مٹھ کو جھپٹا رکھ لئے ہے جو سڑان ان اس کو
اغتہ عالمت کر شرم دہ کر رہا ہے۔ آجھیں سلسلہ ہوئے سے اگر یہ کبیں میں زبان ہمکام
ہوئے سے ترم جانتی ہے مگری سب کچھ کیوں ؟ ایک بات کے نسخے کا تبیخ ہے
اس سلسلہ پر ناظرین جو کام سچ و حار کیا جا کے خواہ اس کا انجام اچھا ہو یا برا لگا مقدار
رخ نہیں آتا ایسا کہ دیکھ رہے ہو !! شاپش اجھا نہ کو او رصد محنت تری دالہ کو جکی
گوہیں تو نے پرہنس بائی لو جس سے انسانیت کے جوہر سکھے اب وجود کے کرائی کیتمو تی
ہی تھارڈی سب میتوں کا باغتہ جوئی سکر تھم نے ان باتوں کی کچھ بھی پر وہا کر اسی کے
باوں پر کوکھار تلا دا کر اف ان میں کھاتا تک برداشت کرنے کی طاقت سر جوہ سے۔

अज्जना हाथ जोड़कर “माताजी! आप क्यों नहीं बोलती? मेरा कसूर माफ कर दें। मैं आपकी लौंडी हूँ बगैर आपके कोई सहारा नहीं रखती।”

कितुमती बड़ी नरम आवाज से “तेरा कुछ कसूर नहीं बल्कि मैं तेरी गुनहगार हूँ। हाय! तेरी मुसीबत का बाइश मैं ही बदनसीब हूँ।”

अज्जना “आप इस सब बात की कुछ फिक्र न करें। आपके कुछ इखितयार नहीं। ये सब मेरे ही पूर्वले कर्मों का फल है। माताजी! जरा गौर तो किजिए” वालदा की तरफ इशारा करके “ये मेरी वालदा खड़ी हैं। मैंने क्या किसी ने भी इनकी पेशानी पर बल पड़े हुए कभी नहीं देखे और रहम दिल भी ऐसी है कि जरा सा किसी को तकलीफ मे देखने से बेचैन हो जाती हैं। मगर अफसोस मेरे पूर्वले कर्म ऐसे बुरे थे कि मुझको भूखी प्यासी देखकर भी इनको रहम न आया और शहर से बाहर निकाल दिया। मैं सच कहती हूँ। मेरा अफसोस किसी पर नहीं सिर्फ अपने ही कर्मों का दोष है।”

जब अञ्जना ने इस तरह कहा तो सब की आँखों से आंसू निकल पड़े। तब बसन्तमाला मेरे कहा

बसन्तमाला “अब रोने से क्या हासिल है। अच्छा! जो होना था सो हो गया। अब” हनुमान को आगे करके “ये देखो ईश्वर ने तुमको वो लाल दिया है जिसके बास्ते हर एक भटक रहा है।”

ये कहकर रानी कितुमती की गोद में उसको दे दिया और चुटकी बजा कहने लगी “बेटा बजरंगी! नानी दादी दोनों की खूब खबर लो।” बसन्तमाला की चुटकी सुनते ही हमारा बहादुर जरनैल हँस पड़ा। आहा! उसका मुस्कराना क्या है जादू है कि जिसने सबको अपनी तरफ रुजू कर लिया है। इस वक्त तो रंज इस घर से ऐसे भागा जैसे रोशनी से अंधेरा। रानी कितुमती और बेगमोहिनी के चेहरों से तो मालूम होता है

انجمن-دانندجہ جوڑک راتا جی! اپنے کیوں نہیں بلوتی سیر اقصوں معاف کر دیں
اپنی لونڈی ہوں۔ بغیر کہ کسکے کوئی سہما رائین رکھتی!
کیتوتی رہڑی زرم آؤ رہتے تیر کا کچھ صور نہیں بلکہ میں تیری گنہگار ہوں!
میں اپنے یہی یہست کا باعث من ہی بدلفیٹ ہوں!

انجنا۔ آپ اس بات کی کچھ فکر نہیں۔ آپ کے کچھ اقتیا نہیں۔ یہ سب میرے
تھے پورے کرموں کا بیٹل ہے۔ ناتھی اور انغور تو کچھ کردار کی طفاف شارہ
کر کے ایہ سیری والدہ کھڑی ہیں۔ میں نے میا کسی نے بھی انکی پیشانی پر مل پڑے
ہوئے کبھی نہیں دیکھے۔ اور حرمہ ان بھی ایسی ہیں کہ زراسکی کو تکلف میں نیکھنے
سے بے پیش ہو جاتی ہیں۔ مگر افسوس میرے پورے بیٹے کو مر لیے ہوئے تھے کہ مجبو
بھوکھی پیاسی دیکھ کر بھی ان کو حمّہ آیا اور شہر سے باہر بکالا بیا ایں پچھا نہیں ہوں
میر افسوس کسی پر نہیں صرف ایسی بھی کرموں کا دو شے ہے۔
جب انجنا نے اس طرح کہا تو سب کی رنگخواں سے ہننو محل پڑے تب لہت
بالا۔

بُسْتَ مَالًا۔ اب روئے سے کیا حاصل ہے۔ ایکھا اجو مہونا تھا سو بھی
اب (مہنواں) کو آگے کر کے اپر دیکھو ایش ورنے نہ کروہ لحل دیا ہے جس کے
وہ سطہ را کھلپتا رہا ہے۔

یہ کمک رانی کیتھو متی کی گود میں اس کو دیدیا اور جنگی بجا کہتے کی۔ بیٹا بچ جنمی نانی
ڈاوی وہ نوں کی خوب خبر لو۔ ”بست مالا کی جنگی شستے ہی ہمارا بہاوجھ نیں
ہنس پڑا۔ آئا! اس کا سکرا ناکیا ہے جادو ہے کہ جس نے سب کو اپنی طرف
روحوں کر لیا ہے! اس وقت تو سچ اس گھرست ایسے بجا گا جیسے دشمنی سے
لندھیرا۔ راتی کیتھو متی اور بیگ موہنی کے چہروں سے تو حالمہو ہو لے ہے

کی تماام جہاں کی خوشی آج ان دونوں کے **درش** مें آرای है। अगर बेगमोहिनी لडके को लेती है तो कितुमती बेसब्री से इन्तजार करती दिखाई देती है। इत्फाक से रानी कितुमती प्यार कर रही थी कि हमारे बहादुर जरनैल की निगाह उसके कान पर पड़ी। जिसमें मालूम नहीं क्या ऐसा चमकदार जेवर पड़ा हुआ है कि जिस को देखते ही पकड़ लिया और उसे जोर से खीचा कि बेइखियार होकर रानी की चीख निकल गई। सब औरतें नीचे मुँह कर मुस्करा पड़ी। रानी शर्मिन्दा सी हो गई और अञ्जना देवी मुश्किल से उसका हाथ छुड़ा मुस्कराती हुई दूसरे दालान को जा रही है। और हम अपने ख्याल को लेकर जहाँ राजा महेन्द्र राय, प्रह्लाद विद्याधर और प्रीति सूर्या बैठे हैं, जाते हैं।

बाब (अध्याय) बीसवाँ क्या वो यहाँ नहीं आए

ओहो! यहाँ तो अञ्जना देवी ही की दास्तान छिड़ी हुई है। उसी का ही जिक्र हो रहा है। वो देखिए राजा महेन्द्र राय और प्रीति सूर्या कैसे बोल रहे हैं। मगर प्रह्लाद विद्याधर चुपचाप बैठा सर झुकाए इनकी बातें सुन रहा है। दिल में अपने आप को लानत मलामत कर कह रहा है अगर मैं रानी की बातों में न आता तो आज मुझको ये नदामत (शर्मिन्दगी) न उठानी पड़ती। इनके शिकवें बजा हैं क्योंकि हर एक **अमर** का जिम्मेदार मैं ही हूँ। रानी को कौन पूछता है। मैंने सख्त नादानी की, बेशक नादानी की। इतने में एक शख्स जिसके मुरझाए हुए **गर्द आलूदा** चेहरे और होंठों की

کی تماام جہاں کی خوشی آج ان دونوں के दरमें आयी है। अगर बीग मुहिनी जैसे कولती है तो कितुमती भै सहरनी से انتظार करती देखाई देती है।-
الافق سے رانی کیتومتی پسیدار ہر ہی تھی کہ جمارے بہادر جنپل کی سماجہ اس کے کان پر پڑی جس میں معلوم نہیں کیا ایسا چکدہ رزیور ٹراہو اسے کہ جس کو دیکھتے ہی پڑیں اور اس زور سے کھینچی کر بے اغصیا رہو کر رانی کی بخش خلگ کی اسے عورتیں نیچے نہ کر مسکرا پیں۔ رانی شرستہ سی ہو گئی۔ اور اسجا دیوی شکل سے اس کا نام تھا مسکرانی ہوئی وہ سرے دالان کو جاری ہے۔ اور حم اپنے خیال کو نے کر جہاں راجہ ہند در راستے پر حملہ دو ویا وھار پیلی جو یہاں بیٹھے ہیں بنتے ہیں۔-

باب بیسوال

کیا وہ یہاں نہیں آسے

اوہ یہاں تو اسجا دیوی ہی کی داستان چھڑی ہوئی ہے۔ اسی کا ہی ذکر ہو رہا ہے مودہ دیکھے سا ج ہند در راستے او سیلی سوریا کیسے بول رہے ہیں۔ گرر حملہ دو ویا وھار چپ چاپ بیٹھا سر جھکائے ائمہ ہاتھ مسن رہا ہے۔ دل میں اپنے آپ کو بعثت طامتہ کر کرہا ہے۔ مگر میں رانی کی ہاتون میں نہ آتا تو اچ بیکو ہند است ذاٹھانی ہوتی۔ ان کے شکوے سجاہیں۔ کیونکہ سہ لیک امر کا ذمہ دار میں ہی ہوں! رانی کو کون پوچھتا ہے؟ بیس فتنے سنت نہ اونی کی بیٹک نہ اونی کی!!!
انتہے میں لیک تھغیر جس سکھ جھاے ہے مسے گرداؤ وہ چھرے لہو ہوٹوں کی

खुशकी से मालूम होता है कि कहीं दूर से आ रहा है। आया और सर तसलीम **मखम** कर बड़ी हैरानगी से इधर उधर देख रहा है।

राजा प्रह्लाद विद्याधर इस **नोदारो** शख्स को देख कर बोला

प्रह्लाद विद्याधर “ऐं तुम कहाँ और पवन किधर है?”

नोदारो हैरानगी से “क्या वो यहाँ नहीं आए?”

राजा “क्या कहा? क्या तुमको मालूम नहीं? तुम उनके साथ थे।”

नोदारो “हाय! सितम हुआ। अब क्या करूँ?”

राजा बड़ी सोच में होकर “क्यों खैर तो है?”

आह! इन फिकरों ने सबको बदहवास कर दिया और बेसब्री से उसके जवाब का इन्तजार करने लगे।

नोदारो “महाराज! हम दोनों पशुमखा वन को अञ्जना देवी की तलाश में गए तो वहाँ पहुँचकर रात एक दरखत के नीचे बसर की। सुबह होते ही वो रफह हाजत को गए और फिर वापिस न आए। हर चंद तलाश किया मगर कुछ पता न मिला। तब मेरे दिल में ख्याल गुजरा कि अञ्जना देवी के मिल जाने के बाइश वो महेन्द्रपुर चले गए हैं। लेकिन हाय अफसोस! मेरा ख्याल गलत निकला।”

राजा “क्यों घबराते हो? पवन नादान नहीं, आज नहीं तो कल आ जाएगा। ज्यादातर जिसका फिक्र था वो तो आ ही गई है।”

नाजरीन! आप समझ तो गए होंगे कि ये **नोदारो** पवन का मंत्री है जो राजा का कलाम सुनकर हैरान हो कह रहा है।

मंत्री “क्या अञ्जना देवी आ गई?”

राजा “हाँ! वो तो हमारे से थोड़ी देर पहले आ गई थी!”

”
خُلی سے معلوم ہوتا ہے کہ کہیں دور سے آ رہا ہے۔ آیا اور سر تسلیم کر ڈبڑی
حیرانی سے اوہ راؤھر و یکھر نہیں ہے۔

راجہ پر ھلا دو یا وھر اس نووار و شخص کو دیکھ لے لوا۔

پر ھلا دو دیا وھر اس ایں بھم کہاں اور پیون کدھر ہے؟

نووار و حیرانی سے کیا اودھ بیہاں نہیں آئے؟

راجہ۔ کیا کہا ہے کیا تم کو معلوم نہیں تم ان کے ساتھ تھے!

نووار و حیرانی سے استھنہااب کیا کروں؟

راجہ۔ ڈبڑی سوچ یہ ہو کر کیوں حیرت ہے؟

آہ! اس فقرہ نے سب کو بہ جو اس کردیا اور بے صبری سے اُس کے جواب کا انتظار کرنے لگے۔

نووار و سنبھالا راجہم دو نوش پنچاہین کو انجنا دیوی کی تلاش میں گئے۔ تو وہاں پونچکراتا یاک درخت کے نیچے برسکی۔ صبح ہوتے ہی وہ رفع حاجت کو گئے۔ اور پھر واپس نہ آئے۔ اس ہر خوبی تلاش کیا گر کچھ پہنچ ملا۔ تب سیڑے دل میں خیال گزرا کہ انجنا دیوی کے مجاہنے کے باعث وہ مہمندر پور پلے گئے

ہیں بالیکن ہے افسوس میرا خیال غلط سکلا!

راجہ۔ کیوں گھبرتے ہو پیون نادان نہیں۔ آج نہیں کل آجائیگا۔ زیادہ تر جس کا فکر تھا وہ تو آہی گئی ہے۔

ناظرین! اپ سمجھنے کے ہوں گے کہ یہ نووار دیون کامنتری ہے جو راجہ کی کلام منکر جان ہو کہہ رہا ہے۔

منتری۔ کیا انجنا دیوی آگئی؟

راجہ۔ ہاں وہ تو ہمارے سے خاطری دی پہنچے آگئی تھی!

आह! इस बात को सुनते ही मंत्री निहायत परेशान हो देखता का देखता रह गया और कुछ जवाब न दे सका।

राजा “कहो चुप क्यों हो गए? तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उड़ता जा रहा है?”

मंत्री “महाराज! वो तो यहाँ आ गई मगर पवन का मिलना मुश्किल है। क्योंकि जंगल बड़ा वसीह है। अब उनको खबर होती क्योंकर हो?”

राजा “कोई फिक्र की बात नहीं। दो चार रोज तक खुद तलाश करके आ जाएगा।”

मंत्री “हाय! इस बात की तो कुछ परवाह नहीं। लेकिन मुझको तो रोना इस बात का है कि कहते थे अगर अञ्जना मिल गई तो बेहतर वरना मैं भी किसी को मुँह न दिखाऊँगा और इसी जंगल में अपनी जान पर खेल जाऊँगा।”

राजा “ऐं क्या कहा? जान पर खेल जाऊँगा!”

मंत्री “जी हाँ!”

इस छोटे से फिकरे ने राजा के दिल पर बिजली की तरह असर किया। कलेजा फडफडाया दिल घबरा गया। **हवास बाखता** हो आँखों में आंसू भर गए तो राजा महेन्द्र राय ने कहा।

राजा महेन्द्र राय “आप क्यों ऐसे बेचैन होते हैं? दिल को मजबूत कर हौसला रखो। अभी हम लोग तलाश कर उनका पता निकालेंगे। जहाँ होंगे वहाँ से लाएं। आप तसल्ली रखो।”

ये कहा और घोड़ों पर सवार हो फौरन तैयार हो गए। राजा प्रीति सूर्या ने हर एक से बताकीद कहा कि जिस शख्स को पवनजी मिल जाए वही अपना निशान बुलन्द कर दे ताकि दूसरे इस फिक्र से निजात पाएँ। ये कहा और घोड़ों को सरपट डाल दिया और देखते देखते नजरों से गायब हो गए।

पशुमखा वन में पहुच हर एक **जान फेशानी** से जुस्तजू करने लगा मगर अफसोस दिल की

اہ! اس बात को स्तंष्ट ही मंत्री हनियत پरिणाम दिखाकर बिचारा गया। और क्षेत्रपल ने दे सका।

राजे—क्षेत्रपल क्यों हो गए? तमहासे जहां कारंग कियों कियों। और क्षेत्रपल मंत्री—मंहाराज! वह तो यहाँ आ गई अग्रियों कामना शक्ति है क्योंकि जंगल ब्राह्मण है। अब उनको जहां क्योंकर हो?

राजे—कोई फ़लकी बात नहीं। वह जारी रहने के लिए खोला दिया गया।

मंत्री—है! ऐसी बात की तो क्षेत्रपल वह नहीं। लेकिन खबूल तो रोना ऐसी बात है कि वह है तो आज जन्मली तो वह वर्ष में बही क्यी क्योंकि वह देखा और खेला। और ऐसी खेल में ऐसी जान बर्खी हो जाएगी।

राजे—ऐसी क्या है? जान बर्खी हो जाएगी।

मंत्री—जी! हाँ।

ऐसी खेल से वर्षे राजे के दिल पर खेली की तरह रथ किया। क्षेत्रपल याद ले गये। वह अपने दोनों हाथों में बहर गये। तो राजे महेन्द्र राय ने कहा। राजे महेन्द्र राय—आप क्यों हो रहे हैं? आप यहाँ जाने वाले हैं। दिल को खेल देकर खो देकर आप लाश कर आने का पीछा न करिए। जहाँ हो गए वहाँ से लाईं गए। आप लाईं गए।

ये कहा और गहराव पर सوار हो गया। तार हो गये। राजे पर्ती सूर्याले हराकी से बिक्कीद कहाँ जैश न कियों। जी भजायें दी आपान्त बिन्द कर दे। ताकि दूसरे आप फ़लकी से जात पाएँ। ये कहा और गहराव को सरपट डाल दिया। और बिक्की दिक्कत न देखो।

पशुमखावन में पूर्ण राकी जालकाली से जित्यो करने लगा। ग़रान्फ़ोस दिल की

مُرآد کسی کی پوری نہ ہوئی۔

दुसरे रोज दोपहर के बाद एक जगह से धुएँ के गुब्बार निकलते हुए दिखाई दिए जिनको देखकर सबको गुमान आबादी का हुआ तो उस तरफ घोड़ों को डाल दिया। नाजरीन! हम तो इन लोगों के पीछे पीछे चले आए हैं। और महल का कुछ हाल मालूम नहीं कि उन बेचारियों पर इस खबर के सुनने से क्या गुजरी।

आह! इस खबर ने तो यहाँ गजब ही कर दिया हुआ है। उसी घर में जिसमें अभी हँस हँस कर बातें हो रही थी मातमी फर्श बिछा खामोशी का कूफल (ताला) लगा रखा है। आए दिन की मुसीबत को देख सबके चेहरे पर उदासी की घटा छा रही है। और बाजों की आँखों से तो आंसू भी गिर रहे हैं। लेकिन रानी कितुमती की आँखें तो अब नू बहार की तरह बरस रही हैं।

ओहो! जरा अज्जना की तरफ तो देखना बाहर से कैसी हँसती हुई आ रही है। और अब इस खबर को सुनते ही आँखों में अंधेरा छा गया। खून रगो में खुशक हो दिल धड़क उठा। और कलेजा झिझक कर सीने में दब गया। जहाँ खड़ी थी वहीं खड़ी रह गई है। अब इसकी **वजा ख्वादाब** हो के बेखुदी के आलम में इसके हाथ पाँव फूल गए हों या उस वक्त की बढ़ी हुई हसरत ने इसके पाँव जमीन में गाढ़ दिए हों। आखिर कुछ ही क्यों न हो मगर इन बातों को सुनकर वो एक कदम भी आगे न बढ़ा सकी। और सकते के आलम में वहीं ठिठक कर रह गई। और कई तरह के ख्याल पैदा हो बेचैन करने लगे।

مراد کسی کی پوری نہ ہوئی۔

दوسرا سے روز दोपहर के بعد एक چک्र से دھूमिं कے غبار لختे ہوئے دکھائی دے جن کو دیکھا ربِ کو گمان آبادی کا ہوا می طرف لھوڑ دل کو ڈال دیا۔

ناظرین! ہم تو ان لوگوں کے پچھے پچھے چلے آئے ہیں۔ اور محل کا کچھ حال جلوہ میں کہاں جیسا روشن پراس خبر کے سنتے سے کیا گذری ب-

اہ! اس خبرتے تو یہاں غصب ہی کر دیا ہوا ہے! اسی گھر میں جس میں ابھی ہنس ہنس کر باتیں ہو رہی تھیں، اتھی فرش بچھا خموشی کا قفل بگار کھا ہے۔ آئے دن کی صیہت کو دیکھ سب کے چہروں پر ادا میں کی گھٹا چھار سی ہے۔ اور بعضوں کی آنکھوں سے تو انسو محی گر رہے ہیں۔ لیکن رانی لیدی سوتی کی آنکھیں تو اپنے یہاں کی طرح رس بھی میں

اوہوا ذرا انجنی کی طرف نو دیکھنا باہر سے کیسی مشتی ہوئی آرہی ہے اور اس فخر کو سنتے ہی آنکھوں میں اندر چھا گا۔ خون گوں میں خشک ہو دل دھڑک اگھٹا اور کلپی بھیک کر سینے میں دب گیا۔ جہاں کھڑی تھی وہیں کھڑی رہ گئی ہے۔

اب اس کی دچھنواجی ہو کے بنخودی کے عالم میں اُس کے ماتھے پاؤں چھوٹے ہو یا اُس وقت کی بڑی بھولی حسرت نے اُس कے پاؤں زمین میں پاڑ دیئے ہوں۔

آخر کچھ بھی کیوں نہ ہو۔ مگر ان باؤں کو سُنْکَرَدہ ایک قدم بھی آگے نہ بڑھاسکی۔ اور سکتے کے عالم میں ہریں ٹھٹک کر رہ گئی۔ اور کئی طرح کے خیال پیدا ہو جے ہمیں کرنے لگے!!!

بَابِ (अध्याय) इक्कीसवाँ

हे प्राणनाथ तुम कहाँ हो

करीब आधी रात का वक्त होगा जबकि अंधेरी रात ने अपने चारों दामन फैला
पशुमखा वन की डरावनी शक्ति को और भी आरास्ता (अलंकृत) कर रखा है।
इन्सान तो दिन में ही बहुत कम नजर आते थे मगर खूंखार दरिद्रे और परिदेशुमार
थे। लेकिन इस वक्त वो भी **मोदहारे** जोगी की तरह बेखबर पड़े हैं। हाँ कभी कभी
मनहूस उल्लू शोर मचाने लग जाता है। या हवा फरटि भरती हुई सुनाई देती है जिसको
सुनकर दिल और सहम जाता है। इस हालत में अगर कुछ सहारा है तो सिर्फ
आसमान पर तारों को देखने से। मगर **कुजरफतार** फलक को ये भी नागवार गुजरा कि
स्याह बादल तमाम आसमान पर छा गए और अंधेरा घटाटोप हो गया। लेकिन आप
जानते हैं कि जो सच्चे दिल से नेकी करने पर कमर बांध लेते हैं चाहे कितनी रुकावटे
उनके आगे क्यों न आये वो अपने झारदे से बाज नहीं रहते। इसी तरह इस वक्त बहादुर
तारों ने रहम को छोड़ना मुनासिब ख्याल नहीं किया और बेशकीमती अबर में सुराख
कर मायूस दिलों को तस्कीन देना शुरू कर दिया।

आह! इस वक्त तो दिन के अंधेरे उल्लू ने भी न जाने क्या सोचकर खामोशी इखितयार
कर ली है। मगर हवा के फरटि बराबर सुनाई देते हैं। या एक जुल्म **सीढ़ी** औरत के
रोने की आवाज आ रही है। उफ! इसको तो अपनी जान भी अजीज नहीं जो इस वक्त
इस वीरान सुनसान जंगल में बेचैन हो रो रही है। ये जरूर कोई न कोई सख्त मुसीबत
जदा है जो इस तरह के विलाप कर कह रही है।

بَابِ الْمِسْوَالِ

”ہے پرانا تاثر حکم کہاں ہو“

قریب اونچی رات का وقت ہو گا جبکہ اندر یہ رات نے اپنے چاروں دامن
چھلاپتے کھابن کیلو فنی سکل کو اونچی آرستہ کر گھلے ہے۔ انسان تو دن میں یہ
بہت کم لفڑاتे تھے سُکر خونخوار دندے اور پرندے بیٹھا رہتے۔ لیکن ہر وقت
وہ بھی ہوں دار مسے جگی کی طرح بے خبر پڑے ہیں اباں کبھی بھی خوس اللہ سور
چکنے لگ جاتا ہے۔ یا ہوا پھر اپنے بھرتی ہوئی سنہائی دیتی ہے جس کو
شکر دل اور سہم جاتا ہے۔ اس حالت میں اگر کچھ سہما رہے تو صرف انسان
پر ناروں کو دیکھنے سے مگر فقار خلاں کو یعنی ناگ اور گزرا کے سیاہ بادل تمام
انسان پر چھا گئے اور اندر یہ حکماٹ پ ہو گیا بلکن اپنے جانتے ہیں کہ جو سچے دل
ہے نیکی کرنے پر کہ باندھ دیتے ہیں۔ چاہے کتنی روکا وڈیں اُن کے آگے کیوں
نہ ہیں وہ اپنے ارادے سے باز نہیں رہتے۔ اسی طرح اس وقت ہبہا در
ناروں نے حکم کو چھوڑنے مناسب خیال نہیں کیا اور بیش قیمتی ابر میں سعلج
کر ہاں وہوں کو قلسین دینا شروع کر دیا۔

آہ! اس وقت تو دن کے اندھے داؤ میں بھی نہ جاتے کیا سوچکر خاموشی انتیار
کر لی ہے۔ مگر ہوا کے چھرائے برابر سنہائی دیتے ہیں۔ یا ایک خللم سیمہ
عورت کے روتے کی آواز آرہی ہے۔ اوف! اس کو تو اپنی جان بھی عزیز
نہیں جو اس وقت اس دیران سنسان جنگل میں بے صین ہو رہی ہے۔
یہ حذر و کوئی رنگوںی سخت مصیبت زده ہے جو اس طرح نے دلاب کر کر رہی ہے۔

“हे प्राणनाथ! तुम कहाँ हो? मेरे नयन चकोर की तरह आपके दर्शन को तरस रहे हैं। कृपा कर चाँद सा मुखड़ा दिखा इन को तस्कीन दो। हाय! आप के दिल में ऐसी बाते क्यों आ गई? स्वामीजी मृद्गको बगैर आपके और कर्दोई सहारा नहीं।”

आह! अज्जना को तो हम महल में छोड आए हैं ये दूसरी मुसीबत जदा कौन है चलो जरा मालूम तो करे जमाने की गर्दिश ने कौन सा ऐसा सलूक इससे किया है जिसने इसको यहाँ तक पहुचाया है।

ऐं ये तो वही मुसीबत की मारी अज्जना देवी ही है जो अपने खाविन्द का हाल सुनकर सब्र न कर सकी और किसी पर यकीन न कर खुद तलाश करती हुई यहाँ पहुँची है।

शाबाश अज्जना तुझको! पतिव्रता इसी को कहते हैं कि अजीज जान और खौफनाक जंगल की भी कुछ परवाह नहीं की और घर से **बेसरोसामान** निकल पड़ी है। ईश्वर तेरी मुराद **बरतावे**

प्यारे नाजरीन! रात के पहले हिस्से की बाबत तो हम कह नहीं सकते। लेकिन आधी रात से लेकर जब तक सुबह की सफेदी ने अपना सुख्ख नकाब चेहरे से दूर नहीं किया इसकी **आहोजारी** की आवाज बराबर आ रही है। मगर अब तो जहाँ गुंजान झाड़ियाँ दिखाई देती हैं एक एक जगह तो दीवानों की तरह दस दस दफह पड़ताल करती और कहती जा रही है।

“ऐ परिंदो मेरे हाल पर तुम ही तरस करो और मेरे प्रणाथ को देखा हो तो बताओ! ऐ जंगली दरख्तों तुम बसबब ऊँचाई के सब कुछ देखते हो स्वामीजी का पता तुम ही बताओ। ऐ पहाड़ की बुलन्द चोटियो ईश्वर तुमको हमेशा सरसब्ज रखे मेरे हाल पर तुम ही दया करो। हाय! कोई भी जवाब नहीं देता। सच है मुसीबत का कोई भी साथी नहीं होता।”

ہے پران ناچھے انتم کہاں ہو؟ میرے سین جکور کی طرح آپ کے دشمن کو ترسن ہے
میں کس کارچاند سامکھڑا دکھا۔ ران کو نسلکیں دو بنا کے ہا اپنے دل میں الیخی ہیں
کیوں اگزیں۔ سو امی جبی! مخلوق بغیر آپ کے اور کوئی سہما نہیں ہے!
آہ! اب بخی کو تو ہم محل میں چھوڑا سے میں یہ دوسرا مصیبت زدہ کون ہے
چلوڑا معلوم تو کریں زمانہ کی گردش نے کوتا ایسا سلوک اس سے کیا ہے
جس نے اس کو بیٹا شک پوچھایا ہے!
ایں! یہ زدہ مصیبت کی ماری اب خنا دلیوی ہی ہے جو اپنے خاوند کا حال
ستکھا صبر بر کر سکی اور کسی پر لقین مذکروں ملاش کی جعل بیہاں پوچھی ہے
شا باش اب خنا تجکو اپنی برتاؤسی کو کہتے ہیں کہ عزیز جہاں اور غافل خنکل کی بھی
کچھ پرواہ نہیں کی اور کھر سے بے سرو سامان محل پڑی ہے۔ ایشور تیری
صراد برلاوس!

پیار سے ناظرین اسات کے پہنچے حصہ کی یادت تو ہم کہہ سکتے۔ لیکن
اُدھری رات سے لیکا مجدد جمع کی سفیدی نے اپنا سارخ نقاب چھڑھ سے دور
نہیں کیا۔ اس کی آہ زاری کی آواز بذرگ آرہی ہے۔ گراب تو جہاں گنجائیں جھلیں
وکھاں کی دیتی ہیں ایک ایک حجاج کو دیلوں کی طرح دس دس دفعہ پتان کرنی
اور کتنی جارہی ہے۔

اے پرندو! میرے حال پر تم ہی ترس کرو۔ اور میرے پر ان ناکھر کو ویکھا
ہو تو بتا! اے جنگلی درختوں کم سبب اوچائی کے سب کچھ دیکھتے ہو۔ سو اسی وجہ
کا پتہ تم ہی بتاؤ! اے پہاڑ کی بلند چوٹیوں ایشور کم کو تھیشی سر سبز رکھ میرے
حال پر تم سی دیکھو۔ ہا ہے! اکوئی بھی جواب نہیں دتا! پچ ہے! بصیرت کا
کوئی بھی سماں ہی نہیں ہوتا۔

इस तरह तलाश करती और कहती जा रही है कि दरख्तों में से कुछ रोशनी सी नजर पड़ी और धुआँ उड़ता हुआ मालूम हुआ। जल्दी जल्दी कदम उठा उस तरफ को बढ़ी। थोड़ी दूर गई होगी कि आग के शोले निकलते हुए दिखाई दिए और पास ही एक आदमी खड़ा देखा। आह! अब तो निहायत हैरान हो बड़े गौर से उस तरफ देखती हुई जा रही है। चंद ही कदम और बढ़ी होगी कि उस शख्स को पहचान लिया और पहचानते ही गम का पहाड़ गिर पड़ा। कलेजा सम्भाला तो दिल बैठ गया दिल को हाथ मे लिया तो सर ने आसमान की तरह चक्कर खाया। आह! जब सर को पकड़ा तो पाँव डगमगाए। लेकिन वाह री मुहब्बत तूने सबको खाक में मिला अपना ही जोहर दिखाया। या तो अज्जना **हवास बाख्ता** परेशान यहाँ खड़ी दिखाई दे रही थी या **मकनाते** कि तरह पवन को चिमटी हुई कहती सुनाई दी अज्जना “हाय! ये क्या करने लगे हो स्वामीजी ऐसा न करो”

पवन “ऐं” पोछे को देखकर “प्रियजी तुम कहा!”
इतने में राजा प्रह्लाद विद्याधर ने आवाज दी
प्रह्लाद विद्याधर “बेटा! क्या करते हो? खबरदार ऐसा जुल्म न करना!”
महेन्द्र राय “ये बहादुरो का काम नहीं। होश करो शूरवीर ऐसा नहीं करते।”
गर्ज हर तरफ से इस किस्म की आवाजें आईं तो पवन उन सबको देख हैरान हो गया।
चंद मिनट मे वही जंगल खुशी के **नाहरों** से गूँज उठा। मुबारिक सलामत की आवाजें
आने लगी।

नाजरीन! जंगल में मंगल इसी को कहते हैं। देखिए ये वही जगह है जिसको थोड़ी देर बाद सब मनहस कहते और देखकर आह सर्द भरते, लेकिन अब सबसे यही

اس طرح نہاش کرتی اور لکھتی جا رہی ہے کہ درختوں میں سے کچھ روشنی سی نظر پڑی اور درختوں اور تماہوں معلوم ہوا۔ جلدی قدم انھاں سے طرف بڑھی تھوڑی دوری ہو گئی کہ اس کے شیعہ نکلتے ہوئے دکھانی ویسے اور اپنے یہ ایک آدمی کھڑا دیکھا۔ آہ اب توہینیت حیران ہو گئے غورتے اُس طرف دیکھتی ہوئی جا رہی ہے سچنے ہی قدم اور بڑھی ہو گئی کہ اس شخص کو حیان لیا۔ اور سچنے ہی عمر کا یہاں ڈرگ طراز کلید سنبھالا توہول ہیجھیک۔ دل کو ہاتھ میں لیا تو سر نے انسان کی طرح چل کر کھایا۔ آہ! جب سر کو بکھرا تو یادوں ڈگھائے ریکن داہری ای محبت اپنے سب کو خاک میں ملا پسی جوہر دکھایا۔ یا تو ابھی اوس باخت پریشان ہیمان کھڑی دکھانی دے رہی تھی یا مقفلہ میں کی طرح پوں کو چھپی صوبی کہمی مٹھائی دی!

اجھا۔ میںے! یہ کیا کرنے لگے ہو! سو اسی حی! ایسا نہ کر دی!!

پون۔ ایں رچھپے کو دیکھ کر پریوجی انگم کہاں؟

اسنے میں راجہ پر صلاد و دو یا وھر نے آواز دی۔

پیر حکماء و دیا و هر - بینا ایکیا کرنے ہو جو ردار ایس اٹھم رکرنا -
فہمند رکارے - یہ بہادروں کا کام نہیں - سو شش کرد اشو پر لیسانہیں
کرنے -

غرض پر طرف سے اسی قسم کی آوازیں آئیں تو یون ان سب کو دیکھ جیزاں
ہو رکیا۔ چند صد میں وہی جملی خوبی کے نزدیں سے گوش خاچا مبارک
سطراحت کی آوازیں آئیں تھیں۔

ظریں اچھیں ہیں مثلاً اسی کو کہتے ہیں۔ دیکھئے یہ دویں اچھوں ہستہ جس کو تھوڑی سر اور سب سے بھروسے کہتے اور دیکھ کر آہ سرد بھروسے۔ لیکن اب سب سے یہی

मुबारिक है। जहाँ सबके चेहरे जो थोड़ी देर पहले गमगीन और उदास नजर आते थे अब खिलखिलाते नजर आ रहे हैं। और हर एक का चेहरा मारे खुशी के सुर्ख हो रहा है। कोई पवन को गले से लगा कर पेशानी पर बोसा दे रहा है। कोई अञ्जना देवी की तरफ इशारा कर उसकी हिम्मत पर **अश अश** कर रहा है। एक चिता को देख मनहूस करार देता है। दूसरा इसके बर खिलाफ इसको मुबारिक ख्याल करता है क्योंकि इसके जरिए ही सबका इस जगह आना हुआ और पवन का सुराग मिला। राजा प्रीति सूर्या जो पास ही खड़ा है सुनिए क्या कह रहा है।

राजा प्रीति सूर्या इन लोगों की तरफ मुखातिब होकर “बेशक बेशक! यही दुरुस्त है। अगर धुआँ यहाँ से नमुदार (शुरु) न होता तो इस तरफ कोई भी न आता।” राजा महेन्द्र राय की तरफ देखकर “महेन्द्र! मेरी राय में यहाँ हवन किया जाए तो अच्छा है क्योंकि यही जगह मुबारिक है जहाँ सबकी मुराद **बर** आई, मुद्दत के रंजोगम दूर हुए।” राजा महेन्द्र राय “मैंने पहले ही **दीवानदर** को सामग्री^१ के वास्ते भेज दिया है। उंगली का इशारा करके “वो देखिए घोड़ा दौड़ाए जाता हुआ दरख्तों में से नजर आ रहा है।” थोड़े अरसे के बाद **दीवानदर** आ गया और हवन करना शुरू हो गया।

आहा! इस वक्त तमाम जंगल खुशबू से महक रहा है। बजाए उन दरिंदो की खौफनाक आवाजों के वेद मुक्कदस (पवित्र) के छन्दों की आवाज गूँज रही है। जिनको सुनकर हर एक का रुह खुश हो उस परब्रह्म परमात्मा का धन्यवाद कर रहा है। ओहो! जरा अञ्जना देवी को तो देखना, पवन को देख देख कर कैसी खुश हो रही है। इसका मुद्दतों का मुरझाया हुआ चेहरा इस वक्त किस कदर रौनक **पुर** नजर आता है।

^१ सामग्री याने हवन की चीजें

मारक है जहाँ सब के जहरे जो खुशी देर स्त्री उम्मीदें और दावों ने फ़ेर
अत्यन्त खुबानी खुलासा नेत्रायें और बढ़क जहार के सर्व जोर रहा है—कुली दून
को लेके से लाकर पृथिवी पर बोस दे रहा है कोई अंजना डियो जी त्रैष शार
कर्म की है तृष्ण उश कर रहा है—एक जैप को देख नमूस त्राव दिया है—दूर
से के बरखाफ एस को मारक खिला कर रहा है—कियोंकि इसी के दरीब से एस
एस खेजना हांडा और दून का सर्व उला—राज प्रति सूर यार जो बास ही करते हैं
श्वेत एक बहर रहा है—

राजधर्षति सूर या—दून लोगों की त्रैष नाम जी दूरीका! बिटक बिटक!
इसी दरस्त है—गर्व द्वारा यहाँ से नमूदार जूना तो एस त्रैष को यही
भी न आता राज महेन्द्र रैरासे की त्रैष रिक्खर अहेन्द्र रामिरी से मैं
यहाँ दून की जासे तो अचाहे—कियोंकि यही खेज मारक है जहाँ सीली
मराद बराई मृत के रुख दुख दर दूर हो गए—

राजधर्षति रैरासे—मैं खेजेही द्वारा नदर को सामरी के दास्ते
मैं खेज द्वारा है राम्पत्ति का अंशारह करके और खेजेही द्वारा से जहाँ द्वारा दिखूल
मैं से लेता रहा है—

त्रैष से उसके बुद्ध द्वारा आगी और दून का श्रूत दूर हो गी—
आका इस वक्त ताम गंगा जूनी बोस है—जूने अन दृद्दूल की
खोफाक आवाजों के दिद्दूल के चृण्डूल की आदर गूँज रही है—

जून को स्ट्रैकर एक का रुख खुशी हो इस पार ब्रह्म परामाकाद चबाद कर रहा है—
और दूरा अंजना डियो जी को देखना दून को देख देख कर किसी खुश हो रही
है—इस कामदूल का मरजाया है एजर्जे और एस वक्त की क्षमता दर दृष्टि पर नेत्रा रहा है—
ले सामरी यैन्होन की जीर्ण

देखिए वो गर्दन झुकाए इन सबसे अलग खड़ी है। और कभी कभी ऊँची नजर कर पवन की तरफ भी देख लेती है। जिससे मालूम होता है कि इस वक्त वो सब रंजोगम भूल उससे बात करना चाहती है। लेकिन इन सबको देखकर झिझक जाती है। जब हवन कर चुके तो घोड़ो पर सवार हो **खुनदानोशादा** वहाँ से रवाना हुए।

मौलिफ

शुभ दिन प्यारी अज्जना आज हुआ प्रकाश
गए बीत दिन विपत के हुआ दुखों का नाश
दुख उठाए इत धने सुने वचन अयोग
दिन दिन खुशियाँ माँ अब और बहोग खुशी के होग
सतवन्ती तू ना रहे शील **सबा** गुणवान
नहीं दोष किसी को तै दिया लिया भाग पूर्वला मान
धीरज राखी मन दुखे ईश्वर पर विश्वास
शुभ फल निश्चय पावेगी कहे जोड कर दास

बाब (अध्याय) बाइसवाँ

रत्नपुर

दिन का आखिरी पहर है जबकि रत्नपुर के मशरीकी दरवाजे के बाहर **मसीदा** में लोग **कशरत** से जमह हो रहे हैं। और अभी और भी इक्के बाद दिगरे (अन्य) आ रहे हैं। प्रधान रत्नवीर बडे **करोफर** से रोसाए शहर के साथ हँस कर बातें कर रहा था कि एक शख्स ने कहा—
एक “उफ! अज्जना देवी पर बड़ा जुल्म हुआ। कैसा झूठा **एहताम** लगाया गया।”
दूसरा “कुछ समझ में नहीं आता कि रानी कितुमती से क्योंकर गलती हुई वो तो

दिखते वे गर्दन झुकाए अन सब से लग कहरी है। और कभी कभी ओंची नظر
लगून की तरफ भी देखती है। जैसे معلوم होता है कि एस वक्त वे सब
रंज और गम भूल से बात करना जाहती है लेकिन अन सब को दिखते जुबक
जाती है।

जब होन कर लेके तो गुहों व प्रसार हो खदान व शादाव व बां से रवान
होते हैं।

مولف - ۵

شہزادे न पायरी अंजनांज बारकाश लग्ने बित दन बित के बोांकुन कृष्ण
देखते हैं एत लग्ने सुन्ने जैन आयोग दन न खशियाँ ल ब देखते हैं जैन आयोग
स्टोनी तो नारे शिल सबा गुनान नहिन वैस कैरने दिलाया बहाग बोला मान
देखर जही मन कै लियो प्रदश्वास शब्द चैल न शुच पायी कै है जो तरदास

بائب بایسواں

رتن پور

दन अंख लहर है जैकर रत्न पुर के मंश्री व रवाने के बाहर मिदान हीं लग
क्षरत से जम्ह हो रहे हैं। और अभी और भी यैके लेडी गर्से आ रहे हैं।
प्रधान रत्न बिरूरे के रुफ़से रुसासे शहर के सातहन्स नहिन कर
बातिन करना तुकाक लिक निप्स ने कहा।

एक— एफ बाजना डिलोसी पर ठाह्लम हो—सीसा ज्वुथा हिस्म लगायाग्या।—
दूसरा— कै कभी मैं नहिन आता—करानी क्लियोटी से क्योंकर लियी गलती होनी चाही

ऐसी दाना औरत हैं।”

तीसरा “लुक्फ़” तो यही है। और ज्यादातर ताजुब की ये बात है कि राजा इस तरफ़ कुछ मतवज्जा ही नहीं हुआ।”

चौथा “उसकी वजा मैं बतलाता हूँ और हकीकत में यही होगी चूँकि रानी कितुमती दानाई में बेनजीर हैं और आज तक कोई भी ऐसी बातें वकोई में नहीं आई जिससे किसी को शिकायत का मौका मिला हो। और यही सबब है जिसने राजा को मुगालते में डाला। वरना वो तो कभी इस धोखे में न आता।”

पाँचवाँ “जो कुछ आपने फरमाया दुरुस्त है। मगर ऐसी बातों पर जो दूसरे की तबाही का बाइश हो गौर करना लाजमी है ता वक्त ये के कि पूरे तौर पर इत्मिनान न हो जाए उन पर अमल करना इंसानियत से बाईद (दूर) है।”

रत्नवीर “किसी का कुछ कसूर नहीं। ये ललिता की आग लगाई हुई है जो रानी की बहुत मुँह चढ़ी थी। उसने रानी की अकल पर ऐसा पर्दा डाला और बदसन किया कि बिना लिहाज किसी तहकीकात करने के अज्जना को शहर बदर कर दिया।”

इस तरह की बातें कर ही रहे थे कि एक सवार घोड़ा दौड़ाता हुआ आया। और प्रधान से कुछ कहने की देर हुई कि सब लोग उठ खड़े हुए और शादियाँ बजने शुरू हो गए। ऐ! ये शादियाँ कैसे? और लोग क्यों खड़े हो गए हैं?

नाजरीन! वो देखिए चंद सवार आगे आगे घोड़ों को सरपट डाले आ रहे हैं। और उनके पीछे राजा प्रह्लाद विद्याधर और पवन वौहरा हैं जिनके इस्तकबाल के लिए ये सब लोग जमह हैं। और खुशी मनाई जा रही है।

वो लो! अब तो बिल्कुल करीब ही आ गए और घोड़ों को रोक उतर रहे हैं। राजा प्रह्लाद विद्याधर

تو आउरत है -
तीसरा - لطف तोहि है اور नियादे तर्जुब की यो बात है कि राजा इस तरफ़ कुछ
तोहि नहीं हो। -
चौथा - इस की वजह से बड़ा जुलूस और حقيقة में यही होगी - जो बड़कर इनी की विषयी
दानी भी बे नظير है - और जैक कोई भी यही बात वقوع में नहीं हाली जैसे
किसी कृषकायत का सूक्ष्म लाभ - और यही سبب है जिस से राजा को मुगालतें ढाला
वधे वह कभी इस धरोहर की यही रात है।

पाँचवाँ - जो जैक आप ने फ्रायाद दरसे बेखूफ़ी बालून पर जुदूसे की
तबायी का बायत होलू उग्र करनालारम है - नावीकर के पूरे खोप पर अत्मिनान न
मिजाये औन प्रसूल करनानायित से दूर है -

छठवाँ - क्यी कांजेर चुसोर नहीं - ये ललता की अग लगायी होली है जो रानी की है
मन्ध चूही चूही - इस से रानी की उचल प्राप्ति प्रदर्शन की लालच दलाली की
त्यक्तियाँ करने के अंजना की तरह बिरकरी है -

इस तरफ़ की बातें करती हैं कि यहाँ सोरकुहों और ताना होला और बुधान से
कुछ कैसी की दिये होली कर्स लोक लोहर से होते हैं - और शादियाँ ने जैसे शरण
बोगते हैं -

इस वाली शादियाँ कैसे? और ये लोक क्यों कहते हो गए हैं?

तालत्रिन और जैक जैन सोरागे आगे आगे के गुहों दून को सरपृष्ठ दाले आ रहे हैं -
और उन के जैक राजे पर चलाओ और विवर होलून विवर होलून जैन के शिविल
कहते ये लोक जैन हैं - और जैनी साली जारी है -

दो लो बाटो बाटक तर्जुब यही अग लोक लोहर दून को रुक करते हैं मिस राजे पर चलाओ और विवर

پہلے پر وھاں سے باقی کر لدیں سب سے خیر و علا فیض پوچھ رہے اور سیطح
پون بھی اپنی پریم ہری بالوں سے سب کو خوش کر رہا ہے۔

آنا! اسوقت کیا محمدہ نظارہ ہے کہ سب کے چہرے مارے خوشی کے سرخ
چور ہے ہیں۔ چھولوں کے نار پہنائے جا رہے ہیں اور تادیاں کی آواز اس
رونق کے جو بن کو اوصیہ بڑھا رہی ہے۔ اور انجنا دیلوی رقصیں بیٹھی ہوئی
اس نظارہ کو دیکھ کر ہر ہی ہے۔ ۵

دھن دن ہے یہ آج کا دھن تுڈاکو کرتا ر
نیکی بھی اس نگستے کا لا دیں ہیں دھا
تھا سمه وہ جہاں کھن کئی نپوچھن پا۔ بہاری جگدینش کے تھا جکاجی اور
یہ کہکڑا بارفاٹ ملن کے آگے سمجھا اس کاشکریہ ادا کر رہی ہے۔ اور ہمارے
بہادر ہنوبان جی ہجوم کو دیکھ دیکھ کر کیسے خوش ہر ہے ہیں۔ اور سکرا کر لوگوں
کو اپنی طرف متوجہ کر رہے ہیں۔

غرض ہی دھوم و دھام سے شہر میں داخل ہوئے رتن پور کا نظارہ اس وقت
کہ قابل دید ہے۔ جایجی شادیاں نج رہے ہیں۔ روشنی کا سانان دیکھ دیوالی کی
رات چلکی پکنی ہے۔ اگرچہ اس قدر خوشی کو دیکھ رج دعمن بھی حسد کی آگ میں ہلکر
بیست نا بود ہورتا ہے۔ سزا ہم رانی کی میومتی کو دیکھ کر یہ سمجھکا سے منع
چھپا سے رقصیں بیٹھی ہے۔ یہ کبھی! اپنی ناعاقت اندریشی پر پریستان ہو رہی ہے
اور بسلکیوں کو یاد کر خود بخوبی شرم رہی ہے۔ اگرچہ لوگوں کے چہروں کو دیکھنا
عمر جان سب کے پاؤں کی سیر کر رہی ہیں۔ شستہ وہ عورتیں جو سامنے اس سکان
شند پر ارسی میں کیا کہہ رہی ہیں یہ ۵

چلو سکھی اٹھو دیکھتے ہو ایک تو نک کیا
سائی نکی انجنا دھیوں میں جو شادے کنکنکاں ہو کیا زمیں
ساؤ شاپ

دھوا آئی انجنا باجے رہے سجا

۱ پوشک

پہلے پر وھاں سے باقی کر لدیں سب سے خیر و علا فیض پوچھ رہے اور سیطح
پون بھی اپنی پریم ہری بالوں سے سب کو خوش کر رہا ہے۔

آنا! اسوقت کیا محمدہ نظارہ ہے کہ سب کے چہرے مارے خوشی کے سرخ
چور ہے ہیں۔ چھولوں کے نار پہنائے جا رہے ہیں اور تادیاں کی آواز اس
رونق کے جو بن کو اوصیہ بڑھا رہی ہے۔ اور انجنا دیلوی رقصیں بیٹھی ہوئی
اس نظارہ کو دیکھ کر ہر ہی ہے۔ ۵

دھن دن، یہ آج کا دھن تھجکو کرتا ر
نیکی بھی اس نگستے کا لا دیں ہیں دھا
تھا سمه وہ جہاں کھن کئی نپوچھن پا۔ بہاری جگدینش کے تھا جکاجی اور
یہ کہکڑا بارفاٹ ملن کے آگے سمجھا اس کاشکریہ ادا کر رہی ہے۔ اور ہمارے
بہادر ہنوبان جی ہجوم کو دیکھ دیکھ کر کیسے خوش ہر ہے ہیں۔ اور سکرا کر لوگوں
کو اپنی طرف متوجہ کر رہے ہیں۔

غرض ہی دھوم و دھام سے شہر میں داخل ہوئے رتن پور کا نظارہ اس وقت
کہ قابل دید ہے۔ جایجی شادیاں نج رہے ہیں۔ روشنی کا سانان دیکھ دیوالی کی
رات چلکی پکنی ہے۔ اگرچہ اس قدر خوشی کو دیکھ رج دعمن بھی حسد کی آگ میں ہلکر
بیست نا بود ہورتا ہے۔ سزا ہم رانی کی میومتی کو دیکھ کر یہ سمجھکا سے منع
چھپا سے رقصیں بیٹھی ہے۔ یہ کبھی! اپنی ناعاقت اندریشی پر پریستان ہو رہی ہے
اور بسلکیوں کو یاد کر خود بخوبی شرم رہی ہے۔ اگرچہ لوگوں کے چہروں کو دیکھنا
عمر جان سب کے پاؤں کی سیر کر رہی ہیں۔ شستہ وہ عورتیں جو سامنے اس سکان
شند پر ارسی میں کیا کہہ رہی ہیں یہ ۵

چلو سکھی اٹھو دیکھتے ہو ایک تو نک کیا
سائی نکی انجنا دھیوں میں جو شادے کنکنکاں ہو کیا زمیں
ساؤ شاپ

बालक गोद सुहावे ता मस्तक चँद समान
धन धन तुझको अज्जना तेरा ईश्वर राखा मान
पवन की प्यारी देखो कैसा चढा उमंग
चले चाल गज मस्त की नयन **गोढ़ा** रंग
कितुमती न लाज से देखे सीस उठा
जीती है ये पापनी मेरी **नकिया** बस खा
चाह मुनी प्यारी कह गए कहो मुख से बात विचार
पहले गुण अवगुण पड़ताल कर जो पीछे हो ना हार
इस तरह की जा बजा बातें हो रही हैं। हर एक रानी को हिकारत की नजर से देख रहा
है। जब तक महल में दाखिल न हुई इन बातों का सिलसिला भी खत्म न हुआ।

बाब (अध्याय) तेइसवाँ

रानी कितृमती

सुबह का वक्त है रानी कितुमती अपने कमरे में सर झुकाए बैठी है। और कई तरह के ख्याल उसके दिमाग से उतर कलेजे को दबा रहे हैं जबान को बन्द कर रहे हैं। अज्जना देवी की हाजिजाना गुफ्तगू कानों में गूँज रही है। और अपनी बदसलूकियों को याद कर दिल में कह रही है। “उफ! मैंने बेकसूर अज्जना को क्यों ऐसे सख्त अल्फाज कहे? क्यों उसकी बेहुरमती का बाइशा हुई? वो तो एक पारसा (पवित्र) और नेकबख्त लड़की है। मैं क्यों उससे बदगुमान हो गई?” कुछ सकूत के बाद “हाय! ललिता! तेरा सत्यानाश हो। तूने ही मुझको उससे गुमराह कर खाक में मिलाया।” फिर खुदही “मैं खुद बेवकूफ हूँ जिसने तेरी बातों पर यकीन कर बेचारी अज्जना को निकाल दिया।” कुछ सोचकर “बस अब मुझको यही लाजिम है कि लोगों के दिलों से इस शिकायत को रफह करने की कोशिश करँ। जहाँ तक हो सके अज्जना को खुश रखूँ और घर के इन्तजाम में दखल न दँ। वो जाने और घरा वो बड़ी लायक है।”

دھن عن تکلو انجمنا تیرالشہر الکھان
 چلے چال گست کی میں ٹوڑھارنگ
 جنتی ہے یہ پانی مری نکیوں بس کھا
 پس کون دنگن برناں کرو ججھے ہونہ نار
 اس طرح کی جا بجا باقیں ہوئی ہیں۔ ہر ایک راتی کو حقارت کی نظر سے دیکھ رہا ہے
 جسٹا کمل ہیں داخل نہ ہوئی ان یا توں کا سلسہ یعنی ختم نہ ہوا۔
 ڈاک گو دسواد نامستاک چند سماں
 یون کو پیاری دیکھو کیسا چڑھا منگ
 اپیتوتی نالج سے دیکھے سیں اٹھا!
 پاچ تکی پیاری لہنے کو مکھ سے بات و چار

باب سیموال

صحح کا دقت ہے لانی کیتیو متی اپنے کمرہ میں سر جھنجھاٹے بُھی ہے۔ اور کسی طرح کے خیال اُس کے دامغ سے اور کلکچر کو مبارہ ہے میں زبان کو بندرگائے ہیں۔ اجنبنا دیوی کی عاجز از گفتگو کا نون میں گوئی رہی ہے۔ اول پنی سلسلہ پیغمبر و مولیٰ میں کہہ رہی ہے۔ اوف امیں نہیں بے قصور اجنبنا کو کیوں لیے سخت الافتاظ کہتے؟ کیوں اُس کی حیرتی کا باعث ہوئی دہ تو ایک پارسا اور نیک بخت رواک ہے میں کیوں اُس سے بدگمان بُوگی اور کچھ سکوت کے بعد ہاتے؟ اللہ تیرستیا ناس ہو۔ توفیق ہی تجکو اُس سے گمراہ کرناک میں ملایا رچھڑو ہی میں خود بیوقوف ہوں جس نے تیرتی بات پر یقین کر بجا رہی اجنبنا کو سکال دیا رکھو جو چکی بس اب بھجوئی لازم ہے کہ لوگوں کے دلوں سے اس نکایت کو رفع کرنے کی کوشش کروں جب تک ہو سکے اجنبنا کو خوش رکھوں اور لکھ کر منتظام میں داخلہ نہ دوں وہ جانتے اور لکھوادہ بڑی لایت ہے؟

इतने में अञ्जना देवी संध्या उपासना कर रानी के कमरे में आई और उसके पाँव पर सर को रखकर बोली।

अञ्जना ‘माताजी! फरमाइए दुश्मनों की तबीयत क्यों परेशान हो रही है? ये कैसी उदासी छा रही है? अगर कुछ मेरे लायक खिदमत हो तो इरशाद किजिए। लौंडी बसरोचश्म हाजिर है।’

रानी खुश होकर “बेटी कोई परेशानी नहीं और न ही किसी बात का ख्याल है। ईश्वर ने जब तुम्हारी जैसी लायक बहु दी है तो फिर मुझको उदासी कैसी और फिक्र क्यों हो। हाँ एक बात है जो कभी कभी बदन मे टीस सी मारती है, दिल को बिगाड़ती है। वो ये कि उम्र मेरी ज्यादा हो गई है और जिस्म कमजोर पड़ गया है। मुझसे खानादारी का इन्तजाम होना मुश्किल नजर आता है। अगर इसमे तुम मेरा हाथ बटाओ तो मेरा इरादा है कि बाकी हिस्सा जिन्दगी का ईश्वर की भक्ति मे बसर करूँ। उम्मीद है तुम मुझको मायूस न करोगी।”

अञ्जना कुछ देर सोचकर ‘मुझको जेबा (शोभा) नहीं कि आपकी मौजूदगी में ऐसी जुरुत कर इन बातों का हौसला करूँ। मगर इस बात का भी ख्याल है कि मेरा **अजर** करना आप को नागवार न गुजरो। इसलिए अगरचा मैं अपने आप को इस लायक नहीं ख्याल करती लेकिन अगर आप मेरे निगरा रहेंगी तो मैं भी इसको अंजाम देने में कोशिश करूँगी।”

नाजरीन! अञ्जना की बातें सुनकर रानी के खून में मारे खुशी के कुछ ऐसी हरकत पैदा हो गई कि तमन्नाओं की तरह रग रग में दौड़ने लग पड़ा। और उसी वक्त जरोजवहरात उसके सपुर्द कर गोशा नशीनी (निवृत) इरित्तियार की और अञ्जना देवी कारोबार में मसरूफ हो गई। उधर राजा प्रह्लाद विद्याधर **आनान** हकूमत पवन के हाथ दे **यादे हक** में मसरूफ हो गया।

اتنے بین انجنادیوی سندھیا اوپاس کر رانی के कمرے में आئी। दरात्र के पाउं पर سرको लहकर बोली।
انجنا۔ ناجی افزا یہ وشمنوں کی طبیعت کیوں پریشان ہو رہی ہے۔ یہ کسی اعوادی پچھارہی ہے۔ الگچھ پھیرے لایق نہ صحت بتووارت اور تائیجے لونڈی بسر و خشم حاضر ہے۔
رانی۔ نجوش ہو کر اپنی کوملی پریشانی نہیں۔ اور نرمی کسی بات کا خیال ہے۔
ایشور نے جب تھارے جیسی لالپن مودی ہے تو پھر جکبو اودسمی کسی۔ اور فلک کیوں ہوا؟ ان ایک بات ہے جو کبھی بھی بن رہی ہیں میں سی ماری ہے۔
دل کو بھاڑتی ہے وہ یہ ہے کہ عمر میری زندگی میوگی ہے۔ نعم جنم کر دی پڑگی ہے۔ مجھے خانہداری کا احتظام مونا مشکل نظر آتھے۔ گراس ہیں تم سیرا باختہ بٹا۔ تو یہ ارادہ ہے کہ باقی حصہ نندگی کا ایشور کی ہلکتی میں بسر کروں! امید ہے تم بکوبالوس ملکر گی!!

انجنا۔ لچھو دیر سوچگر، بھجو زیانہیں کہ آپ کی موجودگی میں ایسی جواب کرائیں
بلتوں کا جو حوصلہ کروں۔ گراس بات کا بھی خیال ہے کہ میرے عندر کرنا آپ کو ناگوار
نگر سے۔ اسٹنے الچھیں اپنے آپ کو اس لایقی نہیں خیال کرتی۔ لیکن الراہ
میرستہ نگران میں کی تو میں بھی اس کو انجام دینے میں کوئی مشکل نہیں!
ناظرین! انجنا کی تسلی نشکر رانی کے خون میں مارے خوشی کے کچھ ایسی
حرکت سی پیدا ہو گئی کہ تماں کی طرح درگ رگ میں دوڑتے لگ چڑا۔ دوڑ سیقت
زدوجاہرات اس کے پس پر کوشش نہیں ا chiar کی۔ اور انجنادیوی کا بار
میں سروف ہو گئی۔ اور هر اچھے پر حملہ دو دیا وھر عنان حکومت پر ہوں
کے تھوڑے یاد قی میں سروف ہے گیا۔

बाब (अध्याय) चौबीसवाँ

वानर दीप मे तहलका मच गया

सुबह का वक्त है। अभी आसमान पर तारे झिलमिला रहे हैं और परिंदे दरखतों पर बैठे चहचहा रहे हैं। कि हमारा बहादुर हनुमान ख्वाब गफलत से बेदार हो पलंग से उतर इधर उधर देख रहा है और अंगडाइयाँ लिए जा रहा है। ज्योंहि अञ्जना देवी संध्या उपासना के कमरे से निकलती हुई नजर पड़ी वही उसको जा पकड़ा। आहा! एक हाथ से तो उसकी साड़ी पकड़ रखी है और दूसरे को फैला उसके मुँह की तरफ देख कुछ कह रहा है। गोया उसकी गोद में जाना चाहता है। मगर अञ्जना देवी को देखना। इसको देख देख कर कैसी खुश हो मुस्करा रही है और उंगली के इशारे से इसको लेने से इंकार कर रही है। और इसने भी अब रोनी सी शक्त बना दोनों हाथों से पकड़ वही रोक लिया है। भला अञ्जना देवी इसको इस हालत में देख क्योंकर गवारा कर सकती है। जल्दी से उठा छाती से लगा लिया और पेशानी को बोसा दे अपने कमरे को चली गई है।

नाजरीन! अगरचा होनहार हनुमान इस वक्त दो बरस का है लेकिन इसके जिस्म की डीलडौल देखने वाले को पाँच साल का यकीन हो जाता है। दिन ब दिन अपने वालदैन की तमन्नाओं को बढ़ाता और उनको खुश करता हुआ जब सात साल का हआ तो एक लायक पण्डित इसकी तालीम के वास्ते मुकर्रर किया।

सात बरस का जब हुआ अज्जनी सुत हनुमान
विद्या धन करवाते पण्डित चतुर सुजान

پاپ چوپیں

بازروپ میں تملکہ محیا

صحیح کا وقت ہے ابھی آسمان پر تار سے جھلک لے رہے ہیں۔ اور پرندے و خنثوں پر بیٹھے چھپا رہے ہیں کہ ہمارا بہادر مہنو مان خواب غفات سے میسر ہو چکا ہے اور ادا دھرا دھرو دیکھ رہا ہے۔ اور اکھاں ایمان کے جاری ہے۔ یونہی اجنبی ادیلوی سندھیا اور پاسنا کے کمرے نے مختلف یہوئی نظر پڑی۔ دہمین کو جو پچھا ॥ ایسا ایک ٹانخو سے تو اس کی ساڑھی پکڑ کر کھی ہے۔ اور دوسرے کو دیکھیا اس کے سندھ کی طرف دیکھ کچھ کہہ رہا ہے۔ گوا اس کی گود میں جانا چاہتا ہے اگر اجنبی ادیلوی کو دیکھنا اس کو دیکھ دیکھ کر کسی خوش ہوں گے کارہی ہے۔ ادا انگل کے اشارہ سے اس کو یعنی سے انکار کر رہی ہے اور اس نے بھی اب رومنی سی تسلی بادلوں ٹانخوں سے پکڑ دیں بُوک یا ہے۔ بھلا اجنبی ادیلوی اس کو اس حالت میں دیکھ کر یونکر گوارا کر سکتی ہے۔ جلدی سے اٹھا چھاتی سے لگایا۔ اور پیشانی کو بو سدے اپنے کمرے کو جلا کر رہے۔

ناظرین! اگرچہ ہمارے ہنومان اس وقت درجہ مس کا ہے لیکن اس کے جسم کی طبیعی ڈول دیکھنے والے کو یہ بخ سال کا یقین ہو جاتا ہے۔ دن بدن اپنے والدین کی تمناؤں کو بڑھانا اور ان کو خوش کرنا ہوا جسمات سال ہے تو ایک لالیں پہنچت اسکی تعلیم کے واسطے مقرر کیا۔ ۵
سات برس کا جب ہوا الجنی ستہنما دیباوھن کراحتے پہنچت چترسجان

سارسخاتی بائی میخ دیخے جو پدھتا ہنومان
وو جی بائی ن دیختا کھاتا نوک جبائن
چ: سال نوی ماس میں پدھ ویدیا پادھا
اے سا ہوا ویدیا پادھا مان

چوئدھ سال کی ٹمپر میں ویدیا کھاتا ہنومان (سنسکرت گرام) کو خوب اچھی طرح سمجھ دیا۔
کھنڈ سال کی تجھیں دیکھیں اس سنسکرت گرام (وغیرہ کو خوب اچھی طرح سمجھ دیا۔
رکھ۔ یہ چھ۔ تھام۔ دید کو پڑھ لیا۔ فرانس سنسکرت دیوانہ وہ جہاد رت پیدا
کی کہہ سے پڑھ لیا۔ اور دو دلوں نے بھی اس کو عزت کی بنا ہاتھ سے دیکھ
اس کی تعریف کی ایں دیوار کرستی ایں وہ شہرت حاصل کی زندگی مازدیں
میں تبلکل بیکی۔ کئی ایک مشہور نامور پہلوانوں نے بھی جو اپنے آپ کو نظر
خیال کر تھے اس کے بہادرانہ اور چیزوں کو دیکھ لیا۔ افتابی کی جب کبھی
کسی کو ان سے گشتی کرنے کا موقع ملا اول تو پہلے بھی خشم اور وہ نظر اپنے سے
اُس کے او سان خطا ہو گئے۔ اگر کسی طرح جرأت بھی کی تو ایسا یعنی دیکھ کر پھر
عمر پھر سا ہے آنکھا خود نہ ہے۔ فن سپاہی ری آنہا اس میں بھی تو کمال ہی کو کھایا
تموز سے عصمریں دہ آنابق جو اس کو سکھلتے کئے مقرر کئے ہیں
اس کے گزر رسالی۔ سیر اندازی اور تمثیلی کے شہروں کو دیکھ لگتے
ہندوں میں غیسم کی فوج کو خلوب کرنے کے نقشے اور جھینیں مٹکا پرے جو بار
سپہ سالار بھی اس کی عقل اور دنالی پر عشق کر رہے ہیں۔

مُخْتَسَر (سُنْكَسَر) یہ کہ ہمارا جرئت اپنے جمانتے میں لَا سانی (اتُّلُّی) ہے۔ اس بہادر کی جوانی کی بات
بہادر کی جوانی کی جزویت نہیں۔ کیونکہ آریادت کا بچہ بچہ اس کی شجاعت کی
اداوے سے رہا ہے۔ اور رامیں کے صنفیوں نے اس خدمتوں پر کی دلچسپی کر دیتے ہیں۔

سرتی بی بکھو کے جو پڑھتا ہنومان مدھی بسیر ندوی کھاتا لوك زبان
چند سال نویں میں پڑھو بی پایا ان ایسا ہوا دن بہ دیکھ تھت پڑھ لیا
پڑھو سال کی تجھیں دیکھیں اس سنسکرت گرام (وغیرہ کو خوب اچھی طرح سمجھ دیا۔
رکھ۔ یہ چھ۔ تھام۔ دید کو پڑھ لیا۔ فرانس سنسکرت دیوانہ وہ جہاد رت پیدا
کی کہہ سے پڑھ لیا۔ اور دو دلوں نے بھی اس کو عزت کی بنا ہاتھ سے دیکھ
اس کی تعریف کی ایں دیوار کرستی ایں وہ شہرت حاصل کی زندگی مازدیں
میں تبلکل بیکی۔ کئی ایک مشہور نامور پہلوانوں نے بھی جو اپنے آپ کو نظر
خیال کر تھے اس کے بہادرانہ اور چیزوں کو دیکھ لیا۔ افتابی کی جب کبھی
کسی کو ان سے گشتی کرنے کا موقع ملا اول تو پہلے بھی خشم اور وہ نظر اپنے سے
اُس کے او سان خطا ہو گئے۔ اگر کسی طرح جرأت بھی کی تو ایسا یعنی دیکھ کر پھر
عمر پھر سا ہے آنکھا خود نہ ہے۔ فن سپاہی ری آنہا اس میں بھی تو کمال ہی کو کھایا
تموز سے عصمریں دہ آنابق جو اس کو سکھلتے کے نقشے اور جھینیں مٹکا پرے جو بار
سپہ سالار بھی اس کی عقل اور دنالی پر عشق کر رہے ہیں۔

خقصہ کہ ہمارا جرسیں اپنے نہان میں لانا ہے۔ اس بہادر کی جوانی کی بات
خعل طول لکھنے کی جزویت نہیں۔ کیونکہ آریادت کا بچہ بچہ اس کی شجاعت کی
اداوے سے رہا ہے۔ اور رامیں کے صنفیوں نے اس خدمتوں پر کی دلچسپی کر دیتے ہیں۔

بَا بَ (اَد्याय) پَचीسَ وَارْبَعَ

مِنْ بُجَدِيلَ نَهْرِيْ نَامَرَدَ نَهْرِيْ هُونِ

दिन के पिछले पहर का वक्त है। परछावे ढल चुके हैं। धूप की तेजी भी अब वो नहीं रही जो थोड़ी देर पहले महसूस हो रही थी। ऐसे वक्त में हमारा ख्याल जहाँ पहुंचता है, वो रत्नपुर के राजा का दरबार है जिसमें राजा प्रह्लाद विद्याधर का लड़का पवन बड़े आन बान से एक **मरसह** तख्त पर सर झुकाए एक खत हाथ में लिए बैठा है। और सामने कुछ फासले पर एक सिपाही फौजी वर्दी पहने बाअदब दस्तबस्ता खड़ा है। ईश्वर जाने इस खत में क्या लिखा है कि पवन बड़ी हैरानगी से रह रह कर इसको देख रहा है। हाँ कभी कभी दबी हुई नजर उस नौजवान पर जो तख्त की दाँतें तरफ सुर्ख पोशाक पहने सर पर मुकुट रखे बैठा है, डाल लेता है। और हाजरीन दरबारी नजर इस तरफ काम कर रहे हैं। तमाम कमरे में आलमे सकूत है। सन्नाटा सा छा रहा है। मगर किसी की जुर्त नहीं पड़ती कि जरा उठकर इस खत की माहियत दरयापत करे या बाइशो हैरानगी का पूछो। जब कुछ अरसा इसी तरह गुजरा तो इन सबके मुँह पर लगी हुई मोहरे खामोशी को जिसने बीच में आकर तोड़ा वो वही नौजवान हमारा बहादुर जरनैल हनुमान है। सुनिए क्या कह रहा है।

हनुमान ‘महाराज! आपको इस कदर मुतफिक्र देखकर मेरा दिल बेचैन हो कई एक तरह के पेंच ताब खा रहा है। अगर बतलाने में कुछ हर्ज न हो तो मुझको भी इस **अमर** से आगाह किजिए।’

بَا بَ پَچِيسِوَال

مِنْ بُزَدِلَ نَهْرِيْ نَامَرَدَ نَهْرِيْ هُونِ

दन के चौथे बीच का وقت है - पर्जियाँ मूँह उचल उच्चे हैं - औ हूप की तिर्य
जम्बी अब दहनीं रसी जूत्खूरी दीर्घी पैले ज्वास मोर्ही लही - ऐसे वक्त में
हाजर जीवाल जीवाल बैठा है वह रत्न लूर के राजा का दरबार है - जैसे हीं
राज्य पर चला ओविया औ हरकार का लियन भैरव आन बान से एक مرصع खत पर
सर जम्बाके एक खत नामदिमें लेने बैठी है - औ साथैं कृष्ण उसे लैकर
गुजी और उसी पैसे बाओ औ वस्त लैटे कहरा है - वायर जाने एस खत में किया लक्षण
है कि लियन भैरवी जिर्गुकी से रह रहे कर्म को देख रहे हैं - ताकि कृष्णी लियौली
नेत्रास नौजान पर जूत्खत की दाइन तरफ सर्ख पैशाक पैसे सर्व लक्ष के बैठी
है दाल लियै है - औ उपर्युक्त दूसरे की नेत्रासी तरफ काम कर रही है - ताकि
कर्म से मैं उल्लम्भ हूँ - सनाता साप्तज्ञान है - मगर क्यि की जरानीं
पैर लियै कर दराश्वकर एस नेत्र की माहियत दी यावत करे यावत जिर्गुकी का पैर जैसे -
जैसे कृष्ण उसे असी तरफ गुन्डा तो अन सब के सन्दर्भ लियौली महर खामोशी को जैसे न
पैर में आकर तो राह देसी नौजान हाजर बहादुर जैसे लैन हैनुमान है - सन्देश लियौ
लेहर रहा है -

हैनुमान - हमाराज! आप को एस कर मत तकरीब दियकर मेरा दल बैठी मैं हूँ कृष्ण
एक तरफ के जूत्खत कहार है - अगर बतलाने में कुछ हर्ज न हो तो जूलों जूलों जम्बी
एस अर्म से आगाह नियैजे -

पवन हनुमान की तरफ देखकर “बेटा कोई फिक्र की बात नहीं। तुम क्यों हैरान हो गए?”

हनुमान “तो फरमाइये फिर आप इस तरह क्यों?”

पवन खत दिखाकर “महाराजा रावण लिखता है कि वरुण ने फिर सरकशी इछित्यार की है। खिराज देने से इंकारी है। इसलिए उस ना **आकबत** अंदेशी वरुण पर फौजकशी की गई है। और **सथीम** पर्वत पर हम को भी शामिल होने के वास्ते लिखा है। सो इस **अमर** का कि हमारी गैर हाजरी में तुम यहाँ के करोबार को अंजाम दे सकोगे कि नहीं क्योंकि तुम्हारा ख्याल इस तरफ बहुत कम है।”

जब सुना युद्ध का नाम हनुमान मेहर खायो अति उमंग के साथ वचन कर जोड सुनायो आज्ञा दीजे तात युद्ध को मैं वहाँ जाऊँ
मारूँ शत्रु जाए रावण दुख मिटाऊँ
है मन मेरे मैं चाह **पतार** होग को देखूँ क्या क्या करे करतब, सभी जा मै पीकूँ
जो भुजा३ मेरे मैं जोर **जारन** महान दिखाऊँ
वरुण को आऊँ पछाड जगत मैं कीर्ति पाऊँ
बालक मुझको जान पिता तुम मन घबराओ
दे आज्ञा मुझको तात दास का मान बढाओ

पवन हनुमान की तरफ देखकर “वरुण और उसको लड़के बडे होशियार और तजुर्बेकार हैं। कई एक दफह तो मैं इनको खुद आजमा चुका हूँ बल्कि हर एक पहलू से देख चुका हूँ। तुम अभी उनके मुकाबले के लायक नहीं हो क्योंकि खुर्द साल नातजुर्बेकार हो। मैदान का नजारा देखा नहीं। मैं क्योंकर जाने की इजाजत दे सकता हूँ।”

हनुमान “बेशक आपका फरमान दुरुस्त है। इस मे कोई शक नहीं कि मैंने अभी तक कोई जंग नहीं देखी और नतजुर्बेकार भी जरूर हूँ लेकिन

१ करतब याने हुनर २ पीकूँ याने देखूँ ३ बाजू

پर्वत—**हनुमान** की तरफ दिखकर बेटा कोई नकर की बात नहीं। तब कियों हिरान हो गئे—

हनुमान—**तू वर्षासे बहराप** एस खूँ कियों है?
पूर्व—**राखत को देखकर** हमारा जरावन लक्ष्य है कि वरन ने पैर सरकशी अधिकारी की है खारे मैंने से अंकारी है—**एस** मैंने अनुचित अंदिश वरन बर्फ जाशी की की है एवं **हमें** तृष्णा पैर हम को भी शाल लेने वाले कहा है योस बात का तो जुह फ़कर नहीं। **लाल** खूँ खिल है तो अस एक बाया नियर वास्त्री मैं जीवास के बारो बारो जाहर मैं स्कूरे के कह नहीं है कियों तो खारा खिलाएं खूँ खिल बैठत कम है—

حیب سُنایکا نام **हनुमान** मैं रह रखायो
तो एवं नाके सात्रजून कर जूर स्नाया
जी विजेता यिद्यो मैं वा अ जादो
मारून श्वर व जासे राद की दो कहावाल
जैसे विर्ये मैं जाह प्राप्ति लाम को दिखायो
कियाकै करूँ करूँ रुजू बस्ती बिक्यू
जूर जाहिरे मैं न जारन माता लेखाव
दरन को दो जारन माता लेखाव
बालक खिलू जान प्राप्ति जगत मैं करै बाल
दे आगी बिक्यू तात मैं तक्फ़िर
पूर्व—**हनुमान** की तरफ दिखकर वरन एस के लाल के भूरे से शूरायार
एवं खुर्जी बारहीं की लाल के दफह तो मैं लाल कुरुदार जाचका हूँ—**लाल** एक बिलौस
दिखें जूका हूँ—**तृष्णा** अन के मतालैरे लाली नहीं है—**कियों** न खोर दास लैरे बार
है—**सिदान** कार्दार दिखानहीं—**मैं** कियों न बासे की बाजत दिलैत हूँ।
हनुमान—**बेटाक** आप काफ्राना दरसत है—**एस** मैं कोई नकर नहीं करै जी तक नहीं—
मैं ने अभी तक कोई जूका है—**दिखाए**—**एस** तृष्णा खुर्जी बारहीं चरू सेही—**लाल**
लैरे करू लिखे हैं—**लाल** बिक्यू लिखे दिखायो—**लाल** बार—

मैं बुजदिल नहीं, नामर्द नहीं हूँ जो अपने काम को धब्बा लगा खानदान को बदनाम करूँगा। अगर आप मुझको जाने की इजाजत देंगे तो मैं भी इस बात को साबित कर दिखाऊँगा कि बहादुरी उस को कहते हैं। शुजात इसका नाम है। और ये भी आपको बखूबी रोशन हो जाएगा कि मैदान कारजार में किसी ने उसको नीचा दिखा पसपा किया।”

हनुमान की इस बहादुराना गुफ्तगूँ को सुनकर पवन निहायत खुश होकर बोला।
पवन “बेशक बेशक! मुझको तुम पर ऐसी ही उम्मीद है। बल्कि पूरा इतिमिनान है कि जरूर ऐसा ही कर दिखाओगे। लेकिन वरुण और पुण्डरीक भी कम नहीं। उन्होने कई एक मारिक देखे हैं। जमाने के नशदीबो खैराज से वाकिफ हैं। खर और दूषण, जैसो को तो उन्होने जैर कर दिया। तुम तो अभी बच्चे हो।

हनुमान “आप का बार बार इस बात पर जोर देना कि मैं नातजुर्बेकार हूँ, लडाई की मुश्किलों से नावाकिफ हूँ शायद शफकतपदराना के बाइश हैं जो दिल में समा गया है। लेकिन गौर तो किजिए। कब तक मैं इस बात को सोचकर जंग से गुरेज और अपने दिली जोश तो जब्त कर सकता हूँ। आखिर एक रोज तो इसी हालत में जाना होगा। बहरकिफ अपने आपको आजमाना होगा।”

नाजरीन! हाजरीन दरबार हनुमान को गुफ्तगूँ को सुनकर पवन से मुखातिब हो कहने लगे “महाराज! ईश्वर साहिबजादे की हिम्मतों को बढ़ावे। इससे ज्यादा इसके हौसले बुलन्द करो। बेशक इनकी आली हिम्मती दिलेरी और इस्तकलाल से हम लोगों को यकीन है और हर तरह से तसल्ली है। आप कुछ फिक्र न करे और जाने से हर्गिज न रोकें। सिपहसालार तो साथ होगा।” जब सबने इस तरह कहा और हनुमान को साबित कदम देखा कि जाने से

१ ये दोनों रावण के रिश्तेदार थे

मैं ब्रह्म नहीं नाम नहीं हूँ जो अपने नाम को उच्चिर खानदान को बनाम करूँगा।
आप भूजने की अवधि दिन गे तो मैं भूज रस बाट कृतांत करूँगा।
के बिंदुरी एस को कहते हैं। शुजात एस का नाम है। और ये भूजी आप को
ज्ञान रुशन भूजायेगा कि मैदान कारजार एस के अंग को खाली पाला।
हनुमान की बिंदुर गतिको को सुनकर पूजन हनियत खुश हो कर लोला।
पूजन - बिंदुक बिंदुक! भूजकुर्म पर आपी आपी है। बल्कि लोरा अभिनव है।
के प्रश्न एस ही करूँगे। लेकिन वरन और पैन्ड्री याक भूजी करनी है। लग्नों
के कई एक सुरके दिखते हैं। ज़िराज के शिव फ्रान्स से वात्फ़ बी।
क्षेत्र और वृत्त्व जीवों लोतुक्षेत्रों से ज़िरो दिया। तम तो अभी बिच्छु।
हनुमान - आप का बार बार एस बत पर न दूर न करो। कर रहे हैं त्रैली
के मर्के से नावात्फ़ हैं। शायद शैक्षण्य पर राने के बात हैं। जो
दूल मैं सामाजिक है। लेकिन खुर तो किये। क्षेत्र एक एस बत को सुनकर ज़िरा
से ग्रिंजार पैरे दूल जूश न उपस्थित कर सकते हैं। अत्रायक दूल तो आपी उत्त
मैं जाना है कि ब्रह्म कैसे आप को आजमाना है।
नाजरीन! एकाधारी वर्ष वर्ष हनुमान की गतिको सुनकर पूजन से खाली है।
कहते हैं। “महाराज! एकाधारी वर्ष वर्ष हनुमान की गतिको सुनकर पूजन से अस से
ज़िराज एस के उच्चार करने के लिये उनकी उम्मी दायरी और स्त्रियाँ
से ज़िरों को लिये हैं। लोरे तरह से तस्ली है। आप जूहो फ्रान्स की गति
और जाने से हर ग्रिंज रुकीं। स्प्रिंग सालर तो सात्कर है।”
जब सब ने एस तरह की वार्षिक हनुमान कृतांत की दृष्टि दिखाकर जाने से
ले जाने वाले के रस्ते दर्शके

बाज नहीं आता, तो कुछ देर सोचने के बाद तैयारी का हुक्म दिया। और दूसरे रोज एक **जरारोस्ता** फौज को देकर सथीम पर्वत को रवाना किया।

बाब (अध्याय) छबीसवाँ

सथीम पर्वत

ये पहाड़ लंका के जुनूब (दक्षिण) मशारिक (पूर्व) में वाकह है। इसके नीचे बाएँ तरफ एक बड़ा वसीह मैदान है जहाँ कुछ सरसब्ज दरखत लहलहाते हुए नजर आ रहे हैं। और जिनके बीच में से एक निशान जिसका **फेरेरा** हवा में उड़ता हुआ आसमान से बातें करता दिखाई दे रहा है।

अब हम अपने ख्याल को लेकर यहाँ पहुँच कर क्या देखते हैं कि दाएँ हाथ की तरफ एक छोटी सी नदी जिसका नीलको **सतफाफ** पानी है, बह रही है। और चंद नौजवान जिनकी **कतह वजह** से मालूम होता है कि किसी लशकर से तालुक रखते हैं स्नान कर संध्या उपासना कर रहे हैं। इनको देख ही रहे थे कि हमारी निगाह बाएँ तरफ को पढ़ी तो एक बेशुमार लशकर दिखाई दिया जिसके देखने के शौक में हम वहाँ पहुँच गए।

आहा! जितनी सिपाह नजर आ रही है उनमें से ज्यादा हिस्से की रंगत स्याह है। ऐसे नहीं जैसी कि हब्शी, इनके रंग बनिस्बत उनके अच्छी है। हाँ चेहरे की शक्ल कुछ मिलती जुलती है। कद दरमियाना है। भाँति भाँति की वर्दिया पहने इधर उधर टहल रहे हैं। और बाजे बैठे **गपाशरिक** उड़ा रहे हैं। इनको देखते हुए जब हम थोड़ी दूर और आगे बढ़े तो क्या देखते हैं कि

باز پیش آناؤ کچھ दیر سوچنے के بعد تیاری का حکم دिया। और दूसरे दूनायक
जगह स्त्रे फوج का ओर **سہتیم پرست** को रोका किया।

بَابِ چَحْدِيْسَوَالِ

سہتیم پرست

پہار लक्ष्मका के ज्यूब मश्रق में वाकह है। इस के नीचे बाएँ तरफ एक नदी मैदान है। जहाँ कुछ सर्वेर वर्षते हैं तो ये नदी वहाँ है। एवं एहम बैधुप में से एक नदी जिस का प्रेरणा योग में और ताहोगान से बातें करता रहता है। वे रहते हैं।

بَسِمِ اسْنَهِ خِيَالِ كُوَّسَهِ كَرِيمِيَّهِ كَيْفَيَّهِ مِنْ كَوْدَمِيَّهِ طَرَفِ الْكَيْمِ
پَهْجُونِيَّهِ سَنِدِيَّهِ جِنِّيَّهِ كَانِيْلَگُولِ شَفَافِيَّهِ بَلِيَّهِ ہے۔ اور جِنِّيَّهِ
جِنِّيَّهِ كَيْفَيَّهِ مِنْ كَوْدَمِيَّهِ تَعْلِيَّهِ رَكْتَهِمِيَّهِ تَهَانِيَّهِ
أَسَدِيَّهِ كَيْفَيَّهِ سَنِدِيَّهِ ہے۔ ان کو دیکھ रहे हैं। वे बाहरी नगाह
बाएँ तरफ कुर्सी लो एक बिशما लश्कर रहता है। वे जिसके बाहरी नगाह
में हम दूसरे बैठे हैं।

اَهَوْ بَقْنِي سَلَاهُ لَفَطَاهِيْهِ ہے اُنْ مِنْ سِرِيَّهِ زِيَادَهِ حَصْرِيَّهِ زِنْگَتِ سِيَاهِ ہے
بَسِمِ بَنِسِ بَسِيَّهِ كَجِيْشِيَّهِ اُنْ كَرِيمِيَّهِ نِسْبَتِ اُنْ كَبِيْهيَيِّهِ ہے۔ اُنْ
چِرُوں كَلِيَّهِ كَجِيْهِ جِلْتِيَّهِ ہے۔ قَدْرِ سِيَاهِ ہے بِهَمَانَتِ بِجَاهَتِ كَيْدِيَّهِ
بَيْنَهُ وَهَرَأَ وَهَرَلِيَّهِ ہے مِنْ۔ اور بِعَصْنَهِ مُشَحَّهِهِ كَيْمَكَارِهِ ہے مِنْ
اُنْ كَوْدَمِيَّهِ ہے جِبْ حَمْضُورِيَّهِ وَمَعْدَهِ اُنْ كَبِيْهِ ہے تو كَيْمَارِيَّهِ مِنْ تَرِ

एक खेमे में चंद अफसर बैठे हुए बात कर रहे हैं। उनमें से बाजों के सरों पर ताज की किस्म के जडाऊँ मुकुट रखे हैं जिनपर बेशकीमती जवाहरात जडे हुए जगमग जगमग कर रहे हैं। मालूम होता है कि ये कोई राजा महाराजा हैं जो इस जाहोजलाल से बैठे हैं। आओ जरा इनकी गुफ्तगू तो सुने।

एक ताजदार “पवन अब तक नहीं आया और न ही वो **इलची** वापिस आया है।”
दूसरा “कुछ सबब ही ऐसा हो गया होगा। वरना ऐसी उम्मीद उससे हर्गिज नहीं कि आपके हुक्म न तामील करे।”

वही पहला शख्स “पवन भी एक तजुर्बेकार जवान है। पिछले दफा उसने वरुण को खूब हाथ दिखाए थे। लेकिन वो बड़ा बेशर्म है जो फिर भी बाज नहीं आता।”
तीसरा “महाराज! सुना है कि उसका लड़का उससे बढ़कर बहादुर मनचला और फुर्तीला जवान है। इस वानरदीप में तो उसका कोई सानी नहीं।”

पहला शख्स “अच्छा” बात काट और कुछ सोचकर “आज का दिन और इन्तजार कर लो। कल तो जरूर यहाँ से चल दूँगा। अबकी दफा खुद ही कुछ ही क्यों न हो। वरुण को इस सरकशी की सजा दिए बगैर कभी न छोड़ूँगा। वो क्या याद करेगा कि रावण से वास्ता पड़ा था।”

इतने में एक शख्स ने आनकर उस पहले ताजदार को जो गालिबन रावण है कहा। **नोदारो** आदाब बजा लाकर “महाराज! पवन जी का लड़का हनुमान भी सेना लेकर आ रहा है।”

रावण खुश होकर “सुग्रीव तुम और राजा वज्रबाहू हनुमान की पेशावाई को जाओ।”

एक खिस्में चौपाँश रुधी होते बात चीत कर रहे हैं। उनमें से तेज्वों के सरूप प्रताज की तरफ के खिलाफ लक्ष रखते हैं जैसे जैसे तीव्री जाहर होते हैं तो उन्हें कोई राज महाराज जैसे जौस जाह जलाल से भिज्हते हैं। आज दरान की लक्तिलो तो सिन -
एक ताजदार - पून अब नहीं आया और नहीं वह आधी वाला आया है -
दूसरा - कोई सब जी आस हो गया होगा - वरने आसी आसी आस से हरकरनीन
कराके जूमे ताजल करते -
वसी पहला व्यक्ति - पून जी एक तजर्बा कर रहा है जैसे जैसे वर्षा वर्षा
वर्षा को खोब बातुद करते हैं - लिकन वह ब्राबे शर्म है जैसे जैसे
बातें आया -

तीसरा - जहाराज! सना है कि उस कारबा का अस से ब्रह्मकर्ता ब्रह्मजल
और ब्रह्मतिला जवान है सास बारो विप्र मैं तो उस का कोई नामी नहीं -
पहला व्यक्ति - एक बात काठ अदर को पूछ सोचकर आज कावन और अनुष्ठान कर लो
कल तो प्रदर्शनाम से चल दो गा। अब की दखन वार्षी की जैसी कीव न होन
अस कर्त्तव्य की स्वाद करते जैसे जैसे जैसे जैसे जैसे जैसे जैसे जैसे
से दास्ताव अंत हाय -
तेसी में एक व्यक्ति तकास पैदे ताजदार को जूगाल बराव है कहा -
ब्रुवारो - (उदाप बगालाक) जहाराज! पून जी का ब्रह्मकर्ता ब्रह्मतिला जी
सीन लिकरता है -

रावण - (खृष्ण वृक) स्कर्ग लिया तभ्य और राजे जैसे जैसे जैसे
की उपशिष्टी को जारा

ये सुनकर दोनों वहाँ से उठे और बड़ी इज्जत के साथ हनुमान को उसी खेमे में लाए और उनकी गुफ्तगू को सुन, बहादुराना वजूद को देख हर एक **फरखा** हो गया। आहा! इल्म और शीरी जबान भी दुनिया में एक नादिर चीज है। जो हर एक के दिल को अपनी तरफ इस तरह **माइल** कर लेती है जैसे चाँद की खूबसूरती चकोर और भादों कि काली घटा मोर को।

नाजरीन! जो लोग यहाँ इस वक्त मौजूद हैं **ख्वाह** उप्र में छोटे हैं या बड़े सब हनुमानजी को इज्जत की निगाह से देखते रहे हैं। और इनकी आलिमाना तकरीर को सुनकर उनकी लियाकत पर अश अश कर रहे हैं। गर्ज बड़ी देर तक इधर उधर की बातों में मशागूल रहे। आखिर सुबह को कूच की तजवीज करार पाई और तमाम फौज को हुक्म सुनाया गया।

बाब (अध्याय) सत्ताइसवाँ

फौजकशी

सुबह का वक्त है। हर एक सिपाही अपने अपने बिस्तरों को बांधकर छक्कड़ों पर लाद रहा है। और एक शख्स जो गालिबन इनका अप्सर है घोड़े को इधर उधर दौड़ाता हुआ हर एक को जल्दी करने की ताकीद कर रहा है। और कभी कभी आसमान की तरफ नजर कर कहने लग जाता है। “उफ! बहुत दिन चढ़ गया। कूच का वक्त हो गया है। जल्दी करो!”

थोड़ी देर के बाद कूच का शंख बजा। जिसको सुनते ही सब से पहले हनुमान जी अपनी सिपाह को लेकर आगे बढ़े और उनके पीछे सुग्रीव और राजा

پ्रेस्टन्ड दन्दोंहाँ से अल्ट्यू और भूर्जी उर्जत के साथ मैनोमान को ओडी खिम्स मैं लाई। और वान की लैन्ट्नॉन्ड कून बहादुराने द्वारा जूदो को दिक्षित रायक विफिर्गी आए। उल्म और शीरी जबान भी दिनामैं एक नादर जैर्सैन जूस रायक के दून को ऐपी तरफ एस ट्रैक माल करती हैं जैसे जानकी खूबसूरती चूक्लो लूर बजाओं की काली गृहामोर को।

नاظरिन ऐजुलोग यैहान एस वॉक मूजोड़ॉ मैं खावैर्सै बैबैलैन जैर्सै बैबैलैन जैर्सै उर्जत की नगाह से दिक्खर हैं। और वान की उल्म अत्तर को लैन्ट्नॉन्ड की लिए वॉक पैशै उशै करते हैं मैं उर्पै बैरी दिर्ट के अद्धर और अद्धर की बातों इन श्वेषों रहे हैं। अर्थात् त्रैजूज की खूजिर त्रैरापाली और त्राम फूज को उर्पै स्नायागी।

بَابِ سَقَائِيْسُوْل

فونج کشی

صبح का وقت है एरायक सिपाही अपने अपने लेस्ट्रोल को बांध हैक्कर खैरॉल बिस्लाद रहा है। एरायक खैस जैगलान का अप्सर है खौर्ते को बोहरा और दूर दूर आमो एरायक को जल्दी करने की ताकीद करता है। एरायक जैसी असान की तरफ लैटर करने लग जाता है। “उफ बहूत दिन चढ़ गया। कूच का وقت हो गया है। जल्दी करो”

खौर्ते के लेज्डूर्ज कास्टक्कह बजाहैस कूस्टेहैस से बैसे मैनोमान जी अपनी सिपाह को लेकर आगे बढ़ते हैं। और वान के अल्ट्यू एक चैक्कर लियो और राजा

बत्रबाहू हो लिया। और रावण इन सबको बढ़े हुए जोश को देख **खनदानोशादा** जा रहा है। बहादुर सिपाह का साफे बांध कदम मिलाकर चलना और कांधों पर नंगी तलवारों का चमकते हुए दिखाई देना बतला रहा है कि ये लोग कवाइदे जंग से बखुबी वाकिफ है। जैसे इन बहादुरों का कदम आगे बढ़ता जाता है वैसे इनके चेहरे जोशे जंग से सुर्ख होते जा रहे हैं।

नाजरीन! क्षत्रिय के वास्ते इससे बढ़कर और कोई खुशी नहीं कि जवाँमर्दी से दुश्मन का मुकाबला कर मैदाने जंग मे काम आए। यही सबब है कि ये लोग खुशी के नारे बुलन्द कर मजिले तय करते हुए जा रहे हैं। जब दुरमती नगर कुछ थोड़े फासले पर रहा तो एक तजुर्बेकार मंत्री को वरुण के पास इस गरज से भेजा कि उसको समझा कर जंग से बाज रखे और खिराज देने पर आमादा करो।

मंगलपुर के मैदान मे जिस वक्त ये मंत्री पहुँचा तो क्या देखता है कि बेशुमार फौज छावनी डाले पड़ी है। कई एक सिपाही कील काटे से लैस हो लडाई का सामान दुरुस्त कर रहे हैं। और जा बजा खेमे **नस्ब** हैं। और ऐन वक्त में एक आलीशान खेमा दिखाई दे रहा है जिसके चारों तरफ नंगी तलवारे कांधों पर रखे सिपाही पहरा दे रहे हैं। ज्योंहि इस मंत्री को एक सिपाही ने इस आलीशान खेमे की तरफ जाते देखा ईश्वर जाने इससे क्या पूछा कि वही इसको रोक दिया और खुद पर्दा उठा खेमे के अन्दर चला गया। और थोड़ी देर के बाद वापिस आ इसको भी उसी खेमे मे ले गया है जहाँ राजा वरुण बड़ी शानोशौकत के साथ

जैसे जैराम हूँ बोलिया है और रावन अन सब के भृत्ये होते जौश कुदिकें
उच्छव उच्छव उच्छव उच्छव है - बहादुर सिपाह कا صفيں बांधे कदम लाकर जैन
और कांध चुप्ती त्वारों का जैक्टे होते वक्तामि उच्छव उच्छव है कि ये
लोग औ अद्दृग से खूबी वात्फ हैं - जैसे इन बहादुरों का कदम
आगे भृत्या जाता है वैसे इनके चेहरे जौश जैग से
सुख होते जारे हैं -

नात्रेन एच्मत्री के वास्ते इस से भृहकर और कोई खूशी नहीं कर जूँदा
है तथा त्वारों का समाल कर मैदान जैग में काम है - यही सब है कि
ये लोग खूशी के लगे बंद कर मैत्रियों तेरते होते जारे हैं वैसे
जब द्रष्टव्य भृगु को त्वारों से वाचले पर नायक जैराम है कर मैत्री को
वरन के पास इस खूबी से बिजाकर मौस को बिजाकर जैग से बार के
ओप्राज दिने पर काम है -

मैनक लूर के मैदान में इस वक्त यैत्री यौनी तो क्या दिखता है
कर देते खार त्वारों वास्ते भृत्ये हैं कि एक सिपाही कील कृष्ण द्वारा
लिस भूराती का सामान दृष्ट करते हैं - और जैग जैमि नप्त द्वारा
और दृष्ट द्वारा एक उल्लिशान खूबी वक्तामि दृष्ट है - जैसे चारों
तरफ त्वारों कांध चुप्ती पर रखे सिपाही भृत्ये दृष्ट हैं - यौनी
एस यैत्री को नायक सिपाही ने एस उल्लिशान खूबी त्वारों की दृष्ट देते
एवं विवर जानते हैं - क्या यौनी कर देती हैं इस को रुक दिया - और खुद दृष्ट देता
खूबी के अन्दर चला जाया - और द्रष्टव्य दृष्ट के अन्दर देता है एस को यौनी एक यैत्री
ले गया है - जैसा राज वरन भृत्ये त्वारों के साथ

चंद फौजी अफसरों को लिए बैठा है। पुण्डरीक और राजीव, भी मौजूद हैं। मंत्री ने दाखिल होते ही सर तसलीम **खम** किया और सामने खड़ा हो गया। वरुण उसकी तरफ देख और इशारा कर “बैठ जाइए। तुम्हारा किस तरह आना हुआ?”

मंत्री हाथ जोड़कर “महाराज! राजा रावण का भेजा हुआ आपकी खिदमत में हाजिर हुआ हूँ। अगर जान की अमान पाऊँ तो जो कुछ उन्होंने फरमाया है अर्ज करूँ।” वरुण “हाँ हाँ बेशक कहिए। कुछ फिक्र मत करो जो कुछ उन्होंने कहा है कहो। उस पर बखूबी गौर किया जाएगा। मुनासिब जवाब दिया जाएगा।” मंत्री “परमेश्वर आपके सलामत रखे इकबाल बुलन्द करो। अगरचा मेरी ताकत से बाहर है कि आपके सामने बोलने की जुरूत करूँ या जबान ही हिलाऊँ। लेकिन क्या करूँ मजबूर हूँ। आका का हुक्म बजा लाना मेरा फर्ज है।”

वरुण “हाँ बेशक कहिए। शौक से उनके इरादे से आगह किजिए। इलची हमेशा बरी **इल्जमा** है। तुम पर भी इल्जाम नहीं आ सकता।”

मंत्री “महाराज! जंग करने से **तरफैन** नुकसान होगा। कई एक नौजवान अपनी वालदैनों को दाग **मुफारकत** दे जाएँगे और औरतों के अजीज शौहर हमेशा के लिए जुदा हो जाएँगे। नतीजा मालूम नहीं किसीके हक मे अच्छा और किसीके हक बुरा हो। इसलिए मुनासिब यही है और महाराजा रावण की भी यही आरजू है कि आप बकाया खिराज भेज दे और आइन्दा के लिए

१ पुण्डरीक और राजीव दोनों वरुण के लड़के थे

چंद फौजी अफरोद को भेजा है। पुण्डरीक और राजीव यही मौजूद हैं। मंत्री ने वहाँ बैठे ही सर्वेद खम किया। और साथें कहा है—
وران۔ (रास की طرف दिखा और आशार कर) भेज जाये। मैंहमाराक्स खूँ ताना हो जाये।

मंत्री— (वहाँ जूर कर) यहाँ राज बरावन का भिजा हो। आप की خدمत मैं चाहरा हो जाओ।— अर्जान की आन बादों तो जो कुछ भेजा जाएगा उन्होंने ने फ्राया है। उपर करो।—

وران— (हाँ बान) ऐ शक कहीं क्यों फ़लस्त करो। जो कुछ उन्होंने ने कहा है कहो। ऐसे पर खूबी उत्तर किया जाए।— मास जो अब दिया जाएगा मंत्री— प्रमितोर आप को सलास्त रखें। अقبال बिन्द करें।— अर्ज मेरी ताकत से बाहर है कि आप के साथें बोली की जरात करो।— यारबान ही बादों— लेकिन क्या करों खिंबोर हों।— आता हाल हम बिलानीमिरा व्रप हैं।—

وران— (हाँ बान) ऐ शक कहीं। शूक से आन के बाद से अकाह कीजिए। यापि उमिशे बरी लद्दामी स्तम पर कोई बुझी लाजमन्हीं आस्का। मंत्री— यहाँ राज बिन्द करने से टरफ़ीन कानफ़िदान हो जाएगी। लेकिन लोजून अप्ते वालदैनों को दृश्य मفارقت दे जाएँगे। और उन्होंने के उर्वर शुरू उमिशे करने जो बहुजाहीं के नियम मूलम नहीं किस की ही मिल जाए। वहाँ को क्षि ब्राह्मो। अस ने ने नास यही है।— और यहाँ रावन की यही यही अरजो है कि आप लेता यात्राज बिजदीं। और आजहो कीले स्तम पुण्डरीक और राजीव दोनों वर के लड़के नहीं।

مُناسِب شَرائط تحریر کر معاونی نہیں۔ تاکہ جنگ کی نوبت نہ پہنچے۔ خونزیری خلقی نہ ہو۔ راون کا مقابلہ کرنا بچوں کا کھیل نہیں؟ میں ورن۔ یہ باتیں سنتے ہی اگ بگولا ہو گئی۔ خصوصی سے منظم تھے۔ طیش میں اگر بولा۔

वरुण “रावण अपने दिल में क्या सोचता है। किस बात पर नाजा है। ये जो खिराज का बातिल ख्याल उसके दिमाग से खारिज हो रहा है उसको जरूर खराब करेगा। इस बात की उम्मीद अब हर्गिंज न रखे। मुझको इंद्र यम और कुबेर राजा न समझो। मैं वरुण हूँ। अब इस बात का फैसला” तलवार पर हाथ रखकर ‘यही शमशीर करेगी और फिर उसको पछताना पडेगा। अगर वो लडाई पर आमादा है तो इस तरफ से भी इंकार नहीं।’ ये कहकर मंत्री को विदा किया। पुण्डरीक और राजीव को फौज की तैयारी का हुक्म दिया।

नाजरीन! वरुण की गुफ्तगू तो आप सुन चुके। अब रावण को चलकर देखिए कि वरुण का पैगाम पहुँचने पर हनुमान सुग्रीव वगैहरा से क्या कह रहा है।

रावण “मैं नहीं चाहता था कि लडाई बरपा हो। नाहक में खूनरेजी खलक हो। मगर क्या किया जावे। वो खुद बरसेरे पर खाश हो ऐसी आजम से आया है। और किसी तरह से नहीं समझता। तो हम को भी मुनासिब यही है कि अहसान फरामोश की खूब खबर ली जाए। ऐसे शरब्स से रियाअत करनी गोया औरो का हौसला बढ़ाना है।” हनुमान “जो कुछ आपने फरमाया दुरुस्त है। भला ये हो सकता है कि हम लोग अब दर गुजर करें। सुलह के तालिब हो हमेशा के लिए कलंक का टीका लगा लेवें। नहीं! हम लोग लड़ेंगे। जरूर लड़ेंगे। और अपनी अपनी लियाकतों

مناسب شرائط تحریر کر معاونی نہیں۔ تاکہ جنگ کی نوبت نہ پہنچے۔ خونزیری خلقی نہ ہو۔ راون کا مقابلہ کرنا بچوں کا کھیل نہیں؟ میں ورن۔ یہ باتیں سنتے ہی اگ بگولا ہو گئی۔ خصوصی سے منظم تھے۔ طیش میں اگر بولा۔

ورن۔ راون اپنے دل میں کیا سوچتا ہے۔ کس بات پر نازدیک ہے۔ یہ خواجہ کا باطل خیال اُس کے واسع سے فارج ہونا ہے۔ اُس کو ضرور خراب کر لیجائے۔ اس بات کی امید اب ہرگز نہ رکھے۔ محکمانہ در۔ یحیم اور پیر راجہ نے صحیح میں ورن ہوں۔ اب اس بات کا فیصلہ (تلوار پر ٹھوک رکھل) یہی شمشیر کریں۔ اور پھر اُس کو پختہ ناپر بیگا۔ اگر وہ لڑائی پر لامادہ ہے تو اس طرف سے بھی لکھا رہیں؟ کا پکبندی کو دواع کیا۔ پسند ڈریک اور راجھیو کو فوج کی تیاری مکمل ہے۔ ناظریں! ورن کی گفتگو آپ سن چکے۔ اب راون کو چلکر بھیٹھے کروں۔ کا پیغام پوچھنے پر سنبھوان۔ سکرلو وغیرہ سے کیا کہہ رہا ہے۔

راون۔ میں نہیں چاہتا تھا کہ لڑائی پر پہنچا جس خونزیری خلق ہو۔ مگر کیا کیا ہادی۔ وہ خود برسے پر خاش ہوا۔ عزم سے آیا ہے۔ اور کسی طرح سے نہیں سمجھتا تو ہم کو بھی مناسب یہی ہے کہ اس حسان فریضہ کی خوب خبر لی جائے۔ ایسے شخص سے رعایت کرنی گویا اور وہ کا ہو میلہ ٹھہندا ہے۔

سنبھوان۔ جو کچھ آپ نے فرمایا درست ہے! بھلا یہ ہو سکتا ہے کہ سُمُّوگ اب درگذر کریں۔ صلح کے طالب پر سمشیر کے لئے کلنگ کا شیکا لگا۔ میوسیں! ہم لوگ رُنیگے! ضرور رُنیگے! اور اینی بُنی لیا قتوں

के जोहर दिखा उसको बतला देंगे कि सरकशी करने की ये सजा होती है। वादा खिलाफी का ये नतीजा। महाराज! लोहा लोहे से काटा जाता है। लाठी के देव कभी बातों से नहीं मानते।” जब इसकी **ताईद** सब हाजरीन ने की तब रावण खुश होकर बोला।

रावण “शाबाश शाबाश! आप लोगों पर ऐसी ही उम्मीद है। आप ही लोगों की अकल के पुरजोर स्टीम से इस हकूमत की ट्रेन चल रही है। इसमें कोई शक नहीं कि वो बड़ा बद दिमाग और बेलिहाज है। जितनी सजा उसको दी जाए वाजिब है।” ये कहा और जंग का मुसम्मम इरादा कर सिपाह को आरास्ता होने का हुक्म दिया।

बाब (अध्याय) अठाइसवाँ

मैदानेजंग

सुबह का वक्त है। पो फट गई है। रोशनी फैलती जाती है और रात की रही सही तारिकि आलम से काफूर हो रही है। ऐसे वक्त में हमारा ख्याल जहाँ पहुँचता है मंगलपुर का वो **वसीह** मैदान है जिसमें एक तरफ बेशुमार लशकर लिए रावण **हैमाजन** है, दूसरी तरफ वरुण छावनी डाले पड़ा है। मगर दोनों लशकरों में **मामुल** से ज्यादा चहल पहल हो रही है। सोने वाले अंगडाईयाँ लेकर उठ रहे हैं और बाजे अभी नींद में कुछ ऐसे मस्त हैं कि उनके बिरादर सिपाही उनको आवाजें दे देकर जगा रहे हैं लेकिन वह करवटे बदल और हूँ हूँ कर रह जाते हैं। इस सीन को देखकर गुमान

के जोहर कहाँस कूटबद्ध हो गए कि सरकशी करने की ये सजा होती है। श्लानी का ये नित्य है। हमारा जलवा वो है से काम जाता है। लालू के दियों जही बातों से नहीं मानते।

जब इस की ताईद सब घासीन में की तब रावण खुश बोल गला—
रावण—शामाश इशामाश आप लोगों पर आसी ही सिद्ध है—आप ही लोगों की उफल के गुन्डों रस्तम है। इस लक्ष्मी की गूँगी में ही है। इस में कोई नकार नहीं कहा जाता है। भ्रातुर्दमाण और बीमात्र है जितनी सजा इस को दी जाए वाहिनी है।

ये कहा और जंग का सम्मान दर्शक द्वारा जारी कर दिया।

بَابِ الْأَهْمَاسِ سُوَالٌ

سیدان جنگ

صبح कार्रवत है—पूर्वो उपचत गी है—रुशनी बहिती जाती है—। और रात की रुशी महीने की तारीकी उल्लम्भ से काफूर हो रही है—। ऐसे वक्त में हमारी जगह पूर्जपात्र है—मंगल पूर्कार्द दूसिंह मैदान है—। जैसे इसी तरफ बिहारी लक्ष्मी नकार है—रावण खिरन है—। दूसरी तरफ ओर वरन जगह वीर दल है—। लग्जरी दल है—। लग्जरी दल में लग्जरी दल है—। लग्जरी दल से लग्जरी दल है—।

होता है कि जरूर आज इन दोनों लशकरों के माबैन (बीच) लड़ाई होगी। क्योंकि हर एक सिपाही रफह हाजत से फारिंग हो हो कर कमरे कस रहा है। हथियार बांध रहा है। और बाजे तलवारों की धारों को उंगलियाँ लगा लगा देख और ये कहकर कि आज तुम्हारी काट और तेजी देखी जाएगी मयानों में डाल रहे हैं। कमानों को तान तान कर आजमा रहे हैं और तरकशों को तीरों से पूर कर कांधों पर लटकाए जाते हैं। नेजा (भाला) और बरछी पर भी नजर डाली जा रही है। गर्ज इस वक्त हर सिपाही अपनी वो सूरत बजह बना रहा है जो एक बहादुर जवामद की होनी चाहिए। इतने में नाकूस बजा जिसकी आवाज सुनते ही तरह तरह की वर्दियाँ पहने कमानों को ताने चिला चढ़ाए बहादुर सिपाही मैदाने जंग में दिखाई दिए।

आहा! कैसे साफे बांधे खडे हैं। क्या ताकत जो एक भी लाइन से कदम इधर उधर को या किसी के बात कर अपने ख्याल को दूसरी तरफ लगाए नहीं! हर एक अपने अपने सिपहसालार की तरफ देख रहा है और मुन्तजिर (प्रतिक्षा) इस बात के कि कब लड़ाई शुरू करने का हुक्म मिले और हम अपने तीरों को दुश्मन के खून से तर कर जीम को शिकस्त दें। इसी जोश में इनके चेहरे सुर्ख हो रहे हैं और एक एक लमहा पहर के बराबर गजर रहा है।

हमारे बहादुर जरनैल हनुमान की फौज को देखना कैसे कतार बांधे खड़ी है। कि एक तिल भर का भी फर्क नहीं। और आप (हनुमान जी) कैसी खूबी से साथ छाती ताने गुजर हाथ मे लिए हर एक सिपाही का दिल बढ़ाते हुए इधर उधर टहल रहे हैं। और इसी तरह राजा वज्रबाहू और सुग्रीव भी अपनी अपनी सिपाह देख खुश हो रहा है। कि इतने मे नाकूस की जोश **आमेज** आवाज बुलन्द हुई, जिसको सुनते ही बहादुरों के चोंपे तीर जो अभी कमानों में ताने नजर आ रहे थे दश्मनों

تو ناہے کہ صدر آج اپنے دو توں شکروں کے مابین لڑائی ہوئی۔ کیونکہ ہر ایک
سپاہی سفع حاجت سے خارج ہو جو کہ کمروں کس رہا ہے۔ پھر باندھ
رہا ہے۔ اور یقینت ملواروں کی دھاروں کو بخیں اس بخانگا دیکھ اور یہ کہکشان
تمہاری کاش اور تیرزی ہو جی خاستے گی۔ سنیاں میں ڈال رہے ہیں بخانلوں
تو تان تان لگانہ رہے ہیں اور ترکشوں کو تیروں سے پر کانہ ہوں پر لگائے
جلستے ہیں۔ سخرا و ادبر بیچی پر سبی نظرِ ال جاری ہے۔ غرضِ این وقت ہر ایک
سپاہی اپنی وہ صورت وضع بنا رہا ہے جو ایک بہادر جو اندر جو اندر کی جوئی ہے۔
لتنے میں ناقوس بیجا جس کی آواز نئتے ہی طرح طرح کی ویدیاں پختے کنوں کو پختے
و خلا پڑھاتے بہادر سپاہی سید ان جنگ میں دکھائی دیکے۔
ایک بیچی جفیں باندھ کھڑتے میں سکیا طاقت جو ایک بھی لوگن سے قدمِ قدر
اوہ صدر کے یا کسی سے بات کر اپنے خیال کو دوسری طرف نکالے رہے تو منظر اس بات کا ہے
ہر ایک اپنے اپنے سپری سالار کی طرف دیکھ رہا ہے تو منظر اس بات کا ہے
کہ کب لڑائی شروع کرنے کا حکم ہے۔ اور حکم اپنے تیروں کو دشمن کے خون
سے ترک خیم کو شکست دیں! اسی جوش میان کے چہرے سخ ہو رہے ہیں
اور ایک بیک بیک پیر کے بلبل گزار رہا ہے

की छातियों को जख्मी करते हुए दिखाई दे रहे हैं। वही मैदान जो अभी साफ सुथरा नजर आ रहा था एक पल भर में बुजदिलों के लिए **होलनाक** हो डराने लगा और खून से तर हो बहादुरों के जोश को बढ़ाने लगा।

हनुमान जी का फुर्तीला हाथ तीरों की बरखा कर हैरानगी पैदा कर रहा है। क्या ताकत जो एक वार भी खाली जाए। इसका तीर क्या, तकदीर का फैसला करने वाला है। सुग्रीव और वज्रबाहू के तीरों ने भी मुखालिफ (प्रतिद्वंद्वी) की फौज में खलबली मचा रखी है। जिसको एक ही लगा, बेखौफ हो हमेशा के लिए सो गया।

पुण्डरीक जो उन के मुकाबले पर खड़ा है, दिलावरी में कम नहीं। क्या **शिस्त** बांध कर तीर चला अपनी बहादुरी के पूरे जौहर दिखला रहा है। जिसको देखकर बुजदिल भी लड़ने को आगे बढ़ा रहे हैं। आह! सुग्रीव की सिपाह को तो बेढ़ब धेरा है कि एक कदम भी आगे बढ़ने नहीं देता। जरा पुण्डरीक को तो देखो कैसा आगे बढ़ रहा है कि इसको जान का भी खौफ नहीं। बेतहाशा दुश्मनों में घुसा जा रहा है। अगरचा मुखालिफ के तीरों ने बहादुरों के जिस्मों को जख्मी कर रंगीन पौशाके पहना दी हैं। लेकिन इनका कदम बराबर आगे को बढ़ता जा रहा है।

करीब था, कि वरुण की फौज गालिब आ दुश्मनों को मैदाने जंग से शिकस्त दे, कि इतने में रावण की सिपाह में इनको अपनी तरफ बढ़ते देखा। ऐसा जोश फैला कि वो सिपाही जिन पर बुजदिली का गुमान था या कमजोरी का ख्याल था देखिए कैसी जोर से कमानों तो तान तीरों को छोड़ रहे हैं। और आगे बढ़कर नेजा और बरछी से भी काम ले रहे हैं। देखना सैंकड़ों जान पर खेल गए लेकिन दुश्मन को वहीं रोक लिया। बहादुर हनुमान जी ने इस जोर से नाकूस बजाया कि तमाम मैदान गूँज उठा।

कि जहानियों को खृणी करते होते देखाई दे रहे थे मैं बड़ी मिदान जौही मिट्ठा
स्तहर अन्तरार तहाँ आये। पैल भर्मिस बृद्धों के लक्ष्य होने के बड़े दाने लगा—
त्थन से त्रिविहारों के जूते को बढ़ाने लगा—

मैं बृद्ध जी का पैर तिला त्थन के बड़े दाने के बड़े दाने हैं—कि तात्त्व ज
आये। वह जी खाली जाते हैं। असैक्य का अनुचित किया दाने दाने है—स्कर्लो
अर्जिर बाहु के तिरों ने जूही मिट्ठा की विजय में कल्पियी पी कर्ही है जैसे जैक
जी लक्ष्य ने खृणी करते होते सोगी!!!

पैल अक जून के مقابلे पर क्षत्रा है दलारी मैं कृष्ण की शक्ति बाहर
तेर चला अपनी बिहारी के पौरे जूहे दल कहरा है—जैसे जैसे बृद्ध के बृद्ध
को कैंप बढ़ा रहे हैं—आह! स्कर्लो की सिपाहा को तो ये दृच ग्लिरा है कि एक त्रैम
मैं आगे बढ़ते हैं दिने से फ्रांटिप्रैक को तो बृहुक्षुओं की बृद्ध रहे हैं
कि असैक्य का खृणी दृच ने दृच तात्त्वात्मकों मैं गुजारा है। अग्रजूल
के तिरों ने बिहारों के चम्पों को खृणी कर लिया। पृष्ठाक्षेत्रों पैदादी मैं यैसै
लाल का ओर बराटे के बृहुस्त्राजारा है—

त्रैम तहाक वृन् की विजय उपाय अृष्ण को मिदान जैक से लक्ष्य है
कराते हैं बृद्धों की सिपाहा मैं अन को अपनी त्रैम त्रैम त्रैम त्रैम
कर देसैक्य जैसे त्रैम त्रैम कालगान तहाक याक्षर दली काखाल तहाक याक्षर
से कमल कूमान बृहुत्तर हैं। एक गे बृहुत्तर निर्वा और बृहुत्तर से जूही
काम से रहते हैं। विजया असैक्य कूमान बृहुत्तर है। लेकिन अृष्ण को यैसै
बृहुत्तर है!

बहादुर उन्होंने जूही ने असैक्य कूमान बृहुत्तर निर्वा असैक्य अृष्ण कूमान गूँज उठा—

उधर जंग के बखतरियों ने ऐसा राग अलापना शुरू किया कि बहादुर सिपाही बावजूद हजारों लाशों के जो जमीन पर पड़ी नजर आ रही हैं और जमीन लालाजार बन रही है देखकर जरा भी न घबराते हुए आगे को बढ़ दुश्मन को पीछे हटा रहे हैं। आह! क्या हैरतनाक समा है कि एक पल भर में वो बहादुर सिपाही जो, मूँछों को ताव दिए छाती ताने रावण के बाएँ तरफ खड़ा दुश्मन की छाती को अपने तीरों का निशाना बना रहा था, जमीन पर लोटता हुआ नजर आ रहा है। अगरचा दुश्मन के तीरों ने इसके जिगर को छेदकर जमीन पर गिरा दिया है। लेकिन कमान इसके हाथ में तानी की तानी रह गई है। रावण की नजर ज्योंही इस बहादुर पर पड़ी गजबनाक को यकबारगी हमले का हुक्म दिया। फिर क्या था बहादुरों ने तीर कमान को फेंक ढाल तलवार को हाथ में ले नेजा और बरछी के मौकह को देख दुश्मन को जा घेरा। दोनों तरफ से ऐसी तलवार चली कि खून कि नदियाँ बह गईं बेशुमार बहादुर जमीन पर हमेशा के लिए सो गए और हसरत भरी निगाहों से देखते के देखते रह गए।

इस वक्त बुजदिल सुपाही तो दम चुरा पीछे को हट रहे हैं और बहादुर इस मौके को गनीमत जान दिल के अरमान निकाल बहादुराना जौहर दिखाने को आगे बढ़ रहे हैं। करीब था, कि वरुण की सिपाह मैदानें जंग से मुँह मोड़ फतेह की उम्मीद छोड़ पीछे का रास्ता ले, कि इतने में आफताब उनके हाल पर रहम कर अपनी तेज किरणों को समेटा हुआ मगरिब में जा छुपा। और चाँद ने अपनी मनोहरता दिखा शूर्वीरों के जोश को शीतल, किया। इसलिए बहादुरों को अपनी तकदीर का फैसला दूसरे रोज पर रखना पड़ा।

१ ठण्डा किया

اوہ حربنگ کے بختسریوں نے ایسا راگ الائیا شروع کیا۔ کہ بہادر سپاہی باوجود
پڑا دل لاشوں کے جوزین پر پڑی نظر آرسی ہیں۔ اور زمیں لا لزار بن رہی ہے۔
دیکھل دزابی نگھرتے ہوئے آگے کوڑھ دشمن کو تیجھے ہمارے ہیں۔
آہ! اسی حیرت ناک سحر ہے۔ کہ ایک پل بھریں وہ بہادر سپاہی جو سوچوں کو
تاوہ دے چھاتی مانے راون کے بائیں طرف کھڑا دشمن کی چھاتی کو اپنے پر
لتا زینبار راتھا زمین پر لوٹا ہوا نظرار میتھے۔ لگرچ دشمن کے تیروں نے
اس کے بجل کو چیبید کر زمین پر گرا دیا ہے۔ لیکن کیا اس کے تھیں تانی کی
تانی رنگی ہے!

راون کی نظریوں سی اس بہادرگی پری غضبناک ہو یکسار گی حل کا حکم دیا۔
پھر کیا تھا۔ بہادروں سے تیر کیاں کو پھینک ڈھال تو اور کوئا تھیں میں نے شیخوں
اور رچھی کے موقع کو دیکھ دشمن کو جا گھیرا۔ دونوں طرف سے الیسی تواریخی
خون کی نیاں بہڑے گیں۔ بنتمار بہادر زین پر ہمیشہ کئے سو گئے۔ اور حضرت
پھر ہر ایک سارے دکھنے کو کھتے رکھتے۔

اس وقت بزدل سپاہی تو دم حراچھی کو ہٹ ہے میں۔ اور بیبا درا من قم
کو غنیمت جان دل کے ارمان نہ کال بہادر انہ عہد رکھا تے کوئے گے پڑھ رہے میں
قریب تھا۔ کروں کی سپاہ میدان جنگ سے سُخن مول۔ فتح کی ایسی چھپڑ
چھی کا رہتے۔ کہ اتنے میں آف ب ان کے حال پر رحم کرا اپنی تیز
کرنوں کو سمیتا ہوا مذرب میں جا چھپا۔ اور چاند نے اپنی منور تاد لکھا
شور بریوں کے چوتھے کو شستیل کی۔ اس نئے بہادر دل کو اپنی نقدیر کا
غیصہ دروس سے دفعہ پر کھڑا۔

لہ ٹھنڈا کیا۔

دوسرا دن

سुبھ ہوتے ہی جب آپ تسلیت نہ کر روان کا پرتو راون کی سپاہ پر پڑا تو جادو کا کام کر گیا۔ حس کو دیکھتے ہی بیاندوں کی تلواریں بیانوں سے بھی کمی ہوئی و کھالی دینے لگیں۔ نیزہ اور بھیساں خونخوار زبانیں بیکال و چمن کو دھمکانے لگیں۔ بیانوں کے چہروں سے معلوم ہوتا تھا کہ لاٹی کا بھٹاکے بے صبری سے کر رہے ہیں۔ اگر سپہ سالار کا خوف نہ ہوتا۔ تو کبھی کسی میں جنگ میں جاہاڑی کی داد نہیں۔ گنپیں رہنم کی پائیدی ضروری تھی۔

اس لئے دلادرانِ جنگ کو جوش بھروسے میںوں سے انتشار کرنا پڑا۔

کھوڑی اور میں ناقوس کیا۔ اسپہ سالار میں جنگیں نظر آئے۔ دوسری طرف ورن کے سپاہی بھی زور شور سے تیار ہوا کہ تندر حکم کے کھڑے میں۔ مگر بعضی جو ناجربہ کا رس افتاب کو دیکھ گھبرات میں پڑا کہ دوسرے کی طرف انقوس بھری نظر سے دیکھ رہے ہیں۔

شاید یہ محل کی شکست کا باعث ہے جس نے ان کو اس قدر مایوس کرست بند کھاہے! دن اپنے دریک یا کہی نظر میں سمجھ گی۔ اور ذہنی نگہداشت میں ابلینہ اور سے بول۔ انقوس کا مقام ہے کہ ورن کی سپاہ اور سینئی بیاندوں اپنے بیرون کا ہمپیں کریں کہ دن کی شکست ہونے پر زخم کا ہے۔

سے دل جھریں؟ جھتری وہی ہے جو میدانِ جنگ میں دشمن کو مارے۔ با خود مرسے! راون کی دبی بجھ ہے جس کو تم نے کئی دفعہ شکست دی ہے۔

اٹھ اور دو کھن کو باندھا اور راون کو بیکا چکے ہو۔ باگر ایک دن کی شکست کے سماں تھی۔ یہ حالت ہو گئی ہے تو اس پتھری ہوتے کا دم بھروسہ ابھی دیش

دوسرادن

और शूद्रों में जा मिलो। मुझको ऐसे क्षत्रियों की जरूरत नहीं जिनको अपने नाम की गैरत नहीं। बहादुरो! जिन को तुम इस वक्त मैदान में खड़े देख रहे हो, आज ही देखोगे कि दुश्मन को पामाल (रौंद) कर दुनिया में नाम पाएँगे और तुम्हारे जैसे बुजदिल हमेशा के लिए शरमसार हो पछताएँगे। जाओ तुम जैसो की जरूरत नहीं। जाओ!” नाजरीन! पुण्डरीक की बातें बिजली की तरह बहादुरों के खून में असर कर गई। वही गमगीन चेहरे सुर्ख हो गए और तलवारें मयानों से निकाल बड़े जोश के साथ **रज्मगाह** में नजर आए।

पुण्डरीक इस कदर सिपाह मे जोश देख निहायत खुश हुआ और अपने वालिद से जाकर बोला।

पुण्डरीक “महाराज! सुग्रीव के मुकाबले में आप (वरुण) हैं। और रावण के सामने मैं खुद और राजीवा” और इसी तरह दिलावराने जंग को भी तकसीम (बांट) कर दिया। इतने में नाकूस बजा जिसकी आवाज सुनते ही **बजतारियों** ने जंग का राग अलापना शुरू किया। बहादुर कल के अरमान दिल खोल कर निकालने लगे। और खुंखार तलवारें मैदाने जंग में चमक अपने जौहर दिखाने लगे। हजारों सिपाही क्षण भर में घायल हो नीचे सर झुका डगमगाने लगे। और खुंखार दरिंदे दूर से मुर्दा लाशों को देख खुशी मनाने लगे।

आह! वो सिपाही जो अभी अपनी तलवारें का वार करते हुए नजर आ रहे थे जमीन पर लेट तडप तडप कर जान दे रहे हैं। और हसरत भरी निगाहों से दूसरों की तरफ देख रहे हैं। बाजे जो कुछ फासले पर खड़े हैं तीरों से काम ले दश्मन को परेशान कर रहे

در شود روں ہیں جاملو۔ مجھکو ایسے چھترلوں کی ضرورت نہیں۔ جن کو اپنے
ام کی غیرت نہیں۔ بہادر جن کو تم اس وقت میدان ہیں لکھرے دیکھ
سے ہے ہو۔ آج یہی دیکھو گے کہ تمن کو پاہال کر دینا میں نامہ پائیں گے۔ اور
تم خدا سے میسے بڑل جیش کے لئے شرمسار میوچھتا تیں گے۔ جاؤ ای حصبو
از ضرورت نمر اعاظہ !!

ناظرین بسیاریک کی باش جلی کی طرح ہباؤروں کے خون میں اڑکر گئیں
وہی غمکھیں پھر سے تربخ ہو گئے۔ اور تلواریں بیساوں سے نکال پڑیں جو شش
کے ساتھ رنگ گاہ کے نظر آتے۔

پندریک اس قدر سپاہ میں جوش دیکھنے ایت خوش ہوا۔ اور اپنے والد سے حاکر اولا

پندرہ بجھے - جہاں اج ! سگر لوکے مقابلہ میں آپ رون ہلیں - اور روان
تھے سماحتے میں خود اور راجھو - اور اسی طرح دلا دیاں جنگ کو جی تھیم کر دیا۔
اتھے میں ناقوس بیجا۔ جس کی توازنستہ ہی بحتریوں سے جنگ کا رالگ الائچا
شروع کیا۔ ابھا دل کے اسان دل کھول کر سکا ہے لگے۔ اور خونخوار بولاریں
سیدان جنگ میں چمک اپنے جوڑ دکھانے لگیں! انہاں دل سپاہی
جن بھریں کھائیں چڑھیے سرچھکاں دکھانے لگے۔ اور خونخوار بندے دوستے
مدد والیں کو کھونخونگہ منانے لگے۔

او ہر سپاہی جو بھی اپنی نواروں کا وارکتے ہوئے نظائر ہے تھے زین
پرست طب طب کر جان دے رہے ہیں۔ اور حضرت بھری نگاہوں سے
وہ سرحد کی طرف دیکھ رہے ہیں !!!
ایضہ جو کچھ فاصلہ پر کھڑے ہیں تبروں سے کام لے دشمن کو پر لشائ کر رہے

हैं। बहादुर वरुण और सुग्रीव एक दूसरे पर वार कर शुजात दिखला रहे हैं। हमारे बहादुर जरनैल हनुमान जी को देखना कैसी फुर्ती के साथ सब तरफ चक्कर लगा देख रहे हैं, कि जो कमज़ोर नजर आए उसकी इमादाद को पहुँचे। उफ! जरा रावण को देखना, आफत नागेहानि (अचानक) की तरह वरुण की सिपाह पर आन पड़ा है। बहादुरों की नाक में दम कर रखा है। अगरचा तरफेसानी भी बहुत कोशिश करते दिखाई देते हैं मगर इसके मुकाबले की ताब नहीं रखते। आह! बहादुरों के खून से नदी बह निकली है। मगर गजब ये हुआ कि उस पर आफताब की शवाईं पड़ बुजदिलों का हौसला पस्त कर रही हैं।

हा हा! वरुण की सिपाह तो बहुत कमजोर मालूम होती है। पुण्डरीक और राजीव कहाँ हैं? वो देखो दोनों भाई आ गए और रावण को तब ऐसा धेरा है कि जरा फुरसत नहीं देते। उफ! किस जोर से रावण पर तलवार का वार किया है। मगर उसने भी खूब बचा लिया। क्यों न हो ये बड़ा तजुर्बेकार है। इसने बहुत से मारिके देखे हैं। अगर ऐसा न करता तो कभी न बचता। देखो कैसी सफाई से पीछे हट तीरों का वार कर रहा है। अगर चा पुण्डरीक और राजीव दोनों को जख्मी कर दिया है। मगर बहादुर पुण्डरीक जख्मी हो शेर की तरह गरज कर रावण के सर पर पहुँच ही गया है। लेकिन हमारे बहादुर जरनैल की नगाह भी इस तरफ पड़ गई है। वो देखो! बिजली की तरह वहाँ पहुँच कर गरज कर वार कर रहा है। आखिर पुण्डरीक को बेहोश कर जमीन पर गिरा ही दिया है।

राजीव भाई की ये हालत देख बड़े गुस्से से हनुमान जी पर लपका। मगर रावण ने पीछे से होकर एक ही बरछी से उसका काम तमाम कर दिया। उधर हमारे जरनैल

میں! بہادر ورن اور سگرلو ایک دوسرے پر وار کر شجاعت و کھلا رہے
ہیں! ہمارے بہادر جنرل ہنرویان جی کو دیکھنا کس پھر تک کے ساتھ
سب طرف چکڑ لگا بچکڑ رہے ہیں۔ کہ جو کمزور نظر اسے اُس کی اولاد کو پوچھے
اف اذارلوں کو دیکھنا آفت ناگہانی کی طرح ورن کی سپاہ پرانا ٹرا
ہے۔ بہادرلوں کا ناک میں دم کر رکھا ہے۔ اگرچہ طرف ثالی بھی ہت کوش
کرتے و کھائی دیتے ہیں۔ مگر اس کے مقابلہ مکناب نہیں رکھتے! آہ! بہادر لوں
کے خون سے ندی یہہ نخلی ہے سگ غضب یہ ہوا کہ اُس پر افتاب کی شعاعیں
پر بڑے لوں کا خو صدای سیست کر رہی ہیں۔

۱۳۶ اور ان کی سچاہ توبہت مکر و معلوم ہوتی ہے۔ پنڈریک اور راجھیو کہاں ہیں؟ وہ دیکھو! دوفو بھائی آگئے۔ اور راؤں کو اب ایسا گھیرتے کہ ذرا فرست نہیں دلتے۔

اُف ایک نور سے راؤں پر تلوار کا وار کیا۔ مگر اس نے بھی خوب پکایا۔
لیوں نہوا! یہ بڑا تجربہ کا رہے۔ اس نے بہت سے معروکے دیکھے ہیں۔ اُگر
ایسا نکرتا تو کبھی نہ بچتا۔ دیکھو! ایکسی صفائی سے پچھے پڑتیں ہوں کا دار
کرنا ہے۔ اگر چند پنڈریاں اور راجھو دنوں کو رنجی کر دیا ہے۔ مگر بہا در
پنڈریاں رنجی ہو شیئر کی طرح گج کر راؤں کے سر پر پوچھی گیا ہے۔
لیکن ہمارے بہا در جنیں کی نگاہ بھی اس طرف پر گئی ہے۔ وہ دیکھو! جلی کی
طح وہاں پونچکر گز کا وار کر رہا ہے۔ آخر پنڈریاں کو ہموش کر زمیں پر ٹراہی
دیا ہے۔

راجیو بھائی کی یہ حالت ویکھ جسے غصہ سے مہنومن ہی پر لپکا گراون
نے پیچے سے بکرا لیکے ہی برجی سے اُس کا کام تمام کر دیا۔ اُدھر ہر چیز

ने जब पुण्डरीक के हाथ पाँव बांध दिए तो वो बड़ी हैरानगी से इसकी तरफ देखता हुआ बोला।

बोला तब ये वरुण **सत** बालक तेरो वेश
क्या नाम तुम्हारा कुँवरजी कौन पिता और देश
हनुमान जी

पिता हमारा पवन है रत्नपुर नाम ग्राम

न छोड़ूँ शत्रु ज्यूँ दिखे हनुवंत मेरा नाम

लिया जन्म **लग** वंश में मम प्रतिज्ञा जान

मारूँ शत्रु रण दिखे नहीं तो तजूँ प्राण

आह! पुण्डरीक को परेशानी की हालत मे देखकर वरुण की आँखों के आगे अंधेरा छा गया। बेखुदी के आलम में हो बरछी ले कर इस तरफ को बढ़ा। मगर अब क्या हो सकता है कि स्मृत हार **वीच** की है। मुक्कदर पलट गया है। योंही उसने इस तरफ का रुख किया वही सुग्रिव ने उस वक्त को गनीमत जान नेजे की नोक से जख्मी कर पकड़ लिया। वरुण की अफसोस नाक हालत देखकर बुजदिलों के होश उड़े। हथियारों को फेंक कर भागते नजर आए। मगर दिलावराने जंग बराबर वार करते रहे। इतने मे फतह का **फेरा** हवा में उड़ता हुआ नजर पड़ा, जिसको देखकर वो मैदान जो थोड़ी देर पहले तलवारों की खड़ाखड़ से गूँज रहा था सुनसान हो गया। और रावण की सिपाह खुशी के नारे बुलन्द करती हुई कैम्प को वापिस आई। आह! जिस वक्त वरुण **सरनो** परेशान सूरत बनाए पुण्डरीक के साथ रावण के रुबरु हाजिर हुआ सबके दिल उसकी गर्दिश **अयाम** को देख धड़क उठे। ईश्वर करे कि मुसीबत की घड़ी दुश्मन को भी न सीब न हो। देखिए ये वही राजा वरुण है जो कल मालिक तख्तोताज था। और आज कैसी बेकसी की हालत में हो रहा है।

ने जब पैंडरीक के नाम्हावॉन पांडुदूसे तो वह भ्री हिरान्गी से
एक तरफ दृक्षता हो गूला। ۵
बूलात योरन स्ट बालत योरलिस की नाम त्वारक लोगी कून प्ताएरोलिस
हेस्वान जी ۵

प्ताएरालून, रत्न पूर नाम ग्राम न चेहुन त्तरोवीक्षण नेहोन्त मिराम
ये जन्म ल्लूश में मम पैंडी जान नाम ख्तरून रक्खनिस तो बजून यैन
आह एपैंडरीक तो प्रियानी की हालत में दिखद्वरन की अंगुलों के आंगे
एन्द हिराज्जी आया। ज्योदी के उल्लम में बोर्ज्जी से कास तरफ को त्रिहांगरब
की हो सकत है। चंत बारो ज्जीकी है मेंद लिट गिया है। यो नी एस ने
एस तरफ कानून ल्लून की यादें स्कर्गियोने एस वृत्त कृग्निमत जान निरोकी लोक
से रुखी करको त्तिला!

वरुण की अवोस्नाक हालत दिखद्वरन द्वारुन के जून ओर से त्तिलाय
को उचिन्क बहाग्ने लेत्रारे ग्रुदलावरन ज्जांग ब्राह्म वार करते रहे। अत्ते
में रुख का प्तरास्वामि उड़ता हो लेत्रारा। ज्जें को दिखद्वरन वो त्तुर्वी
द्वरी स्पैन त्वारुन की कुम्ताकुम्ते से गूँख त्तहासन हो गिया। एवरावून
की सजाह नूशी के नगर से ब्लिंकरती यो लीप को दाइन आयी।

आह ज्जें वृत्त वरुण स्मृगुन प्रियान सूरत बनाए पैंडरीक के
सात्तेरावून के रुबरु हावर्द्द्रुष्ट एस के दल में की ग्रुन याम तो दिखद्वरन
अंत्ते!!!

एश्वर करे कि रुम्हित की त्तें में युधि लेफिब न होर दिखें यो यी राजवरुन
बेंजूल ल्लूक त्तें त्ताज त्तहा। एर अज कीसी ल्लूकी की हालत में हो ना हों।

अगर चा **इजनीर** बेटे का गम उसके दिल को **कबाब** की तरह सूखता कर रहा है लेकिन ये खूने जिगर पी पी कर **अतश** गम को सर्द आहो से फर्द करता हुआ चुप चाप **मोदब** दस्त बस्ता सर तसलीम खम कर खड़ा है।

रावण कुछ देर उसकी तरफ देखने के बाद “वरुण कहो क्या हाल है?”

वरुण सर नीचे झुका खामोश खड़ा है।

रावण “अब खामोश क्यों हो? तुम को अच्छी तरह मालूम है कि इंद्र यम और कुबेर वगैरा तो मेरी पनाह मे आए और तुम ऐसे सर करशी हो गए। अफसोस तुमको उनकी तरफ देख कर भी कुछ ख्याल न आया। बल्कि मेरे मंत्री भेजने पर भी कुछ गौर न किया।”

वरुण निहायत धीमी आवाज से “ये सब मेरी ही नादानी का नतीजा है। मुझपर रहम किजिए। मैंने अपनी किए की सजा पाई।”

रावण “इतनी जल्दी! तुम तो कहते थे कि मैं वरुण हूँ मुझको और न ख्याल करना।” वरुण सर्द आह भर कर शरम से सर नीचे झुका लिया और कुछ जवाब न दिया। तब हनुमान और सुग्रीव वगैरा ने दरम्यान मे पड़ कर बेहद मुशकिल वरुण को माफी दिलाई। और आइन्दा के लिए शरायत मुकर्र कर वरुण से मुखातिब होकर कहा “जब महाराज तुम को याद करे फौरन हाजिर होना होगा वरना याद रहे फिर ऐसा मौका कभी न दिया जावेगा।”

वरुण इन सब का निहायत शुक्र गुजार हो दुरमती नगर को वापिस गया। और रावण ने खुशी खुशी लंका का रास्ता लिया। और हर एक को **खलात इता** कर वहीं से रुखसत किया।

अर्जुन उर्जिती का उग्र मूर्ख के दल को बाब की तरफ सूखते करता है। लेकिन ये खून खूली पी गर्ने गम को सर्वाहों से फ्रॉक ताज्हा छप जाप मुरोब दस्त बिस्ते सर्वलिम खम करता है।

रावण - रंग और इसी तरफ दिखने के बदल औरन कहो की तरह है?

वरुण - सर्वनिये जुकामाओश करता है।

रावण - अब खामोश यीवों हो? तम को अच्छी तरफ मूलम है कि अंदर - यह और क्षिर औ ग्विर औ तमिरी पिनाह में आई एवं तम यीसे सरक्ष योग्य है। अब तो अन की तरफ दिख कर जीवी कृष्ण खाल राया। लेकि मिर्से मन्त्री बिज्ञे ब्रह्मी क्षेत्र खो न दें।

वरुण - निहायत चम्मी आदासे) ये सब मिर्सी ही नाद न करते हैं।

मध्येर रंग करते हैं। यीस ने अपने के की सरायाली।

रावण - अनी जल्दी बातम लौटते तक कि यीस वरुण हों। ज्ञान और निखाल करना।

वरुण - (सरदार बहर कर) शरम से सर्वनिये जुकामाया। ओ, कृष्ण बोध न दिया तब मन्मोहन और स्कर्लो औ ग्विर ने दरमान में प्रकर संबद्ध फैल वरुण गम सुनानी दलानी। और आईन्दा तक से शरायत मिर्से कर वरुण से खात्र बहर की। जब ज्ञान तम को बात करी थोड़ा हास्त्र होना चाहिए का। वरना याद रहे तो चर्चा इसलिए तुकड़ी न दिया जावेगा।

वरुण इन सब का निहायत शंकर गंडर हो वर्षती नंगे को दाली गया। और रावण ने खुशी खुशी लिया कार रास्ते लिया। और हर एक को खलूत उत्तर कर दीन स्तर खस्त की।

बाब (अध्याय) उनतिसवाँ

मै इसको कब तक कुँवारी रखूँगी

हमारा ख्याल हमको लेकर शहर किञ्चिंधा में, जो मद्रास के शमालो मगरिब (उत्तर पश्चिम) और हैदराबाद के जुनूब (दक्षिण) में जेर अहतमाम बमोजिब रामायण को लायक इंजीनियर विश्वकर्मा के **तामीर** कराया गया था, उस वक्त पहुँचा है जब चंद नौजवान लड़किया जर्कबर्क पोशाके पहने पद्मरागा, के कमरे में बैठी हुई बातें कर रही हैं। जिन की गुफ्तगू को सुनकर हमारे कान भी उसी तरफ **रुजू** हो गए हैं। सुनिए पद्मरागा बालसुन्दरी से क्या कह रही है

पद्मरागा “सखी औरत और खाविंद का रिश्ता मानिन्द (जैसे) बादशाह और वजीर के है। जिस घर मे इन दोनो का इत्फाक है वही **बाइसे खुशनुदी** दीनी दुनियावी तरकी खानदान है। और एक दूसरे से बदगुमान रहना गोया बरबादी खानदान **जवाल**

नगनामूस कुर्बत रंजो आलम है। इसलिए औरत क्या मर्द दोनों का फर्ज है कि एक दूसरा मुहब्बत से काम ले, दिलोजान से उल्फत (प्रेम) करो। अगर कोई ऐसी भी आदत हो जो दूसरे के बरखिलाफ हो उसके **तरक** करने कोशिश करो। वरना याद रहे बड़ी दिक्कत पेश आएगी। अजीज जिन्दगी भी जान का बबाल हो तनह हो जाएगी।” बालसुन्दरी कुछ पूछने को थी कि किसी के आने की आहट मालूम हुई। झिझक कर रह गई और सब बरामदे की तरफ देखने लग पडे कि इतने मे पद्मरागा की

१ सुग्रीव की लड़की का नाम है

بَابُ اسْتِيْوَال

میں اُن کو کہ تک نکواری رکھوںگی

ہمارا نیوال ہم کو لیکر شہر کسند ایں جو مدراس کے شمال و مغرب او حیدر آباد کے جنوب میں زیر انتظام بھجب رامین کے لایق انجینئر لبوکر مان کے تعمیر کرایا گیا تھا اس وقت پوچا ہے جب چند نوجوان لڑکیاں نرث برق رشکیں پہنچے پدھر را گا کے کمرے میں ٹھیک ہوئی باتیں کر رہی ہیں۔ جن کی گفتگو سکر ہمارے کان بھی اُسی طرف رجوع ہو گئے میں سننے پدھر را گا بال سندھی سے کیا کہہ رہی ہے۔

پدھر را گا۔ سکھی عورت اور خاوند کا رشتہ مانند بادشاہ اور وزیر کے ہے۔ جس پھر میں ان دلوں کا تلاقا ہے وہی باعث خوشنودی دینی و دیناوی ترقی خاندان ہے۔ اور ایک دوسرے سے بگمان رہنا گویا بر بادی خاندان زوال ننگ ناموس قربت رنج وال ہے۔ اس نئے عورت کیا مرد دلوں کا فرض ہے کہ ایک دوسرے محبت سے کام ہے۔ دل و جان سے الٹ کرے اگر کوئی ایسی بھی عادت ہو جو دوسرے کے بخلاف ہو اُس کو ترک کرنے کی کوشش کرے۔ ورنہ پادر ہے ہری دفت پیش اُسی۔ عزیز زندگی بھی جان کا دبال ہو جائیں گی۔

بال سندھی کچھ پوچھنے کو تھی کہ کسی کے آئے کی آہٹ معلوم ہوئی جھجک ریگی اور سب بآسے کی طرف دیکھنے لگ پڑیں کرتے ہیں میں پدھر را گا کی لہ سگریو کی روایی کا نام ہے۔

والدہ ساہنے آئی ہوئی نظر پر تسب تو سب دھرم خود ہو نیچے سر جھکا خاموش ہو گئیں مگر پیدم را کائے جلدی سے اٹھکر والہ کو نپاہ کیا۔ اور شیخ نے کیوں بڑا تھنا کی۔ لیکن رانی بالکلیوں کو دیکھ دیاں زیادہ تھنہ مان سب خیال نہ کر سچھ سوچتی ہوئی اپنے کمرے کو دیپس جا رہی ہے۔ اور اب دل ہی دل ہیں یوں کہہ رہی ہے ”میں کہ تاک اس کو نکواری رکھوں گی۔ گویر چارپی اپت سیدھی سادی ہے۔ لیکن سیدھا دھرم ہم ہیں کہاب خاموش ہوں اور اور اس کی شادی کافاً نہ کرو۔ حب تاک شام نہ پوئی رانی اسی فکریں بتلا رہی۔ حب سکریو مل میں آیا کئنے لگی راوی۔ ناطرین اب یہ خیال نہ کریں کہ پیدم را کا شوخ دیدہ ہے یا آغاز جوانی ہے جو ایسی بالتوں میں مشغول ہے۔ نہیں! اس ہرگز نہیں!۔ پیری نیک خضلات دھرم کے پانے والی شرم حضور اڑکی ہے۔ جب کبھی اس کو سکھی ہمیلیوں سے بات کرنیکا موقص ملابہ ہی ان کو نعیت آئیں رہا اور ست شاستروں کا اوپیش دینا شروع کر دیا!

رانی ‘سُّوَّامِیِّیَّی! کुछ پدھراغا کا بھی فیکر ہے کی نہیں؟ عاصی کیاں تماام ب्यاہی گई ہیں اور اپنے اب تک تلاش بھی نہیں کی۔

سُّوَّامِیِّیَّی! مُذکوٰہ اس بات کا خود رُخیال ہے مگر کیا کروں۔ کوئی طریکاً لایق ہے۔ اور اپنے دیسے رُطکے کے ساتھ شادی کرنے کو دل نہیں چاہت کیونکہ اس کی تامن نہیں کی خوشی کا مارہماری اسی وقت کی سوچ اور دھار پر منحصر ہے۔

رانی ‘جو کچھ اپنے فریاد رہت ہے۔ سگرا بخاموش رہنے کا بھی وقت نہیں۔ اور دید مقدس کے بھی برخلاف ہے۔ کیونکہ اس کا پہنچ پر پڑا ہو چکا ہے۔

رانی ‘سُّوَّامِیِّیَّی! مُذکوٰہ اس بات کا خود رُخیال ہے مگر کیا کروں۔ کوئی طریکاً لایق ہے۔ اور اپنے دیسے رُطکے کے ساتھ شادی کرنے کو دل نہیں چاہت کیونکہ اس کی تامن نہیں کی خوشی کا مارہماری اسی وقت کی سوچ اور دھار پر منحصر ہے۔

رانی ‘جو کچھ اپنے فریاد رہت ہے۔ سگرا بخاموش رہنے کا بھی وقت نہیں۔ اور دید مقدس کے بھی برخلاف ہے۔ کیونکہ اس کا پہنچ پر پڑا ہو چکا ہے۔

والدہ ساہنے آئی ہوئی نظر پر تسب تو سب دھرم خود ہو نیچے سر جھکا خاموش ہو گئیں مگر پیدم را کائے جلدی سے اٹھکر والہ کو نپاہ کیا۔ اور شیخ نے کیوں بڑا تھنا کی۔ لیکن رانی بالکلیوں کو دیکھ دیاں زیادہ تھنہ مان سب خیال نہ کر سچھ سوچتی ہوئی اپنے کمرے کو دیپس جا رہی ہے۔ اور اب دل ہی دل ہیں یوں کہہ رہی ہے ”میں کہ تاک اس کو نکواری رکھوں گی۔ گویر چارپی اپت سیدھی سادی ہے۔ لیکن سیدھا دھرم ہم ہیں کہاب خاموش ہوں اور اور اس کی شادی کافاً نہ کرو۔ حب تاک شام نہ پوئی رانی اسی فکریں بتلا رہی۔ حب سکریو مل میں آیا کئنے لگی

راوی۔ ناطرین اب یہ خیال نہ کریں کہ پیدم را کا شوخ دیدہ ہے یا آغاز جوانی ہے جو ایسی بالتوں میں مشغول ہے۔ نہیں! اس ہرگز نہیں!۔ پیری نیک خضلات دھرم کے پانے والی شرم حضور اڑکی ہے۔ جب کبھی اس کو سکھی ہمیلیوں سے بات کرنیکا موقص ملابہ ہی ان کو نعیت آئیں رہا اور ست شاستروں کا اوپیش دینا شروع کر دیا!

رانی۔ سو ای جی! اکچھ پیدم را کا بھی فکر ہے کہ نہیں؟ اس کی محعمہ رُکیاں تمام بیاسی گئی ہیں اور اپنے اب تک بڑی تلاش بھی نہیں کی۔

سکریو۔ پیری جی! بخواہس بات کا خود رُخیال ہے مگر کیا کروں۔ کوئی طریکاً لایق نہیں آتا۔ اور اپنے دیسے رُطکے کے ساتھ شادی کرنے کو دل نہیں چاہت کیونکہ اس کی تامن نہیں کی خوشی کا مارہماری اسی وقت کی سوچ اور دھار پر منحصر ہے۔

رانی۔ جو کچھ اپنے فریاد رہت ہے۔ سگرا بخاموش رہنے کا بھی وقت نہیں۔ اور دید مقدس کے بھی برخلاف ہے۔ کیونکہ اس کا پہنچ پر پڑا ہو چکا ہے۔

रानी की बातें सुनकर सुग्रीव निहायत मुतफिक्र हो गया। और बहुत देर तक आलमे सकूत में रहा। दफतन जो कुछ ख्याल दिल मे आ गया तो कहने लगा।

सुग्रीव खुशी के लहजे में “आहा! खूब याद आ गया पवन का लड़का हनुमान बड़ा दाना और आलिम है। और बहादुर भी अब्वल दर्जे का है। अलबत्ता उसके वस्फ (गुण) मेरे दिल पसन्द हैं। शायद उसका जिक्र मैंने तुमसे किया था।”

रानी “वही जो तुम्हारे साथ पिछली दफा वरुण के मुकाबले में शरीक था।”
सुग्रीव “हाँ हाँ वही वही।”

रानी “तो जब आपको उस पर इत्मिनान है और हर तरह से तसल्ली है तो फिर देर क्यों करते हो?”

सुग्रीव “नहीं प्रियजी मैं सुबह ही मंत्री को भेज दूँगा। आप तसल्ली रखें।”
दूसरे रोज सुबह होते ही एक मंत्री को रत्नपुर रवाना किया।

बाब (अध्याय) तीसवाँ

गृहस्थ आश्रम सबसे अफजल है

रत्नपुर के राज मन्दिर के बाएँ तरफ एक आलिशान बारादरी है जिसको पवनजी ने मुख्तलिफ (अलग अलग) जगह के कारीगरों को बुलवा और बहुत सा रूपया खर्च करके बड़े शौक से तैयार कराया है। बारादरी मजकोरकी चोली छत सुनहरी गुलकारियाँ और जा बजा शीशों से आरास्ता है। चूने की दिवारे निहायत साफ और सुथरी है। जिन को देख कर संगेमरमर का शक हो जाता है। और इन पर बेल बूटे ऐसे खूबसूरती और नजाकत के साथ बनाए गए हैं कि दूर से

रानी की बातें سुन्दर स्कर्लो बनायत तफ़्कर मौकिया और बहत दिरक उल्लम सकूत
में रहा। دفعت جو کچھ خیال میں آگیا تکہتے گا۔

س्कर्लो۔ (خوشی کے لمحے) آنا! خوب یاد گیا۔ پون کاڑکا ہنہوں
بڑا ہنا اور عالم ہے۔ اور بہا دیسی اول درج کا ہے۔ البتہ اس کے وصف
میرے دل پسند میں۔ شاید اس کا ذکر میں نے تم سے کیا تھا۔

رानी۔ وہی جو تھا سے ساتھ کچھی دفدوران کے مقابلے میں شریک تھا۔
س्कر्लो۔ ہاں! ہاں! اور ہی وہی۔

رानी صاحب آپ کو اس پر اطمینان ہے اور ہر طرح سے قلی ہے تو چہ
دیکھوں کرتے ہو؟

سکر्लो۔ نہیں پریچی! میں صبح ہی منتری کو بھیج دوں گا۔ آپ تسلی کھیں۔
وہ سرسے روز معج مہنتے ہی ایک منتری کو رتن پور روانہ کیا۔

باب تہیسوال گھست آشرم سے افضل ہے

رتن پور کے راج مندر کے باہم طرف آپ عالیستان بارہ دری ہے
جس کو پون جی نے مختلف حکمیت کے نامیگروں کو ملبو اور بہت سارو پریچ
کر کے ہٹے شوق سے تبارک رکایا ہے۔ بارہ دری مذکور کی چوبی چھت شہری
گھنگھاریاں اور جا بیشیوں سے کراستہ ہے۔ چونے کی دیواریں بہنات
ہے اف اور سُتھری میں جن کو دیکھا رنگ درکار تک موہا ہے۔ اور ان پر
بس بوئے ایسی خوبصورتی اور زراکت کے ساتھ بنائے گئے ہیں کہ درستے

گولجار نجرا آتا ہے।

آہا! سبج سبج پتھوں اور ناجوک پتالی دالیوں میں سुخ بسنا تی اور **अद्वे** رنگ
بیانگے کے سر فूل کیا خुشنوما مل مو ہوتے ہیں۔ اور باجے شاغوفا جو ابھی اچھی طرح
تھر سے نہیں بیانگے مگر اس جوگی کی طرح جو پر ماں کے دھیان میں کچھ عرصہ کے لئے
انھیں بذرکے ملن رہتا ہے اور بعد میں پر بھری انھیں کھول کر دنیا کو
دیکھتا ہے تو وہ کھلے ہوئے دکھائی دیتے ہیں صرف یہی نہیں۔ ان پر
چھوٹے چھوٹے جالوز بھی بڑی جوبلی کے ساتھ نظر آتے ہیں کہ دیکھنے والا
جزیرہ رہ جاتا ہے۔

یقچے سچھ مجملی فرش جس کے حاشیہ پر قلاب تو کا کام۔ اور عین درمیان میں
ایک گول چکر بنایا ہے۔ جو پیاس کے لیے اپنے چار پانچ گز سے کم نہیں۔
س پر کارگرنے کے لیے کیا کارگر نے زری کے بیل پوٹے بنایا کہ دشکاری نہیں کمال یعنی دکھایا ہے
س گول چکر کے شمال کی طرف ایک جڑا اوسوراں کی جوکی پر بستیں کالگیلا
بیجا ہوا اور اطلس کا گاؤں کی وجہ دھرا ہے جس کا سہارا لئے اور بدن کے بیچے
حصہ پر دشالا چکیلا سے پونجی شیخے کچھ سوچ رہے ہیں اور بائیں طرف
پر دھان رتن سبیکا غذہ نا تھیں نئے پڑھ رہے ہے۔ اور ساہنے جنوب کی
طرف ایک بڑا دروازہ آمدوخت کا ہے جہاں دور بیان و دردی پہنچ کر
ہے۔

ایک شخص درمیان قد سفید ریش سر گول چکردار گڈی باندھے اور انگر کھا
ہئے دھیلی دھوتی کو پاؤں سے پٹکاتا ہوا آیا۔ اور اس پر سے دروازہ
ہر پر بخ صباوں سے کچھ دریافت کر باہر دری کے اندر و اصل ہوا اور چکر
کا پونجی کو پنام کیا۔

گلزار نظر آتا ہے۔

آنا! سبز نہر تپوں اور نارک پتلی ڈالیوں میں سُخ بسنا تی اور اودے زنگ
برنگ کے پھول کیا خشنہ معلوم ہوتے ہیں۔ اور بعض شگوف جو ابھی اچھی طرح
رسے نہیں کھلے مگر اس جوگی کی طرح جو پر ماں کے دھیان میں کچھ عرصہ کے لئے
انھیں بذرکے ملن رہتا ہے اور بعد میں پر بھری انھیں کھول کر دنیا کو
دیکھتا ہے تو وہ کھلے ہوئے دکھائی دیتے ہیں صرف یہی نہیں۔ ان پر
چھوٹے چھوٹے جالوز بھی بڑی جوبلی کے ساتھ نظر آتے ہیں کہ دیکھنے والا
جزیرہ رہ جاتا ہے۔

یقچے سچھ مجملی فرش جس کے حاشیہ پر قلاب تو کا کام۔ اور عین درمیان میں
ایک گول چکر بنایا ہے۔ جو پیاس کے لیے اپنے چار پانچ گز سے کم نہیں۔
س پر کارگرنے کے لیے کیا کارگر نے زری کے بیل پوٹے بنایا کہ دشکاری نہیں کمال یعنی دکھایا ہے
س گول چکر کے شمال کی طرف ایک جڑا اوسوراں کی جوکی پر بستیں کالگیلا
بیجا ہوا اور اطلس کا گاؤں کی وجہ دھرا ہے جس کا سہارا لئے اور بدن کے بیچے
حصہ پر دشالا چکیلا سے پونجی شیخے کچھ سوچ رہے ہیں اور بائیں طرف
پر دھان رتن سبیکا غذہ نا تھیں نئے پڑھ رہے ہے۔ اور ساہنے جنوب کی
طرف ایک بڑا دروازہ آمدوخت کا ہے جہاں دور بیان و دردی پہنچ کر
ہے۔

ایک شخص درمیان قد سفید ریش سر گول چکردار گڈی باندھے اور انگر کھا
ہئے دھیلی دھوتی کو پاؤں سے پٹکاتا ہوا آیا۔ اور اس پر سے دروازہ
ہر پر بخ صباوں سے کچھ دریافت کر باہر دری کے اندر و اصل ہوا اور چکر
کا پونجی کو پنام کیا۔

پونجی جرا سر ٹھاکر “آہا! چندرگتی تुم کہاں رکھتی تھی میرے ساتھ کے بعد تم کو دیکھا ہے۔

چندرگتی ہاث جوڈکر “एک جرئی کام کے لیے آپ کی خدمت مें ہاجیر ہوا ہوں۔”

پونجی ہاث کا ہشارا کرकے “بیٹھی کہو تھا راجہ تو اچھا ہے?”

چندرگتی “مہاراج! سب آپکی کڑپا ہے۔”

پونجی “کہیں وہ کوئی کام نہیں کیا?”

چندرگتی “مہاراج! راجہ سوپریور کی بیٹی پدھر اگاہ جو ہم صفت موصوف رکھتی ہے۔ اس کے بر کی جستجوں تھے۔ کہاں کلکونہ ہنومان جی کے ہمادہ جو ہوں کا ذکر سنکر سب نے یہی مناسب خیال کیا۔ آپ سے عرض کی جاوے کہ وہ کتو جی کی شادی کی نسبت کیا جیا۔ لکھتے ہیں۔

پونجی “خوش ہوکر! ادھو! پدھر اگاہ! میں ہر کوئی خوشی سے اُس کے ساتھ اپنے کنوں کی شادی کرنے کو تیار ہوں!

چندرگتی “تو ہماری طرف سے بھی کچھ دینیں۔

ذکرورہ بالا گفتگو سنکر منہومان جی نے جو پاس ہی بیٹھی میں نہ جانے کی سوچ کر یا ترم سے سر کو سچے جھکایا ہے اور ہری امیر سے کہہ ہے ہیں۔ ہمارا جمکون شادی کی اچھیا نہیں یونہی ان کی اداز پونجی کے کان میں پوچھی ہر اگلی سے بولے!

پونجی “یوں اکی باعث تھا راجہ پورا ہو چکا۔ شریک ساز کے اور

ہنومان کو بالا کر کیے رپر گزشت سے اکھا کیوں؟

ہنومان “اس شرم میں مُنش کو بہت بندہن پڑ جاتے ہیں۔ ہو رکھی فرم

پونجی - (ذراس کو اٹھا کر آنا) چندرگتی تھی میرے ساتھ کے بعد تم کو دیکھا ہے۔

چندرگتی - ہاتھ پر کر ایک ضروری کام کرنے کے لئے آپ کی خدمت میں حاضر ہوں۔

پونجی رہنمہ کا اشادہ کر کے اسٹھیتے کہو تھا راجہ تو اچھا ہے۔

چندرگتی - ہمارا جس سب آپ کی کرپا ہے۔

پونجی - کہتے۔ وہ کوئی کام نہیں کیا۔ جس نے اپنے پر ارادہ کیا؟

چندرگتی - ہمارا جسگر لوکی بیٹی پدھر اگاہ جو ہم صفت موصوف رکھتی ہے۔ اس کے بر کی جستجوں تھے۔ کہاں کلکونہ ہنومان جی کے ہمادہ جو ہوں کا ذکر سنکر سب نے یہی مناسب خیال کیا۔ آپ سے عرض کی جاوے کہ وہ کتو جی کی شادی کی نسبت کیا جیا۔ لکھتے ہیں۔

پونجی - خوش ہوکر! ادھو! پدھر اگاہ! میں ہر کوئی خوشی سے اُس کے ساتھ اپنے کنوں کی شادی کرنے کو تیار ہوں!

چندرگتی - تو ہماری طرف سے بھی کچھ دینیں۔

ذکرورہ بالا گفتگو سنکر منہومان جی نے جو پاس ہی بیٹھی میں نہ جانے کی سوچ کر یا ترم سے سر کو سچے جھکایا ہے اور ہری امیر سے کہہ ہے ہیں۔ ہمارا جمکون شادی کی اچھیا نہیں یونہی ان کی اداز پونجی کے

کان میں پوچھی ہر اگلی سے بولے!

پونجی - یوں اکی باعث تھا راجہ پورا ہو چکا۔ شریک ساز کے اور

ہنومان کو بالا کر کیے رپر گزشت سے اکھا کیوں؟

ہنومان - اس شرم میں مُنش کو بہت بندہن پڑ جاتے ہیں۔ ہو رکھی فرم

के विकार होते हैं। इसलिए मैं इस में प्रवेश नहीं चाहता।”

पवनजी “बेटा क्या कहते हो? ये ही आश्रम सब आश्रमों से आला है। जिसके जरिये इंसान हर किस्म का उपकार कर सकता है। ब्रह्मचारी की हालत में तुम कुछ भी नहीं कर सकते हाँ! जो बाते इस आश्रम में इंसान के दिखाये होते हैं उनका ख्याल रखना जरूरी है। सो हमने पहले ही उनको सोच लिया है। ईश्वर की कृपा से खानदान नेक और आरोग्या है। लड़की धर्म के पालने वाली और विद्वान है।”

हनुमान “महाराज! जो आपने फरमाया दुरुस्त है। लेकिन मेरी तबीयत को शादी से कुछ नफरत ही हो गई है।”

पवनजी तेवर बदल कर “कुँवरजी बडे बडे ऋषि मुनि इस आश्रम में पैदा हुए। वेद और शास्त्रों ने इस आश्रम को सब से तरजीह दी है। एक यही आश्रम है जिस में लोक और परलोक दोनो सुधर सकते हैं। अफसोस तुम ऐसे विद्वान होकर इंकार करते हो।” हनुमान जी ने जब देखा कि पवनजी इस बात पर जोर दिए जाते हैं। और उनका हुक्म न मानना, वेद और शास्त्रों की मर्यादा को तोड़ना मेरी जिन्दगी पर धब्बा लाएगा, ये सोचकर खामोश हो गए।

हनुमान को खामोश देखकर पवनजी ने पद्मरागा की तस्वीर उसके हाथ में देकर कहा “ये राजा सुग्रीव बिरादर बाली वाली किञ्चिंधा की लड़की है, जिसके साथ तुम्हारी निस्बत की तजवीज करते हैं।” इस बात को सुनकर हनुमान जी के दिल में न जाने क्या ख्याल गुजरा कि एक दफा चंद्रगती की तरफ देखा और बाद में तस्वीर को पवन जी के आगे रख सर झुका लिया। बस फिर क्या था वहीं प्रधान रत्नवीर ने मुबारिकबाद की आवाज बुलन्द की और अब सब तरफ से यहीं आवाज

के द्वारा भोटे थे। अस लेने में इस में प्रवृत्ति करनीप्रीय चाहता।
लौण जी- बिना किया जैते हो? यही आश्रम सब अश्रमों से उच्चते हैं जैसे कि
दूर दूर इसान हर किस्म का ओपकार सकता है।- ब्रह्मचारी की हालत में तम क्षम्भिनि थीं
कर सकते। तां जो बातें इस आश्रम में इनके लिये रक्खी थीं वहीं होते हीं तां का
खिल रक्खा प्रदर्शनी है। ब्रह्मने पैले ही तां को सूरज लिया है। इत्योरकी का
से खानदान निकास और अद्वितीय है। तां की धर्म के पालने वाली और दूर दूर वाली है।
मेनुमान - महाराज! जो आपने फरमाया दुरुस्त है। लेकिन मेरी चृष्टि
को शादी से क्षम्भिनि लूप्त हो गई है।

लौण जी- रियोर्डल कर क्षम्भिनि ब्रह्म द्वारे रथी मैनी आश्रम में
पैदा होते। विद्वान शास्त्रों ने इसी आश्रम को सब से त्रिपुर
द्वी है। एक यही आश्रम है जिस में लूक और प्रलूक दलों से दर्शकते
हैं। अप्सों अभ्यास द्वारा ये दूर दूर होकर जाते हैं।

मेनुमान जी ने जब दिखाकर लौण जी असी बात पूर्वदर्श से जाते में
दूर दूर का धक्का नाविन विद्वान शास्त्रों की मराद आकूत नाम सिरी निंदगी प्रदृश लाया
ये सुखरुप निवास हो गए।

मेनुमान खामोश दिखाकर लौण जी ने पद्मरागकी लक्ष्मी रास के नाम
में दिल की। “ये राजे सगर लूप्रादर बाली दाली क्षेत्र की जूँकी है जैसे
सात्थ मुहारी लक्ष्मी की तजुरे करते हैं। इस बात को संक्षेप मेनुमान जी के
दूल में जाने की इच्छा नहीं राके एक तरफ चंद्र रक्षी की ओर जग्हा और जग्हा
में लक्ष्मी को लौण जी के आगे रखा रखा जैसा रखा। बस ये क्षम्भिनि त्रिपुर
रत्न भीरने मिराक बाली और निन्दकी दूर दूर सब तरफ से यहीं आवाज

आ रही है।

दूसरे रोज सुबह होते ही पवनजी ने हमारे बहादुर जरनैल की तस्वीर चंद्रगती को दे विदा कर ताकीद की कि जल्दी मशवरा कर शगुन भिजवा दे।

बाब (अध्याय) इकतीसवाँ

दिल की मुराद बर आई

गो शहर किष्किंधा के हर एक मकान की इमारत और शहर की बनावट काबिले दीद है लेकिन हमारा मतलब तो उन शाही महलात से है जो पवाकरनी, दरवाजे के मुतसिल वाकह हैं।

आहा! जैसे पवाकरनी दरवाजे से शहर में दाखिल हुए एक फराख (विस्तृत) बाजार नजर पड़ा जिसके दोनों तरफ दुकानें और आलीशान इमारतें नजर आ रही हैं। बाजार की सफाई का ये आलम है कि एक तिनका भी नजर नहीं आता। गर्दोंगुबार का तो नमोनिशान नहीं खासा उम्दा सुख पथर का फर्श है। दोनों तरफ कहीं कहीं दरखत भी नजर आते हैं जो बाजार के सीन को और भी खूबसूरत बना रहे हैं। और आने जाने वालों का हुजूम तो कशरत से है। थोड़ी दूर आगे बढ़कर बाजार का खातमा है और एक वसीह फराख चौक दिखाई देता है। जिस में एक खुशनुमा फुलवाड़ी लगी हुई है और तरह तरह के खुशबुदार फूल खिले हुए नजर आ रहे हैं। इस फुलवाड़ी के ऐन मुकाबले ने एक बड़ा फाटक है जहाँ दोनों तरफ दो सिपाही नंगी तलवारे लिए पहरा दे रहे हैं। दरवाजे पर सुनहरी काम

१ इस दरवाजे से पम्पा नदी या पवाकरनी को रास्ता जाता है।

آرہی ہے۔

دوسرا سے رुद्ध صحیح ہوتے ہی یون جی نے ہمارے بہادر جنپل کی تصویر چندر کتی کو مسے دعا کرتا گیا کی جلدی مشورہ کرنگوں بھجوادیں

بَابِ الْكَتَبِيَّةِ وَالْمُرَادِ بِرَبِّيِّ

گوشہر کرکندا کے ہر ایک مکان کی عمارت اور شہر کی بنوادث قابل دید ہے۔ لیکن ہمارا مطلب تو ان شاہی محلات سے ہے جو پوہ کرنے دروازے متصل واقع ہیں۔

آنہ جیسے پوہ کرنی دروازے سے شہر میں داخل ہوئے ایک فرماخ بازار نظر ہے جس کے دونوں طرف دو کمین اور عالیشان عمارتیں نظر آرہی ہیں۔ بازار کی صفائی کا یہ عالم ہے کہ ایک تکلا بھی نظر نہیں آتا۔ گرد غبار کا تو نام نشان نہیں۔ خاصہ عمدہ سرخ پتھر کا فرش ہے دو نوں طرف کہیں کہیں درخت بھی نظر آتے ہیں جو بازار کے سین کو اور بھی خوبصورت بنارہے ہیں۔ اور آئے جانے والوں کا ہجوم تو نہت سے ہے۔ تھوڑی دوڑ کے ٹھکار بازار کا خاتمہ ہے۔ اور ایک دیسی فرماخ چوک دکھائی دیتا ہے جس میں آنکھ شنا پھلوڑی کی ہوئی اور طرح طرح کے خوشبودار پھول کھلے ہوئے نظر آتے ہیں اس پھلوڑی کے مقابل میں ایک سڑا بھاگ ہے۔ جہاں دونوں فروض پہاڑی نہ ہوں۔ سترہرہ دستے رہے ہیں اور دوڑل پر سترہری کام لئے اس دروازے سے بسپاندی پاؤہ کرنی کو راستہ جاتا تھا۔

क्या गजब का है कि सूरज की रोशनी में उस तरफ देखना मुहाल है। आँखे चुंधिया जाती हैं। क्या ताकत कोई नजर भर कर उस तरफ देख सके। गो दिवारें चूने की बनी हैं लेकिन इनकी सफाई देखकर संगेमरमर भी शर्मिन्दा होता है। इस फाटक के अन्दर जाने से दो बुलन्द आलीशान महल एक ही बजह के नजर आते हैं। अब हम दाएँ हाथ के महल को छोड़ कर बाएँ की तरफ जाकर क्या देखते हैं कि एक दालान में जो अपनी निराली बजह के बाइस बेनजीर और पुराने ऋषि मुनियों और शूरवीरों की तस्वीरों से आगरस्ता है। **कीमत्वाब** के गदेले पर राजा सुग्रीव और उनकी रानी बैठी हुई जेल की गुफतगू कर रही हैं।

रानी “स्वामीजी! चंद्रगती तो अब तक वापिस नहीं आया।”

सुग्रीव “आठ रोज हो गए। आज तो जरूर आना चाहिए।”

रानी “किसी को भेजकर उसके घर से खबर तो मंगा लिजिए। मुझको इस बात की बड़ी फिक्र लगी हुई है। देखे क्या जवाब लाता है।”

इतने में दरबान ने आकर अर्ज की कि मंत्री चंद्रगती खिदमत में हाजिर होने के लिए दरवाजे पर मुंतजिर हुक्म का खड़ा है।

सुग्रीव “खूब! उनको इस जगह भेज दो।”

थोड़ी देर के बाद चंद्रगती हाजिर हुआ और हाथ जोड़ आदाब बजा कर बोला

“महाराज! मुबारिक हो! दिल की आरजू पूरी हुई।” ये कहकर हनुमान जी की तस्वीर देकर वहाँ का सब हाल बयान किया। और थोड़ी देर के बाद अपने घर को चला गया।

सुग्रीव बड़ी खुशी से तस्वीर हाथ में लेकर “प्रियजी! देखो कैसा खूबसूरत जवान है।”
रानी “महाराज! तस्वीर से तो ऐसा ही जाहिर होता है।”

ای غضب کا ہے۔ کسوج کی روشنی میں اُس طرف دیکھنا محال ہے۔ آجھیں چوندھیا جاتی ہے۔ کہ طاقت کوئی نظر بجرا اُس طرف دیکھ سکے گو دیواریں چونے کی بنی میں تین ان کی صفائی دیکھ کر سنگ مر رحمی شرمند ہوتا ہے۔ اس پھامکتے اندر جانے سے دو بلند عالیشان محل ایک ہی وضع کے نظر آتے ہیں۔ اب ہم دامیر، باته کے مل کو چھوڑ کر بائیں کی طرف جا کر کیا۔ دیکھتے ہیں کہ ایک دالان میں جوانی زدی وضع کے باعث بے نظر اور پورے رشی میموں اور شور سیروں کی تصویر میں سے اراستہ ہے۔ کیونکہ اب کے گدیے پر راجہ سکر لیوادھ میں کی رانی بسمیلی ہوئی ذلیل کی گفتگو کر رہی ہے۔

رानی۔ سوامی جی! چندر کتی تو اپنکا والپس نہیں آیا؟

سکر لیو۔ آٹھ روز ہے گئے۔ آج تو ضرور آنا چاہئے!

رानی۔ تکسی کو چھیکراؤ کے گھر سے خبر تو منگایجئے۔ مکبوس بات کی بڑی فکر لگی ہوئی ہے۔ دیکھیں کیا جواب لانا ہے۔

اتنسے میں دربان نے اگر عرض کی کہ منتری چندر کتی خدمت میں حضر ہونے کے لئے دروازہ پر منتظر کم کاٹھا ہے۔

سکر لیو۔ خوب اُس کو رس چکھ بیجودو۔

خوفزدی دیر کے بعد چندر کتی حاضر ہوا اور ناکہ جوڑا واب سیا کر بولا جعلیح سبارک ہو۔ دل کی آرزو پوری ہوئی۔ یہ کہکھنے والان جی کی تصویر دیکھ دیاں کا سب حال بیان کیا۔ اور خوفزدی دیر کے بعد اپنے گھر کو چلا گیا۔

سکر لیو۔ ہری خوشی سے تصویر نا تھیں لیکر پری جی دیکھو کیسا نوحصہ ور جوان ہے۔

رानی۔ جہاں ج تصویر سے تو ایسا ہی ظاہر ہوتا ہے۔

سُوگریاں “پری جی! ابھی سہت سے وصف ایسے میں جو اس تصویر سے ظاہر نہیں ہوتے۔ وہ دیکھنے سے تعلق رکھتے ہیں۔ سو میں نے ان میں بخوبی تسلی کر لی ہے۔ آپ بدوفتی کو یہ تصویر دے پیاری پدم کے پاس بھیکار اس کی منشاء دیافت کریں۔

ناجارین! اس کوک پنڈتا وेदवतی کو بولाकر پद्मरागा کے پासا بھेजा گیا۔ ہر سے جتنفکاک سے جیس کوک وو (ведवंती) پद्मरागا کے کامرے میں گردی تو کیا دیکھتی ہے وو اونکلی بیٹی ہری گنگوہ کے کیسی ایک مانڈل کا سطح پر کیا دیکھتی ہے وہ اکیلی سیمی ہوئی رنگ وید کے کیسی ایک مانڈل کا سطح پر کھڑک کر رہی ہے۔ سر کے بال بھڑکنے سے اگلے کی طرف پر کر رخساروں کو چھپا رہے ہیں۔ اور کچھ سر کو خیجھ کرنے سے اگلے کی طرف پر کر رخساروں کو چھپا رہے ہیں۔

جیونہی کیسی نئے کی آہٹ پائی۔ سمجھتے بالوں کو دلوں ناکھوں سے تھیے۔ ہشنا اور ہنی کو درست کروانہ کیھڑ دیکھا تو اپنی پہنچنالی کو پایا۔ ہنس کر بولی تماہی۔

وے دیکھ کر اپنے اس پر بھیجا یا۔

پدّم راجا کی طبقہ کرہی ہو؟
پدّم راجا۔ رکتا بکوس کے سامنے کر کے رنگ وید کے اس مانڈل کو دیکھ رہی ہوں۔ مگر اس شلوک کے آرٹھ اچھی طرح سیری سمجھ میں نہیں آتے کر پا کر کے آپ بتلائیے؟

۱۔ وेदवंती پद्मरागा کی مौلیما (شیک्षक) ہے جیسے وو سंस्कृت ویदیا کی تالیم پاتی ہے

سُگریو۔ پری جی! ابھی سہت سے وصف ایسے میں جو اس تصویر سے ظاہر نہیں ہوتے۔ وہ دیکھنے سے تعلق رکھتے ہیں۔ سو میں نے ان میں بخوبی تسلی کر لی ہے۔ آپ بدوفتی کو یہ تصویر دے پیاری پدم کے پاس بھیکار اس کی منشاء دیافت کریں۔

تاظر میں! اسی وقت پنڈتہ بدوفتی کو بولکار پدم راجا کے پاس بھیجا گی۔
اُن الفاق سے جس وقف وہ بدوفتی پدم راجا کے کمرے میں گئی تو کیا دیکھتی ہے وہ اکیلی سیمی ہوئی رنگ وید کے کیسی ایک مانڈل کا سطح پر کھڑک کر رہی ہے۔ سر کے بال بھڑکنے سے اگلے کی طرف پر کر رخساروں کو چھپا رہے ہیں۔
دوہنی کیسی نئے کی آہٹ پائی۔ سمجھتے بالوں کو دلوں ناکھوں سے تھیے۔ ہشنا اور ہنی کو درست کروانہ کیھڑ دیکھا تو اپنی پہنچنالی کو پایا۔ ہنس کر بولی تماہی۔

بدوفتی۔ بیٹی! ایکیا مطابع کرہی ہو؟
پدّم راجا۔ رکتا بکوس کے سامنے کر کے رنگ وید کے اس مانڈل کو دیکھ رہی ہوں۔ مگر اس شلوک کے آرٹھ اچھی طرح سیری سمجھ میں نہیں آتے کر پا کر کے آپ بتلائیے؟
بدوفتی نے رکنا کوہ تھیں بیکار اس شلوک کے آرٹھ جو کلا۔ کوش کے سلسلہ پر نئے پدم راجا کا کو سمجھا۔ اور بعد میں عہسودان جی کی تصویر دکھلا کر نئے لگی۔

لے۔ بدوفتی۔ پدم راجا کی سعادت ہے۔ جس سے دہ سنکرت ددیا کی تعلیم پاتی ہے۔

वेदवंति ‘देखो ये कैसी उम्दा तस्वीर किसी बहादुर मनष्य की है’

पद्मरागा “हाँ माताजी! वाकई ये बड़ा शूरवीर मालूम होता है। इसका नाम क्या है?”
वेदवंती “इसका नाम हनुमान बतलाते हैं।”

पद्मरागा “ऐं हनुमान!” तस्वीर को हाथ मे लेकर “क्या ये वही है जिसका जिक्र पिताजी करते थे कि उनके साथ जंग मे शरीक था। और जिसने वरुण और उसके लड़के पण्डीरक को गिरफ्तार किया था।”

वेदवंती “हाँ वही वही! क्या तम इस तस्वीर को अपने पास रखना चाहती हो?”

पद्मरागा “हाँ मुझको दे दें। मैं अपने कमरे मे रखूँगी। वहाँ और बहुत सी तस्वीरें बहादरों और विद्वानों की हैं। ऐसे शख्स दनिया मे बहत कम होते हैं।”

वेदवंती जरा मुस्करा कर “क्या तुम चाहती हो कि इसके साथ तुम्हारी शादी की जाए”

पद्मरागा शरम से गरदन नीचे झुका कर कुछ देर तक खामोश रहने के बाद बड़ी आहिस्तगी से “माताजी! फिर ये जिक्र न करना। मैं शादी नहीं करूँगी” और तस्वीर को उसके आगे रख दिया।

वेदवंती “बेटी क्या कहा! ब्याह नहीं करूँगी? भला ये हो सकता है कि तुम्हारी शादी न हो। क्या तुम्हारी वलदा गवारा कर सकती है कि तुम कुँवारी रहो? किसी ने आज तक अपनी लड़की कुँवारी रखी है जो वो रखेंगी। आखिर एक दिन तो ब्याह किया ही जाएगा!”

पद्मरागा ने नीचे सर ड्रका लिया है और कछ ही जवाब नहीं दिया।

वेदवंती गोद मे लेकर “मेरी प्यारी बेटी मझसे इतनी शरम!”

पद्मरागा बड़ी नरम आवाज से “मैंने तो कह दिया है मझको शादी की ख्वाहिश नहीं”

بدوفتی۔ دیکھو یہ کیسی عدہ لتصویر کی بہادری نہ کی ہے۔

پدم را گا۔ باں ملنا جی بولتی ہے پر شور سیر معلوم ہوتا ہے۔ اسکا نام کیسے،
بدوفتی۔ اس کا نام مستویان بتلاتے ہیں!

بدوستی - ناس و ہی و ہی اکیا تم اس تصویر کو اپنے پاس رکھنا چاہتی ہو؟
دھرم اگاہ ۱۴، امکان معاشرہ رائے کے ساتھ سکریٹری گ

پر امراض۔ جو دیگر مرض کے نام سے ملے جائیں تو وہ مرضیں اور بیماریوں کی تصوریں بہادر و والوں کی ہیں۔ ایسے شخص دنیا میں بہت کم ہوتے ہیں۔

بندوں سی۔ اذ رام سکر کیں ایسا تم پاہتی ہو۔ کہ اس کے ساختہ تھا رہی شادی
کم جائے۔

بیدھم را لگا۔ اشرم سے گردن پیچے جھکا کر کچھ دیر تک خاموش رہنے کے بعد بڑی آہنگی سے ماتا جی بھرپور کرننا۔ میں شادی نہیں کروں گی۔ اور قصویر کو وس کے آگے رکھدیا۔

پر و نتی - بیٹی اکیا کہا۔ بیجاہ نہیں کرو گئی؟ بہلا یہ ہو سکتا ہے۔ کہ تمہاری
شادی نہ ہو۔ کیا تمہاری والدہ گوارا کر سکتی ہے کہ تم کنواری رہ جو؟ کسی
نے آج تک اپنی وفا کی کنواری رکھی ہے۔ جو وہ رکھیں۔ آخر ایک دن تو میرا
بیا ہی جائیں گے۔

پدم راگا نے پنج سر جھکایا یا ہے۔ اور کچھ جواب نہیں دیا
بہو نتی سرگود میں لیکر) سیری پلے ای سیٹی بھیجئے تھی شرم
بدم راگا۔ (بڑی نرم آواز سے) مینے تو کہا۔ یا ہے۔ مجھکو شادی کی خوشخبری

वेदवंती तस्वीर पद्मरागा को दिखला कर “बेटी देखो इसे! ऐसा लायक वर मिलना फिर मुश्किल होगा। तुम खुद विद्वान हो। जरा सोच समझकर जवाब दो।”
पद्मरागा गोद से परे हटकर “माताजी! आज आपको क्या हो गया है। जो बार बार इस बात का जिक्र करती हो।”

ये कहा और तस्वीर को उसके हाथ से लेकर नीचे रख दिया और अब दबी हुई नजर से उसको देख रही है।

वेदवंती पद्मरागा के मुँह को हाथ से ऊँचा कर और उसकी तरफ मुखातिब होकर “बीबी पद्म! क्यों शरमाती है? इसमें कोई ऐब की बात नहीं।”

ये सुनकर पद्मरागा ने मुस्करा कर मुँह फेर लिया। तब वेदवंती मालूम कर गई कि ये इसको चाहती है। लेकिन चूँकि ये लड़की बड़ी शरम हुजूर है कभी भी अपने मुँह से जाहिर नहीं करेगी। ये सोचकर पद्मरागा का माथा चूमा। और आसीस देकर उसकी वालदा को आकर मुबारिकबाद दी।

नाजरीन! इस वक्त सुग्रीव अपनी दिली आरजू की कामयाबी देखकर निहायत खुश हुआ। फौरन व्याह की तैयारी का हुक्म दिया। और घर घर मंगलाचार होने लगा। पण्डित को बुला मशवरा कर तारीख शादी की मुकर्रर की। और शगुन दे गजेन्द्र को रत्नपुर रवाना किया। और चंद्रगति को मोती महल आरास्ता करने का हुक्म दिया।

बाब (अध्याय) बतीसवाँ

शादी

सुबह का सुहाना वक्त है। ठण्डी ठण्डी हवा चल रही है। और

بُدُونْتى - (اَقْصُو بِرِيم رَاگا کو دکھلاک) بیٹی دیکھو اسے لائیں بِرِمِنَا بِچِرْشِکل
ہو گا۔ تم خود دو ان ہو۔ ذرا سوچ بُجھ کر جواب دو۔
پِيم رَاگا سُکو د سے پرسے ہلکا) ماناجی آج آپ کو کیا ہو گیا ہے۔ جو بار بار
اسی بات کا ذکر کرتی ہو +

یکہا اور تصویر کو اوس نکے ماخک سے لیکر پیچے رکھ دیا۔ اور اب دلی ہوئی
نظر سے اُس کو دیکھ رہی ہے۔

بُدُونْتى - پِيم رَاگا کے من کو ماہتہ سے اوچکا اور اوسکی طرف خاطب ہو کر
لی جی پِيم بکیوں شرماتی ہے۔ اس میں کوئی عیوب کی بات نہیں +
یہ سُکر پِيم رَاگا نے مُسکرا کر منہ بھر دیا۔ تب بُدُونْتى حملوں کر گئی۔ کہیں اسکو
چاہتی ہے۔ لیکن جو کامیاب کی طریقہ حضور ہے۔ کبھی بھی پیچے منہ سے
ظاہر نہیں کر گئی۔ یہ سوچ پیغم رَاگا کا ماحنا پیچے ہے۔ اور اسیں دیکھ رہی اوس کی
والدہ کو اکر سبارک بادوی۔

ناظرین، میں وقت سُکر یو اپنی دلی آرزو کی میانی دیکھا کر نہایت خوش
ہوں۔ فوٹا بیاہ کی تیاری کا حکم دیا۔ اور گھر گھر مُسکلا جاہر ہوئے لگا۔ پہنچ
کر بولा۔ مشورہ کرتا بخ شادی کی مقرری۔ اور شکلوں درے گھنہ کو تن پہ
روانہ کیا۔ اور حیندر گتی کو سوتی محل اڑاست کر نیکا حکم دیا۔

بَابِ سِتِّيْسِوَال

شادی

صُبْحَ كَاسْهَانَا وَقْتَ هَے۔ مُحْشَنَةَيِ مُحْشَنَةَيِ ہو اچل رہی ہے۔ اور

نसीم شاهري کے خुشگوار جھوپ کے جادو کا کام کر رہے ہیں۔ لیکن ایک برات میں شامل ہونے کا مشوق ہے۔ جو کہ ۳۰۰ یا کر سید اور رہائی اور سونے والے انگڑا شیاں لے لیکر اٹھتے ہیں۔

بے شمار ہاثری اور گھوٹے سج اکار راجہ مندر کے باہر کھڑے ہیں۔ جن پر دیا مر اوہ ماں کے طے کے آگر سوار ہو رہے ہیں۔ اس وقت کا نظارہ قابل دیدار ہے۔ آگے آگے ہاتھیوں کے سُنہری ہدوں میں چھوٹے چھوٹے طے کے بیٹھے ہوئے ایک دوسرے کو چھیر جھاڑ کر کیسے خوش چور ہے ہیں۔ کہ ایک دم بھر تو چین نہیں لیتے۔ ان کے بعد بڑے بڑے سور بیس اور بہادر گھوٹوں پر سوار ہیں۔ جنکے گھوٹ بھت چاہتے ہیں۔ کہ وہ اپنی تیز و فاری کے جو ہر دکھائیں میکن یہ ان کو اجازت نہیں دیتے۔ اور ایک دوسرے سے مذاق اڑلاتے ہوئے چار ہے ہیں۔ رخت اور بہلیاں جن کے رنگ بنگی اٹھاس اور عمل کے سرخ اور سبز پردے دوسرے چاک کر برات کی روشنی کو اور بھی دو بالا کر رہے ہیں۔ سب براتیوں سچے ہیں۔ ان کے درمیان میں ایک سماں پال ہے جس کو ہمارے ستالوں کی طرح جھومنتے ہوئے اپنا ہوئے لیھا رہے ہیں۔ اور اس کے پیچ میں ہمارے بہادر جرنیل گاؤں کی کلاں سری جڑا اور نکٹ رکھے بیٹھے ہیں۔ آنا! اسکھپال کی خوبصورتی دیکھکر تو ہر ایک لٹھوٹا جاتا ہے۔ اسکی سورن کی کلس نما جوٹی ہیں پر کاریگر نے جڑا اور کام اس خوفی سے کیا ہے۔ کہ جہاں سورج کی کرنیں اس پر پڑیں۔ ایکو جکہ دنگ اسیزی شعاعیں تکمیں۔ کہ دیکھنے والوں کے لئے مقضا طیبی کام کر گئیں۔ جس کی نگاہ اس پر پڑی سے اختیاں لے باز ریپ میں جو شخص دویا حاصل کرتا تھا۔ دو سکو خطاب دویا دو گھنیا جاتا تھا۔

نیم شاهري کے خوشنگوار جھوپ کے جادو کا کام کر رہے ہیں۔ لیکن ایک برات میں شامل ہونے کا مشوق ہے۔ جو کہ ۳۰۰ یا کر سید اور رہائی اور سونے والے انگڑا شیاں لے لیکر اٹھتے ہیں۔

بیٹھا رہا تھا اور گھوٹے سج اکار راجہ مندر کے باہر کھڑے ہیں۔ جن پر دیا مر اوہ ماں کے طے کے آگر سوار ہو رہے ہیں۔ اس وقت کا نظارہ قابل دیدار ہے۔ آگے آگے ہاتھیوں کے سُنہری ہدوں میں چھوٹے چھوٹے طے کے بیٹھے ہوئے ایک دوسرے کو چھیر جھاڑ کر کیسے خوش چور ہے ہیں۔ کہ ایک دم بھر تو چین نہیں لیتے۔ ان کے بعد بڑے بڑے سور بیس اور بہادر گھوٹوں پر سوار ہیں۔ جنکے گھوٹ بھت چاہتے ہیں۔ کہ وہ اپنی تیز و فاری کے جو ہر دکھائیں میکن یہ ان کو اجازت نہیں دیتے۔ اور ایک دوسرے سے مذاق اڑلاتے ہوئے چار ہے ہیں۔ رخت اور بہلیاں جن کے رنگ بنگی اٹھاس اور عمل کے سرخ اور سبز پردے دوسرے چاک کر برات کی روشنی کو اور بھی دو بالا کر رہے ہیں۔ سب براتیوں سچے ہیں۔ ان کے درمیان میں ایک سماں پال ہے جس کو ہمارے ستالوں کی طرح جھومنتے ہوئے اپنا ہوئے لیھا رہے ہیں۔ اور اس کے پیچ میں ہمارے بہادر جرنیل گاؤں کی کلاں سری جڑا اور نکٹ رکھے بیٹھے ہیں۔ آنا! اسکھپال کی خوبصورتی دیکھکر تو ہر ایک لٹھوٹا جاتا ہے۔ اسکی سورن کی کلس نما جوٹی ہیں پر کاریگر نے جڑا اور کام اس خوفی سے کیا ہے۔ کہ جہاں سورج کی کرنیں اس پر پڑیں۔ ایکو جکہ دنگ اسیزی شعاعیں تکمیں۔ کہ دیکھنے والوں کے لئے مقضا طیبی کام کر گئیں۔ جس کی نگاہ اس پر پڑی سے اختیاں لے باز ریپ میں جو شخص دویا حاصل کرتا تھا۔ دو سکو خطاب دویا دو گھنیا جاتا تھا۔

نجدیک آ دے�نے کی کوشش کی।

گو برات پہلے ہی بیٹھا رہے۔ لیکن اس سقنا طبی کی شش نے تماشہ بنیوں کا وہ ہجوم کر دیا۔ کہ چنان شوار ہو گیا۔ عرضن بڑے کرو فر سے منزلیں طکرائے ہوئے برات دوسرے روز شام کے وقت کسکندا میں پہنچی۔

برات کے شہر میں داخل ہوتے ہی تمام مردوں حورت جو رات سے اس کا انتظار کر رہے تھے چھ ہو گئے۔ جس کی کنگاہ دولہا پر پڑی۔ مکہشت ہجوم سے دم بخل رون پر داڑ گیا۔ مگر آنکھوں کی سیاہ پسلی ہرگز دھپری استروں کے واسطے جو مکانوں کی چھتوں پر کھڑی دیکھ رہی ہیں۔

ہنومان جی کی سوہنی صورت نے سقنا طبی سے بڑکر کام بیا۔ بونہیں ادن کی نظر ان کی بیوی بہالی صورت پر پڑی۔ ایسی بکھلی بیدھی۔ کہ بالکل گود سے گرچلا۔ ہے ہیں۔ اور وہ بے جر کھڑی دیکھ رہی ہیں۔

جب برات راج محل کے قریب پہنچی۔ راج صگریو ریدھان اور منیری وغیرہ کو ساتھ سے پیشوائی کو آیا۔ اور سرم ملنی کی اور کرجام کو پنجاہوں سے مالا مال کر دیا۔ اور سوتی محل میں جو پہلے ہی سے بڑے مہاتماوں اور شور پیروں کی تصویریوں سے آ رہا تھا۔ برات کو اتنا دیا۔ سب سے پہلے ہنومان جی کو ایک سوانی کی چوکی جیپر رشی کہ دیلا پڑا ہوا ہے لا جھلایا ہے۔ اور اب سید راقی بڑی آن بان سے بیٹھ رہے ہیں۔

ہنومانی دیکھ کے بعد طرح طرح کے کھانے شیریں اور حنپٹے۔ تکمیں براتیوں کے آگے رکھے گئے۔ جن کی تشریح کرنے سے ناظرین کا دل ہجایا۔ اور کاغذ پہنچنے سے آیا۔ لمناب خیال نکیا۔

نزوکاپ آ دیکھنے کی کوشش کی۔

گو برات پہلے ہی بیٹھا رہے۔ لیکن اس سقنا طبی کی شش نے تماشہ بنیوں کا وہ ہجوم کر دیا۔ کہ چنان شوار ہو گیا۔ عرضن بڑے کرو فر سے منزلیں طکرائے ہوئے برات دوسرے روز شام کے وقت کسکندا میں پہنچی۔

जब इन अजीब खानों से बरात ने हाथ उठाया, तो लग्न का वक्त करीब पा वेदी के नीचे स्वर्ण की चौकी पर हनुमान जी को ला बैठाया। और सखी सहेलियों ने पद्मरागा को नहला जेवर और कपड़ों से आरास्ता कर हनुमानजी के बाएँ तरफ बैठला गठजोड़ किया।

इस वक्त पण्डितों का दुल्हा और दुल्हन को वेदों कत मत अकोल उन के **फरानिज** से आगाह करना, और स्नियो का ईश्वर की स्तुति के भजन गा इन दोनों की उम्र दराजी के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना क्या ही शोभा दे रहा है। आहा! अब हवनकुण्ड मे केसर कस्तूरी **गही** और मुख्तलिफ किस्म की सुगंधित सामग्री डाल हवन कर दूल्हा और दुल्हन के हाथ मे धान की **पहेलियाँ** दे भँवरिया, की रस्म हो रही है। स्नियों का वो गीत गाना जिसका खुलासा ये है 'ऐ मेरे माता पिता प्यारे भाई मुझको इस अजनबी शख्स के हवाले, जिसको मैने कभी नहीं देखा और न ही इसके मिजाज से वाकिफ हूँ, क्यों करते हो?'

नाजरीन! छ: भँवरियो तक तो इस तरह के गीत गाती रही। मगर सातवीं भँवरी पर जब उन्होंने ये गीत गाया जिसका खुलासा ये है ऐ पति मैं अब तेरी हो चुकी हूँ मेरे माता पिता और किसी रिश्तेदार का अब मेरे पर कुछ भी जोर नहीं रहा और मेरी जिन्दगी का मदार आप पर है। चाहे सख्ती से पेश आओ या नरमी से मैं आपकी शरण हूँ। नाजरीन! इन गीतों ने सुग्रीव के दिल को हिला दिया। न सिर्फ उसके बल्कि सब हाजरीन ने आंसू बहा बतला दिया कि लड़कियाँ माँ बाप के घर मेहमान होती हैं। जब भँवरियो की रस्म अदा कर चुके तो पद्मरागा को सखी सहेलियाँ ले गईं।

१ याने फेरे

जब अंगूजिब कहानों से बरात ने बातें अखला बातें लग्न का وقت ف्रिब पायीरी के खिले सूरन की जो की प्रह्लाद मान जी को लाभिता या- और सक्खी सैलियों ने पृथम रात्काला को नहला जिओ और कप्तानों से आस्ते कर हनुमान जी पायीरी खफ जल्लाक्ष्मे जो दाकिया-

अस وقت पृथ्वीतों का दूल्हा और दूल्हन को विद्रोह के स्वाक्षर लाने के व्रातिष्ठ स्तेंगाह करना और अस्ट्रिलों का विश्वर की व्रष्टिके बहुन का अन दूल्हों की उत्तरवाली के लिए विश्वर से प्रारम्भिता करना किया ज्यो शुभो यो द्वे रहा हे- आहा! अब हूँ जुन्हें बिसर-कस्टोरी-गही और अल्लफ तस्म की सूक्ष्म वेष्ट लाग दाल हूँ कर दूल्हा और दूल्हन के बाह्य मैं दूल्हन की बैलियां दे ब्योरियों की रस्म हो रही हे- अस्ट्रिलों का वो गीत गाना जैसा काला खलास्त यो-हे- ले मेरी नाना पाता देहाली जूको अस अज्ञी शख्स के खाले जूको मैं ले क्यो नीप्स दिल्ला और नेही अस की मराज से वात्फ जूल बिसर करते हो-

नाजरीन जैच ब्योरियों तक तो अस खण्ड के गीत काति रहीं मगर सातों ब्योरी ब्यर्जिब अन्होल्ल यो गीत काया-जैच कालास्त यो-हे- ए से ज्यो अमीं अब तिरी हो जूकी हूँ- मेरी माता पाता और कसी रिश्ते दारा आप मेरी दीर्घी जून न दूर हैं रहा- और मेरी जिन्दगी का मारा आप ब्यर्जिब चाहे खण्डी से बिश आयो दूरी से मैं आप की शरन हूँ- नाजरीन अन गीतों ने स्कर्लियो के दूल को ब्लाइया न चर्फ अस के ब्लाइ सब वाहरीन के आस्नो यो ब्लाइ दिया- के लाकीयां मान बाप के ख्वर मेहमान हो ती मैं +

जब ब्योरियों की रस्म को दाकर जूके- तो पृथम रात्काला को सक्खी सैलियों लाल येते बिसर-

और हनुमान जी मोती महल में आ विराजमान हुए। तीन रोज तक बरात खातिर तब्बजह से रखी गई। किसी को शिकायत करने का मौकह न मिला। चौथे रोज बेशुमार दहेज दे बरात को विदा करने लगे, तो पद्मरागा जो दो रोज पहले ही से रो रोकर अपना हाल तबाह कर रही थी चलने का नाम सुन बेहोश हो जमीन पर गिर पड़ी। मोहनी ने उसी दम उठा गोद में बैठा लिया और बोली-

“सखी! क्यों इतना घबराती है? रो रो बेहाल होती है। सच है माँ बाप की जुदाई किसको भाती है। पर क्या करें हम सब के लिए ये ही तबाही। बारी बारी गरदन झुका हम सब चली जाएँगी। लडकपन का जमाना, माता पिता का प्यार जब भी याद आएगा, आंसू बहाएँगी। लडकियाँ माँ बाप के घर मेहमान होती हैं। क्या अमीर क्या गरीब किसी के घर नहीं समाती। हाँ इतना जरूर है, माँ बाप ने वर घर देखकर ब्याह किया तो लडकी सुख पा खुश रहती, नहीं तो खूने जिगर पी किस्मत को रोती है। प्यारी सखी तुझको तो घबराना उचित नहीं। अज्जना देवी जैसी सास किसने पानी है। शील स्वभाव गुणवान और अति स्यानी है। प्यारी हनुमानजी की दुल्हन कहलाओगी उन से प्रीत लगा हम सब को भूल जाओगी।”

निर्मला “सखी! यहीं तो पद्मरागा की चतुराई है। कल बालसुन्दरी को उपदेश दे समझा रही थी। खी पुरुष का धर्म बतला रही थी। आज अपनी बारी आई तो रो रो कर हमको डरा रही है। माँ बाप की मुहब्बत बतला रही है। सच पूछो तो ये सिर्फ जाहिरदारी है। दिल मे तो बस दूल्हा की सूरत प्यारी है।”

निर्मला की बाते सुनकर पद्मरागा ने शरमा कर मुँह फेर लिया और धीमी आवाज से कहने लगी “सखी! तुम को तो दिल्लगी सूझती है और मेरे जी को बन रही है। मुझको तो वहाँ जाना होगा जहाँ अपना न बेगाना होगा।”

اور हनुमान जी मृती तुल में आ बराजन हो गे। तीन रोटक ब्रात थ्री खात्रो प्राप्त से रक्खी गयी। क्षमी कूशकायित करका موقع ش्वर जो त्यक्त दूर दूश्वर दृश्य से ब्रात को दूर करने लगे। तो पूर्ण ज्ञान द्वारा ज्ञान दूर दूर ज्ञान ही से रोका राता जाल तिबाह कर रही थी। ज्ञान का नाम सून बिहू श्वेत दूर दूश्वर में प्रकृति। मूर्खता ने असी दूर दूश्वर दूर दूर में बगाला। और बोली सक्खी। कियों अताक्षरता है रोका राता जाल होती है। पूर्ण है। माँ बाप की ज्ञानी क्षमा को बहाती है। पूर्ण कर्म ज्ञान से लै ये यही तिबाह। बारी बारी गरदन जूँका है बीची जालैनी। रुक्मिन कानान नामाप्ता का बिलार जीवी याद आयेगा। अनुबोध बहायेगा। रुक्मिन मानिया प के गहर महान होती है। किया आमिर की गृहिणी के गहर नहीं समायें। माँ अत्यन्त दरोर है। माँ बाप ने टर गहर दीक्षकर मिया किया। तो वह की शक्ति पाहुँच रही है। नहीं तर खून जगरी चक्ष द्वारा देखा जाएगा। अत्यारी सक्खी जहेको तो जहेना दूर दूश्वर है। अनुबाद दिली जीवी सास की नैवानी है। जो शील सेहान्नों और अति सानी है। पूर्णी हनुमान जी की दूल्हन कहेलावी। एवं से प्रवेष लकार है। ज्ञान से विजेता जाएगी। श्रमलाभ सक्खी ही पूर्ण दूर दूश्वर की जैराई है। कल बाल संदर्भ को दूर दूश्वर द्वारा देखा जाएगी। अत्यारी पूर्ण काद है। मृत्यु बिलार ही थी। आज अपनी बारी आयी तो दूर दूश्वर ही है। एवं तो ज्ञान है। तो ये श्रमलाभ की जैराई है। एवं मैं तो बिस रही। दूल्हा की चमत्कार है। और दूर दूश्वर से कैफ़ी जैराई। अत्यारी तो दूर दूश्वर ही है। एवं तो ज्ञान है। एवं तो ज्ञान है। एवं तो ज्ञान है।

इतने में सुग्रीव महल में आया और पद्मरागा को रोती देख आंसू बहा छाती से लगा कर बोला।

सुग्रीव “बेटी! रो रो कर परेशान होती है। भला तेरी जुदाई मैं गवारा कर सकता हूँ? लेकिन क्या करूँ मजबूर हूँ दुनिया की रसमों जंजीर से पाबन्द हूँ मेरी तो कुछ हकीकत नहीं बड़े बड़े महाराजों के घर भी तो लड़कियों की समाई नहीं। तुम खुद विद्वान हो। मेरे कहने की जरूरत नहीं। परमपिता परमात्मा तुमको हमेशा खुश रखे।” ये कहा और पद्मरागा को सुखपाल में सवार किया। और हाथ जोड़कर पवनजी और हनुमान को उसकी सोंपना की।

नाजरीन! जिस वक्त पद्मरागा को सुखपाल में बैठाया गया उसने जार जार रोना शुरू कर दिया। जिस की गिरयाजारी को सुनकर सबके आंसू बेइखितयार निकल पड़े। ज्योंहि बरात यहाँ से रवाना हुई सबके चेहरों पर उदासी की घटा छा गई। जहाँ तक निगाह ने काम दिया देखते रहे। और आंसू बहा दिल के अरमान निकालते रहे। आह! ये क्या अफसोसनाक नजारा है। जबकि हम अपने लखते जिगर को उस अजनबी के साथ शास्त्रों की पाबन्दी से विदा करते हैं, जिसकी उसने पहले कभी शक्ति भी नहीं देखी। और उसकी आइन्दा जिन्दगी का मदार उसी पर छोड़ देते हैं।

اُستے میں سُکریو محل میں آیا۔ اور پدم رाग کو روتنی دیکھ آنسو بہا
چھاتی سے نکل کر بولا۔

سُकریو۔ بُلٹی کبیوں سو روکر پریشان ہوتی ہے۔ بُلٹا تیری جُبائی میں
گوارا کر سستا ہوں۔ لیکن سیا کروں مجبور ہوں۔ دنیا کی رسماوں سے پابند
زنجیر ہوں۔ میری تو کچھ حقیقت نہیں۔ بڑے بڑے مہاراجوں کے سُخ
بیجی تو لا کبیوں کی سماں نہیں۔ تم خود دو دو ان میرے کہنے کی صورت نہیں!
پرم پتا پر باتا تکو مہشہ خوش رکھیں۔

یہ کہا۔ اور پدم رाग کو لا کر سکھپال میں سوار کیا۔ اور ہم تک جو بکر ہوں جی
اور سہونماں کو راؤس کی سوپنپاکی۔

ناظرین! اجمن وقت پدم رाग کو سکھپال میں بھایا گیا۔ اوس نے
زار زار رونا شروع کر دیا۔ جس کی گردی زاری کو منکر کے آنسو ختنی
تلی ٹھی۔ یو تھی برات یہاں سے روانہ ہوئی۔ سب کے چیزوں وغیرہ کو گھس چھاگی
چھاتک نکاہ نے کام دریاد لیکھتے رہے۔ اور آنسو بہا دل کے ارمان نکلتے
رہے۔

آہ یہ کیا افسوس ناک نظارہ ہے۔ جبکہ ہم اپنے بخت جگہ کو اس چھپی
کے ساتھ شاستروں کی پابندی سے وداع کرتے ہیں۔ جبکی اوس پر چھپے
کچھی شکل بھی نہیں دیکھی۔ اور اوسکی آئندہ زندگی کا مدار اوسی پر چھپے
دیتے ہیں ہیں!

بَابٌ تِسْتِشِوان
مُبَارَكٌ مُهُوٌ وَوَلِيٌّ أَكْرَى

ڈولی کی آمد آمد سونکر چوٹے بडے آدمی، مرد اور اورت، بُوڑھے اور جوان رتنپور کی گلی کو چوڑے سے نیکل کر شرقی دوڑاں کی طرف جا رہے ہیں۔ مگر اسی پر عورتیں پالکی میں سوار ہو اور یعنی پیدل عمودی زینوں اور بیش قیمتی رنگ بنگی کی پوں سے اراستہ ہو اجنبیاً لیوی کے محل کو اڑھی ہیں۔

آنا! اجنبیاً لیوی کا محل بھی ایک زالی وضع کا ہے۔ پہنچے ایک بڑا پوچھلہ ہے۔ گویا یہی محل کا صندوچ دوڑاں ہے۔ جس سے گزندگانہ داخل ہوتے ہی چند براہم سے کھائی دیتے ہیں۔ ہر ایک براہم سے کے متعلق ایک ایک چھوٹا سا تحضر مکان بھی نظر آتا ہے۔

بعضوں میں تو عورتیں بیجی نظر آ رہی ہیں۔ کوئی دوڑی پکانے میں مشغول ہے۔ کوئی آنکوندہ ہی ہے۔ شاید یہ ان سپاہیوں کی عورتیں ہیں جن کی ملازمت کا تعلق اس محل سے ہے۔

بیٹک پیسی درست ہے۔ وہ دیکھو ایک سپاہی جس کی وردی چارپائی پر پڑی ہے اور خود کھان لکھا رہے ہے۔

ان یاروں کے دریان میں سے ایک اور دوڑا نظر آتا ہے جس کے اندر جاتے ہی ایک چھلوڑی بدکھائی دیتی ہے۔ جس میں طحیح کے خوشبوہ پھول سفید سرخ اور سبزی رنگ کے لکھلے ہوئے نظر آ رہے ہیں۔ باشور جانے اس میں کیا بھی ہے؟ کہ ایک وفعہ چھلوڑی پر نظر پڑی تو پھر پیشے کا

بَابٌ تِسْتِشِوان
مُبَارَكٌ مُهُوٌ وَوَلِيٌّ أَكْرَى

ڈولی کی آمد سونکر چوڑے اورتے۔ مروڑوں سے اور جوان رنگ کی گلی کو چوڑے سے نیکل کر شرقی دوڑاں کی طرف جا رہے ہیں۔ مگر اسی پر عورتیں پالکی میں سوار ہو اور یعنی پیدل عمودی زینوں اور بیش قیمتی رنگ بنگی کی پوں سے اراستہ ہو اجنبیاً لیوی کے محل کو اڑھی ہیں۔

آنا! اجنبیاً لیوی کا محل بھی ایک زالی وضع کا ہے۔ پہنچے ایک بڑا پوچھلہ ہے۔ گویا یہی محل کا صندوچ دوڑاں ہے۔ جس سے گزندگانہ داخل ہوتے ہی چند براہم سے کھائی دیتے ہیں۔ ہر ایک براہم سے کے متعلق ایک ایک چھوٹا سا تحضر مکان بھی نظر آتا ہے۔

بعضوں میں تو عورتیں بیجی نظر آ رہی ہیں۔ کوئی دوڑی پکانے میں مشغول ہے۔ کوئی آنکوندہ ہی ہے۔ شاید یہ ان سپاہیوں کی عورتیں ہیں جن کی ملازمت کا تعلق اس محل سے ہے۔

بیٹک پیسی درست ہے۔ وہ دیکھو ایک سپاہی جس کی وردی چارپائی پر پڑی ہے اور خود کھان لکھا رہے ہے۔

ان یاروں کے دریان میں سے ایک اور دوڑا نظر آتا ہے جس کے اندر جاتے ہی ایک چھلوڑی بدکھائی دیتی ہے۔ جس میں طحیح کے خوشبوہ پھول سفید سرخ اور سبزی رنگ کے لکھلے ہوئے نظر آ رہے ہیں۔ باشور جانے اس میں کیا بھی ہے؟ کہ ایک وفعہ چھلوڑی پر نظر پڑی تو پھر پیشے کا

بَابٌ تِسْتِشِوان
مُبَارَكٌ مُهُوٌ وَوَلِيٌّ أَكْرَى

ڈولی کی آمد آمد سونکر چوڑے اورتے۔ مروڑوں سے اور جوان رنگ کی گلی کو چوڑے سے نیکل کر شرقی دوڑاں کی طرف جا رہے ہیں۔ مگر اسی پر عورتیں پالکی میں سوار ہو اور یعنی پیدل عمودی زینوں اور بیش قیمتی رنگ بنگی کی پوں سے اراستہ ہو اجنبیاً لیوی کے محل کو اڑھی ہیں۔

آنا! اجنبیاً لیوی کا محل بھی ایک زالی وضع کا ہے۔ پہنچے ایک بڑا پوچھلہ ہے۔ گویا یہی محل کا صندوچ دوڑاں ہے۔ جس سے گزندگانہ داخل ہوتے ہی چند براہم سے کھائی دیتے ہیں۔ ہر ایک براہم سے کے متعلق ایک ایک چھوٹا سا تحضر مکان بھی نظر آتا ہے۔

بعضوں میں تو عورتیں بیجی نظر آ رہی ہیں۔ کوئی دوڑی پکانے میں مشغول ہے۔ کوئی آنکوندہ ہی ہے۔ شاید یہ ان سپاہیوں کی عورتیں ہیں جن کی ملازمت کا تعلق اس محل سے ہے۔

بیٹک پیسی درست ہے۔ وہ دیکھو ایک سپاہی جس کی وردی چارپائی پر پڑی ہے اور خود کھان لکھا رہے ہے۔

ان یاروں کے دریان میں سے ایک اور دوڑا نظر آتا ہے جس کے اندر جاتے ہی ایک چھلوڑی بدکھائی دیتی ہے۔ جس میں طحیح کے خوشبوہ پھول سفید سرخ اور سبزی رنگ کے لکھلے ہوئے نظر آ رہے ہیں۔ باشور جانے اس میں کیا بھی ہے؟ کہ ایک وفعہ چھلوڑی پر نظر پڑی تو پھر پیشے کا

नाम नहीं लेती और आँख खुली की खुली रह जाती है। जैसे वो नर्गिस का फूल सामने दिखाई दे रहा है। उस छोटी सी फुलवाड़ी मे रेशे भी बहुत उम्दा बनी है कि चहल कदमी करते करते दिमाग मोतर और दिलखुश हो जाता है। इसके सामने एक खुशनुमा इमारत है जो अञ्जना देवी के महल से मंसूब (समर्पित) है। इसकी छत पथर की है। और चार बुर्ज एक दूसरे के मुकाबिल पर है जिन पर स्वर्ण की कलियाँ बनी हैं। आहा! जहाँ सूरज की किरणें इन पर पड़ी हजारों और पैदा हो गईं देखने वालों की आँखों को चकाचौंध कर दिया। क्या ताकत नजर उठा कर देख सके। दरवाजे से दाखिल होते ही एक छोटा सा कमरा मिलता है। इसके बाद एक बड़ा कमरा और आगे जाकर एक बड़ा भारी दालान है जिसकी आराइश (अलंकरण) मे बहुत नफासत से काम लिया गया है। और नीचे एक बेखकीमती सुर्ख कालीन बिछा हुआ है जिस पर अञ्जना देवी, रानी कितुमती और बहुत सी औरतें बैठी हैं और बाजी अभी आ आ कर बैठ रही है। और गा बजा कर दिल खुश कर रही हैं। इतने मे एक दासी ने आकर कहा “मुबारिक हो डोली आ गई!” आहा! इस बात के सनते ही अञ्जना देवी का कलेजा मारे खुशी के सीने में उछल पड़ा। उसी वक्त ईश्वर के गुण आबाद गाती हुई तमाम स्त्रियों के साथ फुलवाड़ी तक आई होगी कि बड़ी धूमधाम से हनुमान जी दुल्हन के साथ सुखपाल मे बैठे हुए दरवाजे पर पहुँच गए। उनको देखते ही अञ्जना देवी का चेहरा बाग बाग हो गया है और मारे खुशी के जाम में

نام نہیں لیتی۔ اور انکھ کھلی کی کھلی رہ جاتی ہے۔ جیسے وہ نرگس کا پھول سائنس
وکھانی دے رہا ہے۔
اس چھوٹی سی پھلوڑی میں روشنی بھی بہت عمدہ بنی ہیں کہ جمل قدمی کرتے
ارٹے دلخواہ مطرادول خوش ہو جاتا ہے۔ اس کے سامنے ایک خوشنا
عمارت ہے۔ جو ابجنا دلوی کے محل سے منسوب ہے۔ اسکی چھت
پتھر کی ہے۔ اور چار بُرج ایک دوسرے کے مقابل پر میں جن برسون
کی کسلیں بنی ہیں۔ ابا جہاں سرچ کی کریں ان پر پریں نہ رہوں اور اپدی پیش
دیکھنے والوں کی انکھوں کو چاپونڈ کرویا۔ کیا طلاقت نظر ادا کر دیکھ
سکئے۔

دعاوازہ سے داخل ہوتے ہی ایک چھوٹا سا کمرہ ملتا ہے۔ اس کے بعد
ایک بڑا کمرہ اور آگے جا کر ایک طرابھاری والا ان ہے۔ جس کی لالیش
میں بہت نفاست سے کام لیا گیا ہے۔ اور نیچے ایک بیش فہمی سرخ
فالبین بھیجا ہوا ہے۔ جس پر اجنبی ادویہ رائی کیتو متی اور بہت سی
عورتیں بُھیجی ہیں۔ اور بعضی ابھی اگر بُھیجہ ہی ہیں۔ اوس کا جاکار دل خوش
کر سی م۔

اٹنے میں ایک داسی نے اگر کہا۔ مبارک بھو اڈولی اگئی!
اٹا! اس بات کے سنتھی اپنی دلوی کا بلکچہ بارے خوشی کے سینے میں
ادھھل ٹرا۔ اسی وقت ایشور کے گن بادو گانی ہری عالم استریوں کے ساتھ
پھلوڑی تک آئی ہو گئی کہ بڑی دھوم دھام سے ملنو مان جی دوہن
کے ساتھ سکھ پال میں بیٹھے ہوئے دروازہ پر پونخ گئے۔ ان کو دیکھتے ہی
ابھا دیوی کا چہرہ باخ ہو گیا ہے اور بارے خوشی کے جامہ میں

फूला नहीं समाती। और बार बार ईश्वर के हुजूर में सर झुका उसका धन्यवाद कर रही है। बसन्तमाला ने सहारा देकर पद्मरागा को सुखपाल से नीचे उतारा। और अञ्जना देवी ने दूल्हा और दुल्हन के सर से पानी वार कर पिया। और सब स्त्रियों के साथ ईश्वर के गुण आबाद गाती हुई पद्मरागा को दालान में लाई। आहा! इस वक्त चारों तरफ से मुबारिक बाद की आवाज आ रही है। और हर एक दुल्हन को देख खुश हो तारीफ कर रही है।

अञ्जना मन में मन हो गाती मंगलाचार
दीन दुहाई नगर की आई सब मिल नार
धन धन तुझको अञ्जना धन ये हनु कुमार
ऐसी सुन्दर पद्मनी जिसने ब्याही नार
जा नयन मृग से मोहक मस्तक चँद्र समान
दुल्हा दुल्हन प्यारी में भरे खुश राखे भगवान
नाजरीन! गो ये दालान बड़ा फराख और वसीह है लेकिन इस वक्त तो तिल भर जगह खाली नजर नहीं आती। तमाम औरतों से पुर है। हमारे बहादुर जरनैल भी न जाने कहाँ और किस वक्त चले गए जो नजर नहीं आते। इसलिए इस कदर स्त्रियों का हुजूम देखकर हम को भी शरम दामनगीर है। और इसानियत से भी बाईद है कि अब हम यहाँ अकेले ठहरे। इसलिए सबको आदाब करते हुए कुछ अरसे के लिए जाते हैं।
बाकी आइन्दा

ठाकुर सुखराम दास
۱۴ दिसम्बर ۱۹۰۰

پھولी नहीं समाती। और बार बार ईश्वर के हुजूर में सर झुका अस्त्र का दम्भनाद कर रही है।- बुद्धत मालाने सहारा दिक्री पद्मरागा को स्कर्पाल से नीचे उतारा। और अञ्जना दिल्ली ने दूल्हा और दुल्हन के सर से पानी वार कर पिया। और सब स्त्रियों के साथ ईश्वर के गुण आबाद गाती हुई पद्मरागा को दालान में लाई। आहा! इस वक्त चारों तरफ से लाली-लाली। ऐसी वक्त चारों तरफ से म्बार कबाड़ी और आरामी है।- और हर एक दुल्हन को देख खुश हो लूरिफ कर रही है। - ५

अन्धमें मैं गूँह बोगाती मैन्हगल चार दिन वडाती भग्न की आई बैल नार
दृष्टि धन तेज्ज्वला अञ्जना दृष्टि धन ये देह लक्मार। ऐसी संदर्भ में जैसी नार
जानिन रुक्के और क्षेत्र में रुक्के चंद्रमा। दुल्हा दुल्हन यारी संज्ञान रुक्के जैसी नार
नात्यरें बोगी दलान ब्रावल्य और दीप्ति है।- लेकिन ऐसी वक्त तूल बहुत खाली वार
नजर नहीं आती।- नाम उर्दुलों से पूर्हे हैं।- हमारे बहादुर जैसी नहीं जाते
कहाँ। और क्षेत्र के जैसी जौन नहीं आते।- एस लें ऐसा दीप्ति
उस्त्रियों का जैम दिक्कर है। कौन्ही शर्म दासी है।- और अनामित से
भी बुद्धी है कि अब हम यारी की लिले छहरी।- ऐसे लें सब को आदाब
करते हों। कौन्ही उर्दुलों के लें जाते हैं।- (बाती आइन्दा)

ٹھाकुर स्कर्पम दास

۱۹ سिंहसन

مُسَنِّف شِنْکر وَ اسْـضـامـتـخـلـقـعـاصـي
 گـفـتـگـوـتـبـرـسـيـ سـےـ خـلـقـتـ ہـوـگـيـ سـارـسـيـ فـيـضـيـابـ
 خـتمـ بـوـئـيـ رـاسـتـيـ کـوـ لـيـكـيـ یـہـ نـاـورـ کـتـابـ
 کـہـدـيـاـ مـاقـتـ نـےـ یـوـںـ تـارـیـخـ اـسـکـیـ کـانـ مـیـںـ
 بـعـدـ اـزـ صـدـھـيـ اـنـیـسـوـیـسـ ۶۰ جـونـ کـاـ درـجـتـاـ

مُسَنِّف شِنْکر وَ اسْـضـامـتـخـلـقـعـاصـي
 گـفـتـگـوـتـبـرـسـيـ سـےـ خـلـقـتـ ہـوـگـيـ سـارـسـيـ فـيـضـيـابـ
 خـتمـ بـوـئـيـ رـاسـتـيـ کـوـ لـيـكـيـ یـہـ نـاـورـ کـتـابـ
 کـہـدـيـاـ مـاقـتـ نـےـ یـوـںـ تـارـیـخـ اـسـکـیـ کـانـ مـیـںـ
 بـعـدـ اـزـ صـدـھـيـ اـنـیـسـوـیـسـ ۶۰ جـونـ کـاـ درـجـتـاـ

حـسـبـ مـصـنـفـ شـنـکـرـ وـ اـسـضـامـتـخـلـقـعـاصـيـ

گـفـتـگـوـتـبـرـسـيـ سـےـ خـلـقـتـ ہـوـگـيـ سـارـسـيـ فـيـضـيـابـ
 خـتمـ بـوـئـيـ رـاسـتـيـ کـوـ لـيـكـيـ یـہـ نـاـورـ کـتـابـ
 کـہـدـيـاـ مـاقـتـ نـےـ یـوـںـ تـارـیـخـ اـسـکـیـ کـانـ مـیـںـ
 بـعـدـ اـزـ صـدـھـيـ اـنـیـسـوـیـسـ ۶۰ جـونـ کـاـ درـجـتـاـ

انقلاب

ہم نے اس حاکم بے رہ نیجات کی سہولت کیتے یہ انتظام بھی
اُج کیسماں ناول شش - نہیں و قصہ کہانی وغیرہ
ہمارے نام آवے بازار سے کیفایت خرید
بیلکل ساف ہوگا! کیسی کیسماں کی دوچھے کی عتمید نہیں کی جا سکتی!
اس حاکم بیلکل نیجات اک دفعہ آنکہ بازاری تحریر کی تصدیق
فرما دیں +
فراشیں کی تعلیل نقدیت موصول ہونے یا مدینے پر
کی اجازت کے بغیر ہوگی +

الملک

ٹاکر سو خراں داس
مولا جیم الاینس بیک لاهور

اطلاع

ہم نے اصحاب بیرونیات کی سہولت کیتے یہ انتظام بھی
کیا ہے۔ کتاب از قسم ناول۔ شش - نہیں و قصہ کہانی وغیرہ
جس کسی کی فراشیں ہمارے نام آدے بازار سے کیفایت خرید
کر کے روانہ کی جائیں گے۔ مطالباً کل صاف ہو گا۔ کسی مقام کے دہم
کی اسید نہیں کیجا سکتی +
اصحاب بیرونیات ایک دفعہ آنکہ بازاری تحریر کی تصدیق
فرما دیں +

فراشیں کی تعلیل نقدیت موصول ہونے یا مدینے پر
کی اجازت کے بغیر ہوگی +

الملک
ٹاکر سو خراں داس مازم الاینس بیک لاهور

जीवन लाभ

ये क्या है? एक छोटी सी ३२ सफे की किताब है। जिसके पढ़ने से आत्मा को वो आनन्द प्राप्त होता है जो दुनिया की तमाम नैमतों के हासिल होने से ना मुमकिन है। स्तोत्र **दशुनाथ** जो इस किताब की एक जुज है रुह को वो सरूर बरछाता है कि दुनिया की तमाम रंजों राहत को भूल परमात्मा के हुजूर सर झुक जाता है। भगत जनों ने उसकी बहुत कदर की है।

तकरीबन २०० जिल्द बाकी हैं। **मतलाशयान** हक इसका जरूर मुलाहिजा करें।
कीमत १

अलमशहूर

ठाकुर सुखराम दास
मुलाजिम अलायंस बैंक लाहोर

چیوں لال بھ

یہ کیا ہے؟ ایک چھوٹی سی ۳۲ صفحہ کی کتاب ہے۔ جس کے پڑھنے سے آنکروہ آند پر اپت ہوتا ہے جو دنیا کی تمام نعمتوں کے حاصل ہونے سے ناممکن ہے۔ استور و شو ناتھ جو اسی کتاب کی ایک جزو ہے۔ روح کو وہ سرو بخت تر ہے۔ کہ دنیا کی تمام رنج و راحت کو بہول پر اتنا کے حصہ سر جبک جانما ہے۔ بھگت جنوں نے اُسکی بہت قدر کی ہے۔ قریباً ۲۰۰ جلد باقی ہے مددشیان حق رسکا ضرور خڑھ کریں قیمت ۱/-

المشتکہ
ٹھاکر سکھرام داس

عازم الائیں بنک لاہور

شُکریہ

ہجार ہجार شुक्र اور ڈن्यवाद है उस परमात्मा का जिसके अनुग्रह से मैं अपने उस इरादे को जो जून ۱۸۹۸ में किया था आज कामयाब देखता हूँ। अगरचा कई किस्म कि रुकावटे, दिकते और **دیلشکुनिदी** पेश आई कि ऐसे अहम काम को मैं नाचीज, जो इस सीजा से बिल्कुल बे बहरा और नातजुर्बेकार हो, क्योंकर सर अजाम दूँगा। लेकिन एक ताकत थी जो मेरे दिल को उकसा रही थी और कमर हिम्मत मनसूबा कर रही थी। घबराए नहीं मैं बतलाता हूँ। वो बहादुर बोनापार्ट के इस फिक्रे की कि दुनिया मेरोइ बात नमुमकिन नहीं तसदीक थी जिस को लेकर मैं ईश्वर पर भरोसा रखता हुआ काम करता रहा और कामयाब हुआ। उम्मीद है कि नाजरीन नुक्ताचीनी से परहेज कर असल मतलब की तरफ रुजू होकर मेरी मेहनत की दाद देकर हौसला अफजाई करेंगे। दूसरे हिस्से के जो निहायत अजीबोगरीब तैयार है छपवाने पर आमादा करेंगे जो एक सौ दरख्वास्त के आने पर शुरू किया जावेगा।

اللهم شاھ

ٹاکुر سुखराम दास
مुलाजिम अलायंस बैंक لाहोर

شُکریہ

ہزار ہزار شکراور دہنیاد ہے اُس پر ماتما کا جس کے انگروز سے میں اپنے اُس ارادہ کو جو جن ^{۱۸۹۸ء} میں کیا تھا آج کامیت دکھتا ہوں اگرچہ کسی قسم کی روکاویں۔ وفتیں۔ اور دشمنیں۔ پیش آیا کہ ایسے اہم کام کو میں ناچیز جو اس صیغہ سے بالکل بے بہرہ اور ناجبر پ کار ہوں۔ کیونکہ سر انجام دونگا۔ لیکن ایک طاقت شخصی۔ جو میں کردار کو ادا کسار ہی تھی۔ اور کمکت مضمبو ٹکر پریتی کے لحصہ اسے نہیں۔ میں بتلاماہوں۔ وہ بہادر بونامیارٹ کے اُس فقرہ کی (کہ دنیا میں کوئی بات ناممکن نہیں) تصدیق تھی۔ جس کو لیکر میں ایشور پر بہرہ س رکھتا ہوا کام کرتا ہوا اور کامیاب ہوا۔ میدے ہے۔ کہ ناظرین نکتہ چینی سے پرہیز کر اصل مطلب کی طرف برجع ہو کر۔ میری محنت کی دادے کے حوصلہ افزائی کرنے کے دوسرا حصہ کے جو نہایت عجیب غریب تیار ہے۔ چھپو اپنے پرآمادہ کریں۔ جو ایک تو درخواست کے آنے پر شروع کیا جاوے گا۔

اللهم شاھ
شاکر سکھ ام اس ملازم الائیں بک لاهور